महान लेखक
मैक्सिम गोर्की
की जीवन-कथा

शब्दपीठ
आनन्द भवन के सामने इलाहाबाद-२११००२

ओंकार शरद

प्रथम सस्करण १९८५ ईसवी

□

प्रकाशक
शब्दपीठ
आनन्द भवन के सामने
कनलगज, इलाहाबाद—२११००२

□

मुद्रक
पियरलेस प्रिन्टस
१, बाई का बाग
इलाहाबाद

□

चित्रकार
इम्पैक्ट इलाहाबाद

□

मूल्य चालीस रुपये

यह जीवन-कथा

दुनिया के सर्वहारा वर्ग की जीवन-कथा लिखने वाले महान लेखक मैक्सिम गोर्की की यह जीवन कथा है। गोर्की मात्र रूस के ही लेखक नहीं थे, बल्कि वे विश्व के एकमात्र लेखक थे जिन्होंने गरीब, दलित, पीड़ित, उपेक्षित और जीवन में संघर्षरत लोगों के जीवन और उनकी धड़कनों को अपनी लेखनी की करुणा दी, तथा उन्हें यह एहसास कराया कि वे भी इंसान हैं।

प्रस्तुत कथा में गोर्की के जीवन की उन सभी घटनाओं को पूरी यथार्थता से चित्रित करने का प्रयास किया गया है जिन्होंने उन्हें जीवन के वे खट्टे-कड़वे अनुभव दिए, जिन अनुभवों ने उन्हें मानव-समाज का यथार्थवादी चित्रकार बनाया।

इस जीवन-कथा में मुख्य रूप से गोर्की के जीवन के संघर्ष और उनके लेखकीय जीवन को ही चित्रित किया गया है। क्योंकि गोर्की विश्व के एक महान और जनप्रिय लेखक के रूप में ही अमर है।

इस कथा के लिखे जाने के पीछे कोई कथा नहीं है, मात्र प्रेरणा है, अतः किसी लंबी भूमिका की आवश्यकता भी नहीं है।

—ओंकार शरद

"हमारा जीवन विलक्षण है, चारो ओर से बबरता की चादर से आच्छादित, पर भीतर सबल सृजनात्मक शक्तियो से दीप्त। अच्छी शक्तियाँ बुरी शक्तियो पर धीरे-धीरे विजय कर रही हैं। इससे यह आशा बँधती है कि वह दिन दूर नहीं जब समग्र जन-जीवन मे सौंदय एव मानवता का सूय अवश्य उगेगा।"

—गोर्की

जनता का महान लेखक

जब जब विश्व म बडे सामाजिक परिवतन आत ह, समाज के रूप वदलते हैं समाजी जीवन म उथल पुथल होती है तो ऐसे परिवतना की वाहिनी होती ह उस युग की उच्च कोटि की साहित्यिक कृतियाँ और उन साहित्यिक कृतियो का रचना करने को पैदा होत है महान व मधावी लेखक ।

उन्नीसवी शताब्दी का उत्तराध विश्व म आ रहे महान परिवतन के आगमन की भूमिका स ओत प्रोत था । ऐसे परिवतनो की पग ध्वनि घुंघरू की ध्वनि के साथ नही बल्कि क्राति की दुदुभि के साथ आती है । परिवतन लाने वाली क्राति की यह दुदुभि स्पष्ट रूप स सुनाई भी पड रही थी ।

ऐसे ही वातावरण म, भयकर उथल पुथल का पूर्वाभास महादेश रूस को उस समय झकझोर रहा था । निरीह किसानो तथा जुल्मी जमीदारो का पुराना रूस पूजी के निरतर वढते जाते निमम प्रहार की चोट से दबा पिसा जा रहा था । तब के रूस का किसान इस रक्तपात पूर्ण तथा अश्रुमय भयानक नाटक का नायक था, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नायक था जो पीडित था, निष्क्रिय था ।

तब का रूसी किसान जब निराशा की ठंडी-लंबी साँस छोड़ कर आकाश की ओर निहारता तो उस बड़े-बड़े काले-काले बादल दिखाई पड़ते लेकिन वे कैसे बादल थे। वे बादल थे आँसुओं के, दुखों के, शोषण के पीड़ा के कराह के उभार के। तब वह बेबसी से अपने चारों ओर के वायुमंडल को देखता तो उस वायुमंडल में निराशा और रोष की मिश्रित छटपटाहट ही दिखाई पड़ती। वह एक दुःस्वप्न से काँप-काँप जाता। कभी कभी वह आवेग से भर जाता, लेकिन तत्काल ही वह आवेग हृदय की दारुण पीड़ा में बदल जाता।

किसानों के रोम रोम से निकलती आह और वेदना की कराह से भरे इस दर्दपूर्ण वातावरण से दूसरे पक्ष को भी—जमींदार पक्ष को भी भयानक चोट पहुंची। स्थिति के सत्य का दर्शन प्रत्यक्ष था। आकाश पर चढ़ा जमींदार जमीन पर आ गिरा। पुराने रीति रिवाजों की नाव हिलने लगी जैसे कोई भूचाल आ गया हो।

इस भूचाल का लाने में प्रमुख हाथ एक जमींदार का ही था—एक जमींदार लेखक का। उसका नाम था तोल्सतोय।

ऐसे मौके पर एक व्यक्ति रंगमंच पर प्रकट हुआ जिसकी लेखनी शक्ति संवेदनशीलता संस्कृति शिक्षा तथा जीवन की पूरी पृष्ठभूमि ऐसी थी जिसने किसानों के दुखों तथा बेबसी को कला की भाषा में चित्रित कर दिया। वह व्यक्ति जमींदार था। इस कारण उसकी कृतियों में अभिजात जीवन के नाना दृश्य देखने को मिलते हैं, हालांकि उसके समस्त चिंतन भाव किसानों की वेदना तथा दुःख की अनुभूतियों से परिलिप्त थे। फिर भी लेनिन की पैनी दृष्टि ने तोल्सतोय को अभिजात वर्ग का लेखक मान कर उनका सतही मूल्यांकन नहीं किया। तोल्सतोय की आग की लपटों की तरह धधकने वाली क्रांतिकारी भावना राजसिंहासनों धर्म चिह्नों एवं स्वयं अभिजात वर्ग का भी सफाया करने के लिए उद्यत क्रांतिकारी भावना अभिजात वर्गीय नहीं थी उस अभिजात वर्ग की नहीं थी जो मूलतया घिनौना होता है जो सिर झुकाने धैर्य रखने तथा हिंसा से बचने की अतिघातक भावना का प्रतिपादक होता है। स्वयं किसानों के मन में बैठी यह

भावना सदियो से हर जल्लाद की वफादार सहायक रही थी।"[1]

उस समय तक रूसी क्रान्ति के अग्रदूत लेनिन जन आन्दोलन का सपना साकार करने में लग गए थे। मानवता के कल्याण के लिए एक नया रास्ता ढूंढ़ने का सतत प्रयास हो रहा था। रूस में पूंजीवादी वर्ग का राज कायम था, उसका प्रभुत्व अपनी सीमा लांघ रहा था। सामंती प्रभुओं की सत्ता का पूर्ण दबदबा था। और तोलसतोय अपनी रचना 'अन्ना कारेनिना' में इन सामन्तों का बड़ा तिरस्कारपूर्ण चित्रण कर के नई चेतना का सृजन कर रहे थे।

वास्तव में तोलसतोय एक प्रकार के संघर्ष में पूरी तरह रत थे। यह संघर्ष था पूंजीवादी वर्ग से, जिसके मुंह को खून का स्वाद मिल चुका था। मानवता का हनन नष्ट करना और लूट ही उसके स्वभाव का प्रमुख अंग बन गया था। सारे रूस में सामंती पुलिस और पादरी का ही बोलबाला था। क्रूर शासन और क्रूर धर्म की चक्की में जनता पिस रही थी। लेकिन जनता की कराह और छटपटाहट के फलस्वरूप परिवर्तन भी धीरे धीरे अपना रूप ले रहा था और परिणामस्वरूप अत्याचारी पूंजीवाद भीतर ही भीतर खोखला होने लग गया था, वह रुग्ण हो रहा था पीड़ा संतप्त हो भय और दहशत से आक्रान्त हो रहा था।

अत्याचारी निराशावादी होता है, स्वभाव से। उसकी आत्मा भी बीमार होती है वह सत्य को आंखें बन्द कर के झुठलाने का आदी होता है। यह जानते हुए भी कि उसकी जीवन डोर का छोर निकट है मौत की छाया स्पष्ट है फिर भी वह सब कुछ नकारने का ही ढोंग रचता है। लेकिन तोलसतोय ने इस अत्याचारी वर्ग के मौत की घंटी की आवाज को सुन लिया था। परन्तु जिस दबे-कुचले और कराहते कृषक समुदाय के कल्याण के लिए तोलसतोय चिंतित थे, उस उद्धार का रास्ता देने में वे समर्थ नहीं थे। वे सामाजिक परिवर्तन के पक्षधर अवश्य थे, पर उनकी दृष्टि-परिधि में समाधान नहीं था।

१—अनातोली लुनाचार्स्की के लेख 'तोलसतोय और गोर्की' का अंश

शायद इसी असमर्थता के संताप में तोल्सतोय ने 'संत' का बाना पहन कर अपने संतुलन को साधने का प्रयास किया। वे ईश्वर की देन और शैतान की देन, जैसे दो विभिन्न मानवों में विश्वास करने लगे। वे शैतान के इंसान बनने की आशा में जीने लगे। वे जिन्हें नष्ट करना था उन्हीं के हृदय परिवर्तन की आशा में व्यस्त थे। वे वीरतापूर्ण संग्राम का संघर्ष का बिगुल नहीं फूंक पाये।

रूस के लिए वह घोर अंधकार का युग था। इस गहन अंधेरे में प्रकाश की लौ प्रज्ज्वलित करने वाले क्रान्तिदूत लेनिन ने रूस की जनता की कराह को विजय उल्लास में बदल देने का बीड़ा उठाया। लेनिन के कारण रूस में जागृति की नई लहर फैली। रूस के किसान जागे, मजदूर जागे। सर्वहारा वर्ग एकजुट हुआ और रूस ही में जागरण नहीं आया सारे विश्व के मेहनतकश और सर्वहारा वर्ग को जीने का नया रास्ता मिला।

इसी सर्वहारा वर्ग की नयी चेतना के साथ साथ रूस के साहित्याकाश में मैक्सिम गोर्की नाम के चमकीले व तेजोमय नक्षत्र का उदय हुआ। सर्वहारा के प्रतीक सर्वहारा की वाणी सर्वहारा की चेतना बन कर गोर्की का उदय हुआ।

लेनिन के कल्याणकारी पद चिन्हों का अनुसरण कर के गोर्की ने लेखन जीवन का प्रारम्भ किया।

गोर्की ने सर्वहारा वर्ग को वाणी दी, हौसला दिया। गोर्की खुद सर्वहारा वर्ग का ही उपज थे। उन्होंने सामंती शोषण की चक्की में पिसी रूसी जनता के दिल दिमाग और उत्साह को अपनी लेखनी के माध्यम से उभारा। यही नहीं १६०५ ७ की क्रांति में सक्रिय सहयोगी बने। वे मजदूरों और किसानों की ऐतिहासिक भूमिका को समझ सके।

रूस में सन् १८६१ के सुधारों से भूमिदासता का अंत तो हुआ लेकिन इसी बीच सामंती व्यवस्था के भीतर से पूंजीवाद का भी निकास हुआ। रूस के इतिहास में यह गहरे हलचलों का दौर था। पुरानी सामंती व्यवस्था तो टूट रही थी, लेकिन पूंजीवाद पनप रहा था।

जारशाही के खिलाफ क्रान्तिकारी आन्दोलन उठने लगे थे, लेकिन वे असगठित, भ्रमित, कुठित और विकृत थे। इसी काल मे हलचल भरे रूस मे १८६८ मे गोर्की का जन्म हुआ।

गोर्की बचपन मे ही अनाथ हो गए थे और दरिद्रता की भीषण मार उन्हे उसी उम्र मे सहनी पडी। बेकारी, दूकान की नौकरी, दूकानो म प्लेटें साफ करने से लेकर मजदूरी और चौकीदारी तक करनी पडी। यह सब सघष गोर्की को झेलन तो पडे लेकिन इनके चलते गोर्की को सामन्ती समाज के अत्याचार, अन्याय, क्षुद्रता बबरता को प्रत्यक्ष रूप मे देखने का सहज अवसर मिल गया। ये अनुभव ही गोर्की के लेखन की आधारशिला बने।

फिर यायावर बन कर गोर्की ने सारा रूस घूम घूम कर देखा। अपने देश की मिटटी को आख खोल कर देखा और रूसी जनता के तत्कालीन कष्टमय जीवन का भी प्रत्यक्ष अनुभव किया।

गोर्की ने उन्नीसवी शताब्दी के आखिरी दशक मे ही लिखना शुरू कर दिया था। तब तक वे बहुत कुछ देख और भोग चुके थे। गोर्की ने देखा कि समाज का एक बडा वग समाज के अन्यायो से ऊब कर असामाजिक हो जाता है उन्ही मे से फिर चोर, बदमाश जेबकतरे और आवारा पैदा होते ह। गोर्की ने इन्हे अपनी सहानुभूति दी और अपनी प्रारभ की कहानियो म इन्हे ही अपना नायक बनाया, फिर जब १९०५ की क्रान्ति मे उन्हे मजदूरो और शोषित की शक्ति के दशन हुए तो उन्होने नई शक्ति के प्रतीक इन्ही नये नायको को चुना।

सन १९०६ मे गोर्की ने अपना प्रसिद्ध उपन्यास 'मा' लिख कर साहित्य मे समाजवादी यथाथ का शुभारम्भ किया। इस अपनी कृति मे गोर्की यह चित्रित करने मे सफल हुए कि समाज द्वारा शोषित, उपेक्षित और घृणा का पात्र एक मजदूर जो सिर्फ लडता झगडता है शराब पीकर बीबी बच्चो को पीटता है, वह जब सगठित होता है तब उसका क्रान्तिकारी रूप उभरता है, वही नई सभ्यता, नई सस्कृति का अग्रदूत बनता है।

गोर्की ने रूसी जन-जीवन के चरित्र को खूब अच्छी तरह पहचाना।

उन्होंने जनता के बीच रह कर उनके संघर्षों में सहयोगी बन कर सन १८०५ और १९१७ की क्रान्तियों में रूस के जन जीवन को बदलते और परिवर्तित होते देखा। फिर अपनी रचनाओं में उन्होंने रूस के इसी बदलते व रूपान्तरित होने वाले रूसी जन जीवन का यथार्थ चित्रण किया। यही गोर्की की विशेषता और यही समाजवादी यथार्थवाद है।

प्रसिद्ध जर्मन लेखक फ्लेस्त वगर ने गोर्की के बारे में लिखा है— जब कोई गोर्की को पढ़ता है तो वह रूस को देखता है। वैयक्तिक रूस का नहीं बल्कि रूसी जनता की एक विशाल भीड़ को। उन सब का अपना अपना एक चेहरा है लेकिन सभी चेहरे मिल कर एक सामूहिक चेहरा बनाते हैं। मुझे कोई ऐसा दूसरा लेखक दिखाई नहीं पड़ता जो जन जीवन का यों चित्रित करे और वह अमूर्तताओं में न खो जाय।'

गोर्की ने जब कलम उठाई तब रूस देश पूंजी की भारी चट्टान से दबा कराह रहा था, लेकिन उस चट्टान में दरार पड़ चुकी थी। गोर्की ने उन दरारों को पहचाना और चट्टान को तोड़ने में बहुत श्रम किया। गोर्की ने अपने मन को अपने तन को, सर्वहारा वर्ग के रूप से ढाँक लिया। गोर्की ने किसानों वाले जूते और मजदूरों वाली कमीज पहन कर तथा तपेदिक से पीड़ित साधारण रूसी का भेष धर कर साहित्य क्षेत्र में कदम रखा। गोर्की ने सर्वसाधारण के दुख और पीड़ा का प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया था और वे दुख और पीड़ा को सुख और शांति में बदल देने को छटपटा रहे थे, बेचैन हो रहे थे। उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से साधारण जन के भयावह घृणित और लक्ष्यहीन जीवन के बारे में कड़वाहट भरी जिन्दगी के बारे में सचाई और साफगोई से बताना शुरू किया। यही गोर्की का महान उद्देश्य भी था—अन्याय के खिलाफ सशक्त व बुलन्द वाणी तथा लेखनी से तीक्ष्ण निर्मम यथार्थवाद को मूर्त रूप देना। उनका असली नाम तो था—अलेक्सेई मैक्सिमोविच पेश्कोव और गोर्की उपनाम था यद्यपि उपनाम ही अमर हुआ। 'गोर्की' शब्द के अर्थ हैं—

तलखी, तीखापन, कड़ुआ, कटु । गार्की ने युग भर की कड़ुवाहट का अपने मे समेट पचा लिया, इसलिए यह उपनाम चुना—गोर्की।

समस्त युग की कटुता कड़वाहट को गार्की ने अपन म पचा लिया, आत्मसात कर लिया, और रचनाआ के रूप मे जनता को जो दिया वह कठोर सत्य और यथाथ होकर भी पढन वाला का कटु या कड़आ नही लगता था, क्योंकि कठोर सत्य की निममता को मीठे लेप से लपट देन की कला मे वे बहुत प्रवीण थे। इसीलिए गार्की पाठको का कटुता मे भर नही लगते, उन्हान बहुत ढाक-तोप कर रूसी जनता का गरीबा और सवहारा वर्ग की करुणामयी, ददनाक जिन्दगी से परिचित कराया। फिर भी गोर्की की कृतियो म जो प्रचण्डता थी, जो तूफानी वेग था, वह कभी-कभी प्रत्यक्ष प्रकट भी हा जाता था, तब वह असह्य भी हाता था।

यह कहना सभवत गलत और झूठ होगा, और एसा कहना मानना भी नही चाहिए कि काई महान लखक सारी विशपताएँ अपन जन्म के साथ लेकर आता है, या उसकी प्रतिभा ईश्वर प्रदत्त होती ह, या गोर्की भी ज मजात 'महान थ, या उनकी सारी विशेषताएँ पूव नियोजित या पूर्वाजित थी। गार्की इस दुनिया म साधारणतम व्यक्ति क रूप मे ही आए, लेकिन उनके महान होन के दूसरे कारण थे। उन्होन दुनिया का और आदमी का जिन्दगी का आख खोल कर दखा। दुनिया की कठोरता, करुणा, दुख-सुख की अनुभूतिया को उन्हाने आत्मसात किया और अपने का सवसाधारण का एक 'साधारण प्रतिनिधि' मान कर ही वे कोटि कोटि के जनसमूह मे घुल मिल गए। फिर अनुभूतिया का केवल एहसास' मान कर चुप नही रहे। उन अनुभूतिया की अभिव्यक्ति के लिए लेखन का सहारा लिया। लेखन के लिए चाहिए कागज, कलम और राशनाई। सो गार्की न कागज क रूप मे चुना समस्त मानवो के जीवन की विशाल व विस्तृत पृष्ठभूमि को, कलम के रूप मे उनकी अपनी सदेदना और भावना थी और अग्नि सदृश्य रोशनाई तो उनके मन-प्राण मे भरी ही थी। और विषय के लिए उन्हान जीवन के स्रोत का उपयोग किया, जिसका उद्गम-स्थल था क्रान्ति की

आने वाली आँधी । यही व तत्व थे जिन्हाने गोर्की को जनता का लेखक—महान लेखक बनाया । इसीलिए अगर गौर से देखा जाय, या गोर्की की रचनाओ के पृष्ठो पर से एक परत को उघार कर देखा जाय तो देखा जा सकता है कि उनकी रचनाओ के पीछे जहाँ एक महान, प्राण वान और अतिप्रिय लेखक गोर्की की छवि दिखेगी, वही उस छवि क साथ एक आकृति और झलकेगी एक सह-लेखक की आकृति, पर वह आकृति किसकी है ? वह आकृति है एक सवहारा मानव की, एक मना मुग्धकारी आकृति जिसके चेहरे पर आक्रोश भी है और सतोष भी और उसका सशक्त हाथ बडे प्यार से उस मानव-लेखक के कधे पर टिका है जो उसका प्रवक्ता है जो उसकी वाणी है, गोर्की । गोर्की के साथ-साथ उस सह-लेखक, उस सवहारा मानव के चेहरे को भी पहचानना होगा जो चेहरा सारी दुनिया क सवहारा का प्रतीक है । वह चेहरा सिफ रूस के सवहारा इकाई का नही है, वह चेहरा रूसा भी है, भारतीय भी है अफ्रीकी भी है, यानी सारी दुनिया, सारी मानव जाति का प्रतीक चहरा है । वही चेहरा है वह शक्ति वह प्रेरणा, जा गोर्की को प्रेरित करता था, जा गोर्की से लिखवाता था । अत उस चेहरे को भी पहचाना होगा जो गोर्की को सारी दुनिया के सवहारा वग का प्रवक्ता बनाता है ।

गार्की की कृतियो को पढ कर गोर्की के मानवतावादी और यथाथ वादी लेखक होने के साथ-साथ उनका और भी एक रूप देखने का मिलता है, वह है उनका प्रकृति के महान चित्रकार का रूप । लगता है कि उन्ह प्रकृति से गहरा लगाव था । उनकी कृतियो मे समुद्र पहाड जगल हरे भरे बाग बगीचे, लबे चौडे मैदान खूब उजागर हो कर चित्रित हुए हैं । मानव भावनाओ को प्रकृति के सौंदय के साथ जोडने म वे अद्वितीय कलाकार सिद्ध हुए हैं । वे प्रकृति को एक कृषक की आँखो स देखत और कृषक के मन मे प्यार करते हैं । वे कही शायद यह भी विश्वास करते हैं कि प्रकृति ही वह प्रेरक-शक्ति है जो मानव को जिदा रहने जीवन की कठोरताओ से सघष करने जीवन का आनन्द भोगने और स्वस्थ मानवता का विस्तार के लिए प्रेरित करती

है। गोर्की लिखते हैं—

'हाँ, माता रूपी प्रकृति, हमारी महान, अद्भुत, निमम तथा अधी मा तुम सही हो, तुम्हारी दुनिया तथा तुम्हारी जीवन-पद्धति अच्छी है। वे समझदार, सूत्रबद्ध मानवजाति के हाथा, उस विश्वव्यापी कम्यून के हाथो म पहुँच कर जिसका हम निर्माण करेंगे और जिसके लिए हम कुछ भी नही उठा रखेंगे, सवश्रेष्ठ हो जायेंगे, कल्पनातीत रूप मे सवश्रेष्ठ वन जायेंगे। और हम जानते हैं कि इसे कैसे हासिल किया जायेगा, इसका कैसे निर्माण किया जायेगा। हे प्रकृति, फिर तुम, उस मानव के लिए जिसे भविष्य ज म देगा सचमुच सु दर स्वग वन जाओगी। यही कारण है कि हम तुम्हे प्यार करते है।'[1]

गोर्की समाज के हर व्यक्ति को प्रकृति की सतान मानते हैं। वे अच्छे व बुरे व्यक्ति मे अतर तो मानते ह, लेकिन न तो अच्छो की अच्छाई से मतवाले होते हैं, न बुरो से घृणा करते है। वे बुरे लोगों द्वारा गदी हरकतो का होना स्वाभाविक मानते है, लेकिन उ हे वे मात्र अल्पज्ञानी मानते हैं। साथ ही यह भी मानते हैं कि सही मानो मे महान, शुद्ध हृदयवाले, साहसी तथा बुद्धिमान लोगो की सख्या बहुत कम है और उनकी सख्या तभी बढेगी जब बुरो की असख्य तादाद मे मे आ-श मानव का निर्माण होगा। यह निर्माण करना पडेगा।

गोर्की ने बुरे लोगो के बीच प्रकाश स्तभो की खोज की, उ होने कोयले के अम्बार मे से हीरे खोजे। यही गोर्की की मानवता को महान देन है। गोर्की की इसी खोज की प्रक्रिया से समाजवाद स्थापित होता है और सस्कृति मे रग बिरगे फूल खिलते है।

सारी दुनिया मे नई समाजवादी सस्कृति के निर्माण के प्रयास मे गोर्की समाजवादी समाज के निर्माता लेनिन के अ यतम सहयोगी रहे है। 'प्रगतिशील विचार रखने वाले तमाम लोगो के लिए मजदूर वग

---

१ नोवोस्ती प्रेस एजेंसी द्वारा प्रचारित अनातोली लूनाचार्स्की के लेख से।

के मेधावी नेता लेनिन तथा महान सवहारा लेखक गोर्की ,ऐसे सह-क्रांतिकारी हैं जिन्होने नय विश्व का सूत्रपात करने म योगदान किया ।'१

गोर्की और लेनिन लेनिन और गोर्की ।

लेनिन गोर्की को एक मेधावी बौद्धिक योद्धा के रूप मे आदरपूवक प्यार करते थे और गोर्की लेनिन का क्रांति और समाजवाद के सजक के रूप मे श्रद्धापूवक सम्मान देते थे ।

गोर्की लेनिन म एक शीपस्थ राजनीतिक और दाशनिक तथा एक ऐस बहुमुखी प्रतिभा सपन्न, अदभुत और आकपक महान आत्मा के दशन पात थे जो महान सृजनात्मक शक्ति से ओतप्रोत थे । और लेनिन मानवता की तमाम गभीर समस्याओ के बीच बुरी तरह उलभ रहन पर भी जब गोर्की के होटल के कमरे म नमी तथा विस्तर का गीलापन देखते थे तो उन्हे यह चिन्ता बेचन कर देती थी कि कही गोर्की को जुकाम न हो जाय ।

गोर्की की प्रतिभा के प्रति लेनिन के मन मे अपार स्नेह और असीम सम्मान था । लेनिन सदा ही गोर्की की विशिष्ट क्षमताओ को क्रांति का हित साधक मानते थे । गोर्की की प्रतिभा की रक्षा के लिए भी लेनिन सदा सतक रहते थे कि राजनीति की उथल-पुथल म गोर्की के सृजनशील कलाकार को कोई बाधा न होने पावे । क्योंकि लेनिन जानते थे कि गोर्की की कला वतमान म से भविष्य की विशिष्टताओ का निर्माण करती थी जो विशिष्टतायें भविष्य के निर्माण के सघप म सहायक होने वाली थी ।

'यह तो सवविदित है कि गार्की की अमर कृति 'माँ' की पाण्डुलिपि छपने से पूव लेनिन की नजर से गुजर चुकी थी । लेनिन की राय म इस कृति का शक्षणिक महत्व और सामाजिक प्रभाव बहुत अधिक था । उन्हाने इसे अत्यन्त उपयोगी पुस्तक की सना दी और पूछा कि क्या पुस्तक का अन्य भाषाओ म अनुवाद हो रहा है ? कारण यह था कि वह गोर्की को महान रूसी लेखक होने के अलावा विश्व

१ प्रो० ए० म्यास्निकोव

व्यापी महत्व का साहित्यकार भी मानते थे।

'मां' उपन्यास के विषय मे लेनिन की सम्मति का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि उन्होने उसकी त्रुटियो की ओर भी सकेत किया। वे त्रुटियाँ क्या थी, इसकी जानकारी हमे गोर्की के सस्मरणो स नही हो पाती है। पर कुछ अन्य सस्मरण है जो बताते हैं कि लेनिन की राय मे उपन्यास की मुख्य त्रुटि उसमे वर्णित क्रातिकारी बुद्धिजीविया की आवश्यकता से अधिक प्रशस्ति है। गोर्की ने लेनिन क शब्दा को ध्यान मे रख कर पुस्तक को कई बार सशोधित किया और शैली एव कलात्मक दोना ही दृष्टिया मे उसे परिष्कृत बनाया।'[1]

गोर्की रूस की क्राति और नवजागरण मे जुड कर बुरी तरह व्यस्त हो गए थे, फिर भी उन्ह सारी दुनिया म, दुनिया के हर कोन म चल रहे मुक्ति सघष से पूरी दिलचस्पी थी और वे उनके बारे मे सदा जानने को प्रयत्नशील रहते थे। उनको भारत देश और उसके उस समय चल रहे आदोलनो से विशेष लगाव था। भारत मे होने वाली उस समय की एक एक छोटी-बडी घटनाओ के प्रति वे सदा सतक रहते थे। इस बात के अनेक प्रमाण अब उपलब्ध हैं।

गोर्की को भारत से कितनी दिलचस्पी थी इसका इतना प्रमाण ही पर्याप्त है कि वे भारत के इतिहास और भारतीय सस्कृति मे तथा महात्मा गाधी और रवीन्द्रनाथ के नामो से खूब परिचित थे। यही नहीं, गोर्की ने अनेक भारतीय नताओ से पत्र-व्यवहार भी किया था।

श्री प्योत्र वारान्निकोव के एक लेख के अनुसार गोर्की ने सन् १९२३ की १३ फरवरी को रोमारोला को लिखे एक पत्र मे भारत के विषय के विस्तृत चर्चा की ह। उस पत्र म गोर्की ने लिखा था

'जिन लेखो के लिए आपने वचन दे रखा है, क्या उनके अलावा गांधी के सबध म अपना लेख आप हम नही दे सकेंगे? मेरी प्राथना है कि आप उसे हमे अवश्य द। उनके बारे म हुमे केवल अखबारो स

1 प्रावदा, २ माच १९६८

ही जानकारी है। ऐसे विचारो के मूल स्रोत से परिचित हो लेना रूसियो के लिए अच्छा ही होगा जिन्हें वे स्वय भी पूरा तरह स्वीकार करते हैं। भारतवासियो की धार्मिक और दार्शनिक विचारधारा का प्रभाव लियो तोल्सतोय पर ही देखने को नही मिलता, जनता भी इस प्रभाव से परिचय रखती है। हमारे यहाँ एक जमाने से एक सम्प्रदाय चला आ रहा है 'नेतोव्तरी — हमारा। नही' इस सम्प्रदाय के लोग राज्य, निजी सम्पत्ति और परिवार को तथा अपनी इच्छा के प्रति किसी प्रकार की हिंसा को मान्यता नही देते। पर वे निहायत विनयी लोग हैं। गुस्सा करना तो व जानते ही नही। और वे किसी पर अपने विचार नही थोपते। इसमे कोई सन्देह नही कि उनका विश्व के प्रति दष्टिकोण भारत से मिलता जुलता होता है। रूसी ख्लिस्तो[1] के गीतो मे एसे सस्कृत शब्द आते ह जिनका अथ वे स्वय नही समझ पाते हैं— जसे पुराण, माया, देव सरस्वान्, अग्नि' आदि। सभवत व काकेशियाई प्रिगुनी'—नट सम्प्रदाय के साथ रूस पहुँचे थे और उनका 'घुमक्कड दरवेशो' स और कुछ लक्षणो से ऐसा लगता है कि फकीरो स भी सम्पक था।

सन् १८२३ म, उन दिनो गोर्की बीमार थे और विदश म ही रहते थे जहा उनका इलाज हो रहा था, उन्होने 'बेसेदा' (वार्ताए) नामक पत्रिका बर्लिन म प्रकाशित की थी। जिसके पहले व दूसरे अको मे उन्होने रोमारोला का लिखा गांधी-सबधी लेख प्रकाशित किया था।

गोर्की को भारत के सबध म अग्रेज लेखको द्वारा लिखी गई पुस्तको की भी पूरी जानकारी थी। जिनके आधार पर गोर्की ने अपना मत स्पष्ट करते हुए लिखा भी था— यह सुविदित तथ्य है कि अग्रेजी सभ्यता के प्रति भारतवासियो के स देहवाही रुख से इगलैंड म बेकारी बढ रही है।

गोर्की ने सेंट पीटसबग से प्रकाशित सोव्रेमेनिक (समसामयिक)

---

१ एक धार्मिक सम्प्रदाय

नामक पत्रिका मे एक पूरा लेख भारत के सबध मे लिखा था जिसकी प्रथम पक्ति थी—'राष्ट्रीय मुक्ति के लिए और इगलैंड के क्रूर शासन क विरुद्ध आदोलन भारत म बहुत तेजी से बढ रहा है।'

एक स्थान पर गोर्की ने लिखा 'इस बात का परे निश्चय के साथ प्रचार करने वाली आवाजें भारत मे आये दिन सुनी जा सकती ह कि अब भारतवासियो को सामाजिक और राजनीतिक काय अपने हाथ म लेना चाहिए और गगातट पर अग्रेजो राज अब पुराना पड चुका है।

'यह राज कैसा है, इसका प्रमाण राष्ट्रवादी सावरकर की सरकार द्वारा की गई ताडनाओ से स्पष्ट है। जैसा कि सुविदित है उन पर मुकदमा गुप्त रूप से चलाया गया था और मुकदमे के बारे मे किसी तरह के समाचार के प्रकाशन की मनाही थी। उन्हे ४८ साल की यानी १९६० तक की कैद की सजा दी गई थी।'

इन प्रमाणो से स्पष्ट है कि गोर्की बराबर भारत, उसकी सस्कृति उसके इतिहास और उसके राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष के प्रति आकर्षित रहे।

एक बात और ध्यान देने की है कि गोर्की जहा भारत के प्रति दिलचस्पी रखते थे वही भारत मे भी उनके प्रति उत्सुकता और जानकारी कम न थी। अपने अफ्रीका प्रवास काल मे ही गाधी जी गोर्की से परिचित हो गये थे। उन्होने सन् १९०५ मे ही अपने पत्र 'इडियन ओपीनियन' मे गोर्की के सबध मे एक लेख लिख कर गोर्की को मानव अधिकारो का एक महान योद्धा घोषित किया था। गाधी जी ने लिखा था

'कुछ समय पहले रूस में एक विद्रोह हुआ। उसमे भाग लेने वाले प्रमुख व्यक्तियो मे गोर्की भी थे। उनका जन्म और पालन पोषण घोर गरीबी म हुआ था। उन्होने एक मोची के साथ उसके सहायक क रूप म काम करना शुरू किया, लेकिन उसने शीघ्र ही उन्हे काम से हटा दिया। बाद मे वे फौज मे भर्ती हो गये। फौज मे काम करते हुए उनमे पढाई लिखाई के प्रति रुचि पैदा हुई। १८९२ मे उन्होने अपनी

पहली पुस्तक लिखी। वह पुस्तक इतनी अधिक दिलचस्प थी कि वह शीघ्र ही लोकप्रिय हो गय। उन्होंने लिखना जारी रखा। उनका मुख्य उद्देश्य जनता को सजग रखना था ताकि वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने को तैयार रहे। उन्होंने रुपय पैसे की कभी चिंता नहीं की। उनकी कृतियाँ इतनी तीखी थी कि सरकारी अधिकारी चौकन्ने हो गय। उन्हें जनता की सेवा में जेल भी जाना पड़ा। वह जेल को एक सम्मानित स्थान समझते थे। कहा जाता है कि यूरोप में गोर्की जैसा कोई दूसरा लेखक नहीं है जिसने जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष किया हो।'

महात्मा गांधी ने सन् १९०५ में ही गोर्की की प्रतिभा को श्रेष्ठ मान लिया था। और थोड़े दिनों बाद यानी बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के जाते आते भारत का बुद्धिजीवी समाज गोर्की से परिचित हो गया था बल्कि कहना गलत न होगा कि प्रभावित भी होने लगा था।

गोर्की की प्रसिद्ध कृति माँ' का परिचय भारत को उसके प्रकाशन के तत्काल बाद ही हो गया था।

संयोग की ही बात है कि संभवत भौगोलिक भिन्नता के कारण ही समय का अन्तर पड़ता रहा वरना रूस में जो परिवर्तन आए, जो संघर्ष हुये कुछ वर्षों बाद अपने बहुत सूक्ष्म बदलाव के साथ वही सब कुछ भारत में भी घटता रहा। लगता है कि मानव मुक्ति और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष को ताकत देने वाली, रूस और भारत में बहने वाली हवा एक ही है।

'मा का पहला प्रकाशन अंग्रेजी में हुआ। फिर रूसी में और संभवत रूसी के बाद ही भारत में। माँ' का हिन्दी में अनुवाद प्रेमचन्द की प्रेरणा से चन्द्रभाल जौहरी ने सन् १९३० के लगभग किया था, जिसे प्रेमचन्द ने स्वयं प्रकाशित कराया था। बाद में प्रेमचन्द ने 'माँ' को ही आधार बना कर मजदूर' नामक फिल्म की पटकथा लिखी, लेकिन तत्कालीन बरतानिया हुकूमत ने उस पर रोक लगा दी थी।

ये बातें बताती हैं कि गोर्की और भारत किस हद तक एक दूसरे से जुड़े हुए थे।

आज यदि सूची बनाई जाय तो यह सत्य ज्ञात होना कितना सुखदायी होगा कि भारत की सभी भाषाओं मे 'माँ' के एकाधिक अनुवाद उपलब्ध हैं। हिन्दी मे तो 'माँ' के दजन भर से अधिक अनुवाद हुए और सो भी उच्च स्तरीय लेखकों द्वारा। हिन्दी म गोर्की की लगभग सभी रचनाएँ अनूदित होकर लोकप्रियता पा चुकी हैं।

अत नि सदेह कहा जा सकता है कि गोर्की जितने रूस के लेखक हैं उतने ही भारत के भी अपने हैं। क्योंकि आज भारत का प्रगतिशील बुद्धिवादी वग मात्र गोर्की से ही प्रभावित होता है और फासिज्म के विरोध मे तथा समाजवादी समाज की रचना के सघप म गोर्की से ही प्रेरणा पाता है।

गोर्की रूस के सवहारा यथाथवादी साहित्यिक व सास्कृतिक जागरण के प्रतीक रूप मे आज जाने जाते हैं। लेकिन गोर्की जैसे महान लेखक का रूस जैसे महादेश के निर्माण मे कितना हाथ था, इसे निकट से व आत्मीयता से जानने के लिए हमे गोर्की के समस्त जीवनव्यापी सघप की कहानी पर दृष्टि डालनी होगी, तभी समझा जा सकता है कि एक पूरे युग और एक पूरे राष्ट्र की करुणा कैसे गार्की ने अपन मे समेट ली थी और युगव्यापी कड़ुवाहट को पीकर नीलकण्ठ बनने के बाद वे रूस ही नही, सारे विश्व के बौद्धिक जागरण के 'शिव' बन गये थे।

आगे के पृष्ठा मे इसी महामानव गोर्की की जीवन गाथा का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है।

कठिन जीवन का सवेरा

बालक गोर्की को अपने पिता की अंतिम स्मृति की इतनी ही याद है—बरसात के दिन थे, गिरजाघर का एक वीरान कोना फिसलन भरी धरती पर रखा एक ताबूत, उस पर कूदते दो मढक।

इसके पूर्व उसने अपने पिता की लाश को अपने घर म देखा था। कच्चा घर और खिड़की के नीचे जमीन पर पिता की लाश पड़ी थी। सफेद कपड़े मे लिपटी लम्बी लाश। चेहरा नीला पड गया था और आँख मुदी थी। पास ही बैठी मा रोते-रोते चुप होकर बुदबुदाने लगी थी।

बड़े सिर वाली गोलमटोल नानी, नानी का हाथ पकड़े रह रह कर रो उठती थी। वह रोती भी थी और अपनी बेटी को सांत्वना भी दे रही थी। बालक गोर्की कुछ उत्तेजित, कुछ भयभीत सा नानी से हाथ छुड़ा कर अपने पिता की लाश की ओर बढना चाहता था। लेकिन नानी उसे बार-बार खीच कर अपने लँहगे के घेरे मे लपेट लेती थी। एक बार नानी ने गोर्की को अपने से चिपका कर धीरे से कहा था—'अपने बाप को आखिरी बार सलाम कर ले। अब तू उसे फिर कभी देख न सकेगा। बेचारा अभी उम्र ही क्या थी।'

तभी गोर्की ने देखा कि उसकी माँ लाश के पास खिसक गई और लाश के सिर को पकड़ कर एक कंघी से उसके बाल काढ़ने लगी। गोर्की ने देखा, यह वही कंघी थी जिससे वह भी कभी-कभी अपने बाल काढ़ा करता था। बालक गोर्की को यह सब बड़ा अजीब सा लगा। माँ के कपड़े फटे और अस्त व्यस्त थे। उसके सलीके से जूड़े में बंधे रहने वाले बाल भी खुले और बिखरे थे जो उड़ उड़ कर कंधे और चेहरे को भी ढँक लेते थे। माँ रह रह कर सुबकने लगती थी।

बालक गोर्की को लगा कि उसका पिता मरा नहीं, शायद बीमार है और अभी उठ कर बैठ जाएगा तभी तो माँ उसके बाल सँवार रही है।

ठीक उसी समय, घर के बाहर देर से खड़े एक सिपाही ने भयानक कड़कती और डाँटभरी आवाज में पुकार कर कहा, 'जल्दी करो, जल्दी करो। कितनी देर लाश पड़ी रहेगी ?'

सिपाही की आवाज से सभी चौंक पड़े। माँ भी चौंकी। चौंक कर माँ तेजी से झटके से उठी लेकिन जाने कैसे क्या हुआ कि वहीं वह पीठ के बल धड़ाम से गिर पड़ी। उसके बाल फर्श पर फैल गये। पिता के चेहरे की तरह उसका भी चेहरा निर्जीव सा नीला होने लगा। उसके दाँत भी पिता की तरह ही चिपक गए।

क्या माँ भी पिता की तरह ही मरने वाली है ?

तभी नानी कर्कश आवाज में चीख उठी, छोकरे अल्योशा को बाहर निकाल कर जल्दी से दरवाजा बन्द करो।

गोर्की का बचपन में नाम था अल्योशा।

उसे एक ओर ढकेल कर नानी दरवाजे की ओर लपकी। एकाएक यह सब कैसा क्या भयानक काण्ड होने लगा, गोर्की की समझ में न आया। वह उठ कर दरवाजे के पास दीवाल से सटा कर रखी काठ की एक बड़ी सन्दूक के पीछे छिप गया। तभी कोई दरवाजे से भीतर आने लगा जिसे दरवाजे पर ही रोक कर नानी ने डाँट कर कहा कहाँ घुसे आते हो यहाँ ? इधर कोई न आवे, समझे ! खुदा के लिए इधर कोई न आवे ! उसे हैजा नहीं हुआ, यह तो प्रसव का

न्द है।'

दरवाजा बद हो गया। कमरा अधेरा हो गया।

सन्दूक के पीछे छिपा अल्योशा इधर-उधर दौडती नानी, पिता का निर्जीव शरीर और जमीन पर दद से तडपती, दाँत चबाती, बेचैन माँ, बस कमरे मे इतने ही लोग रह गय।

अल्योशा आतक म डूबा अधेरे मे ही सब देखता रहा। काफी देर तक। नानी माँ का सिर, पीठ सहला कर कहती—'थोडा सहो बेटा, ठीक हो जाएगा सब।' माँ दर्द से तडपती और पिता की लाश के पाँवों पर सिर रगड कर चीख पडती और बार-बार नानी उसे अलग कर देती।

थोडी देर बाद उसी अधेरे कमरे म बच्चे के रोने की आवाज सुनाई पडी।

नानी प्रसन्नता से चीख उठी, 'खुदा का शुक्र। लडका हुआ है।' और दौड कर उसने कमरे मे एक मोमबत्ती जला दी।

धीरे धीरे मा की चीख, तडप कराह भी बन्द हो गयी।

सन्दूक के पीछे छिपा बालक अल्योशा अब ऊबने लगा। यह सब क्या है! एक ही कमर म पिता की मौत और एक भाई का जन्म, इन दोना का महत्व वह नही समझता था। मौत और जिन्दगी का यह रिश्ता भी वह नही समझता था। नानी पर उस गुस्सा आ रहा था कि वह दरवाजा क्यो नही खोल देती ताकि वह बाहर जा सके। लेकिन वह चिल्ला भी नही सकता था क्योकि नानी समझती थी कि वह बाहर है और अगर उसे कमरे मे छिपा देखती तो खूब ही पीटती। इसलिए नानी, माँ और पिता तीनो पर क्रुद्ध कर अल्योशा वही धीरे से पसर गया, उसी सन्दूक से लग कर और फिर उसे नीद आ गयी।

और जब अल्योशा की नीद खुली तो कमरे का दरवाजा खुला था पर कमरे म कोई नहा था। न वहाँ नानी थी न माँ थी न नवजात शिशु और न पिता की लाश। तो क्या पिता भी उठ कर चला गया?

अल्योशा दौड कर बाहर आया।

लगता है अभी वर्षा हुई थी, फुहारें अभी भी पड रही थी। उसने

इधर उधर ताका-झांका, पर कहीं कोई नहीं दिखा। तभी एक पड़ोसी लड़के ने बताया, 'तू यहीं है? वे सब तो तेरे बाप की लाश लेकर दफनाने गए।'

'कहाँ?'

'कब्रिस्तान।'

और सुनते ही बालक अल्योशा वहाँ से कब्रिस्तान की ओर भागा, सरपट। रास्ते मे बडी फिसलन थी। दो बार वह सटक कर गिरा भी, लेकिन किसी तरह भागता भागता वह कब्रिस्तान पहुँच ही गया।

कब्रिस्तान मे एक ऊँची सी जगह पर चढ कर उसने देखा कि दो मजदूर फावडे से कब्र का गड्ढा खोद चुके थे। वर्षा का थोडा पानी गड्ढे मे चला गया था। दो-तीन मेंढक भी उसमे कूद गए थे। गड्ढे के पास खडे लोग—एक सिपाही, दो मजदूर, कब्रिस्तान का एक पहरेदार नानी और दो-तीन दूसरे लोग सभी वर्षा की फुहार से नहा रहे थे। पिता की लाश वाला ताबूत भी भीग रहा था और उस पर भी दो मेढक उछल रहे थे। अल्योशा को वर्षा की यह फुहार बडी अच्छी लग रही थी।

तभी वहाँ से चलने को मुडते हुए सिपाही ने कडकभरी आवाज मे कहा बस, अब इसे गाड दो। और वह एक ओर चला गया।

अपनी शाल के किनारे से अपना चेहरा ढाँक कर नानी रो पडी। सभी उपस्थित लोगो ने उठा कर ताबूत को गड्ढे मे रखा। भीतर से उछल कर तीन मढक ऊपर आ गये। फिर मजदूरो ने कब्र पर फावड से मिट्टी छोडनी शुरू की।

यह सब देख कर अल्योशा एक उत्तेजना से भर उठा। वह दौड कर कब्र के पास चला गया ताकि यह सब व्यापार वह और पास से देख ले। तभी आगे बढ कर नानी ने अल्योशा की बाँह पकड कर झटका देते हुए कहा, 'दूर रह छोकरे।

नानी की पकड स छिटक कर अल्योशा दूर खडा हो गया।

फिर मजदूरो ने मिट्टी से पूरी कब्र ढाँक दी। और पीट कर जमीन बराबर कर दी। फिर व भी वहा से एक एक कर के चले गए। सभी

चल गए। फिर भी नानी चुपचाप वहीं खड़ी रही।

थोड़ी देर बाद नानी ने घूम कर अल्योशा की ओर देखा और धीरे धीरे चल कर उसके पास आयी। फिर अल्योशा का हाथ पकड़ कर बहुत सी क्रास वाली कब्रों के बीच से होती हुई अँधेरे गिरजा की ओर चल पड़ी।

कब्रगाह के बाहर आ कर अल्योशा का हाथ पकड़े पकड़े चलते हुए नानी ने धीमे स्वर से कहा, 'तुम रोए क्यों नहीं ? तुम्हें रोना चाहिए था न।'

अल्योशा ने सिर उठा कर नानी का चेहरा देखा। वह चेहरा गंभीर था। तब अल्योशा ने धीरे से कहा, 'क्यों रोता ? मुझे रुलाई नहीं आयी।'

'तेरा बाप मर गया है रे।' नानी का स्वर भीगा था।

अल्योशा कुछ कहता कि पहले ही नानी ने कहा, 'खैर, जब रुलाई नहीं आई तो अब मत रोना।'

अल्योशा कुछ समझ नहीं सका, लेकिन उसे लगा कि उसे रोना चाहिए था। उसका मन अब रोने को होने लगा, लेकिन तभी उसे ध्यान आया कि वह जब भी रोता था तो उसका पिता हँसता था और माँ डाँटती थी, खबरदार जो रोये।'

अल्योशा को लगा कि उसका रोना जब उसके मा-बाप को अच्छा नहीं लगता, तो अब वह नहीं रोयेगा।

तब तक घर नजदीक आ गया।

घर आ कर अल्योशा ने देखा—उसी कमरे मे जिसमें पिता की लाश पड़ी थी, मा उदास बैठी है। उसकी आखें लाल है, जैसे वह बहुत देर से रोती रही है। वह गुमसुम बैठी कब्रगाह की ओर देख रही थी। उसकी गोद में एक गुड्डा सा बच्चा था, नया जन्मा बच्चा।

बाद में अल्योशा को बताया गया कि तेरा बाप तो मर गया लेकिन तेरा एक भाई आ गया।

एक बार अल्योशा का मन हुआ कि लपक कर माँ की गोद से

उस सुन्दर से बच्चे को अपनी गोद में ले ले, लेकिन बढ कर भी वह रुक गया। अल्योशा को अपनी माँ कभी अच्छी नहीं लगी। कभी उसने उसे प्यार भी नहीं किया था, सदा पीटती और डाटती ही रहती थी।

कभी उम्र में अल्योशा यह समझ गया था कि उसकी माँ उसे प्यार नहीं करती और माँ का प्यार उसे अपनी नानी से ही मिलता था।

गोर्की की नानी।

अद्भुत औरत थी वह। एक प्रकार से गोर्की के ननिहाल—काशिरिन परिवार का वह जान थी। उसका नाम था अकुलिना। छोटा कद गोल मटोल भरा हुआ शरीर। छोटे छोटे कदमों में वह खूब तेज चाल से चलती। उसका मन दया से भरा था। परिवार के अन्य लोगों से बिल्कुल भिन्न सभी से ममता करती और सभी का भला करने को तत्पर रहती थी। उसकी वाणी भी मधुर थी। वह अवसर ही अल्योशा को कहानियाँ सुनाया करती, तब उसका स्वर गीतमय हो उठता था। कभी कभी वह नन्हे अल्योशा को उसके नाना वासिली काशिरिन की कहानी सुनाती और कभी-कभी उसके बाप मैक्सिम पश्कोव और उसकी माँ वारवरा की। काशिरिन परिवार में एकमात्र वही थी जो मैक्सिम को पसन्द करती थी। नानी से ही अल्योशा ने अपने बाप दादा की बातें सुनी थी।

अल्योशा के बाप दादा की अजीब कहानी है।

अल्योशा को यह सब उसकी नानी ने ही बताया था।

अल्योशा का पिता था, मैक्सिम पेश्कोव। पेश्कोव को उसके बाप ने बचपन में इतना सताया था, इतनी पिटाई की थी, इतनी तकलीफ दी थी कि पश्कोव का जीवन भर यही विश्वास बना रहा कि बच्चे सिर्फ पिटाई के लिए ही होते हैं। इसीलिए वह भी कभी अपने बच्चे का प्यार नहीं कर सका, बल्कि हमेशा मारता-पीटता ही रहा।

मैक्सिम के बाप का नाम था शव्वाती पेश्कोव ।

शव्वाती पश्कोव के पूव का अल्योशा के पूवजो का इतिहास कोई विशेष उल्लेखनीय नही है ।

शव्वाती पेश्कोव फौजी आदमी था, खूब खूख्वार । फौज मे वह ऊचे अफमर के पद तक पहुँचा था, लेकिन अपने अधीन सिपाहियो के साथ उसका जैसा राक्षसी और ववर व्यवहार था, उसी के कारण उसे फौज की नौकरी से निकाला भी गया था और उसे सजा के रूप मे साइबेरिया मे निर्वासन भी भोगना पडा था ।

फौज से निकाले जाने पर भी पेश्कोव की ववर आदता म कोई फक नही पडा । उसे ववरता दिखाने और सताने को जब कोई न मिला तो उसने अपनी आदत के अनुसार अपने बेटे पर ही ववरता बरसानी शुरु की । ऐसा अक्मर होता था कि बाप के अ यायो से ऊब कर, घवरा कर, मैक्सिम घर से भाग जाता और आदमी दौडा कर, उसे पकडवा मगा कर पश्कोव उसकी जानवरा की तरह पिटाई करता ।

एक तरह से मैक्सिम के बाप ने उसकी जि दगी हराम कर रखी थी ।

इसीलिए जब पेश्कोव की मौत हुइ तो मैक्सिम ने शाति की साँस ली ।

बाप की मौत के बाद मैक्सिम को लगा कि उसे किसी जल्लाद स मुक्ति मिल गई और वह आजादी से सारा साइबेरिया घूमता घामता वोल्गा किनारे निश्नी नोवगारोद आ गया ।

निझनी आते ही सौभाग्य से उसे एक वढई के यहा आलमारिया बनान की मजदूरी मिल गयी । वही उसने बढईगीरी सीखी । खान पीने भर को पैसे भी मिल जाते थे । इस तरह जि दगी आराम स कटने लगी ।

अब मैक्सिम जवान हो गया था । लम्बा चौडा, स्वस्थ जवान ।

वढई की दूकान के वगल मे एक रगरेज की दूकान थी । उस दूकान के रगसाज मालिक का नाम था वासिली काशिरिन । काशिरिन की बेटी थी बारबरा । उसी से मैक्सिम की शादी हुई । यह शादी

बारबरा ने जिद करके अपने बाप काशिरिन की इच्छा के विरुद्ध की थी। इससे बूढा काशिरिन बेटी दामाद से सदा नाराज रहता।

शादी के बाद मैक्सिम काशिरिन परिवार का सदस्य बन कर वही रहने लगा। उनका मकान निझनी नोवगोरोद की एक सबसे गन्दी गली मे था। कच्चा, पुराना मकान। वही मैक्सिम १६ मार्च सन् १८६८ को एक बच्चे का बाप बना। बच्चे का नाम रखा गया, अल्योशा। पूरा नाम—अलेक्सेई मैक्सीमोविच पेश्काव।

अल्योशा का पिता मैक्सिम शात स्वभाव का भलामानस और दयालु कमठ व्यक्ति था। लेकिन उसे जिन्दगी की शुरुआत मे अपने बाप से जो व्यवहार मिला था, उसने उसके जीवन को कभी सीधी राह चलने ही नही दिया। बाप से मुक्ति पा कर जब वह निझनी आया, शादी की बाप बना कमाने लगा, तो सोचा कि अब शायद उसे चैन से दिन बिताने का मौका मिलेगा। लेकिन चैन से जीने का मौका उस कभी नही मिला। शायद उसकी किस्मत म चैन थी ही नही।

काशिरिन परिवार मे आकर रहने के बाद मैक्सिम ने पाया कि बबरता, कलह और झगडे करने मे काशिरिन परिवार उसके बाप पश्कोव से कम नही, बल्कि दो हाथ आगे ही था। इस परिवार के सभी लोग एक दूसरे से भयानक रूप से नफरत करते जैसा दुश्मन भी नही करते। जब घर भर के लोग आपस म लडने लगते तो एक भयानक हगामा उठ खडा होता। गली के रहने वाले लोग समझ जाते कि काशिरिन के यहाँ फिर कोई नया काण्ड होने लगा। लेकिन वहा तो रोज, दिन-रात यही काण्ड होता रहता। गली के लोग भी एक प्रकार से इसके आदी हो गये थे। अक्सर सभी आपस म लडते, लेकिन कभी कभी अल्याशा के मामा लोग जब अपनी बीबियो को पीटने लगत तब तो मारने वाले सभी ऐसे एकजुट हो जाते जैसे वे जन्म-जन्म के मित्र ही हो।

बूढी, अकुलिना बहुत चाह कर भी अपने बेटो को घर मे उपद्रव करने से रोक न पाती। वास्तव मे घर के वातावरण को विषाक्त बनाए रखने मे अल्योशा के नाना, बूढे काशिरिन की भी शह थी।

घर म जब हगामा शुरू होता तो अनुलिना बेचारी परेशान होकर सबों को ठण्डा करने का प्रयत्न करती और असफल होकर व्यग्रता-पूर्वक इधर उधर भागती, या रसोईघर मे घुस जाती, या सिलाई करने लगती, या बगीचे मे जा कर काम करने लगती ।

अल्योशा का नाना छोटी लाल दाढीवाला, मुडी हुई नाक और छोटी छोटी हरी-हरी आंखो वाला दुबले पतले शरीर व छोट कद का आदमी था। खूब ही खूख्वार और झगडालू स्वभाव का कजूस आदमी। अल्योशा की नानी अक्सर अल्योशा को बताया करती कि उसके नाना न जीवन क प्रारभ मे बड़े कठिन दिन देखे थे। बचपन म उस खूब मार पडती थी । और जीवन की कठिनाइया ने ही उसे बुढौती म इतना कजूस बना दिया है ।

काशिरिन परिवार म हर समय होने वाले ऐस काण्ड से मक्सिम बुरी तरह घबरा गया। उस यह सब अच्छा नही लगता था। वह उस घर म अपन को अजनबी सा महसूस करता और इसलिए कि उसे झगडे अच्छे नही लगत थे, झगडा करने वाले उस भी अपना शत्रु समझने लगे थे। कभी कभी उस पर भी उनकी बबरता का कहर टूटता, लेकिन वह सब कुछ चुपचाप सह लेता। एक दिन जब बहुत बफ पडी तो जमा बफ मे बडा सा गडढा बना कर अल्योशा के मामाओ ने मक्सिम को उसी मे ढकेल दिया था। वे तो मक्सिम को बफ की कब्र म ही गाड देते, लेकिन बडा मुश्किल से मैक्सिम बच कर वहाँ से निकल पाया। सो भी अपनी सास की ही बदौलत।

इस घटना के बाद मैक्सिम का वहा रहना मुश्किल हो गया। लेकिन उसन इस घटना की चर्चा भी किसी से नही की और अपनी बीवी व बच्चे को ले कर वह चुपचाप निझनी छोड कर चला गया।

निझनी छोड कर मैक्सिम वोल्गा के किनारे किनारे चल कर अस्त्राखान आ गया। और सयोग ही था कि अस्त्राखान आते ही उसे जीविका के लिए एक सहारा भी मिल गया। उसे तत्काल एक मजदूरी मिल गई, जिससे उसे व बीवी बच्चे को भूखा नही रहना पडा।

थोडे दिना बाद अपने पति व बेटो से ऊब कर अल्योशा की नानी

भी अस्त्राखान आ कर मक्सिम के साथ ही रहने लगी।

लेकिन दुर्भाग्य जसे मैक्सिम के पीछे लगा था। अस्त्राखान म वे लोग थोडे ही दिन रहे थे कि दुर्दिन ने फिर आ घेरा। हुआ या कि अल्योशा जो तब चार साल का हो गया था अचानक बीमार पडा और उस हैजा हो गया। नानी और बाप ने अल्योशा की सेवा तथा दवा दारू मे कुछ भी उठा न रखा। अ तत अल्योशा तो अच्छा हो गया और हैजा की छुतही बीमारी उसके बाप मक्सिम को जा लगी और वह बच न पाया। हैज से ही उसकी मौत हो गई।

जिस दिन मक्सिम की मौत हुई उसी दिन उसकी बीबी को दूसरा बच्चा हुआ था।

मैक्सिम की मौत के बाद अब अस्त्राखान मे रहना मुश्किल हो रहा था। परिवार का एकमात्र कमाऊ व्यक्ति मक्सिम मर चुका था और अब घर म खाने के भी लाले पड गये थे।

तब विवश होकर नानी ने सबो का लेकर निझनी वापस जान का निश्चय किया। अल्योशा यद्यपि उम्र मे अभी बहुत छोटा था लेकिन वह अपने नाना और मामाओ की बर्बर प्रवृति मे खूब परिचित हो गया था। उन्होने उसके बाप का बफ म गाड कर मार डालना चाहा था, यह वह कभी भूल नही सकता था। इसीलिए उसका मन निझनी जान का बिल्कुल न था, लेकिन वह नन्ही सी जान, कर भी क्या सकता था।

फिर निझनी जात समय वोल्गा पर स्टीमर की यात्रा तो अल्योशा जीवन म कभी भूल ही नही सका। नदी के बहाव के प्रतिकूल जाती अपनी नाव पर से पीले ढलुए किनारे, जगलो और छोटे छोटे खिलौना जस गाँवा का वह कभी भूल नही पाया।

वह यात्रा

वोल्गा पर चलता वह स्टीमर। स्टीमर पर झोपडीनुमा छाजन।

उसी के नीचे बैठा अल्योशा, नानी और मा के साथ यात्रा कर रहा था। लेकिन रास्ते मे ही एक दुघटना हुई। सबेरे सो कर जब अल्योशा उठा तो उसने देखा कि बाप की मौत के दिन उसके जिस भाई ने जन्म लिया था, वह रात में ही मर गया था और सफेद कफन मे लिपटी और लाल फीते से बँधी उसकी लाश कोने मे एक मेज पर रखी थी। लेकिन अल्योशा ने उधर ज्यादा ध्यान नही दिया।

अल्योशा सदूको और बिस्तरो के ढेर पर बैठा बाहरी छटा देख रहा था। अल्योशा की मा अपने सिर के पीछे हथेलिया रखे, आँखें बद किये, गभीर और अचल, एक खम्भे के सहारे खडी थी। उसका चेहरा काला और निष्प्रभ था। और रह-रह कर नानी उससे बडे कोमल स्वर मे कहती, 'कुछ खाओगी नही तो कैसे होगा, बारबरा ?'

लेकिन माँ ऐसी बनी रही जैसे न तो वह नानी की बात सुन पा रही हो, न ही वह बालना ही जानती हो।

थोडी देर बाद मा एकदम से चीखी, सारातोव मल्लाह कहा है ?'

सुनते ही नानी चौंक कर उठी लेकिन अल्योशा कुछ समझ न पाया। तभी नीले कपडे पहने, लबे कधा व भूरे बालो वाला एक आदमी एक सदूक लेकर आया। नानी ने बढ कर सदूक पकडा और भाई की लाश को उसमे रख कर बाहर ले चली। लेकिन नानी इतनी मोटी थी कि सदूक के साथ वह दरवाजे से निकल न सकी। तब मा ने बढ कर सदूक थाम ली और एक झटके से बाहर निकल गयी। नानी भी उसके पीछे पीछे चली गयी। अब वहा सिफ अल्योशा और नीले कपडो वाला आदमी, बस दो ही जने रह गये।

उस आदमी ने अल्योशा से कहा, 'देखा, तुम्हारा भाई भी चला गया।'

अल्योशा ने पूछा, तुम कौन हो ?'

'मल्लाह।'

'यह सारातोव क्या है ?'

वह शहर, उधर देखो, बाहर, उसी का नाम है।'

अल्योशा ने उधर देख कर पूछा, 'तो नानी कहाँ गई ?'
'अपने नाती को गाडने ।'
क्या उस जमीन के नीचे गाडेगी ?'
हाँ ।'

अल्योशा ने मल्लाह स बताया कि जब उसके बाप को गाडा गया था तो कब्र म मढक भी दब गये थे ।

उस आदमी ने बडी करुणा से कहा मढक । लेकिन बेटे, अभी तुम यह सब नही समझोगे । अपनी माँ का दुख दखो ।

तभी स्टीमर जोरो स हिला । मल्लाह भाग कर बाहर गया कहता गया लगता है भागना पडेगा ।

उसके पीछे पीछे अल्योशा भी भाग कर गया । और जब वह डेक पर पहुँचा तो वहाँ मजदूरा और मल्लाहो क बीच बडा हगामा था । एक मजदूर न धक्का दकर अल्याशा से पूछा, तू कौन है ?'

उसी नील कपडे वाल मल्लाह ने कहा, यह अस्त्राखान स आया है । कह कर उसने अल्योशा को घसीट ला कर फिर उन्ही सदूको बिस्तरो के ढर पर बठा दिया और डाँट कर कहा यहाँ से हिलोग तो पिटोग ।

फिर वह बाहर चला गया । जाते जाते दरवाजा भी बद करता गया ।

अल्योशा अकेला रह गया । वह आतक के मारे खामोश बठा रहा लेकिन उसकी समझ म कुछ नही आया । थोडी देर बाद वह उठा । दरवाजे तक गया । दरवाजा बद था । बहुत जोर लगान पर भी अल्योशा उसे खोल न सका । उसन इधर उधर देखा । पास ही दूध भरी एक बोतल रखी थी । उस उठा कर अल्योशा ने उसी स दरवाजे पर धक्के लगाने शुरु किये । अचानक बोतल टूट गया और अल्योशा दूध से नहा गया ।

अल्योशा डरा । अब क्या होगा ? घबरा कर वह वापस आकर बिस्तरो के ढेर पर बैठ गया, फिर लुढक कर लेट गया, फिर उस नीद आ गयी ।

जब अल्योशा की नींद टूटी तब भी स्टीमर झटके खा रहा था। लहरे तेज थी। सूरज की रोशनी भी तेज थी। पास ही बैठी नानी अपने बाल खोले, बालो मे कघी कर रही थी, रह रह कर बुद बुदाती भी जाती थी। अल्योशा ने नानी का यह नया रूप देखा गौर स देखा। नानी के बाल खूब लम्बे और नीले तथा काले रग के थे खूब घने बाल उसके कधो पर, छाती पर, पीठ पर घुटनो पर छाए थे, कुछ जमीन भी छू रहे थे। देखने मे नानी काले कम्बल मे लिपटी सी लगी। अल्योशा न देखा कि नानी एक हाथ मे थोडे से बाल समेट कर उसमे दूसर हाथ से लकडी की एक बडी कघी डाल कर खीचती और दद से खुद ही कराह उठती, तब उसका चेहरा खूब छोटा सा दिखाने लगता।

अल्योशा को मजा आ गया। ललक कर वह नानी को चिढाने जा ही रहा था कि अचानक उसकी नजर नानी के पीछे कमान की तरह ऐंठी हो कर लेटी मा पर पडी। मा की नाराजी क डर से उसन फुस-फुसा कर नानी से पूछा, नानी, इतन लम्बे बाल तुम्हारे ही '

नाना बोल पडी,, 'हा रे, कघी करन से इतने बढ गये। पहले अच्छे लगन थे अब बुढाप मे तग करते हैं ' ' तभी नानी को जैसे कुछ याद आ गया। अपने बालो को समेटते हुए पूछा, 'क्यो रे, तू न वह बोतल कसे तोडी ? सच सच बता।

उत्तर न दकर वही लुढकते हुए अल्योशा न कहा, 'नानी, मुझे नींद आ रही है।

नानी मुस्करा कर चुप रह गयी। फिर अपनी चादी की डिबिया स सुघनी निकाल कर अपने नथुनो मे चुटकी से भरने लगी।

नींद का बहाना बना कर लेटा अल्योशा अधखुली आखा से नानी का प्यार से ताकता रहा। कितनी भली व समझदार है नानी।

अल्योशा सोच रहा था, कितनी प्यारी है नानी। हसती है ता आखे चमकने लगती है। गाला की झुरियो के बावजूद भी चमकत दांतो के कारण उम्र स अधिक जवान लगती। बस उसकी खूबसूरती म एक ही कमी है—उसकी फूली हुई नाक, और उसम चुटकी स सुघनी

ठूस ठूस कर नानी ने अपने नथुन और फुला लिये है। लेकिन कुछ भी हो, वही उसकी एकमात्र दोस्त थी।

सोचते-साचत अल्योशा हँस पडा और नानी उस हँसते न देख ले इसलिए दूसरी करवट पलट गया।

निष्नी नजदीक आ रहा था। उसकी ओर देख कर नानी भाव विभोर हो उठी। वह उठ कर जा कर डेक पर खडी होकर उधर ही देखने लगी। थोडी देर बाद आँसुओ से उसकी आखें भीग गयी। नानी को रोते देख कर अल्योशा उठा, दौड कर नानी के पास गया और उसका लँहगा खीच कर बोला, नानी रो क्यो रही हो ?

यह तो खुशी के आँसू ह रे। अपना शहर दिख रहा है न।'

'तो क्या हुआ ?'

'तू नही समझेगा अभी।' कह कर नानी ने फिर एक बार नाक म सुंघनी ठूसी और नाती को बहलाने को बोली, 'चल, तुझे कहानी सुनाऊँ।'

नानी नाती सट कर बैठ गये। नानी की कहानी चालू हो गयी

ध्यानमग्न नाती और भावविभोर नानी और चूहे की कहानी। नानी कहती जाती नाती हुँकारी भरता रहता। आस पास के मल्लाह भी दख कर मुस्कराते। एक स्थल पर नानी ने कहा— तब ऐसा हुआ कि चूल्हे के नीचे पजा के वल चूहा बैठा रहा। कहते हुए माटी नानी खुद उछल कर पजो के बल बैठ कर चूहा वन गयी।

देखने वाले सभी मल्लाह मजदूर खिलखिला कर हँस उठे।

तभी एक ओर से आकर अल्योशा की मा चीख उठी, 'यह क्या माँ! तू तो अपना मजाक खुद वनाती रहती है। देख सभी हँस रहे हैं।

अल्योशा सिटपिटा गया। नानी भी सहमी। फिर धीर स बोली, 'उन्हे थोडा खुश हो लेने दो न।'

उस समय अल्योशा को एक बार फिर अपनी माँ पर गुस्सा आया।

अल्योशा न गौर किया कि अभी तक प्रसन्न नानी उदास हो गइ है। वह समझ गया कि माँ की डाँट से नानी का मिजाज बिगड गया है। अल्योशा ने नानी को सात्वना देने को कहा, नानी फिर क्या

हुआ ? चूहा फिर   '

नानी ने तत्काल अपना मन सम्हाला,, बोली, 'जान दे चूहे को ।' और किनारे की ओर दिखा कर बोली, 'वह देख, अपना निझनी, अब साफ दिख रहा है । वह देखो गिरजो के गुम्बद है । जसे हवा म उड रहे हो ।'

फिर माँ की ओर घूम कर नानी ने कहा, 'बारबरा, एक बार तो यहाँ आ कर देख, तू तो अपने शहर को बिल्कुल ही भूल गयी !'

लेकिन माँ पूववत उखडी रही । घूम कर देखा भी नहीं । अल्योशा को मा फिर अच्छी नही लगी ।

निझनी के किनारे से थोडा हट कर ही स्टीमर रुका । वहा पानी पर सैकडो नावो की भीड लगी थी । तभी अल्योशा न देखा कि कई आदमियो से भरी, लदी एक नाव आ कर डेक के सामने लगी और उसके आदमी कूद कूद कर स्टीमर की डेक पर आने लगे ।

चार पाँच साल का बच्चा अल्योशा इस हगामे का मतलब न समझ पाया । सबसे पहले जो आदमी आया वह बूढा था, थोडा झुक कर चल रहा था, लम्बा रगीन कोट पहने था आँखें हरी थी, नाक उठी थी और लाल दाढी थी । आते ही उसने बाह फैला दी और अल्योशा की माँ 'पापा' कह कर, दौड कर उन बाँहो मे समा गयी । वह बूढा माँ के गाल थपथपाने लगा । फिर बोला, अरे, तू आ गयी ! अर रे !'

तब कई-कइ लोग, आदमी, औरतें और बच्चे भी वही आ कर इकट्ठे हो गये । नानी ने उनमे से कई को चूमा, कुछ को थपथपाया, प्यार किया फिर अल्योशा की ओर मुड कर बोली, 'देख, देख, यह तेरा मामा है माइक, यह दूसरा मामा है जैक, यह मामी है नातालिया, यह दोनो इसके बच्चे ह, यह मामा की बेटी है कतारिना । यही अपना पूरा कुनबा है । देख न रे कितने लोग हैं ।'

तभी पहले आये बूढे ने एक झटके से अल्योशा का हाथ पकड कर खीच लिया और उसके सिर पर हाथ रख कर पूछा, 'तुम कौन हो ?'

अल्योशा अचकचा गया । सम्हल कर, लेकिन भयभीत स्वर म

बोला, मैं भी अस्त्राखान से आ रहा हूँ।'

उम बूढ़े न घूरते हुए कहा, 'हूँ, ठुड्डी तो बिल्कुल बाप की ही तरह है। चलो नाव म चलो।' कहता हुआ वह अल्योशा को खींचने लगा। नानी ने धीरे से अल्योशा से कहा, 'तेरा नाना है।'

सभी नाव क सहारे किनार पर आय। किनार पर हरी घास थी।

आगे आगे अल्योशा की माँ के साथ बूढ़ा नाना चला। वह माँ स कद म छोटा था कधे तक ही। माँ तेजी स चल रही थी और उसके साथ चलने मे बूढ़ा जैस दौड रहा था। उनक पीछे अन्य लाग गोल बनाकर चले। सबस पीछे नानी के साथ अल्योशा था।

इतनी बडी भीड म अल्योशा को कोई भी अच्छा न लगा। बल्कि दोनो मामा के चेहरो पर उसे दुश्मन की झलक ही दिखी।

थोडी दर बाद सभी घर पहुचे।

ननिहाल का नरक

नाना का छोटा सा गंदा मकान। गंदे पीले रंग से पुता, छतें भी झुकी हुई, कमरे भी छोटे छोटे और अँधेरे। चारों ओर सड़ी सी हल्की गंध।

घर आ कर सभी उन्हीं कमरों में कहीं खो गये, अल्योशा की समझ में कुछ नहीं आया। अकेला अल्योशा एक दो कमरों में भटकने के बाद आँगन में आ गया। पर वहाँ भी अच्छा न लगा। वहाँ बड़े बड़े पीपों में गहरे रंग भरे थे। चारों ओर तरह-तरह के रंग के कपड़े सूख रहे थे। एक कोने में लकड़ी का एक चूल्हा जल रहा था—उस पर कुछ उबल भी रहा था।

यही थी अल्योशा की ननिहाल।

छोटे से अल्योशा को ननिहाल में बड़े अजीब अजीब अनुभव हुए। काशिरिन परिवार का जीवन ही ऐसा था, जहाँ चौबीसों घंटे चिकचिक होती रहती। झगड़े धमाके, भद्दी-भद्दी गालियाँ, एक दूसरे को कोसना, पैसों के लिए एक दूसरे की जान लेने को तैयार। जैसे

उस घर मे रहने वाले एक परिवार के सगे सबधी न होकर सभी एक दूसरे के जन्मजात दुश्मन हो।

अल्योशा ने ननिहाल म गृह-कलह एक भयानक बीमारी की तरह घुस आया था। जिसका शायद कोई अत न था, न इलाज।

अल्योशा ने ननिहाल आने के दो चार दिनो के भीतर ही अनुभव कर लिया कि जब से नानी व माँ के साथ वह आया है तब से घर म कलह की और वृद्धि हो गयी है। बाद म एक दिन नानी ने बताया कि उसके सभी मामा मामियाँ उसी दिन से, जिस दिन से उसकी माँ आयी थी इस बात के लिए जिद करते और लडते थे कि परिवार की सपत्ति का तत्काल बँटवारा हो जाना चाहिए। अल्योशा की माँ के अचानक वापस आने से ही बँटवारे की चर्चा उठी थी। मामाओ को डर था कि उनकी बहन अपने दहेज का हिस्सा माँगेगी, जिसे अल्योशा के नाना न दाब रखा था क्योकि वारवरा ने अपने बाप की मरजी के खिलाफ मैक्सिम से शादी की थी।

अल्योशा का ननिहाल आये एक हफ्ता भी न बीता था कि एक दिन भयानक हगामा हुआ। हुआ यो, कि सभी खाना खाने बैठे थे। फिर जाने क्या बात हुई कि एकाएक दोनो मामा उछलने लगे और लम्बी गरदन हिला हिला कर कुत्तो की तरह भूकने लग। नाना एकाएक नाराज हो कर खाने के बरतन पटकने लगा, फिर गुस्से से लाल चेहरे से चीखा मैं तुम्हे घर से निकाल दूँगा, फिर गलियो मे भीख माँगना।'

नानी ने स्थिति सम्हालने की कोशिश म नाना से कहा, 'अगर घर मे शाति रखना चाहते हो तो ये जो मागते है इन्हे दे कर जान छुडाओ।

नाना की आखो से जैसे अँगारे फूटने लगे। वह नानी पर ही गरजा, 'तू अपना मुह बद रख, बेवकूफ!'

इस सारे काण्ड म अल्योशा की माँ दयनीय शक्ल बनाये चुप बैठी रही। तभी अल्योशा के एक मामा माइक ने दूसरे मामा जक के चेहरे पर उल्टी हथेली से जोरदार चपत लगा दी। बस फिर क्या था, दोनो

एक दूसरे पर टूट पडे और फहड गालियाँ देते हुए वही जमीन पर नाटते हुए एक दूसरे से गुँथ गये। तब मामी नातालिया जो गभवती थी, जोरो से चिल्ला कर रोने लगी। फिर दूसरे बच्चे भी चीखन लग। घर की नौकरानी बच्चा को बाहर घसीट ले गयी। तब तक दोना मामा लडते हुए एक दूसरे से लिपटे कुसिया के बीच फँस गये थे। नाना ने चीख कर दुकान के नौकरो को पुकारा। दो नौकर भाग कर आये। आते ही एक माइक की पीठ पर चढ बैठा और दूसरे ने तौलिया से उसके हाथ बाध दिये। दूसरा मामा जो काफी मार खा चुका था, पाव पटक पटक कर रोने लगा।

यह सब देख कर बेचारा अल्योशा बुरी तरह डर गया। उसने घर मे ऐसा युद्ध पहले कभी नही देखा था। सहमा सा वह रणक्षेत्र स बचने के लिए धीरे से खिसक कर चूल्हे पर चढ गया।

तभी नानी न कुछ कहा जिसे अल्योशा सुन नही सका, लेकिन उसके उत्तर मे बाँहे सिकोड कर उछलते हुए नाना गरज उठा 'कमबख्त बुढिया! तूने ही इन जानवारो को पदा किया है। मैं तुझे खूब जानता हूँ तूने ही इन्हें सिर पर चढा रखा है। तरे दोनो बेटे बेईमान है। मेरी कमाई पर पट पालते है और गुर्राते हैं। कोढी है दोना।'

नाना का यह रूप देख कर अल्योशा की जान सूख गयी। डर स वह कापने लगा। तभी उसका हाथ लगने से चूल्हे पर रखा लोहे का ढक्कन उलट गया और झनझना कर जमीन पर गिरा। इस आवाज मे लडाई भूल कर सभी अल्योशा का देखने लगे। नाना लपक कर आया और अल्योशा को घसीट कर नीचे उतारा और गरज कर पूछा, 'तुझे चूल्हे पर किसने चढाया?'

डरी आवाज मे अल्योशा ने कहा, 'मैं खुद ही चढ गया था। मुझे डर लग रहा था।'

'झूठा! नाना फिर गरजा और एक गहरी चपत लगा कर नफरत से बोला, 'बिल्कुल अपने बाप की तरह ही नालायक है तू भी। हट जा मेरे सामने से।'

अल्योशा जान बचा कर बाहर भाग गया।

नाना की चमकदार हरी आँख हर समय अल्योशा को घूरा करती और घृणा बरसाती रहती, जिन्हें देख कर अल्योशा डर से काँपता रहता। हर समय सहमा रहता।

या तो उस घर म सभी जल्लाद ही थे, और सभी के चेहरा म अल्योशा को दुश्मन का ही चेहरा दिखता, लेकिन उसे सबसे अधिक नफरत अपन नाना से ही थी। वह देखने मे ही खूख्वार नही था, मन म भी खूख्वार था। कैसा भयानक था उसका रूप। लाल दाढी और हरी आखें उसके हाथ हर समय खून से रग लगते। रगसाजी करन के कारण तेजाब से उसके हाथा का चमडा जल कर सिकुड गया था, जो वीभत्स लगता था। वह दिन भर गालिया बकता रहता। कभी कभी जब वह ईश्वर से प्रार्थना करता तब भी यही लगता कि गालियाँ ही बक रहा है।

अल्योशा के मन मे यह बात जम गयी कि उसका नाना ही उसका सबसे बडा दुश्मन है। या तो घर म सभी उसे सताते और नफरत करते पर नाना का दुर्व्यवहार सबस बढ कर था। अल्योशा को उस घर म हर समय यही लगता कि वह जैसे किसी अँधेरी कोठरी म कैद कर दिया गया हो और उस कोठरी मे काट खाने वाले जानवर भर हो।

दोपहर को जब नाना और दोना मामा दूकान म व्यस्त रहत या घर से बाहर रहते और नानी तथा मामियाँ अपने घरलू कामो म उलझी रहती तो अल्योशा नितात अकेला अनुभव करता। घर के बच्च भी उसे अच्छे न लगते और वह उनके साथ खेल-कूद म भी शामिल न हो पाता। तब अल्योशा खिडकी पर बठ कर गली की ओर निहारता रहता। सामने ही जेलखाना था। और जेल के चारो कोनो पर चार मीनारें थीं। वहाँ से उस बैरको के कभी भी दिखायी पड़ने थ। वह एकटक कैदियो को देखा करता।

यही था निझनी नोवगोराद का जीवन। अल्योशा जल्दी ही ऊब गया। यदि नानी न वहाँ के वातावरण से अल्योशा जल्दी ही ऊब गया। यदि नानी न होती तो शायद अल्योशा वहाँ जिंदा भी न बचता। इस झंझट भर घर

की उलझनों से समय निकाल कर नानी रोज अल्योशा को कहानियाँ सुनाया करती। एक प्रकार से नानी की कहानियाँ उसके लिए एकमात्र जीवन आधार थीं। इन कहानियों में ईश्वर, पादरी से वह मन ही मन परिचित हो गया था। उसे विश्वास हो गया था कि ईश्वर धरती पर ही रहता है और गाव गाव घूमता रहता है। इन कहानियों से ही उसने क्रूर जमींदारों और लुटेरे व्यापारियों की पहचान पा ली थी। अल्योशा इन कहानियों के माध्यम से यह भी जान गया था कि दुनिया के सभी लोग उसके नाना व मामाओं की तरह ही नहीं हैं, बल्कि दुनिया में कहीं कुछ भले लोग भी हैं।

इस प्रकार नानी की कहानियों से अल्योशा ने ईश्वर के होने की बात जानी और नाना ने घर के और बच्चों के साथ उसे प्रार्थना सिखाना शुरू किया। घर के और बच्चे अल्योशा से उम्र में बड़े थे और पढ़ना लिखना भी सीखते थे। इसलिए नाना की बतायी प्रार्थनाओं को वे बिना समझे ही रटने लगे।' लेकिन अल्योशा प्रार्थना का अर्थ भी समझना चाहता था, इसलिए उसे न तो जल्दी ही कुछ समझ में आया, न ही वह उन्हें याद कर सका। नाना ने समझा कि अल्योशा सब से मुर्खबुद्धि है। अतः वह अल्योशा पर नाराज हुआ।

इस बार उसकी पिटाई तो नहीं हुई पर उसे प्रार्थनाएँ याद कराने का भार उसकी मामी नातालिया पर सौंपा गया। नातालिया खुद डरपोक थी और बड़ी महीन आवाज में मिमिया कर बोलती थी। उसने अल्योशा को समझा कर कहा, 'कहो,'मेरे पिता जो स्वर्ग में हैं ...'

बीच में ही अल्योशा पूछता, 'इसके मतलब ?'

सहम कर मामी समझाती 'ऐसे सवाल नहीं करने चाहिए। ऐसा पूछना बुरा है। सिर्फ वही दोहराओ, जो मैं कह रही हूँ—मेरे पिता जो ...'

अल्योशा चिढ़ जाता, अड़ जाता। सवाल पूछना बुरा क्यों है ? जो बात समझ में नहीं आती उसे वह कैसे दोहराये। तब मामी फिर कहती 'समझ कर कहो, बहुत आसान तो है। बस, जो मैं कहूँ, कहते

जाओ। याद हो जायगा।'

अल्योशा की समझ मे कुछ न आया, न उसे प्राथना याद हुई। तव नाना ने डाटा, ऐ छोकरे, तू दिन भर आखिर क्या करता रहता है ? खेल ? तेरे चेहरे पर खरोच के निशान है। ये खरोच लगा सकता है और परमपिता ईश्वर को याद नही कर सकता ? प्राथना तेरे दिमाग म नही घुसती ?'

मामी वाली, 'इसकी याददाश्त अच्छी नही है।'

नाना ने कई वार सिर हिलाया, जसे खुश हुआ हो। वोला, 'मार खायगा ता दिमाग खुल जायेगा। क्या कभी अपने बाप स मार खाया है ? बोल !

अल्योशा खामोश रहा। तब अल्योशा की मा ने कहा, नही मैक्सिम इसे खुद कभी नही पीटता था। वह इस सन्ना मुझसे ही पिट जाता था।

क्यो ?' नाना ने ताज्जुब स पूछा।

माँ न बताया, 'वह कहता था कि मार से बच्चे कुछ नही सीख सकत।'

नाना क्रूर अट्टहास कर उठा, बोला, तेरा मैक्सिम ! वह तो निरा वेवकूफ था।

नाना की इस बात पर जान क्यो अल्योशा चिढ गया। घृणाभरी नजर से उसने नाना की ओर ताका। नाना ने नाती की नजर को देखा और चिढ कर वाला, 'तुझे बेंत पडेगी तो सव समझ म आ जायगा।'

अल्योशा का अभी बेंत से परिचय न था। वह सोचने लगा—यह बेंत क्या है ! शायद मार खाने की कोई चीज होगी। अल्याशा न जानना चाहा बेंत क्या है ? लकिन वह किससे पूछता। अतत साचा देखा जायगा।

अल्योशा ने अस्तवाखान म घोडो कुत्ता, बिल्लिया का मार खात दखा था। वहाँ पुलिस पारसिया को पीटती थी। लेकिन यहाँ ता सिर्फ बच्चे भी चुपचाप मार सह लते। पूछन पर कहते, नही चाट नहीं

नगी ।'

यह सुन कर अल्योशा चिंतित होता—इन्हे मार पडती है तो चोट क्या नही लगती ?

अल्योशा के मामा का बेटा था, शाश्का । उम्र म अल्याशा से बडा ही था । खूब शरारती । उसी स कभी कभी अल्योशा बातें करता था । एक दिन पूछा, 'कपडो पर तरह-तरह के रग कैस चढ जाते है ?'

शाश्का हँसा, उसके चेहरे पर शरारत झलकी । फिर बडे बुजुग की तरह गभीर होकर उसने कहा, 'कहने से नही समझोगे । रग कर देखना होगा ।'

अल्योशा बाल सुलभ उत्सुकता से भरा था । शाश्का ने कहा 'खाने की मज पर से वह सफेद चादर लाकर नीले रग से भरे टब म डुबाओ । सफेद कपडे पर रग अच्छा चढता है ।

आज्ञाकारी की तरह अल्योशा ने शाश्का की बात मानी । सफेद मेजपोश खींच कर फौरन रग भरे टब के पास पहुचा और मजपोश का एक कोना ही रग-भरे टब मे डुबा पाया था कि नाना की दूकान के नौकर सिगान ने देखा और झपट कर उसने अल्योशा के हाथ से मेजपोश छीन लिया । अल्योशा कुछ समझ न पाया । सिगान ने मेजपोश के रग-भीगे भाग को हथेलियो से रगडते हुए शाश्का का देखा, चीखा, 'अपनी नानी को बुलाओ फौरन ।' फिर अल्योशा स बोला, 'यह तूने क्या किया, नादान छोकरे ! जानता है, इसके लिए अब तुझे बेंत पडेगा ।'

अल्योशा की समझ मे कुछ न आया । उसने तो शाश्का के बताये अनुसार ही सब किया था । भागती हुई नानी आयी । यहा का दृश्य देख कर जाने क्यो उसके आँसू छलक आये । फिर अल्योशा की ओर करुण दृष्टि से देखा और सिगान की ओर घूम कर बोली, 'इसके नाना से कहने की जरूरत नही है । मैं ठीक कर लूगी ।

सिगान ने अथपूर्ण दृष्टि से देख कर कहा, खैर, मुझसे तो वह बूढा इस बार मे कुछ भी नही सुन पायेगा पर उस शाश्का से कहो वही चुगलखोर है ।

नानी ने घूर कर शाश्का को देखा जो खडा मुस्करा रहा था । फिर

नानी अल्योशा को खींच कर भीतर ले गयी।

उसी हफ्ते, शनिवार की शाम को। प्रार्थना से पहले रसोईघर में अल्योशा को बुलाया गया। वहाँ सभी खिड़कियां बन्द थीं, अँधेरा छाया था। चूल्हे के पास सिगान बैठा था। सूनी आँखों से उसने अल्योशा को घूरा। चिमनी के पास बैठ कर नाना बड़े इतमिनान से भिगोयी हुई बेंतों को ठीक कर रहा था। वह बेंतों को सीधा करता, हवा में झटकता, सीटी की धीमी आवाज होती और नाप नाप कर बेंतों को एक दूसरे से सटा कर रखता जाता। कई बेंतें थीं। वहीं अंधेरे में खड़ी थी नानी। सुंघनी नाक में ठूंस कर वह खीज कर बोली, 'निर्दयी, राक्षस! अपने मन की कर ले! तुझे खुदा समझेगा!'

नाना हल्के से मुस्कराया। कमरे के बीचोबीच बैठा शाश्का भिखारी की तरह रह रह कर रटता जाता—खुदा के लिए मुझे छोड़ दो, माफ कर दो।'

घर के अन्य बच्चे भी एक ओर दुबके सिकुड़े खड़े थे। अल्योशा यह सब एक अजनबी की तरह, एक नासमझ की तरह देख रहा था। उसको भी डर लगा।

तभी नाना ने एक लंबी बेंत हवा में उड़ाते हुए क्रूर हँसी के बीच शाश्का से कहा, हाँ तुझे जरूर माफ कर दूंगा। पहले बेंत खा लो। चलो, कपड़े उतारो।'

सब ओर सन्नाटा छा गया। कोई कुछ न बोला। सभी आतंकित थे।

तभी नाना गरजा 'शाश्का उठो, देरी मत करो।'

अल्योशा ने देखा। इसके बाद ही शाश्का उठा। बिना कुछ बोले उसने, जैसे पूर्वाभ्यास हो, चुपचाप अपना पाजामा खोला और उसे घुटनों तक खिसका कर पकड़ लिया और नाना के सामने बेंच पर झुक गया।

अल्योशा यह सब देख कर बुरी तरह डर गया। डर से उसके पाँव काँपने लगे।

तब सिगान उठा। एक बड़ी सी तौलिया लेकर उससे उसने शाश्का

को गर्दन व कंधे के पास से बेंच से बाँध दिया। तभी नाना ने गरज कर कहा,

देखो अल्योशा ! इधर आओ, पास म, सुन रहे हो न ? आज तुम जान जाओगे कि बेत लगाना क्या होता है। तुझे यह जान लेना जरूरी है। चलो इधर आओ हाँ, एक !'

कहते हुए नाना ने शाश्का के शरीर के नंगे भाग पर धीरे से एक बेत मारी।

शाश्का चीख पड़ा।

'नहीं,' नाना बोला 'इससे मजा न आया होगा, इस बार मजा ले।'

इस बार बेत के प्रहार से खून की लकीर उभर आयी। शाश्का दर्द से चीखता जा रहा था।

'बहुत अच्छे, और मजा लो।' कहते हुए नाना बराबर बेंत बरसाता रहा।

तभी शाश्का चीखा, 'मैं अब कभी ऐसा नहीं करूँगा। मुझे छोड़ दो। माफ कर दो। मैंने ही उससे मेजपोश रंगने को कहा था मैं कबूल करता हूँ।'

नाना हँसा, बोला, 'तो ठीक, अब मेजपोश के लिए लो।' और उसने फिर बेंत उठायी कि तभी नानी ने बढ़ कर एक हाथ से अल्योशा की बाँह पकड़ी और दूसरे से नाना का उठा हाथ थाम लिया और चिल्लायी, 'बहुत हो चुका। अब तो बस करो ! मैं तुम्हें अल्योशा को नहीं छूने दूँगी। नहीं, नहीं राक्षस !' फिर वह पागलों की तरह चीखने लगी, 'बारबरा, वारबरा, जल्दी आ।'

उसी क्षण अल्योशा की माँ आ उपस्थित हुई। जैसे कहीं आस-पास ही थी वह।

तभी नाना ने एक जोरदार धक्के में नानी को ढकेला और वह वहीं जमीन पर लुढ़क गयी। फिर नाना ने बाज की तरह झपट कर अल्योशा को पकड़ा। खींच कर बेंच पर ढकेल दिया। अल्योशा में भी जाने कहाँ से शक्ति आ गयी थी। बचाव के लिए अल्योशा ने

नाना पर हमला किया घूसा मारा, धक्का दिया, उसकी दाढी नो
उँगलियों म दात काटा। पर नाना की पकड से वह छूट न पाय
नाना ने पटक कर उसके चेहरे पर प्रहार किया। और खूँख
चीत्कार के साथ दहाडा, इसे कस कर बाँधो मैं इसे मार डालूगा।
तभी अल्योशा की माँ दौड कर बेंच के पास आयी और गिडगिड
कर नाना से बोली मेरे अच्छे पिता, माफ कर दो। इसे मेरे हवाले
कर दो।

नाना तो पागल हो रहा था। अपनी बेटी को भी एक धक्के, एक
झटके स ही दूर ढकल दिया और सडासड अल्योशा पर बेत बरसान
लगा।

तीन चार बेत के बाद ही अल्योशा बेहोश हो गया।
फिर वह कई दिनो बीमार रहा।

उस दिन जब अल्योशा की बेहोशी टूटी और होश आया तो उसने
सुना उसी कमरे म नानी और माँ म झगडा हो रहा था।
नानी ने नाराजी से माँ से पूछा, तूने उस बचाया क्यो नही ?'
माँ बोली 'मैं खुद बहुत डरी हुई थी।
नानी तडपी ओफ! तुझे यह कहते लाज नही आती ? तू जवान
है तन्दुरुस्त है फिर भी डर गयी ? मैं जो इतनी बूढी हूँ मो मैं ता
नही डरी। उसने मुझे जमीन पर पटक दिया था, नही ता '
तब माँ ने बडी विवशता से रो कर कहा, 'माँ, तू मुझे अब छोड
द। मैं इस घर स यहाँ के लोगो से बिल्कुल ऊब गयी हूँ।'
नानी पूर्ववत नाराज थी, मुश्किल तो यह है कि तेरे मन म
अल्योशा के लिए तनिक भी प्यार नही है, न तुझे इस अनाथ पर दया
ही आती है। तुझम उसके लिए ममता ही नही है।'
फिर दोनो देर तक लडती और रोती रही। अन्त मे माँ ने रो
कर कहा, 'अगर इस घर म अल्योशा के लिए जगह नही है तो मैं अब
कही चली जाऊँगी। यहाँ रहना तो नरक म रहने जसा ही है। अब
मुझम यह सब सहने की शक्ति नही है माँ!'।

नानी अब मुलायम पडी। द्रवित स्वर मे बोली, 'हाय, तू मेरे खून माँस की बेटी है।'

इसके बाद मा ने कुछ नही कहा। बस वह झटके से उठी और कमरे से बाहर चली गयी। नानी बडी देर तक बैठी रोती रही।

उस दिन अल्योशा को पहली बार मा अच्छी लगी। अल्योशा को अपनी माँ पर पहली बार दया आई और विशेषकर इसलिए कि उसने समझ लिया कि उसकी मा को उसी के कारण इस नरक जैसे घर मे रहना पडता है। लेकिन बीमार, बिस्तरे पर लेटा अल्योशा इसका कोई हल भी नही सोच पाया।

इस बीमारी म अल्योशा को अजीब अजीब अनुभव हुए। मा का नया रूप देखा ही। अचानक एक दिन नाना भी आया। अचानक, जैसे छत से टपक पडा हो। अपने बर्फीले हाथ को अल्योशा के सिर पर रख कर बोला, 'क्या हाल है छोकरे! तुम मुझ पर नाराज होगे! होना ही चाहिए।'

अल्योशा को नाना की शक्ल से ही नफरत थी। अगर वह स्वस्थ होता तो शायद नाना का मूह नोच लेता लेकिन हिलन-डुलने से दर्द होता था। नाना ने अपनी जेब से कुछ सेव निकाल कर अल्योशा के सिरहाने रखा और बोला, 'यह तेरे लिए है। फिर अल्योशा का माथा थपथपा कर कहा, 'शायद उस दिन तुझे कुछ ज्यादा पड गयी। लेकिन मैं क्या करता, तू भी तो पागल हो गया था। तूने मुझे नोचा-खसोटा तो मैं भी पागल हो गया था। लेकिन अगली बार हिसाब बराबर हो जायगा। अगली बार तुझे कम पडेगी। देख, इस घर मे जब मार पडे तो उसे मार मत समझना। घर के दूसरे बच्चे यह समझते ह। यही तो बच्चो के पालन पोषण का सही तरीका है।

अल्योशा कुढ कर चुपचाप नाना की बातें सुनता रहा। फिर उसी खाट पर बैठ कर नाना कहने लगा, 'छोकरे, यह मत समझना कि यह सब कोई नयी बात है। मुझे भी लडकपन म यह सब खूब सहना पडा है। मेरी तो जसी पिटाई होती थी, वैसी अब कहा होती है! लेकिन मार से फायदा भी हुआ। मैं एक गरीब विधवा का अनाथ बेटा था

और आज कितना नामी, होशियार, रंगसाजी का उस्ताद, कारीगर हूँ।'

कहते-कहते नाना की आँखें अभिमान से चमक उठी। आज वह अजीब आदमी बडी अच्छी तरह बोल रहा था। उसने कहना जारी रखा, 'तू तो यहाँ स्टीमर पर आया है। लेकिन जब मैं बच्चा था तब वोल्गा म नाव खेता था। कभी-कभी नाव को मीलो रस्सी से खींचना पडता था। उसी उम्र मे मैं तीन बार वोल्गा को नाप चुका हूँ। लगातार चार साल, करीब दो हजार मील का चक्कर, और मैं बडा होशियार नाविक हो गया था।

इसके नाना ने अपनी बेसुरी भाडी आवाज म एक मल्लाही गीत भी गाया और बहुत देर तक नाविक जीवन के किस्स सुनाता रहा। फिर अँधेरा होने पर वह अल्योशा को बार-बार प्यार करने के बाद वहा से चला गया।

उस दिन अल्योशा ने सोचा कि यह बूढा सचमुच उतना बुरा और क्रूर नही है। लेकिन उस दिन की मार वह कैसे भूलता!

नाना के जान के बाद एक एक कर के घर के सभी लोग आये और अल्योशा को खुश करने की कोशिश करते रहे। रात को सिगान भी आया और उसने अपनी बाँह सिकोड कर लाल निशान दिखा कर कहा, 'देखो, अब तो कम है, फिर भी कितना सूजा है। उस दिन जब तरा नाना तेरी जान लेने को उतारू था तब मैंने हाथ बढा कर उसकी बेंत यही रोकी थी ताकि बेंत टूट जाय। सो एक टूटी तो उसने दूसरी उठायी। पर इतनी देर मे तेरी नानी व माँ तुझे वहाँ से हटा सकती थी। लेकिन तज्जुब है, उन्होने तुम्ह बचाया क्या नही!'

अल्योशा सिगान को देखता चुपचाप सुनता रहा। फिर सिगान न इधर उधर देख कर कि वहाँ और कोई नहा है, धीरे स कहा, 'एक सलाह दूँ। अब आगे से जब मार पडे तो कभी भागने या झगडने की कोशिश मत करना। झगडने से दूनी मार पडती है। जब वह मारे तो उसी के मन पर सब छोड दे। तभी खैर है।'

अल्योशा ने पूछा, 'क्या वह मुझे फिर मारेगा?'

सिगान ने अधिकारपूर्वक कहा, 'जरूर मारेगा । बार-बार मारेगा ।'

लेकिन क्यों ?' अल्योशा ने जानना चाहा ।

तेरे नाना का यही तरीका है । मैं भी काफी भोग चुका हूँ । सिगान ने कहा और अल्योशा को नाना फिर राक्षस जसा लगने लगा।

लेकिन इस दिन से अल्याशा ने सिगान को अपना मित्र व हितैषी मान लिया ।

इस बीमारी से अच्छा होने के बाद एक दिन अल्योशा ने अपनी नानी से सिगान के बारे मे पूछा । तब नानी जरा भावुक हो कर कहने लगी, 'सिगान जब छोटा था, हमलोगो ने इसे पडा पाया था। अनाथ था । जाडे से सिकुडा सडक के किनारे पडा था । तेरा नाना तो पहल तयार न था, लेकिन मेरी जिद के कारण उसे घर मे रख लिया । मैने कहा कि मेरे जहा इतने बच्चे है, एक और सही । मैं पाल लूँगी । जानता है तू ? मेरे अट्ठारह बच्चे हुए और अगर सभी जिन्दा रहते तो आज यहा अट्ठारह परिवार होते, एक पूरा मुहल्ला ही अपना होता ।' फिर एक ठण्डी सास खीच कर बोली, 'लेकिन खुदा ने सभी अच्छो को बुला लिया और दुष्टो को छोड दिया । इसी स सिगान को पा कर मैं खुश हुई थी । इसी घर मे वह पला और देखो न, कितना अच्छा लडका निकला । तुम उस पर भरोसा कर सकते हो ।'

नानी की इस बात के बाद यत्न करके अल्योशा ने सिगान से अच्छी दास्ती गाँठ ली ।

कई दिनो बाद । एक दिन घर मे अजीब उथल पुथल मची । अल्योशा कुछ समझ न सका । घर के आँगन मे शराब के नशे में चूर मामा जैक चीख रहा था । वह रह-रह कर अपने बाल, नाक, भूरी मूछें और ओठ नोचने लगता । रह रह कर अपने हाथो अपने ही गालो पर तमाचे मारने शुरू किए ।

अल्याशा ने नानी को अकेला पा कर पूछा, 'नानी, मामा को क्या हुआ है ?'

नानी ने बुदबुदा कर कहा, 'अभी तू बच्चा है । बाद मे सब जान

जाएगा।'

अल्योशा को चैन कहाँ ? वह भागा भागा सिगान के पास गया। पूछा तो सिगान इधर-उधर देख कर रहस्योद्घाटन करने के लहजे में धीरे से कहा, तेरे मामा ने अपनी बीबी को इतना पीटा कि वह मर गयी। और जानते हो क्या हुआ ? दोनों साथ सो रहे थे। फिर बिना किसी खास कारण के ही उसने बीबी को पीटना शुरू किया। शायद शराब के नशे में था तभी तो मार मार कर मार ही डाला। तेरी मामी भली थी और इस घर में भलों का गुजारा नहीं है समझे ? कभी अपनी नानी से पूछना तो वह बतायेगी कि इन्होंने तुम्हारे बाप के साथ क्या-क्या किया था। वही बतायेगी, वह अच्छे दिल की बुढ़िया है। और तेरा बाप भी बडा भला आदमी था, बड़े कलेजे वाला आदमी था।

अपने बाप की यह बड़ाई सुन कर अल्योशा एक बार विचलित हो उठा। उसे अपना बाप याद आने लगा, तब उसका जी भर आया। तभी सिगान ने फिर कहा 'तेरी नानी को छोड़ कर मुझे इस काशिरिन परिवार के हर आदमी से नफरत है।

अल्योशा पूछ बैठा 'क्या मुझसे भी ?

तब हँस कर सिगान ने कहा 'तुम काशिरिन कहाँ हो ? तुम तो दूसरी ही जाति के हो, पेश्कोव हो तुम तो।

इस बात से अल्योशा को संतोष हुआ।

लेकिन सिगान उसका एकमात्र हितैषी ज्यादा दिनों जी न सका।

हुआ यों कि मामा जैक ने बढ़ई से एक बहुत बड़ा सा क्रास बनवाया था। लकड़ी का वह क्रास बहुत वजनी था। उसे जैक ने अपनी बीबी की कब्र पर लगाने को बनवाया था। उस दिन शनिवार था। एक शरारत करने के कारण अल्योशा को घर के और तीन बच्चों के साथ कमरे में बंद कर दिया गया था। उसी कमरे की खिड़की से अल्योशा ने देखा। दोनों मामाओं ने बड़ी मिहनत से क्रास को उठा कर खड़ा किया। क्रास काफी ऊँचा था। कई पड़ोसियों को बुला कर उनकी मदद से क्रास को मामाओं ने सिगान की पीठ पर लादा। सिगान को

उसे कब्रिस्तान तक ले जाना था। जैक क्रास का पिछला भाग पकडे था कि सिगान को सहारा रहे। सिगान शरीर से काफी मजबूत था लेकिन क्रास इतना वजनी था कि उसके पाँव काँप रहे थे। फिर भी किसी तरह क्रास लादे वह घर के बाहर गया।

और करीब आधे घटे बाद घर भर मे हल्ला-गुल्ला मचा। परेशान नानी इधर उधर भागने लगी। कमरे मे कुछ लेने वह आयी थी और कमरे का दरवाजा खुलते ही अल्योशा भाग कर बाहर आ गया। देखा कि रसोईघर की फश पर पीठ के बल सिगान पडा था। आँखें पथराई सी छत की ओर ताक रही थी, उसका सिर भीगा था, गले व मुँह मे बह कर खून जमीन पर आ रहा था। तभी मामा जैक ने भावशून्य आवाज मे कहा, 'यह फिसल गया था। फिसल कर गिरा तो क्रास इसी पर आ रहा। इसके चलते तो मै भी मरता, पर खुदा ने बचा लिया मुझे। इसे गाडी पर लाद कर लाना पडा।'

मामा माइक नाना को बुलाने दौडा।

अल्योशा डर कर एक मेज के नीचे छिप गया। तभी नाना, नानी, माइक, उसके बच्चे, अन्य पडोसी, सब एक जुलूस की तरह वहाँ आये। सिगान की यह हालत दखते ही नाना उछल पडा। झटपट अपना कोट उतार कर दूर फेंकते हुए वह चीखा, 'हाय! दुश्मनो! यह क्या किया? सिफ पाँच वर्षों मे अपनी तौल के बराबर रुपये यह हमारे लिए पैदा कर सकता था। तुम दोनो सिरफिरो ने इसे मार ही डाला न आखिर!'

फिर नाना ने हताश की तरह बेंच पर बैठ कर रोते स्वर मे कहा, 'इसे ही देख कर तुम दोनो का कलेजा फटता था न? यह तुम्हारी जीभ पर हड्डी की तरह गड रहा था न? इसकी कमाई के कारण ही तो तुम लोग परेशान थे। हाय, कितना होशियार कारीगर था सिगान! हाय सिगान, तुम्हारे साथ इन राक्षसो ने क्या किया? या खुदा, इन दुष्टो को सजा दे!'

सिगान की लाश पर झुकी नानी रो रही थी और चीख कर कह रही थी, 'हत्यारो, दूर हटो।'

फिर सिगान की अन्तिम क्रिया हुई। उसे बिना किसी शोरगुल के ही कब्रिस्तान मे गाड दिया गया और जल्दी ही सभी उसे भूल भी गये।

सिगान मर गया तो अल्योशा को लगा कि वह फिर अकेला हो गया।

सिगान के मरने के थोडे दिनो बाद।

एक रात नानी के साथ कम्बल के चार तह के नीचे अल्योशा लेटा था। न नानी को नीद आ रही थी, न अल्योशा को।

नानी अभी अभी प्राथना करने के बाद आ कर लेटी थी। नीद न आने से वह अभी भी धीरे धीरे कुछ बुदबुदा रही थी जिसे न समझ कर अल्योशा ने सोचा कि शायद नानी अभी भी प्राथना कर रही है।

थोडी देर तक ऊबने के बाद अल्योशा ने धीरे से कहा 'मुझे खुदा के बारे मे बताओ।'

नानी जैसे पहले से ही बताने को तैयार थी, बोली, 'खुदा वह स्वग के सुदर देश मे पहाडा के ऊपर रहता है। जानते हो, स्वग मे जाडा कभी नही आता, न वहाँ बफ गिरती है। इसलिए वहाँ फूल कभी नही मुरझाते। खुदा के फरिश्ते चारो ओर उडते रहते हैं।'

ज्यो ही नानी रुकी कि अल्योशा बोला, 'और बताओ।'

हा शायद सफेद कबूतर उड उड कर पृथ्वी की खबरें स्वग मे खुदा के पास पहुँचाते हैं। हम सब लाग जो कुछ करते हैं या दूसरे लोग जो करते हैं, सभी खबरें वहा पहुँचती हैं। और और यहाँ धरती पर हम सबो की फिकर के लिए एक फरिश्ता हर समय मौजूद रहता है। तुम्हारी, हमारी, तेरे नाना की, तेरे माँ की, सब की खबरें खुदा तक पहुँचती हैं। जैसे अपने ही फरिश्ते को लो, वह उड कर जाएगा खुदा से कहेगा कि अल्योशा ने अपने नाना को सताया है। तब खुदा कहेगा—अच्छी बात है बूढा उसे बेंत मार सकता है।

जो जैसा करता है, वैसा ही खुदा से पाता है।' कह कर नानी मुस्कराने लगी।

"क्या कभी तूने उस फरिश्ते को देखा है?' अल्योशा से पूछा।

'नही, किसी ने कभी नही देखा, लेकिन जानते सभी हैं।'

सुन कर अल्योशा की उलझन बढ गयी। इस घर मे हर समय जो कुछ होता रहता था, उससे उसका मन बुरी तरह ऊबता जा रहा था और उसका मन यह मानने को तैयार न था कि यह सब खुदा की जानकारी मे होता है। थोडी देर गभीरता से कुछ सोचने के बाद उसने पूछा,

'नानी, बता, क्या जैक मामा ने जो सिगान को क्रास से दबा कर मारा है, यह बात भी खुदा से कही गयी होगी? तब जक मामा का क्या होगा? क्या उसे सजा मिलेगी?'

उत्तर देने मे नानी के शब्द कांपने लगे, बोली, 'उसे सजा तो मिल ही रही है। देखो न उसकी क्या दशा है! तेरी मामी इसीलिए तो मर गयी। खुदा उसे माफ करे ठीक रास्ता दिखाये, वह नादान है।'

तभी अल्योशा चौक पडा। माइक मामा के कमरे से मामी नातालिया एकाएक रोती हुई चीख पडी—बचाओ, ऐ खुदा, मुझे इस नरक से निकालो!'

अल्योशा ने व्यथित हो कर नानी से कहा, 'मामी को शायद मामा ने पीटा है। तुमने सुना, वह रो रही है।

नानी ने फुसफुसाते से स्वर मे कहा 'हाँ सुन रही हूँ। तेरा यह मामा भी दुष्ट है। इसे भी खुदा सजा देगा। तेरे नाना के डर से रात को ही बीबी को पीटा करता है। वह बडा हत्यारा है और नातालिया बडी कोमल है, मुलायम। फिर भी अब औरतो की वसी पिटाई कहा होती है, जैसे पहले होती थी। पहले तो लगातार कई घट तक पिटाई चलती रहती थी, लगातार। एक बार ईस्टर के दिन मे तेरे नाना ने मुझे पीटा था, सुबह से रात तक पीटता रहा था। मैं तो मरन मरने हो गयी थी।'

अल्योशा ने देखा, बर्ई ओर से आग की लपटें आती, फिर वहा वाला धुआँ भर जाता। अब तक आग दूकान की ऊपरी छत तक पहुच गयी थी। लपटें दरवाजे के बाहर तक आ जाती थी। चारो ओर से धुआँ ऊपर उठ कर काले बादल की शक्ल ले लेता, फिर भी रास्ते की चमकती बर्फ की चमक मे कोई कमी नही आयी। यो सभी चीजो की शक्ल बदल गयी थी, पर चिमनी अब तक पहले जैसी ही खडी थी। खिडकी पर आग की लपटें ऐसे आवाज कर रही थी जैसे सिल्क के कपडे की रगड।

आग बढती रही और अपना काम करती रही। आग ने सारी दूकान को जला कर काली कर दिया था।

एक बडे बाला वाला कोट जा अल्योशा को पूरा ढँक लेता था, और एक जोडी जूता उसके हाथ आ गये। जूते पहन और कोट म अपने को लपेट कर अल्योशा सहन मे भागा। वहाँ तेज रोशनी म नाना मामा और नौकर ग्रेगरी के एक साथ चीखने स वह भौचक्का सा हा गया। उससे अधिक अल्योशा नाना को देख कर चौका। अपन भारी शरीर को कम्बल मे लपेटे नानी सिर पर एक बोरा रखे सीधी आग मे दौड रही थी। चारो ओर से हू हू धू धू जैसी आवाज करती आग जसे नाच रही थी। नानी उसी आग मे जाने कहाँ गुम हा गयी। तभी उसकी चीख सुनायी पडी 'सभी गधक-तूतिया मूर्खो भागा अब जरूर ही विस्फोट होगा।'

सुन कर एक ओर से नाना चीखा, बुढिया को बाहर खीच ला ग्रेगरी, नही तो वही कबाब हो जाएगी।'

उसी क्षण आग और धुएँ के बीच से काले गोले की तरह नानी प्रकट हुई। आधी बेहोश, जोरा स खाँसती हुई, झुकी हुई वह तूनिया का बडा सा घडा लिए थी। वह चीखी, 'घडे का पकडो, कोई इस सम्हालो देखते नही मैं जल रही हूँ।'

ग्रेगरी ने झटपट उस पर मे कम्बल खीचा। घडा छीन कर बाहर भागा। फिर आग से भरे दरवाजे की ओर बर्फ के टुकडे फेंकने लगा। वह जल्दी जल्दी बर्फ मे गडढा खोद रहा था, फिर उसी गडढे

'क्यो पीटा था ?'

सो अब याद नही, पर मार तो आज तक याद है।'

अल्योशा को आश्चर्य हुआ। नानी नाना से शरीर मे दूनी थी, फिर भी वह कैसे मार लेता था! उसने नानी से पूछा, 'क्या वह तुझसे मजबूत है ?'

मजबूत तो नही लेकिन मुझसे बडा है। वह मेरा पति है। मेरे लिए खुदा के बराबर। उसे मुझे पीटने का हक है और मुझे सहने का '

तभी अल्योशा एकदम से पूछ बैठा 'मेरी माँ इतनी उदास क्यो रहती है ? मुझे तो प्यार ही नही करती।'

नानी ने अल्योशा का सिर सहलाते हुए कहा, तेरी मा दुखी है बेटा, वह अपने से भी प्यार नही करती। लेकिन अब उसका इतजाम हो जाएगा।'

क्या इतजाम होगा ?'

तू बाद मे खुद जान जाएगा। अब सो जा।' कह कर नानी ने आगे बात न हो इसलिए खुद आँखे मूँद ली।

फिर अल्योशा को भी नीद आ गयी।

एकाएक सवेरा होने से कुछ पहले शोर गुल सुन कर अल्योशा की नीद टूट गयी। कमरे के बाहर नाना चीख रहा था— खुदा की हम पर नजर ही टेढी है। घर मे आग लगी है।'

चौंक कर नानी बिस्तरे से उठी और कूद कर बाहर भागी। वह चीखती जा रही थी— नातालिया बच्चा को सम्हाल !'

अल्योशा भी रसोईघर की ओर भागा। आँगन से उसकी खिडकी सुनहले धुएँ की लगती थी। मामा जक आधे कपडे पहने आँगन म या उछल रहा था जैसे आग की लपटें उसके पावो म लग रही हो। वह चीख रहा था—'जरूर यह मारव का ही काम है। हमे आग मे झोक कर खुद गायब हो गया।'

'चुप रह कुत्त।' नानी ने कह कर उसे धक्का दिया और वह गिरते गिरत बचा।

अल्योशा ने देखा, कई ओर से आग की लपटें आती, फिर वहां काला धुआं भर जाता। अब तक आग दूकान की ऊपरी छत तक पहुंच गयी थी। लपटें दरवाजे के बाहर तक आ जाती थीं। चारों ओर में धुआं ऊपर उठ कर काले बादल की शक्ल ले लेता, फिर भी रास्ते की चमकती बर्फ की चमक में कोई कमी नहीं आयी। यों सभी चीजों की शक्ल बदल गयी थी, पर चिमनी अब तक पहले जैसी ही खड़ी थी। खिड़की पर आग की लपटें ऐसे आवाज कर रही थीं जैसे सिल्क में कपड़े की रगड़।

आग बढ़ती रही और अपना काम करती रही। आग ने सारी दूकान को जला कर काली कर दिया था।

एक बड़े बालों वाला कोट जो अल्योशा को पूरा ढँक लेता था, और एक जोड़ी जूता उसके हाथ आ गये। जूते पहन और कोट में अपने को लपेट कर अल्योशा सहन में भागा। वहाँ तेज रोशनी में नाना, मामा और नौकर ग्रेगरी के एक साथ चीखने से वह भौचक्का सा हो गया। उससे अधिक अल्योशा नानी को देख कर चौंका। अपने भारी शरीर को कम्बल में लपेटे नानी सिर पर एक बोरा रखे सीधी आग में दौड़ रही थी। चारों ओर से हू हू, धू धू जैसी आवाज करती आग जैसे नाच रही थी। नानी उसी आग में जाने कहां गुम हो गयी। तभी उसकी चीख सुनायी पड़ी 'सभी गधक-तूतिया मूर्खो भागो अब जरूर ही विस्फोट होगा।'

सुन कर एक ओर से नाना चीखा, 'बुढ़िया को बाहर खींच ला ग्रेगरी, नहीं तो वहीं कबाब हो जाएगी।'

उसी क्षण आग और धुएँ के बीच से काले गोले की तरह नानी प्रकट हुई। आधी बेहोश जोरों से खांसती हुई, झुकी हुई, वह तूतिया का बड़ा सा घड़ा लिए थी। वह चीखी घड़े को पकड़ो, कोई इसे सम्हालो, देखते नहीं, मैं जल रही हूँ।'

ग्रेगरी ने झटपट उस पर से कम्बल खींचा। घड़ा छीन कर बाहर भागा। फिर आग से भरे दरवाजे की ओर बर्फ के टुकड़े फेंकने लगा। वह जल्दी जल्दी बर्फ में गड्ढा खोद रहा था, फिर उसी गड्ढे

मे उसने तूतिया का घडा गाड दिया । उधर नाना बदहवास सा लगा तार संज्ञाहीन हो रही नानी पर बफ छिडक रहा था । तभी एकाएक चौक कर नानी दरवाजे की ओर भागी । बाहर कुछ लोग इकटठे हो गये थे । नानी ने रोते स्वर म उनसे कहा, प्यारे पडोसियो, हमारी मदद करो । सामान वाला कमरा बचा लो, अगर उसमे आग पहुँच गयी तो गली के किसी मकान की खर नही । छत को तोड कर घास के गटढरो को बाहर खीच लो । खुदा मदद करेगा, भला करेगा ।'

फिर नानी ने ग्रेगरी व जैक मामा से कहा ग्रेगरी कुछ बफ के टुकडे ऊपर भी फेंको । जैक, बेकार मत घूमो, इ हे कुल्हाडी दे दो, इन लोगो की मदद करो ।'

अल्योशा को लगा जसे आग से लडने की एकमात्र जिम्मेदारी बस नानी की ही हो, सभी दूसर तो बेकार इधर उधर भाग दौड करक बस शोर कर रहे थे । अल्याशा को लगा कि नानी खुद जसे आग का लपट हो । लपटो के बीच वह दौडती, जलती और दौडती, जस चारा ओर वही दिखाई पडती—दूसरा को पुकारते, मदद देते रास्ता बतात चीजें हटाते, जसे वह पागल हो गयी थी ।

अस्तबल से एकाएक एक लपट की तरह छूट कर घोडा बाहर भागा । उसके पीछे, पकडो पकडो चिल्लाता नाना भागा ।

नौकरानी इर्जेनिया न नातालिया मामी और बच्चो को बाहर निकाला ।

बाहर से नाना चीखा 'अल्योशा वह बदमाश कहाँ है ?'

अल्योशा सीढी के नीच छिपा था । वह घर म हो रहे हगामे का एक तमाशे की तरह देख रहा था । उसे मन मे हल्की खुशी हुई कि अच्छा ही हुआ कि हफ्ते भर पहले मामाओ से लड कर उसकी माँ कही चली गयी थी, नही तो आज वह भी यहाँ जल जाती ।

उसी समय छत जल कर एक भीषण आवाज के साथ गिरी और अकेले छत के कोने आकाश के नीचे खडे रह गये । तभी घर के भीतर भयानक धडाका हुआ और आग की लपट एक साथ चारो ओर दौड गयी । एक अजीब दुर्गंधपूण धुआँ चारा ओर फल गया और सबा की

आँखो म गडने लगा। लोग भाग भाग कर आग पर बर्फ फेंक रहे थे।
अल्योशा सीढी के नीचे से भाग कर बाहर गया। तभी एक तज घाडे पर सवार, पीतल का चमकदार टोप पहने, एक सिपाही ने आ कर अपनी चाबुक को मडका कर, डपट कर, चिल्ला कर कहा, हटो सब लाग यहाँ से।'

और देखते देखते पीतल की टोपियो वाले बहुत से सिपाही वहा आ गये। उन्हाने आग बुझाने मे तत्परता दिखायी और आग पर काबू भी पा लिया। धीरे धीरे आग बुझने लगी। फिर आग बुझ गयी तो भीड को हटा कर टोप वाले यो चले गये जैसे कुछ हुआ ही नही।

नानी रसोईघर म गयी। पीछे-पीछे अल्योशा भी गया। नानी थक कर जले फश पर ही धम् से बैठ गयी।

आग का यह दृश्य देख कर अल्याशा काफी उत्तेजित हो रहा था। नानी न समझा कि नाती डर गया है। उसने कहा, 'अब सब ठीक हो गया। अब मत डरो।'

अल्योशा कुछ कहता कि तभी बाहर से नाना की आवाज आयी, 'क्या भीतर हो ?'

हाँ।' नानी ने कराह के साथ कहा।

क्या तू बहुत जल गई ?' नाना ने साधारण ढग स पूछा।

ज्यादा नही। थाडा।' नानी बोली।

क्षण भर बाद मोमबत्ती ले कर नाना भीतर आया। वह उस राशनी मे काला भूत सा लग रहा था। उसे देख कर अल्योशा को हसी आ गयी। उसकी ओर देख कर नाना बोला, जैसे कोई बढिया दश्य दख कर प्रसन्न हुआ हो। कहा, 'शुरू से देखा न ! कैसी आग लगी थी ! और देखा न कि तेरी नानी ने क्या-क्या किया ? यह बूढी और बेकार है लेकिन कभी कभी खुदा इसे भी काम का बना देता है।'

नानी ने कुढ कर मुँह फेर लिया।

तब नाना ने अपनी स्वाभाविक कर्कश आवाज मे कहा, 'यहाँ क्यों बठी है ? जा देख, तेरा वह सपूत जैक सीढी पर बैठा चीख रहा

है । वह कहता है कि माइक ही आग लगा कर कहीं चला गया है, पर मैं समझता हूँ कि यह सब उस बेवकूफ ग्रेगरी की ही लापरवाही से हुआ होगा । कुछ भी हो, अब ग्रेगरी से पिण्ड छुडाना ही पडेगा । वह बेकार आदमी है । फिर अपनी जली फटी कमीज उतारने हुए क्षण भर को रुक कर बोला आग लगाना कितनी बडी बदमाशी है ! जिसने भी यह किया हो उसे सजा मिलनी चाहिए ।'

तभी अल्योशा चौंक पडा । नानी भी चौंकी और उठ कर बाहर की ओर भागी । घर में जैसे फिर कोई हगामा शुरू हुआ । रह-रह कर एक भयानक आवाज आती, जैसे कोई बुरी तरह कराह चीख रहा हो । बीच बीच में जैक और ग्रेगरी की भी आवाज आती । नाना मोमबत्ती लिए बाहर लपका । अँधेरे में खडा अल्योशा नानी की आवाज सुन रहा था । नानी ग्रेगरी से कह रही थी, 'चूल्हे में आग जलती रहे, पानी गरम करते रहो ।

फिर आग !

अल्योशा भाग कर बाहर आया । देखा नाना और जैक बिना कुछ समझे ही इधर उधर भाग रहे थे । नानी कभी इस कमरे में जाती कभी उस कमरे में । सब जला, गिरा पडा था उसी में वह दौड रही थी ।

अल्योशा ने जा कर ग्रेगरी से पूछा, 'अब क्या हुआ ?

जलते चूल्हे पर केतली रखते हुए ग्रेगरी ने धीरे से कहा, तेरी नातालिया मामी को बच्चा हुआ है ।'

अल्योशा आश्चर्य में ग्रेगरी को ही देखता रहा । केतली चढा कर वह मुडा तो अल्योशा ने देखा कि उसके चेहरे पर कालिख की पर्त जमी थी । उसके चश्मे का एक शीशा टूट गया था । और खाली फ्रेम से झाकती उसकी लाल आख घाव की तरह लग रही थी । वह बोला तेरी नानी के हाथ जल गये हैं लेकिन उसको किसी को फिक्र नहीं है । अपनी मामी का कराहना सुन रहे हो ? जब आग लगी तो वह गर्भवती औरत डर से बेहोश हो गयी थी । इसी घबराहट में शायद बच्चा ' फिर रुक कर आकाश की ओर देख कर बडे

ठइ स्वर मे बोला, 'हर औरत माँ है ।'

उसी समय शराब के नशे मे झूमता, बडबडाता मामा माइक कहीं मे आ गया। उसे देख कर अल्योशा का मन नफरत से भर गया। वह नानी के कमरे मे आ गया जो पूरा नही जला था। खाट और विछौना बच गया था। उसी पर चुपचाप अल्योशा लेट गया। थोडी देर बाद उसे नीद आ गयी।

लेकिन जल्दी ही कई लोगो के आने-जाने की आवाज से वह जग गया। उठ कर वह नाना के कमरे मे गया। सबेरा हो रहा था। रोशनी भी थी। नाना के कमरे मे कई लोग थे। कुछ पादरी, कुछ फौजी कपडे पहने, कुछ पडोसी। वे सभी गभीर, शात बैठे थे। नाना कमरे मे चुपचाप खडा था। दरवाजे पर अपना हाथ पीछे बाधे जक तन कर खडा था।

अल्योशा को देखते ही नाना फुफकार उठा, 'इस छोकरे को ले जा कर कमरे मे बद कर दो, यह यहाँ क्यो आया ?'

अल्योशा डरा, क्या उससे कोई गलती हुई है, लेकिन वह तो सो रहा था।

तभी वहा से चलने का इशारा करते हुए मामा जैक कठोर हाथो ने अल्योशा की बाँह पकड कर ढकेलते हुए नानी के कमरे म ले चला।

कमरे मे ला कर उसने अल्योशा को खाट पर ढकेल दिया।

अल्योशा कुछ भी समझ न पा कर प्रश्न भरी निगाहो से मामा जैक को देखने लगा।

जैक ने अल्योशा को लिटा कर उस पर चादर डालते हुए कहा 'चुपचाप सो जा, नही तो खामोश लेटा रह बाहर मत आना तेरी नातालिया मामी मर गयी है।'

'नानी कहाँ है ?' अल्योशा ने पूछा।

'उधर ही है।' कह कर झटके से जैक बाहर निकल गया।

मामी भी मर गयी! अल्योशा लेट कर सोचने लगा। यह क्या तरीका है। जब कोई पैदा होता है तो कोई मरता जरूर है। उसकी

माँ को जब बच्चा हुआ था तो उसका बाप मरा था। आज आग लगी और बच्चा हुआ तो मामी मर गयी। ऐसा क्यों होता है? लेकिन अल्योशा को इसका उत्तर कौन देता!

अल्योशा को डर लगा। वह चुपचाप पड़ा खिड़की से बाहर के सन्नाटे को देख रहा था। इस समय उसे फिर सिगान की मौत की याद आ रही थी।

थोड़ी देर बाद नानी कमरे मे आयी और दरवाजा बन्द करके प्रार्थना की मूर्ति के सामने खड़ी हो कर बच्चों की तरह रोने लगी, 'मेरे हाथ जल गये हैं, बुरी तरह जल गये हैं।'

नानी अल्योशा को जगा न देखे, इसलिए अल्योशा ने धीरे से चादर से चेहरा ढाक लिया।

वह लगातार सोच रहा था—इस घर म क्या क्या होगा? घर म आग लग गयी, नानी के हाथ जल गये मामी मर गयी।

उधर नानी रो रो कर प्रार्थना कर रही थी—'मेरे नासमझ बेटों को अक्ल दे, ऐ खुदा! रहम कर।'

और नारकीय अनुभव

नाना के घर मे आग लगने से अब वह घर रहने लायक नही रह गया था। उसे फिर से बनवाने और मरम्मत कराने मे बहुत पसे लगते जो अल्योशा के नाना के सामथ के बाहर की बात थी। रगसाजी की दूकान तो बद हो ही गयी थी, अब खर्चे की भी दिक्कत पड़ने लगी थी। जिसके कारण नाना और मामाओ मे हर क्षण झगडा होता रहता। हर समय किचकिच मची रहती। बस, एक बेचारी नानी ही थी जो शात इधर उधर भागती, सबो को समझाने-बुझाने का प्रयत्न करती रहती थी। अल्योशा की माँ कभी कभी दिखायी पड जाती, लेकिन वह इतनी बुझी बुझी और उदास होती कि कोई उससे न बोलता, न वह ही किसी से कुछ कहती-सुनती।

नाना ने अपना उपेस्की स्ट्रीट वाला पुराना जला मकान बेच कर अब पोलवाया स्ट्रीट म एक दूसरा मकान ले लिया था और सभी लोग वहीं जा कर रहने लगे थे। पुराने, गन्दे, लाल दीवारो वाले रद्दी मकान से यह नया मकान काफी अच्छा था। बडा भी था, दो मजिला। नीचे के हिस्से मे एक शराब बेचने वाला रहता था, वही उसका शराबखाना

भी था । ऊपर के हिस्से मे काशिरिन परिवार फैल कर बस गया ।

एक दिन इसी नये घर मे एक घटना घटी ।

शाम को नाना अल्योशा को प्राथना की एक किताब पढा रहा था । जब तक अल्योशा को नाना ने अक्षर पहचानने योग्य बना दिया था । अब हर समय वह उसे प्राथनाएँ ही सिखाने मे व्यस्त रहता था ।

उस समय नानी तश्तरियाँ साफ कर रही थी । तभी उछलता हुआ जैक मामा आया और उसने नाना से कहा—'माइक लडने पर उतारू है । उसने खिडकी तोड डाली है और अब तुमस लडने आ रहा है ।'

नाना ने क्रुध हो कर उत्तेजित स्वर मे नानी को सुना कर कहा, 'सुना ? तेरा पूत अपन बाप को मारने आ रहा है ! कैसा खराब समय आ गया है ! फिर जैक की ओर सिर घुमा कर बोला, 'मैं तुझे भी समझता हू । तू कम नही है । मैं जानता हूँ कि बारबरा का दहेज हडपने के लिए ही तुम सब यह हगामा कर रहे हो ।'

मामा जक का छोटा सा उत्तर था 'मैं क्यो चाहूँगा ?'

नाना वैसे ही हुँकार उठा, मैं तुझे खूब पहचानता हूँ । जानवर ! तूने ही माइक को शराब पिला कर इस हालत मे पहुँचाया है । मेरी औलाद मुश्री से '

मुह फुलाए जक मामा चला गया, फिर सब खामोश । रात होने लगी थी ।

अल्योशा जा कर बिस्तर पर लेट गया । वह सोचता रहा कि इन तमाम झगडे का सबध कही न कही उसकी मा से है । लेकिन मा तो इस घर म ज्यादा रहती भी नही । जाने कहाँ रहती है । बस कभी कभी दिख जाती है, क्षण, दो क्षण को । उसन इस घर के लागो क साथ रहने से इकार कर दिया है । फिर उसे ले कर झगडा क्यो होता है ?

माँ के ही बारे म सोचता हुआ अल्योशा जसे दिवास्वप्न देख रहा था । एकाएक वह चौक पडा । बरामदे मे और सडक पर शोर हो रहा था । अल्योशा ने बाहर आकर देखा—नाना, मामा जैक और

शराबखाने का मालिक माइक मामा को पकड़ कर ढकेलते हुए बाहर से भीतर आ रहे थे। माइक उनसे उलझ रहा था और बदले मे लात घूसे भी चलाता था।

बाहर सारी गली तमाशबीनो स भर गयी थी। गली के हर घर की खिड़कियो से सिर निकाले औरतें झांक रही थीं। इस पोलवाया स्ट्रीट मे आये नाना को अभी साल भर भी नही हुआ था, फिर भी यह परिवार बहुत बदनाम हो गया था। इस घर मे हगामे की कमी न थी और जब कुछ होता, लोग गली मे कहने लगत—काशिरिनो के यहाँ फिर कलह हो रही है।

उस समय माइक को भीतर पहुँचा कर शराबखाने के मालिक न बाहर जा कर जमा भीड स जान क्या कहा और लोग तितर-बितर हो गये। माइक मामा एक स्टूल पर बैठा लबी लबी साँस ले रहा था।

अल्योशा भी बाहर गली मे जा कर घूमने लगा। घर का यह सब हगामा उसे अच्छा न लगता। इसीलिए वह गली मे घूमने चला गया।

थोडी देर बाद जब अल्योशा वापस आया तो घर की हालत ही बदली हुई थी। मामा माइक घर भर म दैत्य की तरह उछल रहा था। घर भर म सब सामान टूटा बिखरा था। स्टूल, बेंच, केतली, चूल्हा, खिडकी व दरवाजे के पल्ले भी टूटे पडे, बिखरे थे। क्रोध स भरा लेकिन अपने को किसी तरह रोके नाना खिडकी पर खडा आग उगलती आखो से अपनी सम्पत्ति का यो नाश होते देख रहा था। एक कोने म खडी, हाफती नानी रह-रह कर पुकारती, 'ओफ, माइक, तुझे क्या हो गया है ?'

रह रह कर शराबी माइक मामा नानी को भी मोटी भद्दी गाली दे देता।

अल्योशा यह सब देख कर डर गया। डर कर वह नानी के पास जा कर खडा हो गया।

मामा माइक झूमता झामता बाहर निकल गया।

अल्योशा को लगा—चलो किस्सा खतम हुआ ।

तभी एक इंट का टुकडा ऊपर की खिडकी से आकर नानी के पास मेज पर गिरा । देख कर नाना चीखा, 'अरे जानवर की औलाद, माइक क्या तेरी आँखें फूट गयी है ? निशाना खाली गया रे !'

नानी बढ कर नाना का हाथ पकड कर खींचते हुए बोली, 'तुम्हें क्या हो गया है ? वह तो पागल हो गया है । उसे साइबेरिया जाना पडेगा ।'

अपने पाव पटक कर टूटी आवाज मे नाना ने कहा, 'उसे मुझे मार ही डालने दो ।'

नीचे से माइक लगातार ढेले फेंक रहा था । शिकारी की तरह एक पाव आगे बढा कर नाना खडा था उसके हाथ म लोहे की एक छड थी। उसने नानी को धक्का दे दिया ।

दरवाजे के पास दीवार मे एक खिडकी थी । माइक ने उसे तोड डाला था । नानी ने बढ कर उसी से सिर बाहर निकाला और चीखी माइक भाग जा खुदा के लिए भाग जा, ये सब तुझे मार डालेंगे । तेरे टुकडे कर देंगे । भाग जा ।'

तभी कोई भारी चीज उड कर आयी और नानी के सिर से टकरायी । गहरी चोट लगी । नानी गिर पडी, लेकिन पुकारती ही रही 'माइक माइक, भाग जा ।'

अल्योशा ने बढ कर नानी को सम्हाला और सहारा दे कर ला कर नाना के कमरे मे पहुँचाया । नाना ने द्रवित हो कर नानी पर झुक कर पूछा, 'कोई हड्डी टूटी क्या ?'

बिना आँखें खोले लेटी नानी ने कराह के साथ कहा, 'लगता है टूटी होगी । लेकिन लेकिन माइक का क्या हुआ ?'

नाना फिर हुँकार उठा, 'होश म बातें करो । मुझे भी क्या उसकी तरह ही जगली जानवर समझ रखा है ? उसे रस्सी से बाँध दिया गया है । अब वह शात है । देखो, उपद्रव उसी ने शुरू किया था । तेरी सभी औलाद एसी ही है । तेरे दोनो बेटे मुझे मार डालना चाहते हैं ।'

कराह कर नानी बोली, 'ओह   तो उन्हे दे दो न, जो वे चाहते हैं।'

नाना गरजा, 'चुप रह चुडैल ! सोचा भी है कि वारवरा का क्या होगा ?'

'वारवरा अपने लिए रास्ता चुन लेगी।' नानी फुसफुसायी।

नाना क्रोध मे उछलता, नानी को गालिया देता बाहर चला गया।

उसी रात सोते समय मैंने नानी से कहा 'नानी, क्या घर मे मा के कारण ही झगडा होता है ?'

नानी बोली, 'नहीं, वे सब स्वभाव से ही झगडालू और बुरे हैं। तेरी मा तो उनसे कभी बोलती ही नही। उन्हे तो लडने-झगडने को बस कोई बहाना चाहिए। सो तेरी मा को ही आजकल बहाना बना रखा है।'

माँ आजकल कहाँ रहती है ? दिखती नही।'

हा   अब वह और नहीं दिखेगी। तभी तेरे मामाओ का दिल ठण्डा होगा।'

अल्योशा नानी की बात का मतलब नही समझा। अत पूछा, क्यो कही और चली जायगी वह ?'

नानी ने टालना चाहा, बोली, 'बाद मे तुझे सब पता लग जायेगा।'

अल्योशा ने जिद पकड ली। पूछा, 'बताती क्यो नही ? बाद मे क्या पता लगेगा ?'

तब बहुत गभीर हो कर नानी ने कहा, 'इस घर मे उस गरीब का गुजारा नही हो सकता। उसकी दूसरी शादी होगी। वह अपने नये पति के साथ चली जायेगी। लेकिन तू मेरे पास ही रहेगा।'

फिर नानी कुछ न बोली। अल्योशा भी गभीर हो गया। सोचने लगा। उम्र मे छोटा होने पर भी वह दूसरी शादी का मतलब समझता था। वह माँ की समस्या को ले कर देर तक सोचता रहा। माँ की दूसरी शादी ! दूसरा पिता ! बहुत सी बातें अल्योशा के दिमाग

म घूमती रही। अपने मामाओं पर उसे एक बार फिर बड़ा गुस्सा आया। मामाओं के कारण ही तो मां को दूसरी शादी करनी पड़ेगी।

उस रात अल्योशा सो न पाया। रात भर दुनिया भर की बातें सोचता रहा। एकाध बार नाना से कुछ पूछना कहना चाहा, पर नानी नहीं बोली। आंखें मूंदे पड़ी रहीं। पता नहीं, सो गयी थी या सोने का बहाना किये थी। सो अल्योशा अकेला ही जगा बहुत कुछ सोचता विचारता रहा।

दूसरे दिन अल्योशा बहुत परेशान व खोया रहा। दिन भर उसे अपने मामाओं पर गुस्सा आता रहा। उस दिन वह रह रह कर मामाओं को परेशान व तंग करने की मन ही मन योजनाएँ बनाता रहा। लेकिन हंगामे व मारपीट के डर से कुछ ज्यादा न कर सका। एक बार दोपहर को छत पर चढ़ कर उसने चिमनी में ढेर सारी मिट्टी भर दी। जैक मामा के लिए रखे खाने के सूप में मुट्ठी भर नमक डाल दिया। शाम को नशे में धुत् पड़े मामा माइक के कान में कागज की नली से खूब बालू फूंक दी।

ऐसे ही कामों से वह उस दिन भर अपना गुस्सा उतारता रहा।

नानी ने ठीक ही कहा था।

मां दूसरी शादी करके अपने नये पति के साथ कहीं चली गयी। कहां गयी, यह अल्योशा से किसी ने नहीं बताया। इस विषय में जैसे सभी अल्योशा से बातें छिपाना चाहते थे। अल्योशा पहले तो थोड़ा परेशान हुआ फिर मन को समझा कर शांत हो गया कि जाने दो, मां उसे प्यार भी नहीं करती थी। अच्छा हुआ वह चली गयी।

सचमुच मां के जाने के बाद से घर में लड़ाई-झगड़े का हंगामा भी बन्द हो गया।

उसी साल बसन्त में दोनों मामाओं ने अपनी अलग अलग दूकानें खोल लीं। जैक ने शहर में और माइक ने नदी किनारे। फिर दोनों वहीं रहने लगे। उनके जाने के बाद घर में सचमुच शान्ति हो गयी। नाना भी अब पहले की तरह न था, वह भी बदल कर एक भला इन्सान

बन गया था। अपने खाली समय मे वह अल्योशा का प्रार्थना की किताबों से कुछ पढ़ाता और प्रार्थनाएँ रटवाता। नाना इतना सीधा हो गया था, जैसे उसे मार-पीट, लड़ाई-झगड़ा आता ही न हो।

एक दिन सवेरे जब अल्योशा उठा तो उसे बरामदे मे माँ की आवाज सुनायी पड़ी। कूद कर अल्योशा बाहर आया। माँ ने उसे देखा और हल्के से मुस्करायी।

उस समय सभी चाय पी रहे थे। नाना एक नए आदमी से बातें कर रहा था जो माँ की बगल मे बैठा था। अल्योशा समझ गया कि इसी से माँ ने शादी की है।

माँ को देख कर अल्योशा थोड़ा उत्तेजित हो उठा था। भाग कर वह नानी के पास रसोईघर मे गया जो सबो के लिए नाश्ता तैयार कर रही थी। अल्योशा को देखते ही नानी बोली, 'रात को तेरी माँ अपने पति के साथ आयी है। देखा, तूने ?'

अल्योशा ने हाँ की मुद्रा मे केवल सिर हिला दिया।

थोड़ी देर बाद अचानक पूछ बैठा, 'नानी, क्या ये लोग अब यहीं रहेंगे ?'

'नहीं रे, बस दो चार दिनो मे चले जाएँगे। तेरा नया पिता बड़ा अफसर है। ज्यादा दिन वह रह नही सकता।'

अल्योशा ने सुन लिया और जल्दी ही कोशिश करके दूसरी बातो मे अपना मन उलझाने लगा।

अल्योशा के लिए मा के आने से कोई विशेष अन्तर न आया। पर चाह कर भी वह घर मे माँ की उपस्थिति की बात भुला न पाता। कभी-कभी मा के पास जाने का मन होता लेकिन वह अपने को रोक लेता—माँ जब खुद नही बुलाती तो अपने से वह क्यो जाये ? और माँ के साथ आया उसका नया पति जाने क्यो अल्योशा को बिल्कुल ही अच्छा न लगा। अल्योशा का एक बार भी उसकी ओर देखने का जी न होता। इसका एक कारण भी था

इस बार जब से माँ आयी है, उसी दिन से वह अनुभव कर रहा

था कि माँ पहले से भी अधिक उदास और दुखी रहती है। उसका चेहरा पीला पड गया है आँखें जसे गडढे म धँस गयी है। शायद माँ इस शादी से प्रसन्न नहीं है।

मा से कोई विशेष लगाव न रहन पर भी अल्योशा को माँ का यह दुखी चेहरा देख कर उद्विग्नता हुई। वह मन ही मन चिढा, लेकिन क्या करे, यह समझ मे नही आया। अन्तत एक वार उसने नानी के सामने अपना मन खोला 'नानी, मा क्या खुश नही है ?

'लगता है खुश नही है। लेकिन क्या किया जाय! कुछ के भाग्य मे खुशी होती ही नही। खुदा की मरजी! लेकिन शायद कुछ दिनो में ठीक हो जाय।'

अल्योशा को नानी के भरोसे वाले शब्दो पर विश्वास नही हुआ।

वल्कि उसके मन की नफरत और बढ गयी।

और दो दिनो बाद ही अल्योशा को अपना गुस्सा उतारन का अपने आप मौका मिल गया।

अल्योशा की माँ और उसके नये पति मे किसी बात को ले कर कहा सुनी हो गयी। फिर बात बढ गयी और माँ के पति ने माँ को पीटा। लपट वपट मे मा धक्का खा कर गिर पडी तो उसके पति ने उसकी छाती पर ठोकरो से प्रहार किया।

अल्योशा यह सब पहले तो दूर से देखता रहा कि फिर एकाएक नफरत से उसके सारे शरीर मे आग की लपटें सी निकलने लगीं। उस पर जसे वहशीपन सवार हो गया। लपक कर वह रसोईघर म गया और गोश्त कूटने वाला चाकू उठा लाया और पीछे से कूद कर वह चाकू मा के पति की कमर मे घुसेडने को वार कर बठा।

सात साल के लडके मे ताक्त ही कितनी थी! वह वार तो कर बैठा पर चाकू 'शत्रु' के कमर मे घुस न सका। नोक भर लगी और थोडा खून बहा।

नाना ने लपक कर अल्योशा को पकडा पीटा, और कमरे म बद कर दिया।

दूसरे दिन जब अल्योशा को कमरे से निकाला गया तो उसने सुना

कभी-कभी नाना नाती को अपने बचपन की कहानियाँ सुनाता। उन कहानियो म प्लेग, हैजा, आगजनी, हत्या, मौत, लूटपाट, पागल, साधू और जमीदारा की चर्चा होती। नाना नाविक-जीवन की बातें भी खूब रस ले-लेकर बताता।

एक दिन नानी और शराबखाने की मालकिन मे झगडा हो गया। नानी ने अपनी ओर स झगडा बचाया, लेकिन उसने नानी पर एक गाजर फेंक दिया। इस पर भी उसे सिफ 'बेवकूफ' कह कर नानी वहाँ से हट गयी।

लेकिन अल्योशा से शराबखाने की मालकिन का यह दुर्व्यवहार सहा न गया। उसने उससे बदला लेने की योजनाएँ बनायी। सोचा, उसकी बिल्ली की दुम काट दी जाय। उसके कुत्ते को भगा दिया जाय। उसकी मुर्गियो का मार डाला जाय। उसके पीपे खोल कर शराब बहा दी जाय। लेकिन अन्तत यह सब योजनायें उसे मजेदार नही लगी। लेकिन वह उस औरत पर बराबर नजर रखता रहा।

एक दिन जब वह औरत दूकान मे गयी तो अल्योशा ने सीढी का दरवाजा बन्द करके उसमे ताला लगा दिया। और जा कर शान स नानी से बताया। सुनते ही नानी उसे मारने दौडी। चाभी छीन कर उसने जा कर ताला खोल कर अल्योशा की कैदी को मुक्त किया। फिर लौट कर बोली, 'बडो के मामले मे तू दखल न दिया कर। बडे जो कुछ करते हैं, उसका हिसाब खुदा रखता है।

नाना न भी कहा, 'हा, खुदा सब देखता है, जानता है। लकिन जब आदमी पाप करते ह तो वे बाढ मे बहा दिये जाते हैं या शहर जला कर नष्ट कर दिए जाते हैं। अकाल और महामारी होती है। यह खुदा तो सिर पर लटकती तलवार है।'

अल्योशा यह सब सुनता और समझता कि शायद नाना और नानी क खुदा दो तरह के हैं। दोनो प्राथनाएँ करते लेकिन दोनो की भावनाएँ भिन्न भिन्न थी।

एक दिन नाना ने बडी भक्ति की मुद्रा मे प्राथना के समय कहा,

बीमार नाना ने गिडगिडा कर नानी से कहा, 'तुम मुझे शह देती हो, चीनी क्यो नही देती ? देख लेना अब मैं मर जाऊँगा।'

नानी ने रोका एसा नही कहना चाहिए।'

थोडी देर चुप रह कर नाना कुछ सोच कर बोला, 'बारबरा तो अपन रास्ते गयी अगर जब और माइक भी फिर से शादियाँ कर लें तो '

नानी ने फिर रोका, तुम चुप नही रहोग क्या ?'

नाना आज्ञाकारी की तरह चुप हो गया।

लेकिन अब नाना अपना सारा समय अल्योशा को पढाने म लगाता। जसे यही एकमात्र काम अब उसक लिए बचा था।

अल्योशा का दिमाग तेज तो था ही। वह जल्दी जल्दी पढ़ना लिखना सीखने लगा। इससे नाना का उत्साह बढा, उस खुशी हुई। अपनी खुशी जाहिर करने का उसने ललक कर नानी से कहा 'अरे देख, देख अस्त्राखान के इस पिल्ले को। इसकी याददास्त तो घोडे की तरह तज है। यह लडका पढ लिख कर बडा आदमी बनेगा। तेरी औलादो की तरह गधा '

नानी ने बीच म टोका, 'तुम्ह चुपचाप पडे रहना चाहिए। तुम दोना ही पागल हो। बडी धुन चढी है दोना को—पढाने पढाने की !'

नानी के व्यग्य पर नाना ने उदास होकर कहा, 'मैं तो बीमार हूँ, इसलिए चिढ कर बोलता हूँ, पर तुझे क्या हो गया है ?'

नानी बस मुस्करा पडी। तब नाना ने नाती से कहा, 'आगे पढ़ो, अल्योशा।'

नाना के प्रयत्न से अल्योशा तेजी स लिखना-पढ़ना सीखने लगा। अब उस नाना प्यार भी खूब करने लगा था। अब तो अल्योशा कभी कभी नाना की आज्ञाओ का उल्लघन भी कर देता, तो भी उसे डाँट या मार न पडती। फिर भी वह पिछली मारो को अभी भूला न था।

अल्योशा को जीवन मे एक प्रकार का उत्साह दिखने लगा।

कभी-कभी नाना नाती को समझाता, चतुर होना चाहिए। जो लोग सीधे होते है, वे मूख होते हैं।'

कभी कभी नाना नाती को अपने बचपन की कहानिया सुनाता। उन कहानियो मे प्लेग हैजा, आगजनी, हत्या मौत, लूटपाट, पागल, माघू और जमीदारा की चर्चा होती। नाना नाविक जीवन की बातें भी खूब रस ले-लेकर बताता।

एक दिन नानी और शराबखाने की मालकिन मे झगडा हो गया। नानी ने अपनी ओर स झगडा बचाया, लेकिन उसने नानी पर एक गाजर फेंक दिया। इस पर भी उसे सिर्फ 'बेवकूफ कह कर नानी वहाँ स हट गयी।

लेकिन अल्योशा से शराबखाने की मालकिन का यह दुव्यवहार महा न गया। उसने उससे बदला लेने की योजनाएँ बनायी। सोचा, उसकी बिल्ली की दुम काट दी जाय। उसके कुत्ते को भगा दिया जाय। उसकी मुर्गियो को मार डाला जाय। उसके पीप खोल कर शराब बहा दी जाय। लेकिन अन्तत यह सब योजनाये उसे मजेदार नही लगी। लेकिन वह उस औरत पर बराबर नजर रखता रहा।

एक दिन जब वह औरत दूकान मे गयी तो अल्योशा ने सीढी का दरवाजा बन्द करके उसमे ताला लगा दिया। और जा कर शान से नानी से बताया। सुनते ही नानी उसे मारने दौडी। चाभी छीन कर उसने जा कर ताला खोल कर अल्योशा की कैदी को मुक्त किया। फिर लौट कर बोली, 'बडो के मामले मे तू दखल न दिया कर। बडे जो कुछ करते हैं, उसका हिसाब खुदा रखता है।'

नाना ने भी कहा, 'हा, खुदा सब देखता है, जानता है। लेकिन जब आदमी पाप करते ह तो वे बाढ मे बहा दिये जाते हैं या शहर जला कर नष्ट कर दिए जाते है। अकाल और महामारी हाती है। यह खुदा तो सिर पर लटकती तलवार है।'

अल्योशा यह सब सुनता और समझता कि शायद नाना और नानी के खुदा दो तरह के है। दोनो प्राथनाएँ करते लेकिन दोनो की भाव नाएँ भिन्न भिन्न थी।

एक दिन नाना ने बडी भक्ति की मुद्रा मे प्राथना के समय कहा,

ते खुदा, यदि तू मेरा यह मकान अच्छी कीमत पर बिकवा दे तो मैं सट निकोलस के नाम पर अच्छो खासी रकम दान मे दूँगा।'

नानी ने हस कर अल्योशा स कहा, 'सुनते हो ! यह बुड्ढा मूख नही तो और क्या है ? जसे खुदा को इसके घर बिकवाने की फिकर के अलावा काई और काम ही नही है।'

नाना ने सुन लिया और प्राथना के बीच ही खिसियाया सा बाला, ए खुदा ! इस बेवकूफ की बात मत सुनना। यह सदा की अनपढ और गँवार है। यह सारी जिन्दगी ऐसी ही रही है।'

नानी मुस्करा कर कमरे स बाहर चली गयी। नही तो उस दिन नाना नानी के बीच भारी काण्ड हो जाता।

अल्योशा को नाना अपने साथ गिरजा ले जाता। अल्योशा सोचा करता कि गिरजा मे किसका खुदा है, नाना का या नानी का। उन दिनो अल्योशा हर समय खुदा के ही बारे मे सोचा करता। एक तरह स उस पर खुदा नशा की तरह छा गया था।

अल्योशा को गलिया म दौडने से नाना ने मनाही कर रखी थी। गली म अ य बच्चो का शोर गुल सुन कर अल्योशा वही जाने को छटपटाता। लेकिन वह गली के बच्चा के साथ खेल न पाता। इसीलिए गली का कोई लडका उसका दोस्त भी नही था। बल्कि गली के बच्चे उसक साथ शत्रुता का ही व्यवहार करते।

लेकिन जब कभी अल्योशा नाना से छिप कर गली म चला भी जाता तो वहाँ जाते ही मारपीट शुरू हो जाती।

बात यह थी कि ननिहाल म अल्योशा को जो जो और जसे अनुभव हुए थे उनके कारण उसे अपने को काशिरिन कहलाना बिल्कुल पसन्द न था। और गली के लडके ऐसे शैतान थे कि अल्योशा का देखत ही वे चीखने लगते थे— वह रहा काशिरिन। पकडो !'

बस फिर लडाई शुरू हो जाती।

अपनी छोटी उम्र म ही अल्योशा घूसेबाजी मे काफी उस्ताद था। इसलिए उसके गली के वाल शत्रु उससे कभी अकेले मे झगडा न करते। और हमेशा एक झुड बना कर ही उस पर हमला करते।

अकेला अल्योशा कितना लडता ! अन्त मे वह पिट कर वापस आता । और ऐसे झगडे से निपट कर वह जब भी आता तो, चेहरे पर खरोच के निशान होते, ओठ फूले होते, कपडे भी फटे होते ।

देखते ही नानी चीखती, 'अरे नालायक ! आखिर तुझे हो क्या गया है ? आखिर हमेशा तेरी उनसे लडाई क्यो होती है ? घर मे तो तू भीगी बिल्ली बना रहता है, लेकिन बाहर जाते ही तुझे क्या हो जाता है ?'

और नाना बडे व्यग्य तथा नफरत से कहता, 'फिर से सज आये ? यह सब तुम्हारे तगमे है । लेकिन ऐ बाल-बहादुर ! आज से अगर तुम फिर कभी गली मे गये तो मैं तेरी हड्डी-पसली चूर कर दूगा । समझे !'

यह तो नित्य की बात थी । दूसरे दिन गली से ज्यो ही बच्चा का शोर सुनायी देता कि अल्योशा भागने को छटपटाने लगता । और जैसे ही मौका पाता, वह भाग कर गली मे पहुँच जाता । और फिर वही मार पीट शुरू हो जाती ।

धीरे धीरे अल्योशा ऐसे झगडो व मार-पीट का आदी हो गया । उसे गली के लडको के घसे अब बुरे न लगते, लेकिन वह तब भी उनका मित्र न बन गया । क्योकि वे लडके जो खेल खेलते वे अल्योशा को अच्छे न लगते । वे लडके मुर्गियो, कुत्तो को सताते, बिल्लियो को मारते, लोगो की बकरिया खोल कर भगा देते, गदहो को तग करते मारते और बेमतलब चिल्लाते ।

इस प्रकार घर के बाहर भी अल्योशा के लिए कोई दिलचस्पी का सामान नही जुट सका ।

एक दिन अचानक ही जसे नाना की प्रार्थना खुदा ने सुन ली ।

नाना वह मकान उसी शराबखाने के मालिक के हाथो बेच देने मे सफल हो गया ।

तब नाना ने कनातनाया स्ट्रीट मे एक दूसरा मकान खरीदा ।

यह नया मकान छोटा था पर सुन्दर था । बाहर वह लाल रग

घर के बाहर

१८७९ के पतझड के समय अल्योशा बीमार था।

थोड़ा अच्छा हुआ तो एक दिन नाना ने उससे कहा, हाँ र छोकरे ! तुम कोई तगमा नहीं हो कि मैं तुम्हे अपनी गरदन म जिंदगी भर लटकाये फिरूँ। अब तुम हाथ पाँव के हो गये हो। अब तुम अपने लिए कोई काम तलाश करो।

अल्योशा ने धीरे स कहा ठीक है। काम खोजूगा।

नाना ने उसी तरह कहा, तू क्या खोजेगा ! मैंने बडी सडक की एक जूते की दूकान म तेरी नौकरी ठीक कर दी है।

अच्छा होते ही अल्याशा ने जूते की उस फशनेबुल दूकान पर काम शुरू कर दिया।

दूकान जाने पर पहले दिन ही मालिक ने रोष भरे शब्दो म कहा अगर तूने यहाँ रुपये या जूते चुराये ता मैं तुझे जिंदगी भर के लिए जेल म बन्द करा दूँगा।

अल्योशा ने बताया, मैंने कभी चोरी नहीं की।

मालिक ने कहा, लेकिन तेरा चेहरा ता चोरो जसा है। तू चोर

स पुता था और खिडकियाँ आसमानी नील रग की थी । छाटा सा बगीचा भी था ।

लेकिन इस घर म आन बे बाद से ही अल्याशा ने देखा कि उसके नाना के परिवार से खुशियो ने जस नाता ही तोड लिया और दुखो और बुरी बाता का एक अटूट सिलसिला शुरू हुआ ।

तब अल्योशा दस वय का था ।

एक दिन नानी रो रही थी । नाना भी गभीर मुद्रा म शात बैठा था । अल्योशा के बार बार पूछने पर नानी ने बताया तरी माँ मर गयी रे !'

अल्योशा ने सुना तो एक बार उस हल्का सा झटका लगा । माँ की शक्ल एक बार आँखो के सामन नाच गयी, लकिन जल्दी ही उसन माँ का ख्याल भुला दिया । मा स उसका नाता ही कितना था ! उसे न तो मा के जीवित रहने का कोई सुख मिला था न उसके मरन की खबर से ही उसे कोई खास दुख हुआ । उसके लिए माँ के मरन की बात कोई विशेष महत्व की न थी । वह कुछ सोचता कि तभी नाना की बडबडाहट से उसका ध्यान बँट गया ।

नाना बस अपने से ही बडबडा कर कह रहा था, 'बेचारी ! दोनो ही बार उसने पति चुनने मे धोखा खाया । मक्सिम तो बेकार आदमी था ही । यह दूसरा भी नम्बरी जुआरी है । जुए म सब गँवा बैठा । सुना है नौकरी भी छूट गयी है । अब भीख माँग ।

नाना की आमदनी का भी अब कोई जरिया बचा न था । घर म खान के भी लाले पड रहे थे । नानी किसी तरह दो वक्त खाना जुटाती, लेकिन अब वह भी कठिन होने लगा । यह समझने भर की अक्ल अल्याशा मे आ गयी थी ।

अल्योशा ज्यादा तो कुछ समझ न पाया, लेकिन इतना जरूर समझ गया कि अब शायद नाना को भी लाठी टेकते हुए गली मे घूम घूम कर भीख ही माँगनी पडेगी ।

घर के बाहर

१८७१ के पतझड के समय अल्योशा बीमार था।

थोडा अच्छा हुआ तो एक दिन नाना ने उससे कहा 'हाँ रे छोकरे! तुम कोई तगमा नहीं हो कि मैं तुम्हें अपनी गरदन म जिन्दगी भर लटकाये फिरूँ। अब तुम हाथ पाव के हो गये हो। अब तुम अपने लिए कोई काम तलाश करो।'

अल्योशा ने धीरे स कहा, 'ठीक है। काम खोजूगा।'

नाना ने उसी तरह कहा, 'तू क्या खोजेगा! मैंने बडी मदद की एक जूते की दूकान म तेरी नौकरी ठीक कर दी है।'

अच्छा होते ही अल्योशा ने जूते की उस फशनेबुल दूकान पर काम शुरू कर दिया।

दूकान जाने पर पहले दिन ही मालिक ने रोष भरे शब्दों म कहा 'अगर तूने यहाँ रुपये या जूते चुराये तो मैं तुझे जिन्दगी भर के लिए जेल म बन्द करा दूँगा।'

अल्योशा ने बताया, 'मैंने कभी चोरी नहीं की।'

मालिक ने कहा, 'लेकिन तेरा चेहरा तो चोरों जसा है। तू चोर

हो सकता है। खर, समझ ले कि तुझे काम करना है, काम कर और खाली रहे तो मूर्ति की तरह खडा रहना। शैतानी मत करना। समझे !

अल्योशा ने स्वीकृति मे सिर हिलाया। उसने मन ही मन समझ लिया था कि जिन्दगी मे अब कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ हैं। शायद भविष्य की जिन्दगी कठिनाइया और अपमान से भरी हुई है।

इस दूकान की नौकरी मे भी अल्योशा को बडे अजीब अनुभव हुये। इसी दूकान मे उसके मामा का लडका शाश्का भी काम करता था, जिसकी खूबियो से अल्योशा पहले से परिचित था। वह हर समय अल्योशा को सताता अपने हिस्से का काम भी उससे करवाता और मालिक से उसकी झूठी शिकायत करके डँटवाता भी था। यहा भी अल्योशा को लगता कि वह विदेशियो-अपरिचितो के बीच आ फँसा है।

दूकान साफ-सुथरी रखने की जिम्मेदारी अल्योशा की ही थी। दूकान मे जब कभी कोई महिला आ जाती तो देखते ही दूकान का मालिक जेबो से हाथ निकाल कर अपनी मूँछें ऐंठने लगता और अजीब तरह से घूरने लगता था। दूकान का किरानी भी उठ कर खडा हो जाता शाश्का बगले झाकने लगता और अल्योशा दरवाजे पर द्वारपाल की तरह खडा हो जाता।

किरानी बडी सावधानी से हल्के हाथो औरतो को जूते पहनाता। विनम्रता प्रदर्शित करने का मालिक का ही आदेश था। एक दिन जूते पहनाते वक्त एक ग्राहिका ने पाव झटक दिया और बोली, 'कैसे पहनाते हो ? तकलीफ होता है !'

किरानी ने दात निपोर कर कहा, 'आपके पाव का चमडा बहुत मुलायम है।'

यह सुन कर अल्योशा हँस पडा।

उस स्त्री ग्राहक को खुश करने के लिए किरानी ने उसके पाँव को अपने हाथ म उठा कर चूम लिया।

अल्योशा यह देख कर फिर हँसा। और उस ग्राहिका के जाने क

बाद मालिक से उसे खूब फटकारें खानी पडी। मालिक ने कहा, 'आज पहला मौका है, इसलिए तुझे छोड देता हूँ, नही तो बहुत मारता। मारता और तुझे मैं दूकान से भगा देता। आखिर ऐसा क्या था कि तुझे हँसी आ रही थी ? बोल ! समझ ले, औरतें चाहे खरीददारी न भी करें, फिर भी उनका आदर करना चाहिए, उन्हें फँसाये रखना चाहिए। दूकान पर औरतो के सिर्फ आने भर से व्यापार बढता है।'

इस दूकान मे अल्योशा पर जल्दी ही बहुत से कामो का बोझ लद गया। सवेरे से रात तक का जैसे निश्चित कार्यक्रम था। उसे घर भर मे सबसे पहले उठना पडता। जूतो पर पालिश लगाने और सारे कपडों को ब्रश से झाडने के बाद वह चाय तैयार करता, कमरे गरम रखने वाले चूल्हो मे जलाने के लिए लकडी लाता, दूकान मे झाडू लगाता, और फिर ग्राहको को जूते भी पहनाना पडता।

इस दूकान की नौकरी मे अल्योशा को मजा न आता। उसे सब कुछ बडा नीरस लगता।

दूकान खुलने के पहले उसे रसोईघर मे काम करना पडता। और रसोइया बडी बदजात औरत थी। अल्योशा से वह बर्तन साफ कराती, चौका साफ कराती, चूल्हे भी जलवाती चाय भी बनवाती। अल्योशा को यह सब अच्छा न लगता। वह ऊबने लगा था।

जिस दिन दूकान मे बिक्री न होती तो मालिक झुंझलाता। वह शाश्का को मनहूस चेहरे वाला कहता। वह शाश्का को बहाने बहाने से डांटता। अल्योशा पर भी बिगडता।

एक दिन दूकान मे एक औरत आयी जो बहुत खूबसूरत थी, युवती थी। वह मखमली कोट पहने थी, जिसे दूकान मे घुसते ही उतार कर उसने शाश्का को पकडा दिया। फिर जैसे नीली सिल्क की पोशाक मे वह और भी अच्छी लगने लगी। अल्योशा ने उसे गौर से देखा। उसके कानो मे हीरे चमक रहे थे। अल्योशा को लगा जैसे वह किसी राज-परिवार की महिला हो। मालिक, किरानी और शाश्का तीनो उसके सामने यों झुक गये, जैसे वह स्वर्ग से आयी कोई देवी हो। सभी

उसके इद गिर्द मँडराने लगे। और कई जोड़े जूते नापने और पसन्द कराने में दूकान भर में जूते बिखर गये। अन्त में जब एक जोड़ा कीमती जूता खरीद कर वह चली गयी तो मालिक खुशी से नाच उठा। फिर भीतर अपनी बीवी के पास भाग कर चला गया।

किरानी ने भी आँखें चमका कर कहा, 'अभिनेत्री है।' और उसने उसके सबन्ध में बड़ी देर तक चर्चा की और उसके प्रेमियों के किस्से बताये।

एक दिन जब अल्योशा आँगन में जूतों की एक पेटी खोल रहा था तभी पीछे के दरवाजे से गिरजा का बूढ़ा चौकीदार आया। आ कर पटी पर ही बैठ गया और धीरे से अल्योशा से बोला, 'मुझे एक जोड़ी रबड़ के जूते दो।'

अल्योशा ने कहा, 'जा कर दूकान से खरीद लो।'

'दूकान से खरीदने को पैसे होते तो तुमसे क्यों कहता? चुपचाप उठा ला।'

'यह तो चोरी हुई, मैं नहीं ला सकता।'

'दूसरे के लिए, दूसरे की सहायता के लिए की गई चोरी, चोरी नहीं होती। फिर मैं कितना बूढ़ा हूँ। मुझ पर दया करेगा तो ईश्वर तेरी मदद करेगा।'

'अच्छा, मैं खिड़की से जूते बाहर फेंक दूँगा, तुम उठा ले जाना।'

'ठीक है लेकिन तुम मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रहे या खुद बेवकूफ तो नहीं बन रहे?' मुस्कराते हुए चौकीदार ने कहा।

अल्योशा चौंक गया। तब हँस कर चौकीदार ने कहा, 'तू बहुत बेवकूफ है। अगर मैं तेरे मालिक से तेरी शिकायत कर दूँ कि तूने जूते चुराये, तब? मान लो, तेरे मालिक ने ही मुझे तेरी परीक्षा लेने को भेजा हो?'

'मैं तुझे जूते नहीं दूँगा।' अल्योशा ने बचने को कहा।

'लेकिन तूने अभी वायदा किया है। वायदा करके मुकरना पाप है।'

अल्योशा बुरी तरह घबरा गया। लगा वह किसी जाल में फँस

गया है।

तब चौकीदार ने अल्योशा की पीठ थपथपा कर कहा, तू दुनिया को इस तरह विश्वास करेगा तो मूर्ख बनता रहेगा। मुझे जूते नहीं चाहिए। मैं तो तेरी परीक्षा ले रहा था। लेकिन अपने को इस दुनिया के लायक बना। ईस्टर में आना। मैं तुझे केक दूँगा।'

उसके जाने के बाद अल्योशा सचमुच परेशान हो कर सोचता रहा।

घर की बूढ़ी रसोइया बीमार रहती। बूढ़ी थी, उससे काम भी नहीं होता था। शाश्का से उसकी तनिक भी न पटती। एक दिन शाश्का ने उसके बनाये खाने में खूब नमक डाल दिया और मछली के शोरबे में मिट्टी का तेल भर दिया। उस दिन किसी ने खाना न खाया। मालिक और मालकिन ने रसोइया को खूब डाँटा कहा कि तेरी आँख से सूझता नहीं तू अंधी है। अब तुझसे काम नहीं हो सकता। तुझे कल निकाल दिया जायगा।'

उसी रात को जाने क्या हुआ कि चौके में काम करते करते वह बुढ़िया बिना किसी आवाज के मुँह के बल यों गिरी जैसे उसके कलेजे में कुछ चुभ गया हो। उसके मुँह से खून की धारा बहने लगी। अल्योशा मालिक को बुला लाया। देखते ही वह बोला, यह मर रही है। लेकिन हुआ क्या ?'

फिर पुकार कर कहा, 'दौड़ कर जा, पुलिस को बुला ला।'

पुलिस वाले आये, तब तक बुढ़िया ठंडी हो चुकी थी। पुलिस वाले अपना 'दस्तूर' ले कर चले गये। थोड़ी देर बाद लाश ले जाने वाली गाड़ी आयी। रसोइया की लाश उसी पर ले जाई गयी। एक ही मिनट बाद मालकिन ने अल्योशा से कहा, फर्श धो डालो।

मालिक बोला 'गनीमत हुई कि बुढ़िया रात में ही मरी।

रात को सोते समय शाश्का ने कहा, 'आज रोशनी मत बुझाना।

'क्यों ?'

'बुढ़िया मर कर चुड़ैल बनी होगी। अँधेरे में हमें सतायगी।'

अल्योशा रात भर बुढ़िया के चुड़ैल बन कर घूमने की ही बात

सोचता रहा।

दूसरे ही दिन नई रसोइया आ गयी। आ कर अल्योशा को जगाया तो उसका चेहरा देख कर चीख पडी। बोली, यह तर चेहर पर कालिख किसने पोती ? जरा शीशे मे दखो न !'

तभी कही स आ प्रकट हुआ शाश्का। उसने कहा, 'यह उसी चुडैल का काम है।'

शाश्का के कहने के ढग से ही अल्योशा जान गया कि यह चुडैल का नही शाश्का का ही काम है। लेकिन झगडा बचाने के लिए वह कुछ न बाला।

उसी दिन जब अल्योशा जूते साफ कर रहा था तो एक जूने म खुसी पिन उसकी उँगली मे चुभ गयी। अल्योशा समझ गया। उसने शाश्का से पूछा, 'क्या यह भी उसी चुडैल ने किया है ?'

शाश्का हँस पडा देखो वह क्या क्या करती है।

अल्योशा समझ गया कि शाश्का उस यहाँ रहने न देगा। ऐसी ही हरकतें वह करेगा ताकि मालिक उसे डाँटे फटकारे। बहुत सोच-विचार के बाद अल्योशा ने निश्चय किया कि वह यह नौकरी छोड कर कही और चला जायेगा। क्योकि काशिरिन परिवार का यह पिन्ना यहाँ भी उसे चैन से रहने न देगा।

लेकिन अल्योशा का सोचा कुछ न हुआ। उसे अस्पताल जाना पडा।

हुआ यो कि नई रसोइया भी अल्योशा से अपने बहुत से काम कराती। नि सहाय और कमजोर का सभी शोपण करते हैं। एक शाम, गोभी का सूप तयार करना था। सूप तयार करके खाने के समय तक गम बना रहे इसलिए उसे आग पर चढा कर रसोइया ने अल्योशा से उसे कलछुल से चलाते रहने को कहा। अल्योशा सूप को गरम कर रहा था। तभी जाने कसे क्या हुआ कि गम सूप भरी डेगची उलट गयी और अल्योशा के दोनो हाथ झुलस गये। घर भर म कुहराम मच गया। अल्योशा के हाथ जलने से ज्यादा इस बात पर हगामा हुआ कि इतना सारा सूप बेकार हो गया। रसोइया को भी डाट

पती।

अ तत अल्याशा को अस्पताल भेजा गया।

अल्याशा के जले हाथो की मरहम पटटी की गयी, फिर उस अस्पताल की एक खाट पर लिटा दिया गया। खाट पर अकेले लेटे लेटे उम याद आया कि उसके नाना व नानी ने उसस कभी वताया था कि अस्पताल म लोग भूख के मारे मर जात है। अल्योशा डरा कि कहीं उसकी भी तो अस्पताल म दुगति नही होगी। रात को जब और लोग अपने-अपने कबल के नीचे दुबक गये तब अल्योशा ने सोचा कि नानी को वह चिट्ठी लिख दे कि वह आ कर उसे मरने के पहले वहाँ स लिवा ले जाय। लेकिन वह लिख न सका, क्योकि उसके दोना हाथ बेकार थ। अन्त मे निराश हो कर वह सो गया।

सवेर जब नीद खुली तो उसन देखा कि उसकी खाट की बगल म नानी बठी है। नानी ने झुक कर पूछा, 'तुम्हे क्या हुआ बेटा ?'

अल्योशा को लगा कि वह सपने मे नानी को दख रहा है, इसलिए उसन कोई जवाब न दिया। तभी डाक्टर ने आ कर पटटी बदली, दवा लगायी और थोडी देर बाद नानी उसे एक गाडी म बैठा कर घर ले गयी।

अल्याशा जब घर पहुँचा तो नाना घर के बाहर ही मिला। वह कुल्हाडी ल कर काई लकडी काट रहा था। नाती को दखत ही पूछा, 'क्या तरी वहा की नौकरी छूट गयी ? खैर, तेरा जैसे जी चाहे रहना लेकिन हम पर बोझ मत बनना, समझे !'

नानी अल्योशा को खीचती घर के भीतर ले गयी। ताकि नाना और कुछ न कहने पाये। भीतर जाते ही नानी ने फुसफुसा कर कहा, 'उस बूढे की बाता पर ध्यान मत दना। वह ता पूरी तरह बरबाद हो गया है। उसके पास जो भी रुपया था, उसने सूद की लालच म बिना लिखा पढी के ही किसी को दे दिया था। वह सारा रुपया डूब गया। इसीलिए तेरा नाना बडा चिडचिडा हो गया है। समय ल उसका दिमाग ठीक नही है आजकल। लेकिन तू आज रात यहा आराम से रह। आज के खाने पीन की मैंन व्यवस्था कर रखी है।

करा की फिर देखी जायगी।'

अल्योशा को आश्चय और दुख भी हुआ। उसे अन्दाज न था कि नाना-नानी की हालत ऐसी खस्ता हो चुकी है।

दूसरे दिन हाथो मे पट्टी बाँधे अल्योशा गली के पुराने दोस्तो म मिलने निकला। एक साथी कोसत्रोव मिला। उसने बताया कि चुरका भर है बाकी सभी तितर बितर हो गये है। कोसत्रोव न गली के अय समाचार देते हुए बताया कि गली के उस मकान म नया किराएदार आया है। नाम है—इविमिन्को। उसके एक लडका और दो लडकियाँ ह। एक बीबी है। दूसरी लडकी पगु है लेकिन वह बडी की खबसूरत है। फिर थोडा रुक कर उसने दबी जबान म बताया, चुरका और मैं दोनो ही उसे प्यार करने लग हैं। उसी का ले कर कभी कभी हम दोनो म लडाई भी हो जाती है।'

अल्योशा इतना तो समझने लगा था कि जवान उम्र के लडके लडकियाँ प्रेम करते है लेकिन लडकी को ले कर दोस्तो म लडाई क्या होती है यह वह नही समझ सका। उसी शाम उसन उस पगु लडकी को देखा। सचमुच वह काफी सुदरी थी। वह बैसाखी के सहारे चलती थी। एक सीढी उतरते समय उसकी एक बसाखी गिर पडी। वह असहाय सी खडी हो गयी। अल्योशा लपक कर गया और अपने पट्टी बँधे हाथो से उसकी बसाखी उठा कर देना चाहा लेकिन उठा न सका। तब पूव परिचित की तरह हँस कर उस लडकी न पूछा, 'अपने हाथो को क्या कर लिया?'

जला लिया है।'

'ठीक है, मैं लगडी हूँ। तुम क्या यही रहते हो? क्या तुम अस्पताल से आय हो? मैं तो बहुत दिनो अस्पताल म रही हूँ।'

अल्योशा को सचमुच वह लडकी बडी अच्छी लगी। उसके चहरे पर एक अनोखी चमक थी।

धीरे धीरे अल्योशा के हाथ अच्छे होने लग। उसके जीवन की धारा फिर तेजी से बह निकली। ~

अल्योशा नाना के घर मे रहने लगा था, लेकिन उसके रहन स

घर के बड़े खच की नाना नानी किसी ने कभी कोई चर्चा नहीं की। यद्यपि अल्योशा हर समय अनुभव करता था कि उसे अब नाना नानी पर बाध बन कर नही रहना चाहिए। बल्कि वह नाना नानी की मदद पसे कमा कर करना चाहता था, लेकिन उसे अपन हाथा के अच्छ होन तक तो इतजार करना ही था।

उस पगु लडकी का नाम था—लुडमिला। थाडे ही दिना म उसकी अल्याशा से अच्छी-खासी दोस्ती हो गयी। लुडमिला क पाँव बकार थ और अल्योशा के हाथ। इस तरह दोनो ही पगु थे। यही समवेदना व समकरणा उनकी घनिष्ठता का कारण बनी। दोनो अक्सर काफी देर-देर तक गिरजा की सीढियो पर बैठे बातें करते रहत।

अल्योशा अनुभव कर रहा था कि वह लुडमिला की ओर तजी स खिचता जा रहा था। उसके पास बैठना और बातें करना उसे बडा भला लगता था। अल्योशा जल्दी ही उसके बारे मे बहुत कुछ जान गया। उसकी आवाज चिडियो जैसी मधुर और महीन थी। वह बडे दिलचस्प ढग से दोन के किनारे के कज्जाको के जीवन का वणन करता, जिनके बीच वह अपने मजदूर चाचा के साथ रह चुकी थी। अब उसका बाप निझनी मे आ बसा था। उसका एक चाचा जार के महल म काम करता था।

अल्योशा ने देखा कि सचमुच उसके दोनो मित्र कोसत्रोम और चुरका उस लडकी लुडमिला के कारण आपस मे ईर्ष्या भाव रखते थ। खेला म भी दोनो एक दूसरे के प्रतिद्वद्वी और विपक्षी ही रहत। दोना हा यह सब लुडमिला पर प्रभाव डालन और उसकी मुस्कान जीतन के लिए करते थे। अक्सर दानो मे लडाई हो जाती और दानो मल्लयुद्ध म इस तरह गुथ जाते कि बडे लोग भी उन्ह अलग न कर पात। तब लुडमिला हा चीखती —'बन्द करो, यह सब।'

उस समय लुडमिला का चेहरा गुस्से से सफेद हो जाता और व दानो झगडा बन्द कर देते।

इस तरह लुडमिला के कारण अल्योशा के दोनो दोस्त सदा लडत रहत। व दोना अल्योशा से भी ईर्ष्या करने लगे थे।

एक दिन शाम को लुडमिला ने अल्योशा से पूछा, 'कहो क्या हाल है ? इधर कई दिनो से कोसत्रोव और चुरका को नही देखा ?'

अल्योशा ने झुझला कर कहा, दोनो से अब मेरी लडाई है। सो भी तुम्हारे ही कारण। तुम्हारे लिए ही दोनो हर समय लडते रहते है।

सुन कर लुडमिला भी जल फट पडी। फुफकार कर बोली, 'इसम मैं कैसे दोषी हूँ ?'

तुमने दोनो को अपने प्रेम म क्यो फँसाया है ?'

'क्या उनम मैंने फँसने का कहा था ? कितनी बेहूदी बात है ? बिलकुल बकवास ! और ताज्जुब है कि तुम भी नही समझते ? वे दोनो तो नासमझ हैं ही। मैं चौदह साल की हूँ और छोटी उम्र के लडके ज्यादा उम्र की लडकी से प्रेम नही करते।

अल्योशा को यह नयी बात लगी। ऐसा उसने पहले कभी नहीं सुना या समझा था। उसने और जानकारी के लिए कहा, 'यह कैसी बात ? उस लडकी को देखो, वह स्तोव की बहन। वह भी तो उम्र म बडी है और उससे कम उम्र के लडके हर समय उसके पीछे भागते रहते हैं।

लुडमिला की आँखो मे आँसू भर आये। उत्तेजना से उसने अपनी बैसाखी को बालू म गडा कर कहा, 'तुम कुछ नही जानते, कुछ नही समझते। वह अच्छी लडकी नही है। उससे मैं बहुत अच्छी हूँ। तुम अगर उपन्यास पढो तो यह सब बातें जान सकोगे।

अल्योशा चुप रह गया। मन म उसने कोई उपन्यास खोजने का निश्चय किया ताकि पढ कर वह कुछ जान समझ सके।

दूसरे दिन अल्योशा लुडमिला को मनाने के प्रयास म उसको देने के लिए थोडी सी मिश्री ले कर गया। देखते ही पहले तो लुडमिला भन्ना उठी बोली, 'भाग जाओ ! हमारी दोस्ती खतम हो चुकी है।' फिर मिश्री लेते हुए बोली, तुम्हे इसे कागज म लपेट कर लाना चाहिए था। देखो, तुम्हारे हाथ कितने गदे हैं।'

मेरे हाथ साफ है। अल्योशा ने कहा, मुझसे ज्यादा गदे तो

तुम्हारे हैं।' -

'मेरे हाथ गदे नही, उँगलिया खुरदुरी ह। मुझे सिलाई बहुत करनी पडती है। सूई से ऐसी हो गयी है उँगलिया।' कह कर लुड मिला ने सतकता से इधर-इधर देख कर धीरे से कहा, 'हमे कही एसी जगह चल कर बैठना चाहिए, जहा हम कोई देख न सके।'

'क्या ?'

'तुम्हारी शिक्षा शुरु करूँगी। हम लाग एकात मे बैठ कर उपयास पढेंगे। ठीक है न! मैंने एक दिलचस्प उपयास पा लिया है।'

दोना ने कई जगहे खोजी, लेकिन कही ठीक जगह न मिली। अत म चिडखाना के पास वाले सावजनिक स्नानघर का हो चुनना पडा। वहा सनाटा था। इधर वर्षा भी हुई थी, इसलिए उधर कोई नहाने न जाता था।

वही एक स्टूल पर बैठ कर लुडमिला पढती और दरवाजे के पास बैठ कर अल्योशा उसका मुह ताकते हुए सुनता। पढती पढती एकदम से वह रुक जाती, जैसे एकाएक रोशनी बुझ जाये या जैसे कोइ कुल्हाडी ने बात को बीच मे ही काट दे। तब वह आखे बद करके पूछती, 'कहा, अच्छा था न ?'

स्नानघर की यह पढाई काफी दिनो चलती रही। एक एक करक चार खण्डो वाले उस बडे उपयास की पढाई पूरी हुई। पढाई के दौरान दोना घटो एक दूसरे मे लग कर बैठ रहते और जो भी मन म आता बातें करते रहते। उह यो बठा कोई देखेगा तो क्या होगा, इसकी चिता अल्योशा से अधिक लुडमिला को रहती।

लेकिन जल्दी ही स्नानघर से छुटटी मिल गयी। क्योकि लुडमिला की माँ को कोई नौकरी मिल गयी थी और वह दिन भर घर से बाहर रहती थी। उसकी बहन स्कूल जाती थी और भाई भी एक कारखान म काम करता था। इसलिए अकेले घर पर लुडमिला और अल्योशा का राज्य हो गया। अल्योशा अधिकतर लुडमिला के घर मे ही बना रहता और घरलू कामो मे उसकी मदद भी करता। तब लुडमिला हँस

अल्योशा अपमान म तिनमला उठा। वह जानता था कि यह युवक लुडमिला को प्रभावित करने को इस तरह की हरकतें करता था और लुडमिला उस तनिक भी पसंद नही करती थी। इसी स चिढ कर अल्योशा ने कहा, लाओ रुपये निकालो। मैं जाऊँगा।'

उसने रुपय लुडमिला की माँ की ओर बढाया। उसने रखन स इकार कर दिया और बोली मुझे यह शतानी पसन्द नही है।

लुडमिला न भी रुपय नही लिय और मुह फेर लिया। तभी अल्योशा की नानी आ गयी। सारा किस्सा सुन कर नानी रुपय रखन को तैयार हो गयी और अल्योशा से बोली नाना का ओवरकोट ले लेना और एक कबल भी। वहाँ सर्दी ज्यादा होगी।

नानी की बात से अल्योशा का साहस बढा।

युवक न शत दोहरायी 'कब्र पर ही सोना होगा। रात भर वहाँ से हटोग नही। मैं नजर रखूँगा।

अल्योशा ने हामी भरी।

नानी ने अल्योशा से कहा, जा बेटे। डरना मत। डर लग तो खुदा का नाम लेना।'

और झटके स उठ कर अल्योशा चल पडा।

रात होते ही कम्बल ओवरकोट ले कर अल्योशा चला। कब्रगाह की चहारदीवारी लाघते समय कबल से उलझ कर वह गिर पडा, फिर फौरन ही उठ खडा हुआ। पीछे से उसे हल्की हँसी भी सुनायी पडी।

अल्योशा जा कर एक कच्ची कब्र पर बैठ गया। चारो ओर झाडियों का जगल था। सामने सफेद गिरजा बफ का बना लगता था। थोडी दूर, चौकीदार की झोपडी थी जहाँ हल्की रोशनी हो रही थी। गार्ड के गाने की आवाज आ रही थी।

चारो ओर सन्नाटा छा गया। रह रह कर सिर्फ आवाज आती थी। सन्नाटे से अल्योशा का धीरज गिर ... गह करके कबल म पाँव छिपा उसे ... हिल रही है। या कब्र म ... तो। लगता जैसे कब्र म ...

वह कहती, 'हमलोग तो बिल्कुल पति पत्नी की तरह रहते हैं, बल्कि उनसे भी अच्छे क्योंकि विवाहित पति अपनी पत्नियों की इतनी सहायता नही करते।'

नानी भी अक्सर लुडमिला के घर आती। वह लुडमिला की सहायता के लिए, उसके लिए सिलाई का काम ले कर आती। वह लुडमिला और अल्योशा की दोस्ती की बात जानती थी। एक दिन उसने दोनो को सुना कर जरा गभीर लहजे में कहा, 'लडके व लडकी में दोस्ती होना तो अच्छी बात है लेकिन फल को खिलने के पहले नही तोडना चाहिए नही तो फल नही आते।'

नानी की बात का अर्थ और आशय दोनो ने समझा, लेकिन जाने क्या लुडमिला सुन कर बहुत गभीर हो गयी। फिर कई दिनो तक लुडमिला अल्योशा से नही मिली।

एक दिन, इतवार था।

लुडमिला की माँ घर पर थी। अचानक एक एक करके कोसत्रोम, चुरका और अल्योशा तीनो वहाँ पहुच गये। थोडी देर बाद लुडमिला परिवार का एक मित्र एक दूकानदार का लडका, लगभग बीस वर्ष का लबा सा था, आया। वहाँ लुडमिला के पास अन्य लडकों को देख कर शान जमाने को बोला, 'गिरजा के पास वाले कब्रगाह में रात भर जो भी सोयेगा उसे मैं तीन रुपये और दस सिगरेटें दूँगा।''

सुन कर लडके सहम गये पर लुडमिला क्रोध से सफेद हो गयी। तब लुडमिला की माँ बोली 'यह बदमाशी! आखिर तुम लडकों को क्या बहका रहे हो?'

तभी चुरका शान में आ कर बोला अच्छा, पाँच रुपये रखो, मैं सोऊँगा।

कोसत्रोम ने ताना दिया, क्या तीन रुपयों में डर लगता है?

तब वह युवक बोला, 'अच्छा पाँच रुपये ही सही।'

सुन कर चुरका चुपचाप उठ कर चला गया। कोसत्रोम भी चुप रह गया।

तब युवक ने ताना दिया 'बुजदिल है सभी। डरपोक।'

अल्योशा अपमान से तिलमिला उठा। वह जानता था कि यह युवक लुडमिला को प्रभावित करने को इस तरह की हरकतें करता था और लुडमिला उसे तनिक भी पसंद नहीं करती थी। इसी से चिढ़ कर अल्योशा ने कहा, 'लाओ, रुपये निकालो। मैं जाऊँगा।'

उसने रुपये लुडमिला की मां की ओर बढ़ाया। उसने रखने से इंकार कर दिया और बोली, 'मुझे यह शैतानी पसंद नहीं है।'

लुडमिला ने भी रुपये नहीं लिये और मुंह फेर लिया। तभी अल्योशा की नानी आ गयी। सारा किस्सा सुन कर नानी रुपये रखने को तैयार हो गयी और अल्योशा से बोली 'नाना का ओवरकोट ले लेना और एक कंबल भी। वहां सर्दी ज्यादा होगी।'

नानी की बात से अल्योशा का साहस बढ़ा।

युवक ने शर्त दोहरायी, 'कब्र पर ही सोना होगा। रात भर वहां से हटोगे नहीं। मैं नजर रखूंगा।'

अल्योशा ने हामी भरी।

नानी ने अल्योशा से कहा, 'जा बेटे! डरना मत। डर लगे तो खुदा का नाम लेना।'

और झटके से उठ कर अल्योशा चल पड़ा।

रात होते ही कम्बल, ओवरकोट ले कर अल्योशा चला। कब्रगाह की चहारदीवारी लांघते समय कंबल से उलझ कर वह गिर पड़ा, फिर फौरन ही उठ खड़ा हुआ। पीछे से उसे हल्की हँसी भी सुनायी पड़ी।

अल्योशा जा कर एक कच्ची कब्र पर बैठ गया। चारों ओर झाड़ियों का जंगल था। सामने सफेद गिरजा बर्फ का बना लगता था। थोड़ी दूर पर चौकीदार की झोपड़ी थी जहां हल्की रोशनी हो रही थी। गांव में किसी शराबी के गाने की आवाज आ रही थी।

थोड़ी देर बाद चारों ओर सन्नाटा छा गया। रह रह कर, सिर्फ गिरजा के घंटे की आवाज आती थी। सन्नाटे से अल्योशा को थोड़ा डर लगने लगा। तब गिरजा की ओर मुंह करके कंबल में पाँव छिपा कर वह बैठ गया। उसे लगता, जैसे कब्र हिल रही है। या कब्र में दरारें पड़ रही हैं जैसे कब्र फटने वाली हो। लगता जैसे कब्र में म

वह कहती, 'हमलाग तो बिल्कुल पति पत्नी की तरह रहते हैं, बल्कि उनमे भी अच्छे क्योंकि विवाहित पति अपनी पत्नियो की इतनी सहायता नही करत ।'

नानी भी अक्सर लुडमिला के घर आती । वह लुडमिला की सहायता के लिए, उसके लिए सिलाई का काम ले कर आती । वह लुडमिला और अल्योशा की दोस्ती की बात जानती थी । एक दिन उसन दाना को सुना कर जरा गभीर लहजे म कहा, 'लडके व लडकी म दोस्ती होना तो अच्छी बात है लेकिन फूल को खिलने के पहले नही तोडना चाहिए नही तो फल नही आते ।'

नानी की बात का अथ और आशय दोनो ने समझा, लेकिन जाने क्या लुडमिला सुन कर बहुत गभीर हो गयी । फिर कई दिनो तक लुडमिला अल्योशा से नही मिली ।

एक दिन, इतवार था ।

लुडमिला की माँ घर पर थी । अचानक एक एक करके कोसत्रोम, चुरका और अल्योशा तीनो वहाँ पहुच गये । थोडी देर बाद लुडमिला परिवार का एक मित्र, एक दूकानदार का लडका, लगभग बीस वष का लबा सा था, आया । वहाँ लुडमिला के पास अन्य लडको को देख कर शान जमाने को बोला गिरजा के पास वाले कब्रगाह म रात भर जो भी सोयेगा उसे मैं तीन रुपये और दस सिगरेटें दूँगा । '

सुन कर लडके सहम गये पर लुडमिला क्रोध से सफेद हो गयी । तब लुडमिला की माँ बोली, 'यह बदमाशी ! आखिर तुम लडको को क्या बहका रहे हो ?'

तभी चुरका शान म आ कर बोला अच्छा पाँच रुपये रखो, मैं साऊँगा ।

कोसत्रोम ने ताना दिया, 'क्या तीन रुपयो म डर लगता है ?'

तब वह युवक बोला, 'अच्छा पाँच रुपय ही सही ।'

सुन कर चुरका चुपचाप उठ कर चला गया । कोसत्रोम भी चुप रह गया ।

तब युवक ने ताना दिया 'बुजदिल है सभी । डरपोक ।'

अल्योशा अपमान से तिलमला उठा। वह जानता था कि यह युवक लुदमिला को प्रभावित करने को इस तरह की हरकतें करता था और लुदमिला उसे तनिक भी पसद नही करती थी। इसी से चिढ कर अल्योशा ने कहा, 'लाओ, रुपये निकालो। मैं जाऊँगा।'

उसने रुपये लुदमिला की माँ की ओर बढाया। उसने रखने से इकार कर दिया और बोली, 'मुझे यह शैतानी पसद नही है।

लुदमिला ने भी रुपये नही लिये और मुह फेर लिया। तभी अल्योशा की नानी आ गयी। सारा किस्सा सुन कर नानी रुपये रखने को तैयार हो गयी और अल्योशा से बोली 'नाना का ओवरकोट ले जाना और एक कबल भी। वहा सर्दी ज्यादा होगी।'

नानी की बात से अल्योशा का साहस बढा।

युवक ने शर्त दोहरायी, 'कब्र पर ही सोना होगा। रात भर वहा से हटोगे नही। मैं नजर रखूगा।

अल्योशा ने हामी भरी।

नानी ने अल्योशा से कहा, 'जा बेटे! डरना मत। डर लगे तो खुदा का नाम लेना।'

और झटके से उठ कर अल्योशा चल पडा।

रात होते ही कम्बल, ओवरकोट ले कर अल्योशा चला। कब्रगाह की चहारदीवारी लाघते समय कबल से उलझ कर वह गिर पडा, फिर फौरन ही उठ खडा हुआ। पीछे से उसे हल्की हँसी भी सुनायी पडी।

अल्योशा जा कर एक कच्ची कब्र पर बैठ गया। चारो ओर क्रासो का जगल था। सामने सफेद गिरजा बर्फ का बना लगता था। थोडी दूर पर चौकीदार की झोपडी थी जहा हल्की रोशनी हो रही थी। गाव मे किसी शराबी के गाने की आवाज आ रही थी।

थोडी देर बाद चारो ओर सन्नाटा छा गया। रह रह कर, सिर्फ गिरजा के घटे की आवाज आती थी। सन्नाटे से अल्योशा को थोडा डर लगने लगा। तब गिरजा की ओर मुह करके कबल मे पाव छिपा कर वह बैठ गया। उसे लगता, जैसे कब्र हिल रही है। या कब्र मे दरारें पड रही है, जैसे कब्र फटने वाली हो। लगता जैसे कब्र मे म

वह कहती, 'हमलाग सा बिल्कुल पति-पत्नी की तरह
उनसे भी अच्छे क्योंकि विवाहित पति अपनी प
सहायता नहीं करते।'

नानी भी अक्सर लुडमिला के घर आती। वह
यता के लिए, उसके लिए मिलाई का काम ले कर
और अल्योशा की दोस्ती की बात जानती थी।
का सुना कर जरा गभीर लहजे म कहा त
हाता तो अच्छी बात है लेकिन फन का खिल
चाहिए नहीं तो फन नहीं आते।

नाना की बात का अथ और आशय दा
कयो लुडमिला सुन कर बहुत गभीर हो ग
लुडमिला अल्योशा से नहीं मिली।

एक दिन इतवार था।

लुडमिला की माँ घर पर थी। अ
चुरका और अल्योशा तीनो वहाँ पहुच
परिवार का एक मित्र, एक दूकानदा
का लवा सा था, आया। वहाँ लुट
कर शान जमाने को बोला, गि
भर जो भी सोयेगा, उसे मैं तीन

सुन कर लडके सहम गये
तब लुडमिला की माँ बोली, 'ए
क्या बहका रहे हो ?

तभी चुरका शान म अ

गली म चक्कर लगाता। अब दूसरे लडके भी उसे अधिक प्रतिष्ठा देत।

शहर स दो मील की दूरी पर एक जगल था। एक दिन सवर-सवरे नाना नानी के साथ अल्योशा को जगल म जाना पडा। नानी वहा स जगली जडी-बूटिया खोज कर निकालती और कुकुरमुत्ते बिनती जिन्हें ला कर शहर मे बेचती और उससे जो पैसे मिलते उसी से घर का चूल्हा गम होता। नाना जगल से लकडियाँ काट कर लाता ताकि रसोई के जलावन की समस्या हल हो। ऐसी विषम स्थिति स नाना नानी दिन काट रहे थे।

जगल के रास्ते मे नाना ने कहा, 'जगल तो खुदा का बगीचा है।'

नानी दोपहर के लिए रोटी, प्याज, नमक ले आयी थी। उस दिन नानी ने जडी बूटी चुनी, लकडी काटी नाना ने और उन्ह बिना-बाधा अल्योशा ने।

वापसी मे नाना एकाएक नानी पर चिढ गया क्योकि जडी-बूटियो को बेच कर जो पैस मिलते थे उन्ह नानी अपने ही पास रख लती थी, नाना को नही देती थी। उन्ही पैसो से घर के लिए चीज खरीदती थी। इस बात से नाना कुढता रहता था। उसी सदभ म वह नानी म उलझ गया। उसने कहा, 'तू भिखारी से भी बुरी है। तेर कारण मुझे बडी शम उठानी पडती है।'

नानी ने झल्ला कर जवाब दिया, 'मरे कारण तुझे शम? क्या लोग तुम्ह नही जानत? फिर मैं क्या चोरी करती हूँ?'

नाना नानी की इस नोक झोक से अल्योशा बडा दुखी हुआ। वह समझ गया कि घर की दरिद्रता ही इसका कारण है। उसने मन ही मन निश्चय किया कि जल्दी ही कोई काम शुरू करूँगा, ताकि कुछ पसे जुटा सक और नानी नाना की मदद करूँगा। उसन नाना से भी अपने लिए कोई काम ढूढने को कहा।

दो दिना बाद ही नाना शहर गया था। वर्षा भी होने लगी थी। नाना वापस आया तो तर बतर भीगा था। दरवाजे पर खडे हो कर गौरया की तरह पानी झाडते हुए [उसने बडी प्रसन्नता और विजया-

कोई आवाज आ रही हो। तभी कोई चीज आ कर अल्योशा के पास गिरी। अल्योशा डर गया। एक बार मन हुआ कि उठ कर भागे। तभी एक ईंट और आ कर वहीं गिरी। अल्योशा का डर अब जाता रहा। वह समझ गया कि चहारदीवारी के बाहर से लड़के उसे डराने को यह कर रहे हैं। चहारदीवारी के पास लड़के हैं, यही सोच कर उसकी हिम्मत बढ़ गयी।

अचानक अल्योशा को याद आया—उसकी दोनों मामियों की कब्र भी इसी गिरजा के पास है। वहीं कहीं सिगान की भी कब्र है जो क्रास से दब कर मरा था। सिगान की याद आते ही वह और बात भूल गया और सिगान के बारे में ही सोचने लगा।

अभी भी लड़के डरवाने के लिए अजीब-अजीब आवाजें कर रहे थे। अन्त में ऊब कर अल्योशा चिल्लाया 'तुम सबों को मौत आवे।'

फिर लड़कों की हँसी सुनायी पड़ी। अल्योशा को ढाढ़स बँधी, लड़के पास ही हैं, वह अकेला नहीं है।

अल्योशा ने हिम्मत करके कहा, 'अब चाहे जो हो, हटूंगा नहीं।' और उसने सिर से पाँव तक कंबल ओढ़ लिया। फिर क्या हुआ अल्योशा को याद नहीं।

सवेरे आ कर नानी ने जगाया, 'उठ! क्या डर गया था? जाड़ा लगा था क्या?'

अल्योशा उठ कर मुस्कराया।

नानी बोली, 'पाँच रुपयों के लिए इतनी तकलीफ उठानी चाहिए थी। शाबास बेटे! आदमी को हिम्मत रखनी चाहिए।'

फिर तो अल्योशा गली का सबसे बहादुर लड़का माना जाने लगा।

नाना भी खुश हुआ।

लुडमिला ने भी अल्योशा को बड़े प्यार और आदर से देखा।

कब्रगाह में सोने की घटना के बाद से अल्योशा बड़े अभिमान से

गली म चक्कर लगाता। अब दूसर लड़के भी उसे अधिक प्रतिष्ठा देत।

शहर से दो मील की दूरी पर एक जगल था। एक दिन सवर-सवरे नाना नानी के साथ अल्योशा का जगल म जाना पडा। नानी वहा से जगली जडी बूटियाँ खोज कर निकालती और कुकुरमुत्ते बिनती जिन्ह ला कर शहर मे बेचती और उससे जो पैसे मिलते उसी से घर का चूल्हा गम होता। नाना जगल मे लकडियाँ काट कर लाता ताकि रसोई के जलावन की समस्या हल हो। ऐसी विषम स्थिति स नाना-नानी दिन काट रहे थे।

जगल के रास्ते मे नाना ने कहा, 'जगल तो खुदा का बगीचा है।

नानी दोपहर के लिए रोटी, प्याज, नमक ले आयी थी। उस दिन नानी ने जडी-बूटी चुनी, लकडी काटी नाना ने और उन्ह बिना-बाधा अल्योशा ने।

वापसी मे नाना एकाएक नानी पर चिढ गया, क्योकि जडी-बूटियो को बेच कर जो पैसे मिलते थे उन्ह नानी अपने ही पास रख लेती थी नाना को नही देती थी। उन्ही पैसो से घर के लिए चीजे खरीदती थी। इस बात से नाना कुढता रहता था। उसी सदभ मे वह नानी से उलझ गया। उसने कहा, 'तू भिखारी स भी बुरी है। तेर कारण मुझे बडी शम उठानी पडती है।'

नानी ने झल्ला कर जवाब दिया 'मरे कारण तुझे शम ? क्या लोग तुम्ह नही जानते ? फिर मैं क्या चोरी करती हूँ ?'

नाना नानी की इस नोक झोक से अल्योशा बडा दुखी हुआ। वह समझ गया कि घर की दरिद्रता ही इसका कारण है। उसने मन ही मन निश्चय किया कि जल्दी ही कोई काम शुरू करूँगा, ताकि कुछ पैसे जुटा सकूँ और नानी-नाना की मदद करूँगा। उसने नाना से भी अपने लिए कोई काम ढूढने का कहा।

दो दिना बाद ही नाना शहर गया था। वर्षा भी होने लगी थी। नाना वापस आया तो तर-बतर भीगा था। दरवाजे पर खडे हो कर गौरैया की तरह पानी झाडते हुए उसने बडी प्रसन्नता और विजया-

ल्वास क स्वर म कहा, 'अर छाकर ! कहाँ ह र ! अर सुन। मैं तर लिए एक काम तय कर आया हूँ। कल स तुझे नय काम पर जाना ह।'

नानी न लपक कर पूछा 'कहाँ !

नेरी वहन क यहाँ ?

कहाँ ?' नानी चाकी।

सर्गेयव परिवार म। तेरी वहन क बटे क यहाँ। उसका कारबार बडा ह और आजकल वे सब खूब रईस हुए ह। छोकरा वहाँ आराम म रहगा।'

'लकिन यह तुमन गलती की।' नानी न खट्टे दिल स कहा, रिश्त दारी की नौकरी मे अपमान क सिवा और क्या मिलता है ?

नाना उछल पडा चुप रह तू नालायक ! व लोग इसे आदमी बना देंग।

नानी सतान से सिर झुकाये वहाँ स हट गयी।

नाना नानी की बातें सुन कर अल्योशा सोचने लगा—क्या करना चाहिए। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने निश्चय कर लिया—जाऊँगा। काम करना है तो चाहे जहा भी करूँ क्या फर्क पडता है।

अल्योशा तैयारी म लग गया। कल शहर चला जायगा।

अपने शहर जाने की बात उसे लुडमिला को भी बतानी थी।

रात को समय निकाल कर अल्योशा लुडमिला के पास गया और बताया कि नई नौकरी मिली ह, कल शहर चला जाऊगा।

सुनते ही लुडमिला सिसकने लगी।

दोनो देर तक एक दूसर से लग, दुख म डूब खामोश बठे रह। आज अल्योशा को लुडमिला कुछ दुबली व पीली सी लगी। उसकी आख भी कुछ लबी ही गयी थी।

थाडी दर बाद वह बाली, जिन्दगी म हर स्थिति के लिए तयार रहना चाहिए।'

अल्योशा चौका, क्या मतलब !

लुडमिला न चट स बात बदल दी मर पिता मर पाँवो का इलाज करावग। ठीक होकर मैं तुम्हार साथ रहूँगी। अगर ठीक नही हुई,

तो तो मैं शादी नही करूँगी। पगु मा क सतान भी अपाहिज हा हाग।'

अल्योशा का य क्षण बडे दबावपूण व वजनी लगे। एक झटक स वह उठा और वापस चलने को मुडा। बडी करुणा स भरी एक चीख निकली उसके गल स—'नहीं!'

और वह लब कदमा वापस लौट पडा।

लुडमिला की ओर लौट कर देखा भी नही।

रास्त म अल्योशा ने सोचा—अगर लुडमिला अच्छी न होगी, ता भी मैं उसे अपने पास ले जाऊँगा। अभी तो नही ले जा सकता, नानी भी तयार न होगी। फिर कुछ न होगा ता पगु लुडमिला को काठ की गाडी म बैठा कर भीख मागता घूमगा, तो भी दानो के लिए खाने को जुटा ही लूगा।

छोटे काम, बड़े अनुभव

अल्योशा अपनी नानी की बहिन के यहाँ नौकरी करने आ गया। जूतेवाली दूकान, जहाँ अल्योशा पहले काम करता था, के पास ही नये मालिक का मकान था। दो मंजिला मकान था। और घर में सम्पन्नता भी थी। लेकिन झगड़े झंझट में यह परिवार अल्योशा की ननिहाल से भी बढ़ चढ़ कर था।

घर में लोग ज्यादा न थे, नानी की बुढ़िया बहन, उसके दो बेटे और बड़े बेटे की स्त्री, बस। लेकिन ये चार लोग ही दिन भर लड़ लड़ कर आसमान सिर पर उठाये रहते। नानी की बहिन का बेटा ही उसका मालिक था।

पहले दिन ही मालकिन ने अल्योशा को देखते ही ताना दिया, 'मैंने तेरी माँ को सिलने के वास्ते किनारी वाले कपड़े दिये थे।'

अल्योशा कुछ न बोला। लेकिन थोड़ी देर बाद ही उसने फिर वही बात दोहरायी। तब अल्योशा ने चिढ़ कर कहा, 'दिया होगा, लेकिन इतनी डींग हाँकने की क्या बात है?'

बस मालकिन नाराज हो गयी। बोली, 'जानता है, तू किस

जवाब द रहा है ?'

तभी मालिक आ गया। उसन अल्योशा ग कहा ऐसा नही बोलना चाहिए। अदब से बातें किया करो। सब की इज्जत किया करो।' फिर अपनी बीवी से बोला, बेकार सब स क्या उलझती हा ?'

वह भी तडपी, 'बेकार कैसे ? तुम्हारे सभी रिश्तेदार '

'भाड मे जाएँ रिश्तेदार और-तू भी।' कह कर वह चला गया।

अल्योशा पहले दिन ही समझ गया कि अजनबी भले हो सकते है, रिश्तेदार नही।

मालिक मकानो के नक्शे बनाता था। इसम आमदनी भी काफी थी। यही काम अल्योशा सीख ले, इसीलिए नाना नानी ने उसे यहाँ नौकर रखाया था, लेकिन यहाँ उससे घरेलू नौकर का ही काम लिया जाता।

रसोईघर के दरवाजे पर अल्योशा को सोना पडता जहा ठण्ड स उसको जुकाम हो जाता। बुढिया सबेरे मुह अँधेरे ही उठती और प्राथना करती। प्राथना मे खुदा स वह अपने बेटे व पतोहू की शिकायत करती और अत मे कहती, 'ऐ खुदा, मेरी मुसीबता को खाते म लिख लेना और मेरी पतोहू मे उनका बदला लेना। मुझे तकलीफ देन वालो की हड्डियाँ चिटख जायें। मेरे दूसरे बेटे को एक खूब सुन्दर बीबी दो जो राजकुमारी हो और लाखो की सम्पत्ति ले कर आये। मेरी बडी पतोहू तो बेकार निकली।'

अपनी पतोहू के बारे मे वह खुदा से जितने भी वाक्य कहती सभी फूहड होते। जब वह प्राथना करती तब अल्योशा की नीद खुल जाती और कबल से मुँह ढाके वह बुढिया की लीलाएँ देखा करता।

प्राथना पूरी करके वह अल्योशा को उठाती, 'जल्दी उठ, नही तो सारा काम पडा रह जायेगा। जा लकडियाँ ला, चूल्हा जला। कल लकडियाँ नही चीरी ? खैर, जा नाश्ता तैयार कर।'

अल्योशा को दिन भर घर के काम मे उलझा रहना पडता। दम मारने को भी फुरसत न मिलती। घर का सारा काम करना पडता। वह तरकारियाँ काटता और साफ करता। मालकिन के साथ सब्जी

की टोकरी ले कर बाजार जाता ।

कभी-कभी अकेले म दाना औरतें कहती, 'लडका है तो काम का, लेकिन बन्जबान है ।

एक शाम को किसी बात पर मालकिन ने कहा, 'तू यह मत भूल कि तू कितन गरीब परिवार का है । मैंने तेरी माँ को काली किनारी वाला सिल्क का कपडा दिया था ।'

बस अल्योशा चिढ गया । बोला, तो क्या तुम उसके बदले म मेरा चमडा चाहती हो ?'

सुन कर मालकिन चीखन लगी, हाय हाय ! यह लडका किसी दिन घर म आग लगा दगा । किसी का कुछ समझता ही नही ।'

तभी मालिक न आ कर फिर अल्योशा की रक्षा की । अपनी बीबी को उसन डाँटा यह लडका है या घोडा ? हर समय पीछे पडी रहती हो । दखना, यह जल्दी ही भाग जाएगा । कोई दूसरा होता तो कब का भाग गया होता ।'

फिर मालिक अल्योशा को अपने कमरे म लिवा जा कर बोला, 'यहाँ तेरा गुजारा न होगा । तू वापस अपने नाना क पास चला जा, चाहे वहा कूडे ही बिना करना ।'

अल्योशा भी ऊब गया था । बोला 'हाँ, कूडे बिनन म मैं यहाँ से अच्छा ही रहता । मैं यहा काम सीखने आया था और मुझे आपने क्या सिखाया ?'

मालिक शरीफ आदमी था । बडी गभीरता स बोला, तुझमे गुस्सा बहुत है । इसस तेरा ही नुक्सान होगा ।' कह कर वह थोडी देर चुप रहा फिर कागज कम्पास और पेंसिल, पटरी देते हुए कहा, 'जब छुट्टी रहे तो इन पर नक्शे बनान का अभ्यास करना ।

अल्योशा फौरन नये काम म जुट गया । एक घर की शक्ल बनाने मे उसन उसका दरवाजा इतना ऊँचा बना दिया कि छत स ऊपर तक चला गया । छत के ऊपर दो चिडियाँ भी बना दी । दरवाजे के बाहर एक कुत्ता भी बनाया ।

जब अल्योशा नक्शा बना रहा था तभी मालकिन वहाँ आ गयी

और उसने अल्योशा को नक्शा बनाते देखा तो उसकी आखे फैल गयी। वह इतनी उत्तेजित हो उठी कि उससे धक्का लग कर मालिक की मेज हिल गयी और उसका नक्शा बिगड गया। वह चीख पड़ा, बुड्ढ मेज हिला दी !'

मालकिन बोली, मैं क्या करूँ ? मैं गर्भवती हूँ। मुझे थोडी ज्यादा जगह चाहिए, और तुम्हारे कमरे मे तो चलना भी मुश्किल है।'

मालिक ने डपटा, तो यही क्यो मरने बार-बार आती है ? क्या घर म और जगह नही है ?'

इस नोक झोक म अल्योशा को हँसी आ गयी। मालकिन ने देख लिया और धमकाती हुई कमरे स चली गयी, 'अभी मजा चखाती हूँ।'

शायद मालकिन न जा कर अपनी सास स अल्योशा के नक्शा बनाने की बात कही होगी। बुढिया अगले ही मिनट भागती हुई आयी और बिगडने लगी तो अब यह पिल्ला भी नक्श बनायगा ? कह कर उसने अल्योशा के बाल नोचे और उसे पटक कर कागज छीन कर टुकडे टुकडे कर डाले और अपने बेटे पर चीखी, 'किसी बाहरी को अपना हुनर दिए दे रहा है। तू बडा मूख है।

बुढिया चली गयी तो मालिक ने कहा, फिलहाल इसे बन्द कर दे।

इसके बाद दोनो औरतो न ऐसा कायक्रम बनाया कि अल्योशा को कभी एक मिनट की भी फुरसत न मिलती। बिना काम के कामो म उसे वे दोनो फँसाए रहती।

अल्योशा का जी यहा से जल्दी ही ऊब गया। अल्योशा को यहा यो ही परेशानिया कम न थी, ऊपर स कभी-कभी जब उसकी नानी आ जाती तो उसकी परेशानिया और बढ जाती। वह घर के पिछले दरवाज से सहमी सी भीतर आती और अपनी छोटी बहन के सामने भिखारिन की तरह झुक जाती। यह देख कर अल्योशा की देह जैसे जलने लगती।

नानी की बहिन चौक कर कहती, 'अरे, तू अकूलिना दीदी !'

नानी को इस घर म कोई इज्जत न मिलती, फिर भी वह कभी

कभी आती। इस बार आयी तो उसके आते ही उसकी बहिन अल्योशा की शिकायत करने लगी 'दिन भर यह बेकार के कामो म समय गवाता रहता है। मार गाली का भी इस पर कोई असर नहीं होता।

नानी न चुपचाप सुन लिया।

उसकी बहिन ने आगे पूछा 'सुना है तूने भीख माँगना शुरु किया ह ?'

'हमारे बुरे दिन ह।' नानी ने धीरे से कहा।

वेशर्मी क लिए क्या अच्छे दिन और क्या बुरे! बशर्मी से बहिन ने कहा।

'क्या करूँ ?

तेरे दिन तो अच्छे थे, मैं तेर पास

मैंने तो बराबर तेरी मदद की थी, जब मैं समथ थी।'

तब तक मालिक आ गया। नानी को दखते ही बोला, 'अहा, मौसी! तू तो सन्यासिनी लगती है। बूढे मौसा का क्या हाल है ?'

'ठीक ही है। खट्टे स्वर म नानी बोली।

'बारबरा को याद अक्सर आती है। वह तो हीरा थी।' मालिक बोला।

मालकिन ने बीच म ही टोका, 'याद है मैंने उस काली किनारी क सिल्क के कपडे दिए थे।'

'हाँ याद है। नानी बोली।

यह वार्तालाप सुन कर अल्योशा मन ही मन उबलन लगा। नानी अलग हुई तो उसने कहा 'तू यहाँ क्या आती है ? देखती नही, य..ँ किस तरह

'सब समझती हूँ रे! लेकिन क्या करूँ! मैं सिर्फ तुझे दखन आती हूँ। तेरा नाना बीमार है। उसकी देखभाल करते करते मैं थक जाती हूँ। मैं अपना काम भी नहीं कर पाती। अब मरे पास एक भी पैसा नहीं बचा है और माइक ने अपने बटे शाश्का को घर से निकाल दिया है वह भी हमारे ही सिर आ पडा है। इन्हान तुझे छ रूबल महीना देने को कहा था धीरे धीरे छ महीन तुझे यहाँ हो गये। जब

आजा तो लेना देना ता क्या तेरी शिकायतें ही सुनने को मिलती हैं फिर भी बेटा, धैर्य रख और काम सीख ले।'

नानी वापस चली जाती ता हफ्ता अल्योशा का मन उदास रहता। नानी की हालत पर तरस आता पर कुछ कर न पाता।

रात को जब घर का काम खत्म होता तो अल्योशा गिरजा जाने का बहाना करके घर से बाहर जाता और रात मे अँधेरे म मँडराता रहता। घर के बाहर उसे शांति मिलती।

रात को उधर घूमते समय अल्योशा ने देखा कि उस गली म कुछ ऐसे घर है जो दिन को मुर्दे की तरह शात रहते हैं, लेकिन रात म वहा जिन्दगी की रोशनी होती है। उन घरो ने अल्योशा को आकर्षित किया। उन घरो की खिडकियाँ अक्सर बन्द रहती और रोशनदान म खूब मस्ती की आवाजें आती। जाडा के कारण बाहर सन्नाटा रहता। अल्योशा को जल्दी ही पता लग गया कि रात को जगमग करने वाले उन घरो म वेश्यायें रहती ह और शराबियो का यह शोर है जो बाहर तक सुनायी पडता है। कभी कभी उन घरो की खिडकिया खुली रहती और परदे भी हटे रहते, तो अल्योशा भीतर के दृश्य खूब दिल-चस्पी स देखता। उन खिडकियो पर भी कुछ आकर्षक तस्वीरें चिपकी होती सो भी अल्योशा को अच्छी लगती। अल्योशा खिडकियो स झाक कर दखता, कुछ लोग प्रार्थना करन की मुद्रा मे होत, कुछ ताश खेलने मे व्यस्त होत, कुछ औरतें किसी के आलिंगन मे जकडा होती कुछ चुम्बन लेते लोग, कुछ झगडते लोग। यह सब अनुपम दृश्य उसे बिना खर्च ही देखन को मिलते।

यह सब देख कर अल्योशा के मन पर गहरा प्रभाव पडता। और घूम घूम कर सभी खिडकियो से इन घरा म होने वाल उत्तेजक काण्डा को दखते देखते अल्योशा काफी रात गुजार देता। फिर इन घरो म घुस कर वहाँ के व्यापार मे शामिल होने की उसकी इच्छा जागन लगी। लेकिन आकर्षण के केन्द्र, आँखा के सामने देख कर भी अल्योशा को दूर ही लग।

एक दिन अल्योशा का कहीं से सात रुपय हाथ लगे। उन्होंने कर

वह एक घर के खुले दरवाजे से भीतर घुसा और जुए के खेल म शामिल हो गया। अल्योशा को लगा कि वही एक जगह दुनिया की सवश्रेष्ठ है क्योंकि वहा उससे न तो किसी ने परिचय पूछा न ही पूछा कि कहा स आय हो, या यह भी नही पूछा कि क्या आय हा ? उसे लगा कि यही जगह है जहाँ सभी अपरिचित भी एक दूसर क मित्र है सभी बराबर ह।

जुए के खेल म अल्याशा को मजा आ गया। जुआ का खेल उस अच्छा लगा और वहा वह रोज जाने लगा। फिर अल्योशा वहा जाने का आदी हो गया और जल्दी ही वह जुए की बारीकियो स भी परिचित हो गया।

एक दिन मालिक क घर से पद्रह रुपये मिले जिह गिरजाघर क पादरी तक पहुँचाना था। रुपये ले कर अल्योशा चला। रास्त मे एक जगह जुआ का खेल जमा था। अल्योशा वही ठहर गया। किसी खिलाडी ने ललकारा।

'एक रुपये की बाजी।"

जोश म आ कर अल्योशा ने तीन रुपये एक साथ लगा दिये। और दूसरे ही क्षण वह छ रुपय जीत गया। उस आदमी न कहा, देखो पूरा खेलो जीत कर भाग न जाना।

इस बार अल्योशा ने नौ रुपये लगाये और हार गया।

फिर तीन रुपये लगाये। इस बार जीता।

खेल जम गया। हार जीत होती रही। लेकिन तभी गिरजा की घटियाँ बज उठीं और खेल खत्म हो गया। लोग बिखर गये।

अल्योशा पद्रह की जगह पाच रुपये ही गिरजा पहुँचा सका। वह जानता था कि किसी-न-किसी दिन पादरी बता दगा कि पाँच रुपय ही मिले थे तब हल्ला जरूर मचेगा लेकिन देखा जायगा।

बसन्त आ गया था। नय बसन्त म नए कपडे पहनने का अल्याशा का मन होता लेकिन नये कपडे कहाँ से आते, सो उसन अपना पुराना कोट ही झाड-पोछ कर साफ कर लिया।

उस दिन अल्योशा रसोईघर म काम म उलझा था कि वहा

से मालकिन चीख उठी, 'दौड कर दरवाजा खोलो।'

दौड कर अल्योशा ने दरवाजा खोला। देखा एक युवक हाथो मे जलती मोमबत्तिया लिए खडा है। उसके पीछे दो आदमी और थे और एक सुन्दर सी दुल्हन बनी लडकी थी। अल्योशा समझ गया कि ये लोग गिरजा से आये है और यह सुन्दर दुल्हन उसके मालिक के छोटे भाई की बीबी है, जिसके लिए बुढिया रोज प्रार्थना करती थी।

दुल्हन के स्वागत मे सभी लोगो ने आगे बढ कर उसे चूमा। सबसे अत मे अल्योशा की बारी आयी। अल्योशा तो उसी दिन से किसी को चूमने का अवसर ढूढ रहा था, जिस दिन उसने रात को खिडकी से चुम्बन आलिंगन के दृश्य देखे थे। अत यह सोचे बिना कि घर के और लोगो ने किस तरह चूमा है, अल्योशा एक अजीब उत्तेजना मे भर उठा और उसने लपक कर दुल्हन के गालो व होठो पर गहरे चुम्बन अंकित कर दिये।

और दूसरे ही क्षण शोर मच गया। फौरन ही सबो के तमाचे अल्योशा के चेहरे व सिर पर बजने लगे।

मालकिन गरजी, सुअर, यह किससे सीखा कि ओठ चूमे जाते है?'

'इसे पादरी के पास ले चलो।' मालिक ने झगडा निपटाने की नीयत से कहा।

अल्योशा सहम कर घबरा गया। अब क्या होगा!

दूसरे दिन अल्योशा को पादरी के सामने आत्मशुद्धि के लिए ले जाया गया ताकि अपने पापो को वह स्वीकार कर ले।

अल्योशा की घबराहट दूसरी थी, अगर पादरी उसे पहचान गया तो क्या होगा? पादरी की खिडकियो पर उसने ढेले फेके थे उसके बच्चो को एक दिन पीटा था उसके कुत्ते को ढेले से घायल किया था।

उसे देखते ही पादरी ने कहा, 'इसे तो मैं पहचानता हूँ।'

मालकिन बोली, 'हाँ, यह रोज रात को गिरजा आता है।'

पान्री चौंका रोज रात था ? नही, यह किसी दिन नही आया।'

मालकिन की आँखे फैल गयी। तभी पादरी ने कहा 'झुक कर खडे हो जाओ और बता दो कि तुमने क्या-क्या पाप किए हैं ?'

अल्योशा के सिर पर पादरी ने मखमल का टुकडा रख दिया। धूपबत्तियो की सुगंध से साँस लेना कठिन हो रहा था, वह बोलने मे असुविधा अनुभव कर रहा था, जैसे उसकी आवाज घुटी जा रही हो। पान्री ने फिर पूछा

'तुम अपने से बडा का कहा मानते हो ?'

'नही।' अल्योशा ने धीरे से कहा।

तो कहो कि मैंने पाप किया है।

अल्योशा घबराहट मे कह बैठा मैंने चोरी की है।'

क्या चोरी की ? कहाँ की ?

गिरजा मे ।'

'यह तो भारी पाप किया। लेकिन चोरी क्यो की थी ? खाने के लिए ?'

नही मैं जुए मे हार गया था।'

पादरी ने मुस्करा कर पूछा क्या तुम जब्त किताबें भी पढ़ते हो ?'

यह सवाल अल्योशा की समझ मे न आया। जब्त किताबें क्या है यह नही जानता था। सो पूछा 'कैसी जब्त किताबें ?'

हाँ जब्त किताबें ? क्या पढ़ी हैं तुमने ?'

अल्योशा चुप रहा। तब पादरी बोला, यह भी पाप है। खैर, उठो तुमने अपने पाप स्वीकार किए अब तुम्हारे सब पाप खत्म हुए।'

अल्योशा परेशान हो उठा था। बोला, 'और मैंने आप के घर पर ढेले फेंके थे।

'बुरी बात है यह पाप है।' पादरी गभीरता से बोला।

आप के कुत्ते को ढेले मारे हैं।'

पादरी मुस्कराया। बोला, 'अब जाओ। अब यह सब मत करना। भले आदमी बनने की कोशिश करना। जाओ।'

सभी के साथ अल्योशा चुपचाप लौट आया। यह नाटक भी खत्म हुआ।

रास्ते भर अल्याशा 'जब्त किताबें' के बार म सोचता रहा। वह समझ गया कि जब्त किताबो के बारे मे पादरी ने मना किया है, तब जरूर ही वे मजेदार होगी। कही से उन्ह प्राप्त करना होगा, जरूर प्राप्त करना होगा।

उसी बसन्त मे एक दिन अल्योशा मालिक का घर छोड कर भाग गया।

किताबों से दोस्ती

नौकरी के लिए अर्जी भी दे दी। और भाग्य की बात कि ज्यादा दौड़-धूप किये बिना ही नौकरी मिल भी गयी। जहाज के अफसर ने कहा 'रा रूबल महीना और खाना मिलेगा।' फिर रसोईघर में ले जा कर अल्योशा को रसोईघर के प्रधान रसोइए को सौंप दिया और कहा, 'प्लेटें साफ करने के लिए यह छोकड़ा।'

उस समय रसोईया बैठा चाय सुड़क रहा था। वह राक्षसों की तरह ऊँचा था और रसोईया वाले कपड़े पहने था। वह देखने में खूंखार और क्रोधी स्वभाव का लगा। देखने में भी गंदा लगा। उसके कानों के बाल मोटे और बड़े बड़े थे, जैसे ऊन हो। उसने एक बार गहरी दृष्टि से अल्योशा को देखा और पूछा 'क्या भूखे हो?'

'हां।'

सुन कर वह गंभीर हो गया फिर फूहड़ हँसी हँस कर अल्योशा के लिए उसने एक प्लेट में खाना मँगाया। बोला 'पेट भर खा ले।'

अल्योशा ने डट कर खाया।

रसोइए का नाम था मिखाइल स्मुर्यी। उसने अल्योशा से पूछा, 'तेरा नाम?'

अल्योशा खा पी कर जरा चैतन्य हो गया था। तत्परता से उसने जरा शान से कहा 'अलेक्सेई पेशकोव।'

'अरे, पुकारने का नाम!'

'अल्योशा!'

'हूँ चलेगा। तेरे मां बाप हैं?'

'नहीं।'

'ठीक है, तुम चोर भी हो?'

'नहीं।'

'कोई बात नहीं। यह जगह तो चोरों से भरी है। तुम भी जल्दी ही सीख जाओगे।' कह कर अजीब तरह से वह हँसा, फिर एक रूबल दे कर बोला, 'जा कर अपने लिए कपड़े खरीद ला।'

अल्योशा को लगा कि देखने में यह आदमी चाहे जैसा भी लगे पर है यह एक स्नेही प्राणी।

स्टीमर पर वोल्गा की रातें अल्योशा को बड़ी सुहावनी लगतीं। डेक पर खड़ा वह विशाल नदी के विशाल फैलाव को देखता, किनारे के जंगलों को देखता और आत्मविभोर हो जाता।

दोब्री स्टीमर कुछ धीमी चाल से चलता।

अल्योशा सुबह से आधी रात तक काम में व्यस्त रहता फिर भी उसे यहाँ अच्छा लगता। दिन भर प्यालों, प्लेटों छुरी काँटों का ढेर लगता जाता और अल्योशा उनकी सफाई करता रहता। बीच बीच में खाना बनाने में वह स्मुर्यी की मदद भी करता।

दोब्री में अल्योशा की मित्रता जैक से हुई जो उसका सहयोगी था। जैक मजेदार आदमी था। हर समय गंदी गंदी कहानियाँ सुनाता और भाड़ी हँसी हँसता रहता। उसकी बातों की विषय होतीं, सिर्फ औरतें। जहाज में उसे कोई भी औरत दिख जाती तो वह उसका गुलाम हो जाता। अक्सर वह अल्योशा पर रोब जमाने को कहता, देख औरतों को ऐसे फंसाया जाता है।

जैक के अलावा सरजे और मैक्सम भी उसके सहयोगी थे। उनसे भी अल्योशा ने दोस्ती गाठ ली। वहाँ मजे से दिन कटने लगे।

एक दिन रात को जब काम से फुर्सत मिली तो स्मुर्यी ने अपने केबिन में बुला कर अल्योशा को एक किताब दे कर कहा 'अलेक्सेइ मैं थका हूँ। तुम यह किताब पढ़ कर सुनाओ तो।

अल्योशा ने थोड़ी देर पढ़ कर सुनाया। फिर स्मुर्यी को नींद आ गयी।

फिर तो यह क्रम रोज का हो गया। जैसे अल्योशा के कामों में यह भी एक जरूरी काम हो। जैसे रोज रात को किताब पढ़ कर स्मुर्यी को सुनाना और उसे सुलाना उसके काम का अंग हो। अतः वे किताबें रोचक हों या नहीं, पढ़ने में जी लगे या न लगे, पढ़ कर सुनाना ही पड़ता।

स्मुर्यी के पास एक सन्दूक भर कर किताबें थीं। वह अल्योशा को समझाता—'अगर एक बार पढ़ कर न समझो तो दोबारा पढ़ो। जरूरत पड़े तो सात बार पढ़ो, एक दर्जन बार पढ़ो। खूब पढ़ो। बिना

पढा लिखा आदमी बैल होता है।

कभी कभी जब वह आखें बद करके लेट जाता तो उसका पट धौंकनी की तरह चलता। कभी कभी वह अपने फौजी जीवन की कहानियां सुनाता। वह खूब शराब पीता था। सवेरे उठते ही नाश्ते की तरह एक बोतल वोदका डकार जाता, फिर सारा दिन पीता रहता। लेकिन चाहे वह जितना भी पीता उसे नशा कभी न होता। वह किसी का भी गालियां दे देता। इसमे उससे सभी डरते। अक्सर उससे लोगा का झगडा भी हो जाता। लेकिन जल्दी ही वह झगडने वाला का अपना दोस्त बना लेता। उसका अजीब स्वभाव था। जहाज के कप्तान की बीवी उसे खूब पसन्द करती थी।

एक दिन स्मुर्यी कुछ मौज मे डक पर लेटा अल्योशा से बाते कर रहा था। एकाएक अल्योशा ने पूछा, 'आखिर लोग तुमसे इतना क्यो डरते हैं, जब कि तुम अच्छे आदमी हो।'

स्मुर्यी थोडा भावुक हो कर बोला, 'अलक्सेई, मैं सचमुच अच्छा आदमी हूँ, लेकिन मैं अच्छाई का प्रदशन नही करता। मैं बेवकूफ नहीं हू। तू भी अच्छा ही है। बस पढना जारी रख। किताबा म ही जरूरत की सभी जानकारी रहती ह। अगर मेरे पास खूब रुपये होते तो मैं तुझे खूब पढाता, क्योकि बिना पढा लिखा आदमी बैल होता है।'

एक दिन जहाज के कप्तान की पत्नी ने स्मुर्यी को गागोल की लिखी हुई एक किताब दी। उस किताब म अल्योशा ने गोगोल की पहली कहानी—भयानक प्रतिशोध—पढी। फिर उसने तारस बुल्बा पढी। लेकिन स्मुर्यी बोला बकार है, सब ऊटपटाग! मैं यह सब पढ चुका हूँ इससे अच्छी और बहुत सी किताबें ह।'

अल्योशा ने स्मुर्यी से बताया कि कुछ ऐसी भी किताबें ह जो जब्त हैं और जिन्हे रात मे छिपा कर पढा जाता है। सुन कर स्मुर्यी को ताज्जुब हुआ कहा 'क्या चडूखाने की हाक रहा है ?'

नहीं, यह बात पादरी ने खुद ही बतायी थी।' अल्योशा ने जिद की।

'हो सकता है कुछ तो ऐसी चीज है ही, जिन्हे मैंने नहीं देखा है।' स्मुर्यी मान गया।

धीरे धीरे किताबें पढ़ने की अल्योशा की आदत पड़ गयी। अब वह किसी भी पुस्तक में घंटो डूबा रह सकता था, किताबों से अब उसकी गहरी दोस्ती हो गयी थी। बीच बीच में स्मुर्यी भी बुला कर कोई किताब दे कर कहता, अलेक्सेई, लो पढ़ो। मैं सुनूंगा।'

'मेरे पास थोड़ी तस्तरियाँ अभी साफ करने को हैं।

स्मुर्यी कहता, 'मैक्स से कहो, वह साफ कर देगा।'

यों अल्योशा का काम कभी कभी मैक्स को करना पड़ता, और इसके लिए मैक्स का नाराज होना भी स्वाभाविक था। गुस्से में मैक्स काम करते समय गिलास, तस्तरी तोड़ देता। इसके लिए उसे डाँट सहनी पड़ती।

एक दिन मैक्स ने जान बूझ कर कई गिलास तोड़ डाले और खूब पानी बहा दिया। तब अफसर ने अल्योशा को बुला कर डाँटा, यह तेरे कारण हुआ है तुझे इनके दाम देने पड़ेंगे।'

अफसरों को अल्योशा का किताबें पढ़ना बुरा लगता। वे जान बूझ कर उसका काम बढ़ाने को तस्तरियां गंदी करने लगे। अल्योशा समझ गया कि इस काम का भी अंत बुरा ही होने वाला है। क्योंकि मैक्स, सरजे और जक भी पीछे पड़ गये थे।

एक शाम को दूसरे दर्जे में सरजे की केबिन के सामने दो औरतें बैठी थीं। एक बूढ़ी और दूसरी छोकड़ी। सरजे ने मन में जाने क्या योजना बनायी कि उसने बूढ़ी औरत से थोड़ी देर घुल मिल कर बातें की और थोड़ी देर बाद वह बुढ़िया उठ कर कहीं चली गयी। और उसकी जगह सरजे उस छोकड़ी से सट कर बैठ गया।

उसी रात को काम से छुट्टी पा कर जब अल्योशा सोने के लिए अपना बिस्तर बिछा रहा था, तभी भागता हुआ सरजे आया और अल्योशा को अपनी बाँहों में कस कर कहा, 'जल्दी चल, जल्दी चल तेरे लिए मैंने मौज का सामान जुटाया है।'

सरजे नशे में था। अल्योशा ने उससे पिंड छुड़ाना चाहा तो उसने

उसे खींचते हुए डपट कर कहा, 'अरे बेवकूफ ! चल भी !'

तभी मैक्स भी आ गया। वह भी नशे में चूर था। फिर दोनों ही अल्योशा को पकड़ कर खींचते हुए डक पर घसीट ले गये। वहाँ केबिन के दरवाजे पर जैक खड़ा था। उसके पास ही वही लड़की खड़ी थी नशे में धुत्त अपने हाथों को अपनी पीठ से सटा कर चीख रही थी, 'मुझे जाने दो, अब जाने दो।'

एक वीभत्स हँसी हँस कर, सरजे और मैक्स ने अल्योशा को उस लड़की पर झोंक दिया। जैक बोला, तू भी मजे ले ले।'

अल्योशा घबड़ा गया।

पास ही, उधर अँधेरे में डक पर स्मुर्यी खड़ा था। वह लपक कर आया और सरजे और मैक्स के गालों को पकड़ कर दोनों के सिरों को लड़ा कर ढकेल दिया। दोनों दो ओर दूर दूर तक लड़खड़ाते हुए जा कर गिर पड़े। स्मुर्यी ने जैक को भी डाँटा। फिर अल्योशा पर भी बिगड़ा, 'भाग जा यहाँ से।'

अल्योशा भाग आया, लेकिन सोचता रहा कि तीनों दुष्टों ने शायद लड़की को बहुत सताया होगा। खैर, वह बाल बाल बच गया।

तभी स्मुर्यी आया और बगल में बैठ गया। बोला, 'ओफ ! जानवर हैं सब ! मैंने देख लिया था। वे तुझे जबरदस्ती उस छोकड़ी के पास ले जा रहे थे, क्यों ?'

अल्योशा उसी लड़की के बारे में सोच रहा था। बोला, तुमने उस लड़की को उनके पंजे से छुड़ा दिया न ?'

'उस लड़की को !' स्मुर्यी ने सिर हिला कर कहा, 'इस जहाज पर सब कुछ अजीब है। तेरी भी क्या किस्मत है। तू भी इन सुअरों के बीच आ पड़ा है। मुझे तेरे लिए बड़ी फिक्र है।

इसी समय ऊपर वाली रोशनी जल गयी, और भी रोशनी हुई। अल्योशा समझ गया कि किनारा पास ही है जहाँ जहाज रुकेगा। स्मुर्यी भी उठ कर चला गया। वह जरूर अब किनारे पर जाएगा। जहाँ भी जहाज रुकता अल्योशा देखता कि स्मुर्यी नीचे जा कर किनारे पर खड़ी औरतों की भीड़ में गुम हो जाता था। अल्योशा ने और भी

देखा था, हर जगह जहाँ जहाज रुकता वहाँ किनारे पर सामान बेचने वाली औरतें झुंड बना कर खड़ी रहतीं। उनसे सामान खरीदते और मोल भाव करते समय मल्लाह लोग उनकी छाती व बाँहों में चिकोटी काट लेते और वे चीखतीं थूकतीं और मारने दौड़तीं।

अल्योशा डेक के किनारे लगी रेलिंग पकड़ कर खड़ा हो गया और किनारे पर के बलुए मैदान, वहाँ खड़ी औरतों की हँसी व गाने की आवाज सुनने लगा। अल्योशा को लगा जैसे उसे बरसों हो गये हों उसी जहाज पर रहते या वह जैसे बूढ़ा हो गया हो। उसके मन में औरतों के लिए तरह-तरह के विचार आने लगे। तभी डेक की सफाई करने वाला बूढ़ा आ गया। वह झाड़ू लगाते हुए बड़बड़ा रहा था, 'इन औरतों को ले कर कितनी परेशानी होती है! मुझे ये औरतें अच्छी नहीं लगतीं। अगर मैं औरत हुआ होता तो जरूर ही किसी पुल पर से कूद कर नदी में डूब मरता। समझ लो अल्योशा अभी बच्चे हो, पर मेरी बात समझ लो जब तक इन औरतों के साथ रहो, समझ लो कि आग के साथ हो। यह कभी मत समझना कि वे बेवकूफ होती हैं। वे बड़ी होशियार होती हैं, खूब समझदार बल्कि समझो कि जादू जानती हैं।'

एकाएक बूढ़ा चुप हो गया। अल्योशा ने घूम कर देखा, कप्तान की बीवी उधर से जा रही थी। वह अपना स्कार्ट ऊपर उठाये ऐसे चल रही थी जैसे पानी में चल रही हो। *अल्योशा को देख कर वह* मुस्कान के साथ बोली, '*क्या, तुम नीचे नहीं गये? जाओ न, तुम भी* ताजे हो आओ।'

अल्योशा चुपचाप देर तक उस लम्बी और सुन्दर स्त्री को देखता रहा। बाद में वह उस औरत के कहे का अर्थ समझ पाया कि क्यों उसने ताजा हो आने की बात कही थी। सोच कर अल्योशा अकेले में ही झेंप कर शरमाया। उस समय अल्योशा को लुडमिला बहुत याद आयी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि सभी उससे औरतों के बारे में ही क्या बातें करते हैं!

मैक्स को जहाज की नौकरी से निकाल दिया गया। वह चुपचाप चला भी गया। उसी बूढ़ी और छोकड़ी के कारण ही शायद वह निकाला गया था, क्योंकि उन्हे ले कर सरजे बड़ी देर तक कप्तान की केबिन के दरवाजे पर सिर पटकता रहा और गिडगिडाता रहा 'मुझे माफ कर दो। यह मैक्स की बदमाशी थी मेरी नहीं, इन दोनों से चाहे पूछ लो।'

फिर भी कप्तान ने उसे दुतकार दिया।

उस जहाज पर अल्योशा को अजीब-अजीब सनसनीखेज नजारे देखने को मिले। चोर पकडे जाते, औरतों के साथ यात्री अश्लील-दृश्य मे सने पकडे जाते, कोई झगडा करके जहाज से कूदने जाता, कोई रो-रो कर हगामा खड़ा कर देता। अल्योशा इन सबों का जैसे आदी हो गया था। वह ऐसों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करता। सोचता मैक्स सीधा और भला था, उसे निकाल दिया गया और बदमाश सरजे व जैक अभी भी जमे है। तब स्मुर्यी कहता, 'सभी आदमी एक जैसे नही होते। अच्छे और बुरे सभी तरह के होते है। तू यह सब मत सोच। किताबें पढ, तुझे अपने आप सब पता लग जायेगा।

एक दिन पाँच कोपेक मे अल्योशा ने एक किताब खरीदी—मल्लाह की कहानी। ला कर उसे स्मुर्यी को दिया। ताकि स्मुर्यी खुश हो। लेकिन स्मुर्यी बोला, 'यह क्या बेवकूफी की किताब उठा लाया? बता इसमे जो लिखा है, वह क्या सच है?

'मैं नही जानता।'

मैं जानता हूँ।' कह कर गम्भीर हो गया स्मुर्यी और बोला, 'तू काफी होशियार हो गया है अब। अब तू और कितना सीखेगा? यहाँ अब तेरे सीखने को कुछ नही है।'

अल्योशा ने स्मुर्यी की बात सुनी, समझा। वह भी अनुभव करता था कि यह जगह अब उसके लिए छोटी पडती थी। लेकिन भविष्य में कहीं कुछ आसरा न पा कर वह जल्दी वहाँ से जाना भी नहीं चाहता था। लेकिन जल्दी ही वह स्मुर्यी के कहने का मतलब समझ गया।

एक बार सरजे ने रसोईघर से चाय का सामान चुरा कर एक यात्री को दे दिया। अल्योशा ने देख लिया था। उसने स्मुर्यी से बताया तो स्मुर्यी बोला, 'मैं जानता हूँ। यहाँ यही सब होता है।'

एक शाम को, कजान से निझनी के रास्ते में अल्योशा की कप्तान के सामने पेशी हुई। वहाँ स्मुर्यी भी एक स्टूल पर बैठा था। अल्योशा जब वहाँ गया तो कमरे का दरवाजा बंद कर दिया गया। तब स्मुर्यी ने पूछा, 'तूने सरजे को मेरा प्याला और तश्तरी दी है ?'

'नहीं उसने मुझसे छिपा कर लिया होगा।' अल्योशा ने कहा।

कप्तान बोला 'देखा, यह जानता है देखा नहीं है।'

स्मुर्यी ने फिर पूछा, 'तूने कभी सरजे से पैसे लिए हैं ?

'नहीं।'

'कभी नहीं ?'

कभी नहीं।'

तब स्मुर्यी ने कप्तान से कहा, 'और चाहे जो हो, पर यह मैं दावे से कह सकता हूँ कि अलेक्सेई कभी झूठ नहीं बोलता।'

इसके बाद क्या हुआ सो अल्योशा को नहीं मालूम। लेकिन निझनी पहुँच कर उसे अचानक नौकरी से छुट्टी दे दी गयी। हाथ में आठ रूबल मिले।

स्मुर्यी ने कहा, 'आज से आँखें खोल कर रहना, समझे। मुँह बाए कर मत चलना।'

कह कर स्मुर्यी ने अल्योशा को बाँहों में उठा लिया, चूमा और डेक के नीचे उतार दिया।

अल्योशा दुखी था। सरजे ने उसे 'चोर' बनवा कर निकलवाया, इसका दुख उसे ज्यादा था। उसकी आँखों में आँसू छलछला आये। वह किनारे पर खड़ा देर तक, जहाज को जाते देखता रहा।

इस तरह अल्योशा का नाविक जीवन बीच में ही टूट गया।

नाविक जीवन से अलग हो कर अल्योशा फिर नाना-नानी के पास गया।

अब नाना दो खिडकियां वाली एक झोपडी म रहता था जो शहर के एक छोर पर थी। वह पूरी तरह बरबाद हो गया था। शरीर स निबल और पैसो स निधन। नानी भी खूब बूढी हा गयी थी।

अल्योशा ने जहाजी जीवन मे किताबा से दास्ती क. ली थी। उमसे नाना न बरसा पहल उसे प्राथना की पुस्तकें पढाई थी। बचपन म कुछ दिना के लिए वह जब नियनी आया था, मामा के लडका क साथ एक स्कूल मे गया था लेकिन वहा सिफ गाली गलौज और बेत की मार ही मिलती थी, शिक्षा तो नही ही। बल्कि असली शिक्षा ता उस जूते की दूकान और सेर्गेयेव परिवार की नौकरी म तथा जहाज पर ही मिली। अब अल्योशा न किताबो की दुनिया देख ली, ता उसे लगा कि अब उमे दुनिया को जानन के लिए और कुछ नही चाहिए।

एक दिन अल्योशा का हस एंडसन की लिखी परियो की कहानिया' मिल गयी। उसे उसमे मजा तो आया लेकिन जानने लायक कुछ विशेष न मिला।

लेकिन अल्याशा अब हर समय किताबा की खोज म रहता और जो भी किताब उमे मिल जाती वह पढने लगता। इसी तरह उमक दिन कट रह थे।

एक दिन घर मे खिडकी के पास बठा अल्याशा सिगरट पी रहा था। उसी समय वहा नाना आ गया। उसने गौर से देखे बिना ही पूछा, 'कुछ पैस बचाय ह ?'

अल्योशा ने कोई जवाब न दिया। तब नाना न घूम कर उसे दखा और सिगरेट पीते देख कर एकदम से उछल पडा। चीखा जहर का स्वाद ले रहा है ?' कह कर वह अल्योशा पर झपटा। अल्याशा न बचाव के लिए अपना हाथ बढाया लेकिन उसम नाना को धक्का लग गया और वह फश पर लुढक गया। फिर बूढा चीखा तून अपने नाना को, अपनी मा के बाप को पटक दिया ? फिर नानी का पुकार कर बताया, सुनती हो, इसने मुझे पटक दिया।'

अल्याशा हतप्रभ सा खडा रहा। तभी झपटती हुई नानी आयी

और अल्योशा स कुछ कहे-पूछे बिना ही उसने अल्योशा के बाल पकड कर कई तमाचे लगा दिए और बोली, 'ले ले, और ले !'

नाना उत्तेजना मे बोला, 'यह डाकू, फिर आ गया। यह भी बिल्कुल अपने बाप जसा ही है।' और लगडाता हुआ वह अपने कमरे मे चला गया।

अकेला होने पर नानी ने अल्योशा के पास आ कर बडी आजिजी से कहा, 'मैंने तुझे पीटा थोडे ही था, यह तो तेरे नाना को दिखाने के लिए था। उसकी हालत तो देख ही रहे हो। समझ लो कि अब वह बच्चा है और तुम बडे हो।'

अल्योशा का मन भर आया।

शाम को चाय पीते समय नाना ने कहा 'अल्योशा, तू फिर सर्गेयव परिवार म चला जा। बसन्त आने पर फिर जहाज पर चला जाना। बस, जाडा उनके यहा बिता ले। लेकिन उन्हें यह आभास मत होने देना कि बसन्त मे तू भाग जायेगा।'

नानी ने टोका इसे धोखा देना सिखाते हो ?'

नाना ने कहा, 'बिना धोखा दिए कोई जी ही नहीं सकता। क्या तू किसी ऐसे का नाम ले सकती है जिसने जिन्दगी भर किसी को धोखा न दिया हो।'

नानी चुप रह गयी।

उसी रात नानी नाती ने मिल कर जीवन निर्वाह के लिए एक नये व्यापार की योजना बनायी—चिडया का व्यापार। तय हुआ कि जगल से अल्योशा चिडिया को पकड लाया करे और नानी उन्हें बेचा करे। इसस घर का खर्च चल सकेगा।

दूसरे ही दिन पिंजडा और जाल का जुगाड जुटा कर अल्योशा नये काम मे लग गया। अब सबेरे से ही वह झाडियो म जा बैठता।

पहले दिन नानी ने चालीस कोपक मे एक चिडिया बेची। दोनो का उत्साह बढा। फिर जल्दी ही अल्योशा एक सिद्धहस्त चिडीमार बन गया।

सबेरे ही अल्योशा जगल म चला जाता जाल बिछा देता और

अपना कोट बिछा कर लेट कर किताबें पढ़ता।

लेकिन जाड़ा आते ही यह व्यापार बंद हो गया। एकाएक चिड़िया जाने कहां उड़ गयी।

इस बीच चिड़ीमारी के दौरान अल्योशा को पढ़ने को काफी समय मिला। लेकिन उसे अधिकतर बेकार की ही किताबें मिल पाती। लेकिन उन बेकार किताबों के बीच भी उसे बालजाक और फ्लाउबर्ट की पुस्तकें मिल गयीं। जिनके प्रति अल्योशा आकर्षित हुआ।

फ्लाउबर्ट की किताब पर अल्योशा का मन रीझा। सीधे-सादे ढंग से, सरल भाषा में उसकी लिखी कहानी अल्योशा को खूब पसन्द आयी।

इसी बीच उसने गोगोल, तुर्गनेव और लरमनतोव की कई किताबें पढ़ लीं।

एक दिन उसके हाथ चेखव की एक किताब आ गयी, जिसने भी उसे बहुत प्रभावित किया।

इस प्रकार किताबें अल्योशा के लिए जीने का सहारा बन गयीं। यद्यपि अभावों और संघर्षों के पाटों के बीच पिसती जिन्दगी उसे जेल की कोठरी सी सूनी लगती थी, और एकमात्र किताबें ही थीं जो उस सूनेपन को तोड़ती थीं जैसे जेल की कोठरी के बाहर से आती चिड़िया की आवाज हो जो जेल के सन्नाटे को तोड़े।

एक दिन एक साप्ताहिक पत्र में उसने प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्राद का जीवन वृत्तान्त पढ़ा, जिसमें उसे पता लगा कि उस बड़े वैज्ञानिक ने अपना जीवन एक साधारण मजदूर के रूप में शुरू करके प्रसिद्धि की इस चोटी पर पहुँचा है। यह पढ़ कर जाने क्यों अल्योशा रोमांचित हो उठा। उसके मन में एक प्रकार का उत्साह जागा। फिर उसने खोज-खोज कर बहुत से प्रसिद्ध लोगों की जीवनियाँ पढ़ीं और पाया कि अधिकांश लोग मजदूरों जैसी साधारण स्थिति से ही जीवन शुरू करके दुनिया के बड़े आदमी बने हैं। कहीं उसने यह भी पढ़ा कि रेल इंजन का आविष्कर्ता इस्टीवेन्सन ने भी मजदूर के रूप में ही जीवन शुरू किया था। अब अल्योशा को विश्वास हो गया कि निम्न-स्तर

स विपरीत परिस्थितिया से उठ कर भी बडा आदमी बना जा सकता है। उसके मन मे नयी कल्पना जागी।

अल्योशा की कल्पना म बहुत 'बडा' या 'नामी' आदमी बनन का इच्छा न थी पर वह इसान के लिए इसान जैसा जीवन बितान का ही सपना देखने लगा।

जाडा शुरू होते ही नाना अल्योशा को उसकी नानी की बहन क यहा फिर पकड ले गया। जहाँ अल्योशा जाना नही चाहता था वहा उसे फिर जाना पडा। किस्मत की बात।

पहले दिन ही शाम का जब घर के सभी लोग इकट्ठे थ तब अल्योशा को बुला कर झगडालू मालकिन ने पूछा बता जहाज पर क्या क्या सीखा।

अल्योशा ने कहा, 'किताब पढना।'

मालकिन चौकी 'किताबें ! किताबो से बहुत नुकसान होता है। किताबें पढन वाले बर्बाद हो जाते हैं। मैंने बहुतो का किताबो क कारण बिगडते देखा है। खैर अब यहाँ तू किताबें मत पढना।

अल्योशा वहाँ से उठ कर चला गया। उसे बडी घुटन हुई।

अब मालिक के घर मे दो छोटे बच्चे भी थे। मालकिन के कर्कश स्वभाव के कारण बच्चो की देखभाल करने वाली दाई भाग गयी थी। अब अल्योशा को बच्चो की देखभाल करनी पडती उनके गद किए कपडे भी साफ करन पडते। एक दिन घर की धोबिन न कहा, 'अरे तू छोकरा है आखिर तू औरतो के काम क्यो किया करता है ?

धोबिन अल्योशा को बडी अच्छी लगी। वह पच्चीस-तीस साल की थी। खूब तेज जीभ थी। अल्योशा की उससे घनिष्टता हो गयी। उस नगर मे फौज के सिपाही खूब थे। वे अक्सर औरतो को सताते तब थोडा हगामा भी होता। एक दिन अल्योशा ने धोबिन स पूछा 'औरतो को ले कर इतनी झझट क्या होती है ?'

धोबिन ने बडी समझदार की तरह कहा, यह खेल ही एसा है

कि हर कोई बेईमानी करता है। यह सब प्यार नही है। पैसा का खल है। समय आयेगा तो तुझे भी सब मालम हो जायगा।'

इन्ही दिनो अल्योशा का सम्पक एक दर्जी का काम करने वाले से हुआ। उसके बीबी थी, जिसे कोई बच्चा नही था। इसलिए वह दिन भर घर मे बैठी किताबें पढती रहती थी। लोगो का कहना था कि किताबें पढते पढते उसका दिमाग खराब हो गया है। वहा रहने वाले सिपाही उसके विषय मे तरह तरह की बातें करते, जो बडी भद्दी और फहड होती। अल्योशा को यह सब सुन कर बुरा लगता।

एक दिन अल्योशा ने इसकी चर्चा धोबिन से की। धोबिन पहले तो हँसी फिर अल्योशा को उस औरत के पास ले गयी। फुसफुसा कर उससे धाबिन ने कुछ कहा और मुस्करा कर उसने हाथ बढा कर अपनी छोटी छोटी उँगलियो से अल्योशा का हाथ पकड लिया और खीचते हुए कहा, 'तू अजीब लडका है, इधर आ। क्या बात है ?'

अल्योशा को वह औरत बडी आकषक और अच्छे स्वभाव की लगी। उसने कोशिश की पर मन की बात रोक न पाया। बोला, 'मैं कहने आया हूँ कि तुम कही चली जाओ यहाँ से। यहाँ के सिपाही तुम्हारे बारे मे गंदी बातें करते ह।'

वह अटटहास करके हँस पडी। अल्योशा को लगा जैसे गिरजाघर की घटियाँ बज उठी हैं। वह बोली, 'तुम घबराओ नही। उनस निपटना मैं जानती हूँ।'

फिर पूछा, 'क्या पढना जानते हो ? क्या किताबे पढोग ?'

'पढना चाहता हूँ लेकिन मुझे न किताबे मिलती ह न ही मुझे पढने का समय मिलता है।'

'मैं तुम्हे किताबें दूँगी। जब समय मिले तब पढना।' कह कर उसने काली जिल्द की एक किताब अल्याशा को दी। फिर पूछा, तुम्हारा नाम क्या है ?'

अलेक्सेई मक्सीमोविच पश्कोव।' बडे ढग से अल्योशा ने कहा।

वह फिर मुस्करायी बोली, 'ठीक, अलेक्सेई ! इसे पढ लेना तो दूसरी ले जाना। कभी-कभी आना।'

किताब ले कर अल्योशा घर आया। बडे यत्न स किताब पर पहले

तो कागज चढाया फिर नई घुली कमीज म लपेट कर रखा ताकि कोई गदी या खराब न कर द।

शनिवार की शाम को मालिक का पूरा परिवार किसी दावत म गया था। अकेला पा कर अल्योशा ने खिड़की के पास बैठ कर किताब पढना शुरु किया। यह एक उपन्यास था। बड़ा मन लगा। अल्योशा उसी म डूब गया। उसे पता ही नही लगा कि कब तक वह पढ़ता रहा। काफी रात गये मालिक का परिवार वापस आया, तब भी अल्योशा रसोईघर म बठा पढ ही रहा था। उसने जल्दी से किताब छिपा ली। दखते ही बुढिया चीख उठी बता क्या कर रहा था? क्या सो गया था? पूरी मोमबत्ती कस खत्म हो गयी? इस तरह तो तू एक दिन घर म आग लगा देगा।

अल्योशा कुछ न बोला।

रात का जब घर के सब लोग सो गय तो खिडकी पर किताब ले कर अल्योशा बैठा। रोशनी जला नही सकता था, इसलिए चादनी की राशनी मे पढन की कोशिश करन लगा। पढना मुश्किल था फिर भी वह पढ़ने लगा। वह फिर उपन्यास मे डूब गया। तभी जाने कब नगे पाव चुपके चुपके बुढिया आयी और चिल्ला पडी 'तुझे यह किताब मिली कहाँ?'

अल्योशा न जान छुडाने को कहा गिरजा के पादरी से।'

इस पर बुढिया तो चुप हो गयी पर तभी मालकिन भी आ गयी। बोली, किताब पढने वाले लुटेरे और हत्यारे होते है।'

अल्योशा की खामाशी ने फिर बला टाल दी, लेकिन उस घर मे अल्योशा को पढने के लिए जितना रोका जाता था उसकी पढने की भूख उतनी ही बढ़ती जाती थी। लेकिन बुढिया ता बिल्ली की तरह पीछे पडी थी। वह कह चुकी थी कि अब किताब दखेगी तो जला देगी। इसी डर से उपन्यास को पूरा किए बिना ही अगले दिन अल्योशा उस वापस करने गया। और आखा मे आँसू भर कर कहा, मैं पूरी नही कर पाया। वे सब मुझे पढने नही देत।'

वह भी उदास हुइ। बोली, कसे जगली है वे सब! खर जब

तुम्ह समय मिले तो यही आ कर पढना या किताव ही ले जाना।'

अल्योशा ने वडी करुण दष्टि से रैक मे नगी पुस्तका को देखा।

उसकी किताबें बुढिया चूल्हे मे जला न दे, इस डर से अल्याशा फिर उसम किताबें नही लाया।

जिस दूकान पर अल्योश्शा रोटी खरीदने जाता था वहा सस्ती किताबें भी मिलती थी।

वह दूकान आवारो का अड्डा था, फिर भी अल्योशा वही स किताबें लाने लगा। किताबें वह बिस्तरे के नीचे छिपा कर रखता और रात को चाँदनी की रोशनी मे पढता। क्योकि बुढिया राज सोन के पहले मोमबत्ती को नाप लेती थी और यदि किसी दिन सबरे मोमबत्ती छोटी मिलती तो वह बडा उपद्रव मचाती। इसलिए मोमबत्ती जलान का अल्योशा की हिम्मत न पडती।

एक दिन सचमुच बुढिया के हाथ कई किताबे पड गयी। उसने सचमुच उन्ह जला दिया। नतीजा हुआ कि अल्योशा उस दूकानदार का मतालिस कोपका का कजदार हो गया। अब वह जब भी रोटी लेन जाता तो दूकानदार तगादा करता। फिर उसन सख्ती से बाते करनी शुरू की।

अल्योशा परेशान हो गया ता निश्चय किया कि न हो चोरी करके ही कज उतारेगा। उसकी हालत खराब थी। काम मे मन न लगता। एक दिन मालिक ने पूछा, 'पश्कोव क्या बात है? क्या तरी तबियत ठाक नही है?'

अल्योशा न सब सच सच बता दिया। मालिक बोला, ये किताबे कभा न कभी आदमी को झझट म डाल ही देती है।' कह कर उसने आधा रूबल अल्योशा को दे कर कहा, 'उस दूकानदार से छुटटी पा, लेकिन मेरी बीबी या माँ से इसका जिक्र मत करना।

अल्योशा किसी तरह कज स मुक्त हुआ।

उस दिन रात को एकाएक गिरजा की घटियाँ बज उठी। सभी लोग खिडकिया से झाक झाक कर पूछन लगे, 'क्या हुआ? क्या बात है? कही आग लगी क्या?'

आज 'न' करने की किसी मे हिम्मत न थी।

दूसरे ही दिन अल्योशा किताब लेने उसी औरत के यहा पहुचा। दखत ही वह बोली, 'मुझे सब पता लग गया है। तुम्हे अस्पताल जाना पडा था।'

अल्योशा शर्माया कि उसकी दुदशा की बात यहा तक पहुच गयी। खैर, उस दिन वह कई किताबें उठा लाया और घर जा कर दिन रात पढता रहा।

बुढिया चुप रही। जब रहा न गया तो बोली, तू अधा हो जायगा।'

अल्योशा ने अनसुनी कर दी।

इन्ही किताबो के बीच अल्योशा को वाल्टर स्कॉट और विक्टर ह्यूगो की कई किताबें मिली जिन्ह पढ कर उसका मन निहाल हो उठा। अब वह कुछ और अच्छी किताबें चाहता था। एक ही तरह की किताबें पढते पढते वह ऊबने लगा था।

एक दिन उस औरत ने पूछा, 'ये किताबें कैसी लगी ?'

बहुत अच्छी नही।'

'क्यो ?'

'यह सब मैं खूब जान गया हूँ। सिफ दो ही विषयो पर सारे उप न्यास हैं। एक तो यह कि बुरे लोग अच्छे लोगो पर अत्याचार करते हैं, दूसरे सिफ प्यार की बातें होती हैं।'

उस औरत की आँखो म चमक आ गयी। हँस कर बोली 'लेकिन सभी मे प्यार की ही बातें तो नही है।'

'दुनिया की और बाते भी मैं जानना चाहता हूँ।'

अच्छा अब दूसरे दिन खोज कर दूसरी किताबे दूगी।'

फिर अल्योशा चला आया।

एक दिन उसने एक किताब दी। पुश्किन की कविताओ का सग्रह। उसे पढते समय अल्योशा को लगा जैसे वह शरबत पी रहा है। वह इन कविताओ म इतना डूबा कि उपन्यास उसे नीरस लगने लग। उन कविताओ की ओजस्वी पक्तिया अल्योशा की स्मृति म सदा क

अल्योशा छत पर चढ़ कर देख आया आग कहीं नहीं लगी थी। लेकिन घंटियाँ बजती ही जा रही थीं। मालिक लपक कर घर से बाहर गया और लौट कर बताया किसी ने ज़ार की हत्या कर दी।'

सभी चौंके। बुढ़िया तो जैसे आकाश से गिर पड़ी 'ज़ार की हत्या? कैसे? किसने की?'

मालिक ने गम्भीरता से कहा अब ज़रूर लड़ाई छिड़ेगी, लेकिन इसकी चर्चा कोई न करे।'

सबों ने साँस खींच ली। फिर घंटियाँ भी चुप हो गयीं।

रविवार को गिरजा से लौट कर बुढ़िया ने पूछा, 'खाना तैयार है?

घबराहट में अल्योशा ने 'हाँ' कह दिया, जब कि खाना अभी तैयार न था। इसी बात को ले कर उस दिन अल्योशा को इतनी मार पड़ी कि वह अधमरा हो गया।

सबेरे मालिक उसे ले कर अस्पताल गया।

डाक्टर ने अल्योशा की परीक्षा की तो नाराज़ हो कर बोला, 'यह तो अत्याचार की हद है। मुझे पुलिस में रिपोर्ट करनी पड़ेगी। इसकी पूरी जाँच होनी चाहिए।'

सुन कर मालिक घबरा गया। डाक्टर ने अल्योशा से पूछा, क्या तुम शिकायत करना चाहते हो?'

नहीं, बस मुझे दवा लगा दो।

क्या तुम्हें बहुत मार पड़ी है? डाक्टर ने फिर पूछा।

नहीं इसके पहले इससे भी ज्यादा मार खा चुका हूँ। अल्योशा ने जवाब दिया।

डाक्टर हँस पड़ा। उसने अल्योशा की मरहम पट्टी की और दूसरे दिन फिर आने को कहा।

घर आ कर मालिक ने सब बताया। यह सुन कर कि शिकायत करने से अल्योशा ने इनकार कर दिया है सबों ने उसके प्रति गहरा स्नेह प्रदर्शित किया। मालिक ने पूछा, तुम्हें क्या चाहिए?'

सोच कर अल्योशा ने कहा मुझे किताबें पढ़ने दो।'

आज 'न' करने की किसी मे हिम्मत न थी ।

दूसरे ही दिन अल्योशा किताब लेने उसी औरत के यहा पहुँचा । देखते ही वह बोली, 'मुझे सब पता लग गया है । तुम्हे अस्पताल जाना पडा था ।'

अल्योशा शर्माया कि उसकी दुर्दशा की बात यहा तक पहुच गयी । खैर उस दिन वह कई किताबे उठा लाया और घर जा कर दिन रात पढता रहा ।

बुढिया चुप रही । जब रहा न गया तो बोली, 'तू अधा हो जायेगा ।'

अल्योशा ने अनसुनी कर दी ।

इन्ही किताबो के बीच अल्योशा को वाल्टर स्कॉट और विक्टर ह्यूगो की कई किताबे मिली जिन्हे पढ कर उसका मन निहाल हो उठा । अब वह कुछ और अच्छी किताबे चाहता था । एक ही तरह की किताबे पढते पढते वह ऊबने लगा था ।

एक दिन उस औरत ने पूछा, 'ये किताबे कैसी लगी ?'

'बहुत अच्छी नही ।'

'क्यो ?'

'यह सब मैं खूब जान गया हूँ । सिर्फ दो ही विषयो पर सारे उपन्यास है । एक तो यह कि बुरे लोग अच्छे लोगो पर अत्याचार करते है दूसरे सिर्फ प्यार की बाते होती हैं ।'

उस औरत की आँखो म चमक आ गयी । हँस कर बोली, 'लेकिन सभी म प्यार की ही बातें तो नही है ।'

'दुनिया की और बाते भी मैं जानना चाहता हूँ ।'

अच्छा अब दूसरे दिन खोज कर दूसरी किताबें दूगी ।'

फिर अल्योशा चला आया ।

एक दिन उसने एक किताब दी । पुश्किन की कविताओ का सग्रह । इसे पढते समय अल्योशा को लगा जसे वह शरबत पी रहा है । वह इन कविताओ म इतना डूबा कि उपन्यास उसे नीरस लगने लगे । उन कविताओ की ओजस्वी पक्तिया अल्योशा की स्मृति म सदा के

लिए अंकित हो गयी। ये कवितायें उसे नये जीवन की संदेशवाहक सी लगी। अब जीवन सुखद और सरस लगने लगा। पुश्किन की कई कवितायें उसे याद हो गयी। वह इतना डूबा इन कविताओं में कि जब सोने लगता तो आँख बन्द करके वही कविताएँ गुनगुनाता।

अल्योशा फिर पुश्किन के बारे में जानने को इच्छुक हो उठा। उसी औरत ने पुश्किन के जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि पुश्किन की हत्या उसकी पत्नी के एक प्रेमी ने की थी। फिर चमक-दार आँखें नचा कर बोली, 'देखा किसी औरत का प्यार कितना खतरनाक होता है!'

अल्योशा ने गंभीरता से कहा, खतरनाक तो है फिर भी हर कोई तो प्रेम मे फँस ही जाता है और औरतों को भी अपने हिस्से का नुकसान उठाना ही पड़ता है।'

अल्योशा को गहरी नजर से देख कर वह बोली 'अच्छा, तो इतना सब तुम समझते हो? लेकिन अगर इसे हमेशा याद रखो तो अच्छा होगा।'

इसी तरह अल्योशा ने रूस के महान लेखकों—पुश्किन, लरमनतोव, गोगोल आदि का परिचय पाया। उसने किताबों से इतना ज्ञान अर्जित कर लिया जो जीवन भर उसके काम आ सकता था। अल्योशा को इन किताबों के कारण भरोसा हुआ कि जिन्दगी की मुसीबतों में वह अकेला नहीं है।

वसन्त आते ही एक दिन अल्योशा ने सुना कि एकाएक घर छोड़ कर वह औरत और उसका पति कहीं चले गये। किसी को नहीं मालूम कि कहाँ गये। अल्योशा का जी मसोस कर रह गया।

एक दिन वह उसी की बातें धोबिन से कर रहा था। धोबिन कह रही थी, वह दुखी औरत थी। लेकिन औरत को बहादुर होना चाहिए, पुरुष से दूनी। औरत को तो खुदा ने दुख सहने को ही बनाया है।'

तभी मालकिन ने उन्हें बातें करते देख कर मालिक से कहा 'वह देखो, धोबिन के साथ! यह लड़का बिगड़ रहा है।'

मालिक मुस्करा कर बोला यही तो उसकी सीखने की उम्र है।'

दूसर दिन सडक पर अल्योशा ने एक बटुआ पडा पाया। वह पहचानता था कि वह बगल म रहने वाले एक सिपाही का है जो अपने एक साथी के साथ रहता है। अल्योशा ने बटुआ उठा लिया और सिपाही को देने गया। उस समय सिपाही शराब पी कर रहे म लेटा था। बटुआ पा कर वह चीखने लगा 'इसमे तीस रूबल थे। वापस करो मेरे रूबल।'

अल्योशा घबडा गया, यह किस झंझट म फँस गया!

उसके साथी सिपाही ने कहा जरूर इसी ने चुराया है। रूबल निकाल कर खाली बटुआ वापस देने आया है।'

दोनों सिपाहियों ने चीख—चिल्ला कर भीड जुटा ली। मालिक भी आ गया। उसने भी सिपाहियो की तरफदारी की और बोला, जरूर इसने चुराया होगा। कल यह धोबिन स खूब खुसर फुसर कर रहा था। उसे ही दिया होगा।

जरूर, जरूर।' दूसरा सिपाही उछलने लगा।

तभी खबर पा कर धोबिन आ गयी। वह चीख कर कहने लगी, वाह, मैं चुप क्या रहूँ? मैं इनके अफसर से जा कर कहती हूँ। कल यह मुझे रुपये दिखा रहा था। इससे पूछो, इसने ही अपने साथी का बटुआ उडाया था।'

खूब तू तू मैं मैं हुई और यह बात खुल गयी कि उस सिपाही के साथी न ही बटुआ उडाया था।

तब मालिक न समझौते के स्वर मे अल्योशा से कहा, 'तो, इसम तेरा हाथ नही था। तुम्हे बेकार ही '

अल्योशा ने दृढता और अभिमान से कहा, कुछ भी हो, अब मैं चला जाऊँगा।'

'यह तो तुम्हारी मरजी की बात है। अब तुम बच्चे नही हो।' मालिक बोला और चार दिनो बाद अल्योशा वहाँ से चला गया।

जीवन के विभिन्न रूप

अल्याशा की नई नौकरी थी, सात रूबल महीने की। एक स्टीमर पर रसोईघर म एक सहायक की नौकरी। उस स्टीमर पर अल्याशा की मजा म खूब पट गयी। रसोईघर का भडारी मैनेजर ईवान और उसका सहायक जक। जैक स उसकी सब स ज्यादा ही पटी।

जक तो रुपया देख कर खुश हो जाता। एक बार अल्योशा स कहा, 'चलो ताश खेलें।'

अल्योशा बोला, मैं ताश खलना नहीं जानता।'

जक को ताज्जुब हुआ इतना बडा हो गया और खलना नहीं जानता ? तब तो जरूर सीख ल।

अल्याशा का खलना पडा। पहले वह आधा पौंड चीनी हारा फिर पाँच रूबल हारा, फिर अपनी जाकट हार गया नया ... हार गया। सब हार गया। तब ... हुआ ... कहा, 'तू अभी खलना नहीं ज... तू गया है लेकिन अपनी चीज ले ... मन सिखाने की फीस भर द दे

जैक के इस व्यवहार से अल्योशा का मन बड़ा खुश हुआ। उसन जक स कहा, 'तुम बहुत भले हो।'

जक हँस पडा, 'अभी तुमने आदमियो को नही देखा है। जब भी आदमी का साथ होगा, मुसीबत मे फँसोग। समझे! मैंने तरह तरह क आदमी देखे हैं'

अल्योशा का रसोई के भडारी की स्त्री के लिए पानी लाना पडता था। वह स्त्री उम्र मे ता चालीस के करीब थी लेकिन शृगार खूब करती थी। रानियो की तरह सजती थी। उसका अल्योशा अक्सर केबिन के बाहर से छिप कर देखता। वह भी अल्योशा को देखती। एक दिन उसने कपडे बदलते समय हँस कर कहा, 'भीतर आओ। मुख स मुह क्यो मोडते हो?'

अल्योशा वहा स शरमा कर भाग गया। उसन यह बात जैक स बता दी, ता जक ने कहा, 'होशियारी स काम लेना।'

अल्योशा ने पूछा, 'तुम्हार सिवा सबा की पत्निया ह। तुम भी ब्याह क्या नही कर लेते?'

तब गभीर हो कर जैक । कहा, 'अरे वाह, जानत हो, शादी एक जजाल है। शादी के बाद घर बसाना पडता है। एक जगह जम कर रहना पडता है। मै बँधना नही चाहता।'

फिर जक न अल्योशा से कविताएँ सुनाने को कहा। अल्याशा का पुश्किन की कुछ कविताएँ याद थी, वही सुनायी, फिर पुश्किन क बारे म बताया कि वह कैसे मारा गया था। सब सुन कर जैक दुखी हुआ और बोला, 'औरतो न बहुत म अच्छे आदमियो का नाश किया है।'

इसी जहाज पर अल्याशा ने डयूमा के कई उपन्यास पढे। डयूमा उसे बहुत अच्छा लगा। उसके चरित्र, राजा हेनरी छठे को वह कई दिना तक नही भूल सका।

बसन्त खतम होते ही जहाज का काम छुट गया।

जहाज से वापस आ कर अल्योशा का बेकार नहीं रहना पडा। अगले ही दिन सयोग से उसे मूर्ति रगने का काम मिल गया। वहाँ मूर्तियाँ, चित्र और कितावें खूब थी। उनके बीच अल्योशा का खूब

मन लगता।

उस दूकान म कई कारीगर काम करते थे। सभी छोटे मोटे कलाकार थे। अल्योशा को व लाग औरा से भिन्न लगे। उनकी बातें भी अच्छा होती थी। अल्योशा को वे सब पूव परिचित अन्य लोगा से भिन्न लगे। शरीफ लोग थे। बस, शराब पीने मे सभी उस्ताद। शराब पी कर ही कभी-कभी साधारण लोगा जैसा व्यवहार करते थ। वे जब शराब पीते तो मस्त हो नाचते कूदत। उनकी आखा में जस मोमबत्तिया जल उठती।

एक बूढा कारीगर था। वह खूब बातें करता, स्पष्टभाषी था। जो मन म आता कहता। जब और लोग शराब के नशे म वकरे की तरह घूमते हुए नाचते होते तो वह बूढा कहता हर आदमी के हाथ हैं और पेट। सभी खात पीते हैं, पेट म जितनी जगह होती है उतना सभी खाते है। खुदा नही है।'

अल्योशा ने टोका, 'खुदा है। न होता तो हम कहा से आत?'

बूढे ने हँस कर कहा 'हो सकता है, खुदा हो। लेकिन होगा भी तो बहुत ऊपर, आकाश मे। और आदमी नीचे है धरती पर। लेकिन अलेक्सेई दुनिया म अच्छे लोग भी हैं।'

उसकी बाते सुन कर अल्योशा चिन्ता मे डूब जाता। वह सोचता— किताबा मे जिन लोगो का जिक्र होता है उनसे ये लोग अलग है। किताबा मे स्मुर्यी जैक, धोबिन लुडमिला जैसा की बात नही होती।

उसी दूकान म अल्योशा न लरमनंतोव की किताबें पढी।

अल्योशा तब तेरह वप का था।

उस दिन अल्योशा की वपगाठ थी। उस दिन काम खतम होन पर कारीगरा न मिल कर अल्योशा को बधाई दी और खूब खिलाया-पिलाया।

अल्योशा का एक साथी था पाल उसी जैसा नौसिखिया कलाकार। उसन एक लडकी की ओर दिखा कर कहा, मालिक की होने वाली बीबी।'

अल्याशा उस लडकी को अक्सर दूकान म आते जाते देखता था,

लेकिन कभी ध्यान नही दिया था। अब गौर स देखा। फिर ता अल्योशा को उसके बार मे बहुत सी बातें मालूम हो गयी। लेकिन यह लडकी अल्योशा का अच्छी नही लगी। सभी उसे छेडते और मजाक करते। वह किसी की बात का विरोध न करती। अल्योशा देखा करता था कि कोई भी उसकी जेब म एक दो मिठाई डाल कर उस थोडी देर प्यार कर लेता था। यह सब अल्योशा का अच्छा न लगता।

एक दिन पाल और अल्योशा कमरे म अकेले थे। तभी वह आ गयी और बोली, 'तुम लोगो को चूमना आता है, या मैं सिखा दू ?'

पाल ने साधारण रूप मे कहा, 'मुझे खूब अच्छी तरह आता है। सिखाने की दरकार नही है।'

लेकिन अल्योशा जाने क्या चिढ गया। तुनक कर बोला, 'अपने चुम्बन तुम अपने भावी पति के लिए ही बचा कर रखो।'

इस पर वह लडकी भडक उठी चिढ कर बोली, 'तू तो जानवर है। एक जवान औरत तुझ पर दयालु हो तो क्या ऐसा व्यवहार करना चाहिए ? याद रख, मैं तुझे मजा चखाऊँगी।'

पाल न स्थिति सँभालने का कहा, 'तेरे भावी पति से तेरी करतूत बताऊँगा।'

उस लडकी ने फूफकार कर कहा, 'उसका मुझे डर नही है। मेरा खानदान उससे ऊँचा ह। और शादी के बाद ही बीवी पति से डरती है।'

उस दिन स वह लडकी बराबर मालिक से अल्योशा की शिकायत करने लगी। अल्योशा समझ गया कि यह चुडैल अब उसे यहा रहने नही देगी।

अल्योशा यहा रह कर तम्बाकू सिगरेट खूब पीने लगा था। ऐसा आदी हो गया था कि बिना तम्बाकू के बेचैन हो उठता। वोदका के लिए उसके मन म कोई शौक पदा नही हुआ। यद्यपि पाल बहुत पीता था और उसी के कारण अल्योशा को भी कभी कभी साथ देना पडता था लेकिन उसे शराब का स्वाद रास नहीं आया।

ईस्टर के पहले अल्योशा न निश्चय किया कि वह फिर जा कर

जहाज पर काम करेगा। इसी इराद से वह नदी किनारे गया था, वहीं एक घटना घटी।

हुआ यह कि अचानक वहाँ अल्योशा को उसका पुराना मालिक— वही नानी का भतीजा मिल गया। खूब प्यार दिखाया और जेब स निकाल कर सिगरेट पिलायी।

अल्योशा ने उत्साह म अपनी फारस जान की योजना उसस बतायी।

उसने गम्भीरता से कहा, मैं जानता हूँ पश्काव, कि इस उम्र म दिमाग म बहुत फितूर आते हैं। लेकिन यह विचार तुम दिमाग से निकाल दो। भला फारस म तुम क्या पाओगे ? बल्कि मेरे साथ चल कर काम करो। इस साल मेले का मैंने ठीका लिया है। तुम्हे वहाँ ओवरसियर बनाऊँगा। तुम्हें मैं पाँच रूबल महीना दूँगा और रोज पाँच कोपेक खाने को। और मेरी माँ व बीबी तुम्हे अब तग नही करेंगी। तुम घर पर ज्यादा रहोगे ही नही।

थोडी देर की बात के बाद अल्योशा तैयार हो गया।

धीरे धीरे करके अल्योशा के पास काफी किताबें इकट्ठी हो गयी थीं और खोजने पर नई नई मिल भी जाती थी। अब अल्योशा को तुर्गनेव बहुत पसन्द आता था। डिकेन्स और स्काट ने भी उसे बहुत प्रभावित किया। उनकी किताबें वह बार-बार दोहराता।

किताबें पढ़ने से तरह तरह की कहानियाँ पढने से औरतो के विभिन्न चरित्र के बारे मे जानने का उसे अवसर मिला। यो भी अब तक बहुत सी औरतें उसके दिमाग पर छा सी गयी थी। अब उसके मन म एक नये तरह की इच्छा जागने लगी थी कि किसी औरत स उसकी मित्रता हो जाय जो अच्छे स्वभाव की हो, जिससे वह निसकोच अपने मन की बात कह सके। लेकिन उसे ऐसी कोई औरत दिखायी न पडी। औरतो के बारे म सोच-सोच कर वह एक अजीब मादकता म डूब जाता।

मेले के मैदान म बाढ का पानी भरा होने के कारण अभी काम शुरू नहीं हुआ था, इसलिए अपने मालिक को नाव पर बैठा कर अल्योशा नाव खेते हुए इधर उधर घूमता। अब मालिक अल्योशा को बच्चा न मान कर युवक की तरह मानता और खुल कर बातें करता। एक दिन मालिक ने कहा, 'तुम तो खूब किताबें पढते हो। काफी पढ भी चुके हो।

हाँ! अल्योशा ने कहा।

मालिक ने अर्थभरी नजरो मे देख कर कहा, तब तो औरतो के बारे म काफी कुछ जान गये होगे ?'

अल्योशा कुछ न बोला। कहता भी क्या ?

मालिक कहता गया, 'सुना है कि लडकियो के साथ भी तेरी खूब चल रही है। मैं तो जब तेरी उम्र का था, तेरह का, तभी प्रेम क चक्कर म फँस गया था। जिस इजीनियर के यहा काम सीखता था उसकी नौकरानी की छोकरी

फिर उसने अपने प्रेम सम्बन्धी कई किस्से सुनाये फिर बोला, लेकिन यह सब कहानियाँ बीबी से नहीं बताई जा सकती। हा, एक सलाह दूगा, कि शादी करने म जल्दबाजी मत करना। शादी स आजादी छिनती है, जीवन मे ठहराव आ जाता है। अभी तो तुम जा चाहो कर सकते हो, जहाँ चाहो जा सकते हो। तुम फारस जा सकत हो, मास्को म रह सकते हो, लकिन शादी के बाद कुछ नहीं कर सकाग। बीबी पर काबू रखना भी बडी बात हे।'

अल्योशा चुपचाप सुनता रहा।

अन्तत हुआ यह कि पानी की बाढ़ के कारण मेले का काम शुरू नहीं हुआ और अल्योशा के मालिक का बहुत सा रुपया भी डूब गया। अब उसे साझेदार की जरूरत पडी और एक दिन उसने अल्योशा स बताया कि उसने एक आदमी को साझीदार बना लिया है। अल्योशा के लिए यह सूचना कोई महत्व नही रखती थी, लेकिन उसके आश्चय का ठिकाना न रहा जब उसके मालिक का साझीदार एक दिन आया और अल्योशा न उस तत्काल ही पहचान लिया। वह आदमी और

कोई नही अल्योशा का सौतेला बाप ही था। आते ही उसने अल्योशा की ओर हाथ बढा कर हलो कहा।

उसके बढे हाथ को अल्योशा ने पकड लिया। उसी क्षण उस बहुत सी पुरानी बातें याद आ गयी। तभी खांस कर उसके सौतेले बाप ने कहा तो हम फिर एक बार मिल गये, क्यो ?'

अल्योशा न कोई जवाब नही दिया और खीझ कर वहाँ स खिसक गया।

अल्योशा को जल्दी ही पता लग गया कि उसका सौतेला बाप बीमार है और उसे कोई घातक बीमारी हो गयी है। इस बात स अल्योशा को उस पर हल्की सी दया आयी। लकिन फिर भी दोनों एक दूसरे से खिचे रहत।

वह मालिक के ही घर म रहने लगा, परिवार के एक सदस्य की तरह। अक्सर वह शान से आदेश देता, 'जब बाजार जाना तो मेरे लिए तम्बाकू और सौ सिगरेटो वाला एक डिब्बा ले आना।' कह कर वह रुपये यो फेंकता जैसे वह बहुत बडा आदमी है। एक दिन उसने कहा, मैं जानता हूँ कि मैं अच्छा नही होऊँगा। लेकिन अगर काफी मात्रा म खाने को गोश्त मिले तो मैं अच्छा भी हो सकता हूँ।'

अल्योशा जब अपने सौतले बाप के लिए सामान लाता तो बुढिया कहती किस मुर्दे के लिए यह सब कर रहा है ? वह अच्छा नहीं होगा।'

घर के सभी लोग उसस नफरत करते, यद्यपि उसके मुह पर कोई कुछ न कहता लेकिन पीठ पीछे सभी उसे कोसते। मालकिन कहती, 'कैसा गदा आदमी है ! हम रोज मेज साफ करनी पडती है। जहाँ बैठता है, गदगी करता है।'

तब मालिक कहता, शात रहो। फिक्र मत करो। वह जल्दी ही कब्र मे लेटने वाला है।'

रात को बुढिया खुदा से प्रार्थना करती, यह एक नई मुसीबत कहाँ से आ गयी ?'

घर के लोगो का उसके प्रति यह व्यवहार और घृणा देख कर

अल्योशा के मन म उसके लिए दया उपजने लगी।

एक दिन खान की मेज पर वह हँस पडा। अल्योशा ा उम पहली बार हँमत दखा उसे खुशी हुई। लेकिन तभी जान क्या मालकिन न कुड कर टबुल पर चम्मच पटक कर कहा, मेर सामन ऐसी बद तमीजी ।'

अल्याशा वहा स उठ कर चला गया। अपने सौतेले बाप का यह अपमान उमसे सहा न गया। लकिन इतन पर भी उमके प्रति उसके मन म कोई प्रेम व आदर नही जागा, सिफ दया उपजी।

अक्सर रात का जब घर क और लोग सो जाते तो वह उठ कर अल्याशा की खाट के पास आता और अल्याशा का खिडकी पर बैठ कर पढत देखता तो मुह स सिगरेट का धुआँ उगल कर पूछता 'पढ रहे हो ? कौन सी किताब है ? छोडो, ला सिगरेट पिओग ?

फिर दानो साथ बैठ कर सिगरेट पीते। तब खिडकी के बाहर दूर तक देखते हुए वह अल्योशा से कहता, तुमम योग्यता ता है, लेकिन कितन दुख का बात ह कि तुम स्कूल म नही पढन।

'इस पढने से भी तो ज्ञान बढता ही है। अल्योशा बाला।

'नही यह ठीक नही। तुम्ह ढग स स्कूली पढाई पढनी चाहिए।

एक रात को ऐमे ही उसने कहा, 'मै चाहता हूँ कि तुम यहाँ स चले आओ। तुम्हारा यहा रहना मैं किसी तरह भी हितकर नही समझता। यह ठीक जगह नही है। य लोग बडे धत हैं।'

उसकी बातो से अल्याशा को लगा कि वह अनजाने म उसकी ओर खिचता जा रहा है।

अकेले म अल्योशा जब अपन सौतले बाप क बार म सोचता तो उसे अपनी मा की बरबस याद आ जाती। उस याद आ जाता कि यही आदमी उसकी माँ को पीटता था सताता था। इसी ने उसकी माँ को मारा है। सोच कर अल्याशा का मन घणा स भर जाता। लेकिन उस एक बात की खुशी थी कि उसने कभी अपनी ओर से मा की चर्चा नही चलायी। न कभी उसका नाम लिया न जिक्र किया।

वास्तव म अल्योशा न किताबा म बहुत से पात्रा के घुल घुल कर मरने का जो वणन पढा था, वही वह अपने सौतेले बाप क लिए सोचता। और तब उसका मन फिर दया से भर जाता।

एक रात पानी बरस रहा था। ठण्डक बढ गयी थी। तब अल्याशा से वह बडी करुणा म बाला, मुझे बहुत कमजारी लगती है। शायद जल्दी ही मुझे खाट पकडनी पडे।

दूसर दिन अल्योशा को मेले के मैदान म जाना पडा। वह वहा स एक हफ्त बाद लौटा तब उसका सौतेला बाप घर म नही था, न ही उसका कोई सामान ही वहाँ दिखा। अल्योशा समझ गया कि वह शायद कही और चला गया होगा। सोच कर अल्याशा को एक अजाब तरह की राहत महसूस हुई। फिर उसने उसके बार म कुछ न सोचा।

एक दिन बाद बुढिया ने उसे एक कागज दे कर कहा मैं देना भूल गयी थी। तुम नही थे तब एक औरत दे गयी थी।'

अल्योशा न देखा। कागज पर एक अस्पताल का नाम छपा था। और उसके सौतेले बाप ने लिखा था मैं मारटीनावर अस्पताल म हूँ। जब तुम्ह समय मिले ता आ कर मुझसे मिलना।

अल्योशा दूसरे दिन सवेरे ही अस्पताल गया। अस्पताल की नस को वह चिट्ठी दिखा कर पूछा। नस ने कहा, 'हालत खराब है। थोडी ही देर का मेहमान है। और अल्योशा को उसन मरीज क कमरे म पहुँचा दिया।

एक बडी खाट पर उसका बीमार सौतेला बाप लटा था। वहाँ कोई स्टूल न था इसलिए अल्योशा उसी की खाट पर बठ गया। उसन एकटक अल्योशा को घूरना शुरु किया। फिर उसन अपने हाथो का धीरे म उठा कर कलेजे पर इस तरह रख लिया जसे प्रार्थना कर रहा हो। फिर थाडी देर बाद उसने आखें खोली और छत की ओर ताका। फिर धीरे धीरे बोला, तुम आ गये ! म अच्छा न होऊँगा।

इतना कहने म ही जसे वह काफी थक गया था आर उसन आँख फिर मूद ली। अल्याशा न भावना मे भर कर उसका हाथ पकड

लिया। फिर आँखें खोल कर वह बोला, 'क्षमा करना। हो सके तो स्कूल म पढना।'

फिर वह चुप हो गया। अल्योशा को देर तक घूरता रहा। फिर कुछ कहना चाहा। उसका मुह फैल गया और एक ऐसी आवाज निकली, जैसे कौआ बोला हो—काँव !

फिर मुह खुला ही रह गया। आँखे पथरा गयी।

अल्योशा खाट पर से उठ कर खडा हो गया।

नस आयी। मरीज को देखा और चादर खीच कर मुरदे का चेहरा ढँक दिया। फिर अल्योशा पर एक नजर फेंक कर वह बाहर चली गयी। एक मिनट बाद लौट कर बोली, 'कल अतिम क्रिया होगी।'

अल्योशा खडा, कपडे से ढँकी लाश को एकटक देखता रहा। जिस व्यक्ति से वह बडी घणा करता था, उसकी लाश देख कर जाने क्यो उसके आँसू छलक आये।

फिर अल्योशा चुपचाप, भारी कदमो वापस लौट पडा।

धीरे धीरे करके तीन वर्ष तक अल्योशा ने ओवरसियरी की। अब उसका मालिक भी अधिकतर बीमार ही रहता था। उसे खाट पर पडा व खासते देख कर अल्योशा को अपने बीमार सौतले बाप की याद आती और उस याद के साथ ही उसके अतिम शब्द भी याद आते—स्कूल मे पढना।

अल्योशा समझ रहा था कि उसका मालिक भी उसके सौतले बाप की तरह ही घुल घुल कर मर रहा है। एक दिन यह भी मर ही जायगा। इसलिए उसके प्रति उपजी दया के वशीभूत हो वह अक्सर उसके पास जा बठता। एक दिन मालिक ने पूछा 'क्या यह सच है कि तुम कविताएँ बनाते हो ? एक बार मुझे भी सुनाओ।'

अल्योशा इकार न कर सका। दो कविताए उसने सुनायी। वह आखें बन्द किये सुनता रहा। फिर बोला 'कोशिश करो। शायद तुम भी पुश्किन की तरह लिख सको। अब अच्छा न हो सकू

शायद ।'

अल्योशा के मन में जाने क्या हुआ कि वह बोल उठा 'अब मैं जाना चाहता हूँ ।'

'कहा ?'

'यहा से, हमेशा के लिए । मैं कजान जा कर कालेज मे पढूगा ।

मालिक सुन कर पहले ता चुप रहा फिर थोडी देर बाद बोला 'ठीक है तुम्हारा चला जाना ही तुम्हारे लिए हितकर है । लेकिन जाना ही है तो मेरे मरने के पहले चला जा । बाद म तुम्हे झझट हागी । बल्कि आज ही चला जा ।'

उसी क्षण मालिक को नमस्कार करके अल्योशा उठ गया । जग एक पल भी उसका रुकना कठिन हो रहा था ।

अल्योशा सीधे निझनी नावगोरोद गया ।

वह पदल ही गया । वोल्गा के किनारे किनारे । इन दिनो अल्योशा बस एक ही वात सोचा करता—वह समय कब आयेगा जब इन्सान दूसरे के लिए जीना सीखेगा ।

अल्योशा को अपना सौतला वाप और मालिक, दोनो कई दिनो तक याद आते रहे ।

रास्ते भर अल्योशा जिन्दगी की सही राह के बारे मे सोचता रहा ।

निझनी पहुँच कर अल्योशा ने पहली बार एक नाटक देखा । उसे लगा कि नाटक भी जिन्दगी का एक रूप हो सकता है । वह नाटक देख कर बडा प्रभावित हुआ । रात भर वह नाटक गृह के आसपास ही मँडराता रहा । सयोग की वात कि नाटक के एक कार्यकर्ता स उसकी भेंट हो गयी । फिर मित्रता हुइ । और उसी के माध्यम से अल्योशा को नाटक म काम भी मिल गया । नाटक था—'कोलम्बस की अमरीका की खोज ।' अल्योशा को एक रेड इण्डियन का अभिनय करने को मिला । एक तलवार उस एक के पेट मे घुसेडनी थी ।

जीवन के विद्यालय

अल्योशा कजान के लिए चल पड़ा।

उसे विदा करते समय नानी ने गीले कण्ठ से कहा, 'देख, अपना स्वभाव बदलने की कोशिश करना। तू हर समय सबके साथ लड़ने को तय्यार रहता है। क्रोध और झगड़ालू आदत तुझमें बहुत आ गयी है। अपने नाना को ही देख न! इसी आदत के चलते उसकी क्या दशा हो गयी? जीवन भर वह कटुता ही बटोरता रहा।' फिर आंखों में भर आये आँसुओं को अपनी शाल के किनारे से पोंछते हुए बोली 'शायद अब हमारी भेंट न होगी। तेरे पाँव में तो चक्र है। तू यों ही भटकता रहेगा और मैं किसी दिन मर जाऊँगी।

नानी ने अपनी छाती पर क्रास बना कर नाती को विदा किया।

कजान आने पर अल्योशा की मैत्री एक विद्यार्थी से हुई। उसका नाम था—यवरीनोव। वह अल्योशा से बहुत प्रभावित हुआ। एक दिन बोला 'अलक्सेई तुम तो विद्या के लिए ही पैदा हुए हो।'

एक और दिन उसने कहा, 'अलेक्सेई, तुम तो बिल्कुल लोमोनोसोव[1] की तरह हो। वह भी अपने आप ही अध्ययन करके महान

[1] लोमोनोसोव को रूसी साहित्य का आदि लेखक मानते हैं। वैज्ञानिक खोजों के लिए भी प्रसिद्ध।

वना था।'

यवरीनोव अलेक्सेई से चार पाच मात्र वडा था। वह उसका आदर करता और उसकी सलाह मानता। उसी ने बताया था— तुम्हे कुछ परीक्षाएँ देनी होगी फिर तुम्हे वजीफा मिलेगा और पाच साल विद्यालय म पढ कर तुम शिक्षित हो जाओगे, अलेक्सेई।

यवरीनोव की वातो से अलेक्सेई को वडा उत्साह मिलता। वह अब यवरीनोव के यहाँ ही रहने लगा। यवरीनोव की मा, एक भाई और यवरीनोव यही तीन प्राणी घर मे थे। अब अल्योशा चौथा हो गया। घर मे भीषण गरीबी थी। माँ बच्चो का पेट भरने मे ही सारा दिन परेशान रहती। एक दिन मा ने अलेक्सेई स पूछा, बेटा, तुम कजान क्यो आये?

अलेक्सेई बोला, 'विश्वविद्यालय मे भरती होकर पढाई के लिए।

सुन कर वह जसे उत्तेजित हो गयी। उसकी पुतलियाँ फैल गयी और माथे पर रेखाएँ उभर आयी। सब्जी काटते हुए उसने चाकू स उगली काट ली। फिर कटी उँगली को चूसते हुए वह कुर्सी पर बैठ कर बोली क्या तू समझता है कि विद्यालय मे तुझे जगह मिल जायगी?'

तब अलेक्सई ने वह सारी योजना बता दी जो यवरीनोव न उसे विद्या के मन्दिर मे घुमने के लिए बतायी थी।

वह जसे चौंक गयी, 'ओफ! निक निक ने योजना बतायी है? तब तो हो चुका।'

अलेक्सेई चुप रहा।

अलेक्सेई का हर समय यही लगता कि निक जाने क्या उसे एक अच्छा और योग्य आदमी बनाने पर तुला है।

यवरीनोव सचमुच अलेक्सेई को विद्यालय मे घुमाने के लिए अत्यत प्रयत्नशील था। लेकिन वहाँ घुमने को कोई द्वार नही मिल रहा था।

यवरीनोव की माँ की गरीबी के कारण अल्योशा वहा जब भी रोटियाँ खाता तो उसे लगता जसे उसकी आत्मा भारी पत्थर म दबी

जोवन के विद्यालय

अल्योशा कजान के लिए चल पडा।

उसे विदा करते समय नानी ने गील कण्ठ से कहा, दख, अपना स्वभाव बदलने की कोशिश करना। तू हर समय सबके साथ लडने को तय्यार रहता है। क्रोध और चगडाल् आदत तुझमे बहुत आ गयी है। अपने नाना को ही दख न ! इसी आन्त के चलते उसकी क्या दशा हो गयी ? जीवन भर वह कटुता ही बटोरता रहा।' फिर आखा म भर आय आँसुओ को अपनी शाल क किनारे मे पाछते हुए बोली शायद अब हमारी भेंट न होगी। तेर पाव मे तो चक्र है। तू या ही भटकता रहेगा और मैं किसी दिन मर जाऊगी।

नानी ने अपनी छाती पर क्रास बना कर नाती को विदा किया।

कजान आने पर अल्योशा की मैत्री एक विद्यार्थी से हुई। उसका नाम था—यवरीनोव। वह अल्योशा स बहुत प्रभावित हुआ। एक दिन बोला अलक्सेई तुम तो विद्या के लिए ही पैदा हुए हो।'

एक और दिन उसने कहा, अलेक्सेई तुम तो बिल्कुल लामानासाव[1] की तरह हो। वह भी अपा आप ही अध्ययन करक महान

---

१ लोमोनोसोव को रूसी साहित्य का आदि लेखक मानते हैं। वैज्ञानिक खोजों के लिए भी प्रसिद्ध।

अलेक्सई ने आँखे खोल कर अपने चारो ओर का वातावरण देखना शुरू किया।

अलेक्सेई की मैत्री आज प्लेतनेव नामक एक विद्यार्थी से हुई। उसके प्रति वह भयकर रूप से आकर्षित हुआ। वह बडे आत्मविश्वास से बात करता। वह बहुत चतुर, खुशदिल और तेज युवक था। उसके गठे हुए शरीर मे उसकी बीसो पेवन्द वाली कमीज पर फटा पतलून व फटे जूते खूब ही सुन्दर लगते। जीवन की हर नई घटना को अत्यधिक उत्साह से ग्रहण करने का उसका स्वभाव बन गया था।

अलेक्सई की मुसीबतो के बारे मे जब उसने जाना तो फौरन ही उसने एक योजना बनाई कि अलेक्सेई को एक देहाती स्कूल का अध्यापक बनाया जाय। वह मारुसोव्का नामक एक पुराने, खण्डहरनुमा मकान मे रहता था। कजान के विद्यार्थियो मे यह मकान तीन पीढी से मशहूर था।

अलेक्सई वही आ कर प्लेतनेव के साथ रहने लगा। उस बडे मकान मे जैसे हर समय तूफान चलता रहता था। इस मकान मे विद्यार्थी, वेश्याएँ और बेकार लोग ही रहते थे। सीढी के पास बरामदेनुमा एक कमरे मे प्लेतनेव रहता था। खिडकी के पास ही उसकी खाट पडी रहती और रहती एक कुर्सी और एक टेबुल। उस बरामदे मे तीन कमरे खुलते थे—तीन कमरो मे से दो मे वेश्याएँ रहती थी और एक मे एक गणित का बीमार अध्यापक। मुर्दे की तरह उसका शरीर गला सा था। वह हर समय खासते हुए ईश्वर के अस्तित्व को गणित द्वारा प्रमाणित करने मे लगा रहता था। वेश्याये ही उसे रोटी और चाय देती थी। अचानक एक दिन वह मर गया। उसके मरने पर सिर्फ वेश्याओ ने ही मातम मनाया।

प्लेतनेव एक अखबार मे बारह कोपेक प्रति रात पर प्रूफ पढ कर जीविका चलाता था। उसके साथ अलेक्सई अक्सर चाय और रोटी पर ही दिन काट दिया करता था। प्लेतनेव और अलेक्सेई एक ही

जा रही है। उसने फिर किसी काम की तलाश शुरू की।

अलेक्सेई सवेरे ही घर से निकल जाता ताकि उसे घर में खाना न खाना पड़े। उस पर दुर्दिन की जितनी भी मार पड़ती, वह उतना ही दृढ़ और आत्म विश्वासी होता गया। उसे भाग्य पर भी कोई भरोसा नहीं रह गया था।

पेट की भूख से परेशान अलेक्सेई वोल्गा के किनारे डेक पर चला गया। गर्मियों में वहाँ कोई भी दिन भर में पन्द्रह बीस कोपक कमा सकता था। वहीं मजदूरों में अलेक्सेई भी शामिल हो गया।

मजदूरों के बीच अलेक्सेई को वाशकीन मिला। वह पढ़ा लिखा था। दस साल का निर्वासन काट कर आया था। पहले वह अध्यापकों के कालेज का विद्यार्थी था। अलेक्सेई से उसकी खूब पट गयी। एक दिन अलेक्सेई को दि माउंट आफ मोंटेक्रिस्टो किताब देते हुए उसने कहा, 'यह मेरी प्रिय किताब है। औरत, औरतें एक औरत—सब कुछ! उसके लिए पाप पाप नहीं है। वह सिर्फ प्यार के लिए जीती है। इससे कम या ज्यादा कुछ नहीं।'

कहानी सुनाना उसका विशेष गुण था। वेश्याओं और उनके दम्भ तथा अनचाहे प्यार पर उसने कई गीत लिखे थे जिन्हें वोल्गा किनारे के मजदूर अक्सर गाया करते थे।

अलेक्सेई को विद्यालय में दाखिल कराने के प्रयत्नों में यवरीनोव हार गया था। अलेक्सेई भी निराश हो गया। वह जान गया कि उसके लिए वोल्गा का किनारा दुनिया का विस्तृत क्षेत्र ही विद्यालय है जहाँ उसे जीवन के ही पाठ पढ़ने हैं। अब उसका संपर्क मजदूरों, वेश्याओं विद्यार्थियों सिपाही और क्रान्तिकारियों से होने लगा। नदी किनारे के मल्लाह भीड़ में टहलते जेबकतरे भिखारियों से भी उसका परिचय हुआ। इन लोगों को देख कर उसे उपन्यासों में पढ़े चरित्रों की याद आती।

अलेक्सेई को लगा कि जीवन का यही असली पाठशाला है, जहाँ कुछ सीखा जा सकता है और जिन्दगी से जूझते ये लोग ही उसके असली सहपाठी हैं।

अलेक्सेइ ने आँखें खोल कर अपने चारों ओर का वातावरण देखना शुरू किया।

अलेक्सेई की मैत्री आज प्लेतनेव नामक एक विद्यार्थी से हुई। उसके प्रति वह भयंकर रूप से आकर्षित हुआ। वह बड़े आत्मविश्वास से बात करता। वह बहुत चतुर, खुशदिल और तेज युवक था। उसके गठे हुए शरीर में उसकी बीसों पेबन्द वाली कमीज पर फटा पतलून व फटे जूते खूब ही सुन्दर लगते। जीवन की हर नई घटना को अत्यधिक उत्साह से ग्रहण करने का उसका स्वभाव बन गया था।

अलेक्सेई की मुसीबतों के बारे में जब उसने जाना तो फौरन ही उसने एक योजना बनाई कि अलेक्सेई को एक देहाती स्कूल का अध्यापक बनाया जाय। वह मारसोवका नामक एक पुराने, खण्डहरनुमा मकान में रहता था। कजान के विद्यार्थियों में यह मकान तीन पीढ़ी से मशहूर था।

अलेक्सेई वहीं आ कर प्लेतनेव के साथ रहने लगा। उस बड़े मकान में जैसे हर समय तूफान चलता रहता था। इस मकान में विद्यार्थी, वेश्याएँ और बेकार लोग ही रहते थे। सीढ़ी के पास बरामदेनुमा एक कमरे में प्लेतनेव रहता था। खिड़की के पास ही उसकी खाट पड़ी रहती और रहती एक कुर्सी और एक टेबुल। उस बरामदे में तीन कमरे खुलते थे—तीन कमरों में से दो में वेश्याएँ रहती थीं और एक में एक गणित का बीमार अध्यापक। मुर्दे की तरह उसका शरीर गला सा था। वह हर समय खाँसते हुए ईश्वर के अस्तित्व को गणित द्वारा प्रमाणित करने में लगा रहता था। वेश्यायें ही उसे रोटी और चाय देती थीं। अचानक एक दिन वह मर गया। उसके मरने पर सिर्फ वेश्याओं ने ही मातम मनाया।

प्लेतनेव एक अखबार में बारह कोपेक प्रति रात पर प्रूफ पढ़ कर जीविका चलाता था। उसके साथ अलेक्सेई अक्सर चाय और रोटी पर ही दिन काट दिया करता था। प्लेतनेव और अलेक्सेई एक ही

खाट मे काम चलाते। प्लेतनेव दिन का खाट पर सोता और अल क्सई रात को। रात भर प्लेतनेव प्रेस म रहता और अलेक्सई खाट पर सोता। सवेरे प्लेतनेव थका हुआ लाल आखें किए आता। अलेक्सेई चाय बनाता दोनो रोटी व चाय का नाश्ता करते। फिर अलक्सेई काम की खोज म निकल पडता और प्लेतनव खाट पर सो जाता।

मारुसोव्का के पीछे की गली के अत म एक बूढा पुलिस कप्तान रहता था। वह इस घर पर हमेशा नजर रखता था।

जाडे म एक रात मारसोव्का म रहने वाले कुछ किराएदार गिरफ्तार किय गय। उन पर एक गैरकानूनी प्रेस चलाने का जुर्म था। गिरफ्तार होन वालो मे एक आदमी था बहुत लबा, जिस लोग 'ऊँची मीनार' कहते थे। सुबह प्लेतनव ड्यूटी म वापस आया तो चाय पीते समय अलेक्सई न उसे गिरफ्तारी का समाचार सुनाया। सुन कर प्लेतनव पहले तो सुन्न रह गया फिर घबरा कर बोला मैक्सिम गोर्की! जितनी जल्दी हो सके होशियारी से जाना। वहाँ भी जासूस लगे होंगे।'

अलेक्सेई पहले तो कुछ न समझा। फिर प्लेतनेव ने पता बता कर उसे समझाया। और एक आज्ञाकारी की तरह अलेक्सेई चल पडा। वह थोडा उत्तेजित हो रहा था। उसे लग रहा था कि किसी रहस्यमय और दिलचस्प काम का उस पर भार पडा है।

जहाँ अलेक्सेई गया वह एक ठठेरी की दूकान थी। वहाँ घुघराले बालो वाला एक युवक मजदूर था। अलेक्सेई न प्लेतनेव के कहनुसार कहा 'मेरे लिए कोई काम है?

नहीं, कोई काम नहीं।' युवक न कहा फिर अलेक्सेई को और गौर स देखा। अलेक्सेई ने धीरे स उसके पाँव म ठोकर मारी। उसकी आँखे चमक उठी। अलेक्सेई न पूछा 'तुम टिखोन हो?

'हाँ।'

'पीटर गिरफ्तार ।

क्या पीटर ? वह म ... ।

पूछा, क्या हुआ?'

'पकड़ा गया। कल रात का।'

सूचना दे कर अलेक्सेई जब वापस आया तो वह प्रसन्न था कि जीवन म उनसे पहला जासूसी काम ठीक से निभाया। वह खुश था तभी प्लेतनव ने कहा, 'बहुत तजी मत दिखा। अभी तुझे बहुत सीखना है।'

इसके बाद यवरीनोव के माध्यम स अलेक्सेई की भेंट अजीब अजीब लोगा मे हुई।

एक दिन एक जगह एक मीटिंग हुई। यह जगह शहर से दूर थी। वहा यवरीनोव के साथ अलेक्सेई गया। रास्ते में यवरीनोव ने सम थाया, 'देखो मैक्सिम मीटिंग की बात बिल्कुल गुप्त रखना।'

शहर के बाहर एक झोपड़ी मे मीटिंग थी। यहाँ जो बातें हुइ वे बड़ी रूखी थी। अलेक्सेइ को काई रुचि न हुई, पर वह यह समझ गया कि गभीर और गुप्त बातें ऐसी ही होती ह। मीटिंग म कुल पाच लाग थे। उन्ही म प्लेतनव भी था। अलेक्सेई सब से छोटा था। वहीं एक व्यक्ति मिला जो येलेवसकी के उपनाम से कहानिया लिखता था और उसकी पाच किताबें छप चुकी थी। अलेक्सेई उसकी ओर खिचा और उससे सपक बढाने का निश्चय किया। लेकिन जब एक हफ्त बाद वह उससे मिलन गया तो पता चला कि उस लेखक न आत्महत्या कर ली है। अलेक्सेई व्यथित हुआ—उस लगा कि हर अच्छा आदमी अपनी ही इच्छा स क्यो अपना जीवन समाप्त कर लेता है?

१८८४ की पतझड़ म। अलेक्सई सालह साल का था।

उसे शहर के बाहर एक पसारी की दूकान पर ले जाया गया। दूकान का मालिक था—आन्द्रेई देरेन्कोव। वह काफी तेज और क्रांतिकारी आदमी था। वह चीनी, मिठाइया और साबुन आदि बेचता था। दूकान के पीछे का दरवाजा एक कमरे मे खुलता था जिसम जब्त किताबा का भडार था। पुरानी किताबे, कुछ हाथ की लिखी किताबे नाटबुकें। उन किताबों मे थी—ऐतिहासिक पत्र, हम क्या

करें। आर की भूख। उनकी शक्ल से पता लगता था कि व किताबें काफी पढी जाती होगी। किसी को भी, यहाँ तक कि पुलिस क सिपाहियो तक को इस बात का पता न था कि दूकान के ऊपर क कमर म क्रातिकारी नौजवानो की गुप्त बैठक होती थी।

जब अलेक्सेई पहली बार वहाँ गया तो उसे वहाँ सब कुछ बडा अजीब सा लगा।

अलेक्सई ने देखा कि एक जवान लडकी रसोईघर के दरवाज पर खडी थी। खूब गोरी घुघराले बाल और गाल चेहर मे दो बिजली की तरह चमकती आँखें। वह लडकी सम्हल कर चलती हुई आयी और कुर्सी पर बठ कर बोली, 'तुम मैक्सिम अलेक्सेई हो न ! सुना है।'

अलेक्सेई खामोश रहा। तो वह लडकी फिर बोली,

डरते हो क्या ? मैं डरावनी हूँ क्या ? मैं तीन महीने बीमार थी, हाथ पाँव मे लकवा था। यह नसो की बीमारी है। तुम्हार बार म सुना है, तुम्हे देखना चाहती थी कि तुम कैस हो ?

अलेक्सेई अभी भी चुप ही रहा। वह चाह कर भी बोल न पाया। उस लडकी की आँखें अलेक्सई को अपनी देह मे चुभती सी लगी। तभी अलेक्सई की उम्र का ही एक लडका भीतर आया और पुकारा, मरिया, कहाँ हो ?'

अलेक्सेई जान गया कि लडकी का नाम मरिया है। वह बोली, मैक्सिम, यह मेरा छोटा भाई है अलेक्स। अरे, तुम गूंगे हो क्या ? या शरमाते हो ?'

तभी आन्द्रेई आया। वह जकेट पहने था तब अलेक्सेई न देखा कि उसका एक हाथ टूटा था। लेकिन वह स्वभाव का अच्छा आदमी था।

उस पुस्तकालय मे दजनो लोग आते। कई विद्यार्थी अखबारो स लेख काट कर लाते और वहाँ का सग्रह बढाने म मदद करते। सभी लोग मोटी मोटी किताबें पढत और आपस म बहस करते। वहाँ आने वालो से अलेक्सेई धीरे धीरे परिचित हो गया। सभी क्रातिकारी थ,

लेकिन अजीब अजीब काम करते थे—कोई बढ़ई था, कोई ईंटे वाला, कोई विद्यार्थी, कोई चुंगी का किरानी।

यहाँ के वातावरण, यहाँ की गुप्त मीटिंगें, यहाँ की बहसें—इन सबा का कुछ ऐसा प्रभाव अलेक्सेई पर पड़ा कि अभी तक वे उसके शौक—उपन्यास, कहानियों की जगह अब वैज्ञानिक, दार्शनिक और क्रांतिकारी पुस्तकों ने ले लीं। यही अलेक्सेई विद्यार्थियों के एक गुप्त संगठन में परिचित हुआ जिसके सदस्य इतिहास, राजनीति और अर्थशास्त्र पर किताबें पढ़ते फिर जोरदार बहसें करते। बहस का अधिकतर विषय होता था—रूस में क्रांति का भविष्य।

अलेक्सेई ने पाया कि उसके नये दोस्तों को देश के भविष्य और रूसी जनता के भाग्य की गहरी चिंता थी। जब वे बोलते और बहसें करते तो अलेक्सेई को लगता जैसे वे उसी की भावनाओं को वाणी दे रहे है। अलेक्सेई उनकी विचार गोष्ठियों में भी भाग लिया करता था, लेकिन उन गोष्ठियों में जो बातें होती वे उसे उबाऊ लगती और कभी-कभी तो वह सोचता कि जीवन के बारे में उसका ज्ञान उन लोगों से कहीं ज्यादा था और वे लोग जो बातें करते थे उनमें से अधिकांश वह पहले ही पढ़ चुका था और उन स्थितियों से पहले ही गुजर चुका था।

देरेंकोव से मिलने के कुछ दिनों बाद ही अलेक्सेई को सेमेनोव की बेकरी में, जो एक तहखाने में थी, काम मिल गया। लेकिन वहाँ का जीवन और भी कठिन था। ऐसी असह्य परिस्थितियों में उसे इससे पहले कभी काम नहीं करना पड़ा था। दिन में लगातार चौदह घंटे काम करना पड़ता। जहां काम करना पड़ता, वहां बड़ी गरमी होती और गंदगी तो ऐसी कि जैसे दम घुट जाये। काम करने वालों के प्रति मालिक का व्यवहार भी बड़ा कठोर होता। काम करने वाले अपने को कैदी समझते और मालिक के दुर्व्यवहार के प्रति जिस विवशता और मूक धैर्य का प्रदर्शन करते, वह अलेक्सेई से सहा न जाता।

जब कभी काम से फुरसत होती, अलेक्सेई वहां काम करने वालों

को उन किताबों के अंश पढ़ कर सुनाता जिन पर प्रतिबंध लगा था। वह उन लोगों में अधिक अच्छे जीवन की संभावनाओं के बारे में आशा की ज्योति जलाना चाहता था। अलेक्सेई को कभी-कभी लगता कि वह अपने उद्देश्य में सफल हो रहा है जब देखता कि उनके निरीह चेहरे मानवीय वेदना से दीप्त हो उठते और उनकी आंखों में रोषपूर्ण चमक आ जाती। तब अलेक्सेई एक अपूर्व आनन्द का अनुभव करता और गर्व से उसका मन भर जाता और वह सोचता कि वह उन लोगों के जीवन में जागृति पैदा कर रहा है।

सेमनोव की बेकरी में काम करते समय भी जो समय मिलता, अलेक्सेई बराबर देरेन्कोव से मिलने जाता। किताबों से वह बराबर नाता जोड़े रहा।

अलेक्सेई को लगा कि अब वह जीवन की जिस पाठशाला में दाखिल हो गया है वह क्रान्तिकारी युवकों का विद्यालय है और कज़ान के शाही विद्यालय में वह जो कुछ पढ़ता व सीखता उससे यहाँ ज्यादा ही पढ़ने सीखने को मिल रहा है।

यही वह जीवन की पाठशाला थी जहाँ अलेक्सेई का परिचय अदम स्मिथ के सिद्धान्तों से हुआ जहाँ उसे कार्ल मार्क्स की रचनाएं पढ़ने को मिलीं। कार्ल मार्क्स की कृति 'पूंजी' तब सार्वजनिक रूप से प्राप्त न थी और उसके अलग-अलग अध्याय हस्तलिखित रूप में चुरा कर पढ़ने को मिलते थे।

अब तक किताबें अलेक्सेई की सब से अच्छी दोस्त बन गयी थीं। किताबों से उसे बहुत सी नई नई बातें जानने को मिलतीं और जीवन को अच्छी तरह समझने में भी किताबें सहायक होतीं। उच्च स्तरीय पुस्तकें पढ़ने का उसका अभ्यास बढ़ने लगा। पुश्किन और लरमन तोव की पुस्तकों को पढ़ कर उसके मन में अपूर्व आनन्द का भाव जागता।

अलेक्सेई जो भी किताबें पढ़ता वास्तविक जीवन में उनके नायकों की झलक पाने के वह सपने देखा करता। उसके मन में एक महत्वाकांक्षा ने घर कर लिया था कि वह वास्तविक जीवन में भी

किसी नायिका, किसी नायक, सरल और बुद्धिमान आदमी से मिले जो उस सत्य की ओर ले जाने वाले सीधे रास्ते पर आगे बढने मे मदद करे।

अब अलेक्सेइ ने किसी विद्यालय म भरती होन की सारी उम्मीदें छोड दी थी। उसे जीवन की वास्तविक पाठशाला मिल गयी थी। जिन्दगी के बीच मे ही विचरना लोगा को अच्छी तरह समझना क्रान्तिकारी युवको की गुप्त बैठको म भाग लेना और मनुष्य की महिमा और जीवन की सुन्दरता म अब उसे अधिक विश्वास हो गया था। अब वह गहन विचारा मे खो जाना चाहता था।

ममेनोव की बेकरी के काम से वह जल्दी ही ऊब गया। एक ता चौदह घटा व्यस्त रहना, फिर वहाँ के लोग भी अजीब थे। वहा क दूसरे कारीगर काम क बाद कुछ निश्चित गलिया म थकान मिटाने जाते और शराब तथा औरत की खोज मे मारे मारे फिरत। वे जहा जात उस 'खुशी का घर' कहते। तनख्वाह मिलने के कई रोज पहल मे व विशेष तैयारी करत और खुशी' के लिए तनख्वाह का एक बडा भाग लुटा आते। खुशी के घर से लौट कर वे लोग अपने जो सस्मरण चटकारे ले ले कर सुनात वे भी अजीब होते। व शान से बताते कि उन्हाने कितनी औरतो से खुशी' खरीदी। सिफ एक रूबल दे कर कैसे किसी औरत के साथ सारी रात काटी। एक दिन अलेक्सेई भी 'खुशी के घर' गया। उस घर का देखन को वह बहुत उत्सुक था। उस घर को एक चालीस साल की औरत चलाती थी, जो बातें खूब करती। वह कहती, ये विद्यार्थी और कारीगर बडे बुरे होते ह। लडकिया क साथ भला वे क्या नही करते! और पढे लिखे लाग तो और भी बुरे हात है। विद्यालय म पढन वाले लडके ता लावारिस होत ह। व या तो चोर या बदमाश, या बुरे आदमी होत ह।'

अलेक्सेई यह समझ गया कि वेश्यालय दुनियादारी सीखने के विद्यालय थ, लेकिन ऐसी वाता मे अलेक्सेई दिलचस्पी ता लेता पर इस तरह किसी औरत से सम्पर्क की कल्पना से वह बुरी तरह काँप जाता। क्या दुनिया के ये निरीह प्राणी सदा ऐसे ही पतित रास्तो पर

चलते रहेंगे ? अलेक्सई सोचता और क्षुब्ध होता।

एक दिन ऊब कर अलेक्सई ने समनोव की बेकरी का काम छोड़ दिया।

एक बार फिर वह अंधकार में डूब गया।

बेकार अलेक्सई के लिए दिन काटने कठिन हो रहे थे। बिना कामकाज के जीवन भार हो रहा था। दूसरों की रोटियाँ तोड़ने में उसकी आत्मा कराहती। मानसिक और शारीरिक, दोनों रूपों में जीवन सचमुच कष्टप्रद हो रहा था। अलेक्सेई दिन भर काम की तलाश में मारा मारा फिरता और निराश हो कर लौट आता।

बेकारी के कारण अब अलक्सेई का ज्यादा समय देरेन्कोव के साथ ही बीतता था।

रात को जब सन्नाटा हो जाता और देरेन्कोव काम से फुसत पाता तो दोनों बातें करते। देरेन्कोव उम्र में अलेक्सेई से दस वर्ष बड़ा था, लेकिन दोनों का मन मिल गया था और दोनों आपस में दुख-सुख की बातें करते। कमरा बन्द करके लालटेन की हल्की रोशनी में जमीन पर चटाई पर लेट कर बातें करते।

देरेन्कोव ने बताया कि उसकी सारी आमदनी दूसरों के लाभ के लिए ही खर्च होती थी। देरेन्कोव कहता—'ये जो लोग आते हैं वे एक दिन सैकड़ों-हजारों की तादाद में आयेंगे और रूस में इन्हीं का राज्य होगा।'

कोने में बैठी देरेन्कोव की छोटी बहन मेरिया लगातार अलक्सेई को घूरा करती। उसकी आँखें जैसे अलेक्सेई के शरीर में चुभती होतीं, और अलेक्सेई उसे देख कर परेशान हो उठता। वह उस लड़की से नजरें बचाता।

अपने आस-पास अलक्सेई को जो जिन्दगी देखने को मिलती उससे उसके मन को चाहे शांति न मिले पर सोचने को काफ़ी मसाला मिलता था।

एक दिन एक मजदूर मित्र ने कहा, 'अरे मैक्सिम ! तू हर समय विद्वता की बातें करता है लेकिन सारी विद्वता के मतलब क्या है ? एक आदमी को भला कितना चाहिए—दो जून पेट भरने को खाना रहने को बीता भर जगह और जब चाहे तब प्यार करने को एक औरत बस। देखो, बहुत विद्वता की बातें करोगे तो तुम हमारे बीच से अलग हो जाओगे। यह विद्वता ही सारे झगड़ों की जड़ है। विद्वता सदा ही संघर्ष की पक्षपाती रही है। क्या ईसा के साथ कम संघर्ष थे ! मजदूरों को सिर्फ काम चाहिए, और काम के लिए औजार। वे विद्रोह नहीं कर सकते। अगर ज्यादा जिम्मेदारी न ओढ़ी जाय तो अपने आप जीवन सादा हो जाता है। मजदूर तो हर समय जरूरतों से घिरा रहता है। वह विद्रोह की बात नहीं सोच सकता। विद्वान विद्रोह की बात सोच सकते हैं, क्योंकि उनकी जिम्मेदारियाँ कम रहती हैं। मेरी ही तरह लाखों लोग सोचते हैं लेकिन अपनी बात व्यक्त नहीं कर सकते। तुम विद्वान अपनी बात व्यक्त कर सकते हो, लेकिन तुम जैसे हैं कितने ?'

ऐसी बातें सुन कर अलेक्सेई चिंता में डूब जाता।

एक दिन देरेन्कोव ने गंभीरता से कहा, 'अब दूकान में आमदनी नहीं होती। खर्च चलाना भी कठिन हो रहा है। अब कोई और रास्ता खोजना होगा। मेरी सारी जमा पूँजी तो क्रांतिकारियों की सेवा में खत्म हो गयी। अब दूकान बंद कर दूँगा।'

अलेक्सेई ने पूछा, 'तुम इस पुस्तकालय का क्या करोगे ?'

खट्टे स्वर में देरेन्कोव ने कहा, 'भला कौन पढ़ना या सचमुच कुछ जानना चाहता है ? यह सब बस यों ही है।'

अलेक्सेई दुखी हुआ और चुप रह गया। तब देरेन्कोव ने राय दी, 'एक नानबाई की दूकान खोली जाय।'

अलेक्सेई चुप रह गया। तब देरेन्कोव ने बड़े उत्साह से हिसाब लगाना शुरू किया—पतीस प्रतिशत का मुनाफा होगा इस काम में। गाड़ी मजे में चल जायगी। उसी ने निर्णय भी दे दिया—'अलेक्सेई तुम नानबाई का काम समझते हो। तुम परिवार के व्यक्ति की तरह

अपना काम समझ कर करोगे। कोई आटा, अडे, मक्खन आदि न चुरावे इसकी भी तुम्ह ही फिकर करनी होगी। तुम होगे मैनजर। अब तुम अपना काम छोड कर इसी मे लग जाओ। समझे।'

अलेक्सेई इकार न कर सका। दूसरे दिन ही वह काम छोड कर आ गया। तब देरेकोव ने वह गदा मकान छोड कर दूसरा साफ लेकिन छोटे मकान का इतजाम किया। एक और आदमी सहायक के रूप म रखा गया। उसका नाम था ईवान। वह भूरे बालो वाला नाटे कद का नुकीली दाढी वाला था उसका चेहरा जैसे घुओं का बना था। वह आदमी चोर था और बेहया भी। पहली रात को ही उसने दस अडे तीन पौंड आटा और एक डबलरोटी चुरायी और पकडा गया।

अलेक्सेई ने उसे डराया, धमकाया, फिर चोरी न करने की शिक्षा दी। वह चुपचाप सुनता रहा लेकिन उस पर कोई विशेष प्रभाव नही पडा। बाद म, उसी रात को वह जब खिडकी के पास लेटा तो बड बडा रहा था वाह, क्या मजाक है मरे उम्र से तिहाई उम्र का छोकडा। एक दिन मे ही मेरा उस्ताद बन गया? मुझे ही शिक्षा दता है? मुझे अभी पहचानता नही है।'

एक दिन ईवान ने बडी ढिठाइ से अलेक्सेई से पूछा, 'क्या तुम मालिक के रिश्तेदार हो? या तुम उसके दामाद बनने वाले हो?'

अलेक्सेई चौंक पडा, क्या मतलब?'

वह बोला मालिक की बहन तुम्हारी ओर मुझे लगता है कुछ आकर्षित है। इसी से पूछ रहा हूँ। उसे मैंने जैसा देखा है, उससे मुझे यही लगा है। लेकिन यह होगा नही। यह लडकी बेवकूफ नहीं ह। फिर यह जो छोकरे दिन भर घुसे रहते ह इसके क्या मतलब है?

अलेक्सेई ने उसे डाँट दिया, फिर भी वह देर तक बक-बक करता रहा।

अलेक्सेई को यह नया काम जमाने म बडी मिहनत करनी पडी। खूब तडके उठ कर वह आटा सानता, भट्ठी मे लोइयाँ डालता और सवेरे ही सवेरे केक और ताजी पावरोटियाँ आदि ले कर उसे विद्यार्थियो

के होस्टल जाना पडता, जहाँ लडके नाश्ता करने को तैयार बैठे रहते। वहा के निपट कर सीधे लडकियो के स्कूल व होस्टल जाता।

अलेक्सेई यह सब काम करता और साथ ही और भी एक काम करता—गुप्त साहित्य बाँटना। जिस टोकरी म वह केक, पावरोटी बिस्कुट आदि रखता उसी म नीचे किताबें, पर्चे आदि होते जिन्हे रोटिया बाँटने के बहाने वह विभिन्न लोगो के यहा पहुँचाता।

इतनी भीड-भाड के बीच भी अलेक्सेई का किताबो म पढने और बाँटने का काम तेजी स चलता रहता। उसकी इस गतिविधि की सूचना पुलिस को हो गई थी। एक बार कजान की पुलिस ने अलेक्सेई के कमरे की तलाशी भी ली। बहुत खोजबीन के बाद पुलिस के हाथ एक नोट बुक लगी, जिसमे बहुत सी किताबो से चुने हुये वाक्य उतारे गये थे। सौभाग्य से उस नोट-बुक म इतिहास, दशन और उपन्यासा की ही नकलें थीं। एक दूसरी नोट बुक जिसमे मावस की पुस्तक के उद्धरण नक्ल किए गये थे वह पुलिस की नजर से बच गयी।

पुलिस के हाथ यद्यपि कोई आपत्तिजनक चीज नही लगी फिर भी उसने अल्योशा के शहर निझनी नोवोगोरोद के पुलिस दफ्तर म इसकी रिपोट लिखाई कि मजदूरी करने वाला, लकडिया काटने वाला यह नौजवान जीविका के लिए अवश्य ही छोटे छोटे काम करता है लेकिन विज्ञान तथा दशन की किताबें भी पढता है और उनके उद्धरण भी डायरी मे नोट करता है, जो एक सदेहजनक और खतरनाक प्रवृत्ति है।

छिप कर अलेक्सई जिन सभाओ म जाता, राजनीतिक कायकताओ मे मिलता उनके बीच वह मैक्सिम' उपनाम से पुकारा जाता था। वह खूब किताबे पढता, अखबार पढता, गोष्ठियो म भाग लेता, लम्बी बहसो मे उलझता। वह अपनी जो राय व विचार व्यक्त करता वे मात्र किताबी बातें न होती, बल्कि अनुभव से भरी और गभीर होती। अन्य दूसरे साथियो के मुकाबले उसे जीवन के गहरे व कटु अनुभव थे और उसकी बातें सुन कर दूसरे सभी आश्चय प्रकट करते।

मैक्सिम किताबो मे जो पढता उसमे से अधिकाश उसकी अनुभव

की बातें होतीं। राजनीतिज्ञ अर्थशास्त्री मजदूरों के जीवन के बारे में जो लिखते वह सब मैक्सिम अपने अनुभवों से जानता था।

नानबाई की नई दूकान में अलेक्सेई के रात और दिन काम के कारण एक जैसे होते। अक्सर दोपहर को छुट्टी मिलने पर वह आराम करता। जब रोटियाँ सिंकने के लिए भट्ठी में रख दी जातीं तो वह थोड़ी देर तक किताबें पढ़ता। इसी समय उसके पास देरेंकोव की बहन आ जाती और वह भी बातें करती व किताबों में उलझी रहती। वह भी खूब पढ़ती थी। कई विद्यार्थी भी आते। कमरे में हमेशा फुस फुसाहट और बहस होती रहती। देरेंकोव भी कभी-कभी आता।

देरेंकोव की बहन के आने से अलेक्सेई के मन में खुशी होती। लेकिन उसको आया देख कर ईवान जाने क्यों कुढ़ जाता। इसका एक कारण था कि ईवान धीरे धीरे आलसी होता जा रहा था और चाहता था कि उसका भी सब काम अलेक्सेई ही कर दे। इसीलिए उसे पढ़ना देख कर या देरेंकोव की बहन से बातें करते देख कर वह कुढ़ने लगता। वह व्यंग्य से कहता, साल दो साल में तुम पूरे नान बाई हो जाओगे।'

देरेंकोव की बहन दूकान के पीछे वाले कमरे में रहती थी। उससे अलेक्सेई अब भी कतराता क्योंकि उसकी बच्चों की सी आँखें उसी तरह उसके मन में चुभतीं। वह लड़की ज्यों ज्यों बड़ी होती जाती थी और कोमल और सुंदरी होती जाती है। अलेक्सेई उससे कतराता है, यह वह समझती थी। इसीलिए उसके मन से यह भाव हटाने की नीयत से कभी-कभी आ कर वह अलेक्सेई से बातें करती। पूछती, 'क्या पढ़ रहे हो?'

अलेक्सेई के मन में आता कि वह पूछे कि यह क्या पूछना चाहती हो! लेकिन जाने क्यों उसे सामने देख कर वह बोल ही न पाता था। उसकी यह दशा शायद ईवान भाँप गया था। एक दिन अकेला पा कर वह कुटिलता से मुस्करा कर अलेक्सेई से बोला तुम भी मूर्ख हो!'

क्यों?' अलेक्सेई चौंका।

'यहाँ बेकार प्राण दे रहे हो। सिर्फ नानबाई बन कर क्या

करोगे ?' -

'क्या मतलब ?'

'अब तुम्हे शुरू करना चाहिए। क्यो नही मालिक की बहन से ही शुरू करते ?'

अलेक्सेई को गुस्सा आ गया। तडप कर वह बोला, 'चुप रहो। अगर फिर इस तरह की बाते की तो मै लोहे के छड से तुम्हारा सिर तोड दूँगा।'

बेहया की तरह हँसते हुए ईवान उस कमरे मे चला गया जहा आट के बोरे भरे थे। वहा वह बडबडाता रहा, 'छोकरा पागल है। सिर्फ किताबी बाते ही जानता है।'

उस रात अलेक्सेई बडा परेशान रहा। रह-रह कर वह ईवान और देरेकोव की बहन की ही बातें सोचता रहा। फिर जब सो गया तो सपने मे उसने देखा कि देरेकोव की बहन उसकी बाँहो मे है। वह घबरा कर उठ बैठा। उठ कर वह पीछे वाले कमरे की खिडकी से झाकने लगा जिसमे वह लडकी रहती थी। उस समय, इतनी रात को भी वह नीली रोशनी मे बैठी कुछ लिख रही थी। उसकी आखें जैसे आधी मुदी थी। वह बीच बीच मे मुस्करा उठती। वह शायद कोई चिटठी लिख रही थी। लिखना पूरा करके उसने उसे मोड कर लिफाफे मे रखा। अपनी जीभ से लिफाफे के कोन को गीला करके चिपकाया और टेबुल पर रख दिया। उँगलियाँ खूब पतली व छोटी, मुलायम थी। फिर उसने अँगडाई ली। उठी कमरे के दूसरे किनारे मे बिछी खाट तक गयी। अपनी ब्लाउज उतारी। उसकी बाँह बहुत गोल व सुन्दर थी। इस समय वह बडी लुभावनी लगी। फिर उसने लैम्प बुझा दी। अधेरा हो गया। लेकिन देर तक अलेक्सेई खडा उस अँधेरे मे भी उसे घूरता रहा, जैसे अँधेरे मे भी वह उसे देखने की कोशिश कर रहा हो।

थोडी देर बाद अलेक्सेई अपनी खाट पर वापस आ गया।

उस रात उसे फिर नींद नही आयी। वह रात भर सोचता रहा कि यह लडकी अकेली कैसे रहती होगी।

कज़ान म रहते हुए अलेक्सेई को किसी भी विद्यालय से अधिक ही जानने समझने को मिला।

वसत आया। जहाजो का आना-जाना बन्द सा हो गया। जहाज घाट सूने हो गय। दूकान की बिक्री भी कम हो गयी। दूकान मे काम भी कम हो गया।

दूकान म अकेले उसका मन न लगता। देरेन्काव की बहन म अब उस एक तरह का डर लगने लगा था। वह आकर्षित हो कर उसकी ओर बढता भी और उसे सामने पा कर जैसे पसीने से नहा जाता। फिर भाग कर नदी किनारे आ जाने के सिवा उसे कुछ न सूझता। वह घटा नदी किनारे घूमता, दुनिया भर की बातें सोचता रहता। अक्सर रात भी वह वहीं बिताने लगा। कभी कभी रात का किनारे पर उल्टी पडी नावो के नीचे घुस कर वह सो जाता। वहाँ उसे शाति मिलती अच्छा लगता। सोचता, काश यही रहने की व्यवस्था होती तो वह हमेशा यही रहता।

ये दिन अलेक्सेई के लिए बडी मानसिक उलझन के थे।

एक दिन निझनी नोवोगोरोद से एक पत्र आया। पत्र अलेक्सेई के ममेरे भाई का था। लिखा था नानी मर गयी।

नानी मर गयी। दुनिया मे अलेक्सेई की एकमात्र स्नेही, प्यारी नानी मर गयी। उसे दफनाये जाने के सात हफ्ते बाद चिट्ठी आयी। उसी से मालूम हुआ कि किस तरह भीख माँगते समय नानी गिरजा घर की सीढ़ियो पर लुढक कर गिर पडी थी और उसकी टाँग टूट गयी थी। फिर किसी ने उसे डाक्टर को भी नही दिखाया न ही अस्पताल ही पहुँचाया। फिर एक दिन नानी मर गयी। उसे कब्रगाह म गाड दिया गया और नाना तो नानी के मरने के बाद जसे पागल हो गया है, और दिन रात कब्र के पास की झाडी मे बैठा रोया करता है। शायद वह भी अब जल्दी ही मर जाय।

नानी के मरने से उसे दुख तो हुआ ही, नाना की हालत जान

कर और भी दुख हुआ ।

अलेक्सेई रोया तो नही पर बर्फीली हवा की तरह आयी यह खबर उसकी आत्मा को पत्थर बना गयी । उसने बस इतना ही चाहा कि कोई ऐसा मिलता जिससे वह नानी की बातें करता और बताता कि नानी कितनी भली थी । शायद ऐसा करता तो उसका जी हल्का होता, लेकिन उसे अपने मन की बातें करने को कोई न मिला ।

अलेक्सेई कई दिनो तक नानी की यादो म डूबा रहा । कोई उस सान्त्वना देने वाला न मिला और धीरे धीरे उसके मन का सताप उसी के मन मे जैसे जल कर सूख गया ।

धीरे धीरे नानी को वह भूलने की कोशिश करने लगा । नाना को भी । नाना नानी की स्मृति के साथ उसे बहुत कुछ पुरानी बातें याद आ जाती उनसे वह व्यथित होता । लेकिन अन्तत यही सोचता कि कुछ भी हो नाना नानी बडे प्यारे थे ।

इन्ही दिनो की बात है । निखिफोरिच नामक एक सिपाही छाया की तरह अलेक्सेई का पीछा करने लगा । एक दिन उसने अलेक्सेई को पकडा और पूछा, 'मैंने सुना है कि तू खूब पढता है । आखिर कौन सी किताब पढ़ता है ? महात्माओ की जीवनियाँ या बाइबिल ?'

अलेक्सेई समझ गया । यह सरकारी जाँच है । उस मन म गुस्सा भी आया कि उसका किताब पढना ही लोगो को क्यो इतना खटकता है । उसने टरला कर कहा, दोनो ही पढता हूँ ।'

सिपाही बोला, 'यह तो ठीक है । पर क्या तुमने कभी काउन्ट तोल्सतोय की भी कोई किताब पढी है ?'

'हा, एकाध पढी ह । लेकिन वे सभी मामूली किस्म की किताबें ह वैसी तो कोई भी लिख सकता है ।'

'मैंने सुना है कि वह कुछ ऐसा लिखता है जिसे पढ कर लाग पादरियो और गिरजा के विरोधी बन जाते ह । अगर ऐसी काई किताब पकडी जाती है तब ।'

अलेक्सेई अब तक पुलिस व सरकारी खुफिया आदमियो से बातें करने का ढग जान गया था । उसने उससे चतुराई से बाते की । वह

कजान मे रहते हुए अलेक्सेई का किसी भी विद्यालय से अधिक ही जानने समझने को मिला।

वसत आया। जहाजो का आना जाना बद सा हो गया। जहाज घाट सून हो गय। दूकान की बिक्री भी कम हो गयी। दूकान म काम भी कम हो गया।

दूकान म अकेले उसका मन न लगता। देरेकोव की बहन स अब उसे एक तरह का डर लगने लगा था। वह आकर्षित हो कर उसका ओर बढता भी और उसे सामने पा कर जैसे पसीने से नहा जाता। फिर भाग कर नदी किनारे आ जाने के सिवा उसे कुछ न सूझता। वह घटो नदी किनारे घूमता, दुनिया भर की बात सोचता रहता। अक्सर रात भी वह वही बिताने लगा। कभी कभी रात को किनार पर उल्टी पडी नावो के नीचे घुस कर वह सो जाता। वहाँ उस शाति मिलती अच्छा लगता। सोचता, काश यही रहने की व्यवस्था होती तो वह हमेशा यही रहता।

ये दिन अलेक्सेई के लिए बडी मानसिक उलझन के थे।

एक दिन निझनी नोवोगोरोद से एक पत्र आया। पत्र अलेक्सेई के ममेरे भाई का था। लिखा था नानी मर गयी।

नानी मर गयी। दुनिया मे अलेक्सेई की एकमात्र स्नेही, प्यारा नानी मर गयी। उसे दफ्नाये जाने के सात हफ्ते बाद चिट्ठी आयी। उसी से मालूम हुआ कि किस तरह भीख माँगते समय नानी गिरजा घर की सीढियो पर लुढक कर गिर पडी थी और उसकी टाँग टूट गयी थी। फिर किसी ने उसे डाक्टर को भी नहीं दिखाया, न ही अस्पताल ही पहुँचाया। फिर एक दिन नानी मर गयी। उस कब्रगाह मे गाड दिया गया और नाना तो नानी के मरने के बाद जस पागल हो गया है और दिन रात कब्र के पास की थाडी मे बठा रोया करता है। शायद वह भी अब जल्दी ही मर जाये।

नानी के मरने से उस दुख तो हुआ ही, नाना की हालत जान

कर और भी दुख हुआ।

अलेक्सेई रोया तो नही, पर बर्फीली हवा की तरह आयी यह खबर उसकी आत्मा को पत्थर बना गयी। उसने बस इतना ही चाहा कि कोइ ऐसा मिलता जिससे वह नानी की बातें करता और बताता कि नानी कितनी भली थी। शायद ऐसा करता तो उसका जी हल्का होता, लेकिन उसे अपने मन की बाते करने को कोई न मिला।

अलेक्सेई कई दिना तक नानी की यादा मे डूबा रहा। कोई उसे सान्त्वना देने वाला न मिला और धीरे धीरे उसके मन का सताप उसी के मन मे जैसे जल कर सूख गया।

धीरे धीरे नानी को वह भूलने की कोशिश करने लगा। नाना को भी। नाना नानी की स्मृति के साथ उसे बहुत कुछ पुरानी बातें याद आ जाती उनसे वह व्यथित होता। लेकिन अ तत यही सोचता कि कुछ भी हो नाना नानी बडे प्यारे थे।

इन्ही दिनो की बात है। निखिफोरिच नामक एक सिपाही छाया की तरह अलेक्सेई का पीछा करन लगा। एक दिन उसने अलेक्सेई को पकडा और पूछा, 'मैंने सुना है कि तू खूब पढता है। आखिर कौन सी किताबें पढता है ? महात्माओ की जीवनियाँ या बाइबिल ?

अलेक्सेई समझ गया। यह सरकारी जाँच है। उसे मन मे गुस्सा भी आया कि उसका किताबें पढना ही लोगो को क्यो इतना खटकता है। उसने टलता कर कहा, 'दोना ही पढता हूँ।'

सिपाही बोला 'यह तो ठीक है। पर क्या तुमने कभी काउट तोल्सतोय की भी कोई किताब पढी है ?'

'हाँ, एकाध पढी ह। लेकिन वे सभी मामूली किस्म की किताब हैं वैसी तो कोई भी लिख सकता है।

'मैंने सुना है कि वह कुछ ऐसा लिखता है जिसे पढ कर लाग पादरियो और गिरजा के विरोधी बन जाते ह। अगर ऐसी कोई किताब पकडी जाती है तब ।'

अलेक्सेई अब तक पुलिस व सरकारी खुफिया आदमियो से बातें करने का ढग जान गया था। उसने उससे चतुराई से बातें की। वह

सिपाही खुश हुआ और अलेक्सई को चाय पिलाने अपने घर पकड़ ले गया।

अलेक्सई सब समझता था। जानता था कि सिपाही की यह दिल चस्पी कोई रहस्य की बात न थी। वह जानता था कि चाहे जितनी विनम्रता से भी उसकी दावत के लिए इन्कार किया जाय, न जाने से उसका शक अलेक्सई और उसकी दूकान पर बढ़ेगा ही।

सो अलेक्सेई उसके घर गया। छोटा सा उसका मकान था। सिर्फ दो खाटें थीं, जिन पर बहुत सी तकिएँ पड़ी थीं। एक बेंच भी थी। उसी बेंच पर अलेक्सेई बैठा। फिर सिपाही की बीबी आ कर उसी बेंच पर अलेक्सई की बगल में बैठ गयी। वह करीब बीस साल की थी। खूब स्वस्थ, छातियाँ कुछ अधिक उभरी हुई, ओठ खूब लाल और आंखों में झलकती प्यास।

खाट पर बैठा निखिफोरिच उस दिन विद्यार्थियों और वेश्याओं की ही बातें करता रहा। बात के बीच में उसने निर्णयात्मक स्वर में कहा 'सभी औरतें ईर्षालु होती हैं, चाहे कोई रानी हो या वेश्या।'

उसकी बीबी उसकी बातें अनमनी हो कर सुन रही थी और बेंच के नीचे अपने पाँवों से अलेक्सेई के पाँवों को धक्का दे रही थी। अलेक्सई के लिए बैठना मुश्किल हो रहा था लेकिन वह भाग भी नहीं सकता था। यह घर उसे रहस्य का किला लग रहा था।

निखिफोरिच ने कई उदाहरण देने के बाद कहा, 'जैसे वह विद्यार्थी है प्लेतनेव।

प्लेतनेव का नाम सुनते ही अलेक्सई चौंक पड़ा लेकिन अपने को सँभाल कर चुप रहा।

उसकी बीबी बीच में ही बोल उठी 'सुन्दर तो वह नहीं है पर भला आदमी है।'

कौन ?' निखिफोरिच ने पूछा।

'वही मिस्टर प्लेतनव। बीबी बोली।

निखिफोरिच जैसे नाराज हो गया। बोला, 'उसे मिस्टर मत कहो। पढ़ाई पूरी करने के बाद मिस्टर कहलाने लायक होगा। और

वह भला आदमी है ने मतलब ? बदर, पिल्ला ''

बीबी गरम हो गयी, जबान सम्हाल कर बोलो '' कहत हुए उसन अपने बूढ़े पति को दिखा कर जैसे चिढाने का अलेक्सेई के एक पाव को अपने पाँव स धक्का दिया।

सिपाही के चेहरे का भाव ठण्डा पड गया। अलेक्सेई घबडा कर उठने लगा। तब सिपाही निखिफोरिच ने झट से कहा 'बैठो, बैठो चाय अभी कहाँ पी गयी है ?' फिर अपनी बीबी की ओर देख कर कवश स्वर म बोला 'हम बादशाह की एक मकडी से तुलना करते हैं।'

बीबी ने डाँटा, 'खुदा के लिए सोच कर बोलो, क्या दाल रहे हो ?'

वह जैसे उबल पडा, 'तू अपनी लीला बन्द कर राक्षसिन ! मरा जो मन होगा कहूँगा। तू घाडी है, अक्ल नही है तुझे। तू जा कर चाय ले आ। जा !' फिर अलेक्सेई की ओर मुड कर सयत बनते हुए कहा, मेरा मतलब यह नही समझो। मकडी की जाल की तरह अदृश्य धाग जिससे बादशाह से ले कर हम जैसा सिपाही तक बँधा है। इसी जाल पर सारा राज्य टिका है। मैं यह क्यों कह रहा हूँ, समझे ? तुम चतुर आदमी हो, समझ लोगे। तुम अपनी मिहनत पर जिन्दगी काट रहे हो। लेकिन वे सब विद्यार्थी हर समय देरकाव के यहाँ क्या घुसे रहते ह। उसकी बहन मेरिया सुन्दर है, मैं समझता हूँ, लेकिन एक दो छोकडे होने ता बात थी, लेकिन इतन ज्यादा ! ओफ ! मैं विद्यार्थियो से नही बालता, आज जो विद्यार्थी हैं, वे ही कल अफसर बनेंगे। लेकिन विद्यार्थी सिर्फ जोश मे बहत है। किसी भी विद्रोह मे सबस पहले कूदते हैं।'

अलेक्सेई चुपचाप सुनता रहा बोला कुछ नही। निखिफोरिच अपन ढग से सरकारी काय प्रणाली की चर्चा करता रहा। तभी उसकी बीबी चाय ले कर आयी। बात बदलने को बोली, 'आज तारे कितने लाल हैं जैसे आग लगी हो।'

अलेक्सेई न बाहर झाँका, आकाश ता साफ था, फिर भी वह

चुप रहा।

फिर थोडी देर वाद वह लौट आया।

रात को जब सन्नाटा हुआ तो मेरिया न अलक्सई को अपने कमरे म बुलाया और थोडी वेरुखी स पूछा, 'पुलिस के आदमी स क्या-क्या बाते हुइ ?

अलक्सेई न सब बता दिया। लेकिन मरिया क चेहरे स लगा कि उम विश्वास नही हो रहा है। पहले तो वह कमरे मे खामोश टहलती रही फिर रुक कर बोली खर, अब होशियार रहना। सतकता से औरो स बाते करना।

अलक्सई न चुपचाप आदश सुन लिया। इस वदले वातावरण स वह परेशान था। मरिया की तेज आँखे सदा की तरह अलेक्सई को आज भी परशान कर रही थी। वह इस स्थिति से छुटकारा पाना चाहता था कि अपने दोना हाथ पीछे मोड कर, जरा तन कर मरिया अलक्सई के सामने आ खडी हुई और अजीब भाव भगिमा स पूछा 'तुम आज इतन उदास क्या हो ?

अलेक्सेई की समझ मे कोई जवाब न सूझा तो झट वह उठा, मेरी नानी मर गयी।'

नानी !' वह हँस पडी, फिर पूछा, 'क्या तुम उसे बहुत प्यार करते थे ?'

'हाँ, बहुत। खर यह छोडो, बोलो और कुछ पूछना है ?'

नही।'

अलेक्सेई आ कर अपनी खाट पर लेट रहा और अपने विचारो म उलझा रहा। आज यह सब क्या हो गया ?

उस दिन के बाद दूकान मे विद्यार्थियो का आना बद हो गया। उनके न आने से अलेक्सई को पढने वाली पुस्तको क कठिन अशो को समझन म दिक्कत होन लगी। तब अलेक्सेई ने कठिन प्रश्नो का एक नोट बुक म नोट करना शुरु किया। कि बाद म किसी से पूछ लेगा।

एक दिन रात को उसकी नोट बुक को चुरा कर ईवान न पढा और अलक्सेई को जगा कर बोला तुम किताबी कीडे मूख ! यह

मूर्खता करते हो ? यह सब भला लिखना चाहिए ? सिपाही देख लेता तो तुम्हें जेल भेज दें। क्या समझते हो कि तुम पर निखिफोरिच की निगाह नहीं है ? सुन लो विद्वान राजा का पीछा करना छोड दो, नहीं तो '

उसने वह नोट बुक चूल्हे में झोंक दी।

अलेक्सेई चुप रहा। उसे मरिया का आदेश था कि किसी से अधिक गडबड बातें न करे। न किसी से ज्यादा घुले मिले। फिर भी आज अलेक्सेई को ईवान अच्छा लगा। यद्यपि उसे बताये गये मकडी के जाल का अब स्पष्ट आभास मिल रहा था।

अलेक्सेई यद्यपि अब बहुत सतर्क रहता था फिर भी निखिफोरिच के बताये मकडी के जाल के हर ओर बढने का उसे अनुभव होता रहता।

नानबई की दूकान की हालत काफी खस्ता हो रही थी। देरेन्कोव तो दूकान के कामों में कोई दिलचस्पी न लेता था, बल्कि सब कुछ अलेक्सेई पर छोड कर वह निश्चिंत था। हाँ, वह रोज दूकान की आमदनी ले कर अपनी जेबों में भर लेता। उसके इधर खर्चे बेतरह बढ गये थे। वह हर समय दूकान में पैसे झटकने के ही फेर में रहता। अलेक्सेई को मालूम हो गया था कि एक लाल बालों वाली लडकी के फेर में देरेन्कोव पड गया था और दिन-रात उसे ही खुश रखने में वह व्यस्त रहता था। उसी लडकी पर शायद अब उसे रुपये खर्च करने पड रहे थे। लेकिन सब जान समझ कर भी अलेक्सेई कभी कुछ नहीं बोलता था। बल्कि दूकान की आमदनी और बढे, इसी प्रयत्न में वह और अधिक परिश्रम करता। देरेन्कोव जैसा क्रांतिकारी मन वाला आदमी भी आखिर एक लडकी के चगुल में फँस ही गया, इस बात से उसे हैरानी जरूर थी।

सवेरे से बहुत रात तक अलेक्सेई काम में बंधा रहता। जब रात को वह अपने कमरे में आता तो बुरी तरह थका होता और आ कर

अपने छोटे से कमरे में लेट जाता। उसके कमरे में एक खाट के अलावा एक लकड़ी का बक्सा था, जिसे उलट कर उसने उसे टेबुल बना लिया था। उसी पर वह अपनी छोटी सी लैम्प रखता जिसकी धुंधली, नीली रोशनी में वह किताबें पढ़ता। इन दिनों अलेक्सेई ने खूब पढ़ा, खूब बातें उसे जानने को मिलीं। उसकी खाट पर पुश्किन की कविताओं की एक किताब और कुछ विज्ञान संबंधी पुस्तकें बराबर धरी रहतीं। यह किताबें पढ़ कर वह अक्सर सोचता कि किताबों में जिस दुनिया का हाल लिखा है वैसी दुनिया भी इसी धरती पर जरूर ही कहीं होगी।

अलेक्सेई अपने मन में उठने वाले विचारों के संबंध में दूसरों से भी बातें करना चाहता था लेकिन निकिफोरिच ने जिन खतरों की ओर उससे इशारा किया था, उनके कारण तथा मकड़ी के अदृश्य जाल के कारण वह सतर्क रहता, फिर भी गुप्त रूप से वह क्रान्ति की बातें करने वालों से अपना संबंध बढ़ाता जा रहा था।

अलेक्सेई बराबर ही गुप्त सभाओं में जाता। यद्यपि वहाँ की होने वाली बहसें उसे अक्सर उबाऊ ही लगती थीं। अलेक्सेई अनुभव करता कि इन गुप्त-सभाओं में आगे बढ़ कर हिस्से लेने वाले बुद्धिवादी लोग कुछ अव्यवहारिक और बढ़ा चढ़ा कर बातें करते थे। वे यद्यपि अधिक पढ़े लिखे होते थे लेकिन अपनी बात के आगे दूसरों की कम ही सुनते थे। अक्सर वे अलेक्सेई को संबोधित करके कहते—

मैक्सिम! अनुभवों से शिक्षा लेने वाला, जनता के बीच का आदमी।'

वे लोग अलेक्सेई की तारीफ तो करते लेकिन उसकी बातों पर अधिक ध्यान न देते। वे अपने को ही सबसे योग्य समझते थे। अक्सर वे अलेक्सेई की बातें मजाक में उड़ा देते। अगर कभी अलेक्सेई अपनी बात पर अड़ने का प्रयत्न करता तो उन विद्वानों में से कोई जरा लापरवाही से कहता 'ओह छोड़ो भी!'

अंततः उनके सामने अलेक्सेई को चुप ही रह जाना पड़ता था।

अलेक्सेई ने एक नोट-बुक रखनी शुरू की जिसमें वह कभी-कभी

अपने से कविताएँ बना कर लिखने का प्रयास करता। उसी म वह पढ़ी किताबा की कुछ महत्वपूण लाइनें भी नोट करता। वह जो कविताए बनाने का प्रयत्न करता, उनम अधिकांश मे वह वोल्गा के प्रति अपन प्रेम को अभिव्यक्ति देने का प्रयास करता।

लेकिन अपनी इस नोट-बुक को वह खूब छिपा कर रखता और कभी किसी को न दिखाता।

अब वह जीवन की पाठशालाओ स काफी कुछ सीख-समझ गया था और उसे स्वय भी इसका आभास सदा रहने लगा था कि वह बहुत समझदार और बुद्धिमान हो गया है और साधारण लोगो से अधिक ही दुनिया को समझने लगा है।

असफल आत्महत्या के बाद

अपने एकांत क्षणो मे अलेक्सेई को नानी की खूब याद आती। उसे लगता, काश वह एक बार नानी से मिल पाता ! उसे ननिहाल की बहुत सी घटनाएँ याद आती।

वसंत आ गया। हल्की हल्की वर्षा भी बीच-बीच मे होती। जीवन मे एक अजीब सा सूनापन घर करता जा रहा था।

दूकान का काम बढता जाता। लेकिन परिश्रम ही बढता आमदनी नही। अलेक्सेई पर बोझ भी बढता जाता। केक आदि तैयार करने के अलावा स्कूलो व लडकियो के हास्टल मे भी चीजें पहुँचानी पडती थी। हास्टल मे एक साथ बहुत सी लडकियो के बीच घिर जाने पर अलेक्सेई को अजीब सा लगता। लडकियो के प्रति अलेक्सेई का थोडा आकर्षण भी बढा, लेकिन उसे लगता कि मकडी का वही अदृश्य जाल यहाँ तक भी फैल गया है।

सबेरे केक पहुँचाने के बाद अलेक्सेई थोडी झपकी लेता। रात मे उसे केक बनाने के लिए जगना पडता और केक बन जाने पर सिनेमा घरो के सामने वाली दूकानो मे रात को ही पहुँचाना पडता। यह

मत्र न्रन के बाद उसे न्ा तीन घटे ही सोने को मिलते । काम की यही हालत थी। उधर दूकान की आवश्यक्ताओ का ख्याल किए बिना ही देरे‍क्रोव सारी आमदनी घर मे खच करने लगा। हालत यहा तक पहुँची कि कभी कभी आटा खरीदने को भी पसे न रहते।

एक दिन दरेकाव ने बनी गभीरता स अपनी दाढी के बाल खीचते हुए कहा, देखो अब दिवाला होने वाला है।'

अलेक्सेई उसकी हालत जानता था। उसे मालूम था कि देरेकाव की प्रेमिका वह लाल बालो वाली लडकी गभवती थी और देरेकाव उससे कतराता था। जब एक बार देरे न्रोव ने कहा देखा न कितनी आफ्त है। कल ही मैं नये मोजे लाया था, आज गायब हो गय।

तत्र अलेक्सेई न कोई सहानुभूति प्रक्ट न की और सोचन लगा कि जा आदमी दूसरो के लिए व्यापार चला रहा था, वही आज व्यक्तिगत बाते कस करन लगा! और इधर कुछ एसा भी होता कि लगता कि देरेकाव के घर का हर व्यक्ति उसके लिए परशानी का ही कारण बन गया है। उसका बूढा त्राप अचानक धर्मात्मा बन गया था, छोटा भाई दिन रात चकलो का ही चक्कर लगाता, और बहन मरिया भी किसी के प्रेम म फँस कर एसी हो गयी थी जैस अपन सिवा उस किसी से कोइ मतलब ही नही।

इसी बीच एक दिन अचानक खबर मिली कि प्लेतनेव को गिरफ्तार करके सेंट पीटसबग के क्रेस्ती जेल म बद कर दिया गया ह। यह खबर सुन कर अलेक्सेई बहुत परेशान व चिंतित हो गया।

अगले दिन ही, सुबह वह निखिफोरिच के यहाँ गया। उसने भी बताया, प्लेतनव गिरफ्तार कर लिया गया। खर छोडो उस, यह बताओ, इधर तुम दिखाई क्या नही पडे?

निखिफारिच उस समय शायद सो कर उठा था और सबेरे सवेर ही शराब पी चुका था। उसकी बीबी खिडकी पर बठी उसका पाजामा सी रही थी। थोडी देर चुप रह कर वह, फिर बाला, आखिर वह पकडा ही गया। जानते हो, उसके कमर म एक घडा मिला जिसमे जार के खिलाफ पर्चे छापने वाली स्याही भरी थी।' फिर अपनी

बीवी की ओर इशारा करके बोला, 'उस उसको गिरफ्तारी का बड़ा दुख है। रो भी रही थी। लेकिन सवाल है कि भला एक विद्यार्थी का जार का विरोध करने की क्या पड़ी थी ? फिर वह उठा और 'अभी जाता हूँ", वह कर एकाएक बाहर चला गया।

उसकी बीबी पहले तो खिड़की से उसका जाना देखती रही। फिर एकाएक हाथ का सामान वहीं पटक कर, झटके से खिड़की का पल्ला बंद करते हुए वह तीव्र घृणा से चीखी, 'जानवर !'

फिर झटके से कमरे से बाहर जा कर उसने चूल्हे पर केटला चढ़ायी और वापस आ कर आवेश मे भरी सी अलेक्सेई स बोली 'इस जल्लाद को अब मैं मजा चखाऊँगी। तुम उसकी किसी बात का कभी विश्वास मत करना। वह तुम्हे भी फँसाने के फेर मे है। वह दिल का काला आदमी है। वह तुम्हारे बारे मे सब जानता है। जीवन भर वह दूसरो को फँसाता रहा है। इसकी ही रोटी खाता है।'

उसकी बातें सुन कर अलेक्सेई घबरा गया। उसके मुँह से चीख निकलने से रह गयी। तभी निखिफोरिच की बीवी उत्तेजना से भरी अलेक्सेई के बिल्कुल पास आ कर खड़ी हो गयी और आवेश भरे अधिकार के स्वर मे बोली 'मुझे चुम्बन दो।'

अलेक्सेई ऐसी स्थिति के लिए तैयार न था। वह और घबरा गया और वहाँ से भाग जाना चाहा। लकिन वह उस औरत से और कुछ जानने की आशा मे खड़ा रहा। यद्यपि उसके प्रस्ताव के बाद भी उसके मन मे किसी तरह का उत्साह या प्रेरणा नहीं हुई। लेकिन उस स्त्री की आँखो की प्यास को देख कर वह विचलित हो उठा। उसने सतकता से उसके गले मे अपनी बाँह डाल कर उसके रूखे बालों को सहला कर पूछा, 'अब वह किसके फेर म है ?'

उसके कुछ कहने के पहले ही दरवाजे पर आहट हुई और 'वह आ गया' कह कर वह भाग कर चूल्हे के पास चली गयी।

भीतर आ कर निखिफोरिच ने अलेक्सेई से कहा, 'तुम अभी तक खड़े क्या हो, बैठो।'

अलेक्सेई वहीं बेंच पर बैठ गया। तब एकाएक निखिफोरिच कहने

टगा, 'लोग क्यो नही समझते कि जार खुदा है, ताकतवर है। तुम तो पढ लिखे आदमी हो। तुम्ही बताओ, बाइबिल मे क्या ठीक लिखा है ? बाइबिल मे जीवन के बारे मे जो लिखा है उससे हमारा जीवन कितना बदला हुआ है। देखो न, प्लेतनव ने अपने को किस प्रकार बरबाद कर लिया !'

अलेक्सेई आश्चय से उसकी बाते सुनता रहा, बोला नही। उसने फिर कहा 'तुमने इतना पढा लिखा है, क्या तुम्हारा नानबाई बनना शोभा देता है ? मेरी मानो और जार की सेवा मे लग जाओ तो तुम्ह बडी सफलता मिलेगी।'

अलेक्सेई उठ खडा हुआ बोला 'नौ बज रहे है अब चलूगा।'

वह बोला, मेरी बात टाल गये ? खैर, फिर देखा जायगा। कभी कभी आया करना।'

अलेक्सई लौट आया। लेकिन निखिफोरिच की बातें सुन कर उसका दिमाग चक्कर खाने लगा था। उसे हर ओर मकडी का जाल फैलता सा दिख रहा था। वह सारी स्थिति म एक प्रकार की ऊब और घुटन का अनुभव करने लगा था।

अलेक्सई का मन दूकान के कामो म कम लगता, यद्यपि वह सब काम करता था। वह औरतो किताबो, मजदूरो और विद्यार्थियो की ओर भी भयानक रूप से खिचता जा रहा था। वह न इधर का होता था, न उधर का। उसके मन मे एक अजीब तरह की बेचैनी उलझन और क्रोध भरता जा रहा था।

इन्ही मानसिक उलझनो मे उसने राहत पाने के लिए वाइलिन सीखना शुरू किया। रात को दूकान के काम से छुट्टी पा कर वह बजाता और दुनिया को भूलने की कोशिश करता।

उन्ही दिनो विद्यार्थियो ने हडताल कर दी।

सुनने म आया कि कही-कही मजदूरो ने भी दगे फसाद किये है। यह सब क्या हो रहा था, अलेक्सई को नही मालूम था, लेकिन जो कुछ भी हो रहा था यह खबरें सुनता उसम उसे खुशी होती, मन म चैन और राहत का अनुभव होता।

अलेक्सेई अब उन्नीस वर्ष का था। सन् १८८७ का साल था। इस साल बहुत से लोगों ने, खास कर नौजवानों ने खूब ही आत्महत्यायें की। जैसे लोग दुनिया में जीना नहीं चाहते थे और अपने से ही अपना जीवन समाप्त करने में ही मुक्ति पाते थे। अलेक्सेई के एक परिचित ने भी आत्महत्या कर ली थी और उसकी लाश के पास पुलिस को जो कागज मिला उसमें लिखा था— 'ऐसी जिन्दगी से जल्दी से जल्दी छुटकारा पाओ।'

दिसंबर सन् १८८७ को।

अलेक्सेई जिन मानसिक उलझनों के बीच जी रहा था उससे वह पूरी तरह ऊब गया था। उसे जीवन में किसी प्रकार का रस नहीं मिलता था। भविष्य की भी कोई आशा न थी। दूकान चौपट हो गयी थी। मेरिया भी दूसरे युवक के प्रेम में दीवानी हो रही थी। देरेनकोव भी भाग गया था। विद्यार्थी और मजदूर पागलों की तरह लड़ाई करते थे। सब ओर अशान्ति ही अशान्ति थी। कहीं भी आशा की किरण नहीं दिखती थी।

इसी मानसिक स्थिति में एक दिन अचानक अलेक्सेई ने निश्चय किया—वह भी आत्महत्या करेगा। ऐसी जिन्दगी से जल्दी से जल्दी छुटकारा पायेगा।

एक जगह से वह तीन रूबल में एक रिवाल्वर खरीद लाया। उसमें चार गोलियाँ थीं। वह रिवाल्वर ले कर शहर से बाहर नदी किनारे सन्नाटे में गया। वहीं उसने अपने सीने पर रिवाल्वर रख कर गोली दाग ली ।

अलेक्सेई गोली चला कर गिर पड़ा ।

फिर उसे बर्फ पर पड़ा पाया गया उसे अस्पताल ले जाया गया।

१४ दिसंबर १८८७ को कजान के अखबार वोलमस्की वस्तनीक में छपा—'१२ दिसंबर को आठ बजे रात को कजानका नदी के किनारे निझनी नोवागोरोद के एक नवयुवक अलेक्सेई मैक्सिम पश्कोव

ने आत्महत्या के इरादे से अपने को रिवाल्वर की गोली से घायल कर लिया। पेश्कोव को फौरन ही क्षेम्स्त्वो अस्पताल ले जाया गया। उसकी जाच करने वाले डाक्टर का कहना है कि घाव गहरा और खतरनाक है। पश्कोव के पास पाये गये एक लिखित पत्र से ज्ञात हुआ कि वह अपनी मौत के लिए किसी अन्य को दोषी नही मानता।'

अलेक्सई ने आत्महत्या करने की कोशिश क्यो की, किसी को नही मालम।[1] लोगो ने समझा कि यह कोई दुघटना ही है। अलक्सई की जेब से जो कागज मिला था उसमे लिखा था—'मेरी मौत का कोई जिम्मेदार नही है। मेरा पासपाट इसी पत्र के साथ है। मेरे शव का पोस्टमाटम किया जाय और पता लगाया जाय कि मेरे शरीर के भीतर क्या तत्त्व थे। पासपोट से जाना जा सकेगा कि मैं अलेक्सई पेश्कोव हूँ।'

डाक्टर का कहना था कि घायल व्यक्ति तीन दिनो के भीतर मर जायेगा। लेकिन डाक्टर की बात अलेक्सई ने अद्धचेतनावस्था मे भी सुन लिया था और बोला था, 'नहीं' मैं नही मरूँगा।

और सचमुच अलेक्सेई नही मर सका।

अस्पाल मे जब वह था तब उसके बहुत से पुराने साथी, मजदूर, किसान उसे दखने गये। उनकी बाता से उसे आराम मिलता। तब अलेक्सेई ने फिर एक बार जीने का निश्चय किया।

एक महीने बाद अलेक्सेई को अस्पताल से छुट्टी मिला। आत्महत्या का कोशिश मे भी वह असफल रहा, इस बात को सोच सोच कर उसे बडी ग्लानि होती। वह चुपचाप अपनी दूकान के कमरे मे वापस आ गया।

अलेक्सेई की दूकान पर रोटी लने कभी कभी मिखाइल एन्तानाविच रोमस नामक एक व्यक्ति आता था। उससे अलेक्सेई की हल्की सी

---

१ इस घटना के लगभग पच्चीस वष बाद गोर्की ने अपनी कहानी 'मकर के जीवन की एक घटना' मे आत्महत्या के इस प्रयास का पूरा चित्रण किया है।

जान-पहचान हो गयी थी। उसका बाप लुहार था और वह खुद पहले रेल मजदूर था। पुराना क्रांतिकारी था, जो दस वर्ष निर्वासन की सजा काट चुका था। उसकी असाधारण शक्ति और गम्भीर प्रकृति और दृढ़ता के कारण अलेक्सेई उसका आदर करता था। वह क्रोसनोवया दोवा गाँव में एक दूकान चलाता था और उसी के माध्यम से किसानों के बीच क्रांति का प्रचार करता था। यह सब अलेक्सेई को मालूम था।

एक दिन वही रोमस अलेक्सेई के पास आया। बोला, 'मेरे साथ चलो। यहाँ जीवन व्यर्थ मत गँवाओ। मैं क्रोसनोवयोदोवो गाँव में हूँ। वोल्गा से नीचे की ओर लगभग तीस मील। वहाँ मेरी दूकान है। तुम मेरी सहायता करना। ज्यादा समय भी नहीं लगेगा। खूब फुरसत रहेगी। वहाँ खूब सारी किताबें हैं। क्या राय है?'

अलेक्सेई अपने वर्तमान माहौल से भागना ही चाहता था। उसे लगा यह अच्छा मौका है। उसने तत्काल हाँ कर दिया।

तीसरे दिन ही अलेक्सेई रोमस के साथ उसके गाँव चला गया। रोमस ने अलेक्सेई के सामने ही किताबों के कई बक्स खोले और उन्हें आलमारी में सजा कर बोला, 'मैक्सिम, तुम्हारा कमरा ऊपर है।'

नये घर का उसका कमरा साफ सुथरा था।

पहले ही दिन रोमस ने समझाया, 'देखो खाली हाथ बाहर कभी मत जाना। रिवाल्वर न रहे तो छड़ी ले कर जाना। यहाँ बहुत सम्हल कर रहना होगा।'

रोमस ने उसे दूकान का काम समझा दिया।

यहाँ अलेक्सेई का परिचय ईगोट से हुआ जो मल्लाह था और रोमस का मुंहलगा दोस्त। पहले दिन ही भेंट होने पर उसने पूछा 'तुम्हें क्या मछली मारना आता है?'

'नहीं।' अलेक्सेई बोला।

बाद में रोमस ने बताया, 'बहुत तेज और साफ आदमी है। लेकिन अफसोस की बात है कि वह पढ़ना नहीं जानता।'

रोमस ने अपने कैद व निर्वासन के किस्से सुनाते हुए कहा, 'वहाँ

जाड़ा इतना पडता था कि दिमाग भी जम जाता था। मेरे साथ कई रूसी कैदी थे। उनमे एक तेज किस्म का विद्यार्थी था जिसका नाम कोरोलेन्को था। वह भी सजा काट कर वापस आ गया है। वह मुझे बहुत पसन्द था। वह हर तरह के काम कर लेता था। अब तो पत्र पत्रिकाओ मे उसके लेख छपते रहते है। सुना है, वह अच्छा लेखक हो गया है और नाम भी कमाया है। कभी मिलाऊँगा तुमसे।'

अलेक्सेई को कोरोलेन्को का नाम परिचित सा लगा। लेखको से भी कभी उसकी भेंट हो सकती है, सोच कर वह रोमांचित हो उठा। रोमस के संग उसे अच्छा लगता। जीवन मे पहली बार किसी के साथ एकरसता का अनुभव हुआ। अब आत्महत्या के प्रयास की बात सोच कर वह बुरी तरह झेंपता था। कुछ भी हो रोमस का संग-साथ उसे उपयोगी और लाभकारी लगा।

इतवार को दूकान खुली और देखते देखते गाव वालो की भीड लग गयी। दरवाजे के पास बैठा रोमस पाइप मे तमाखू भर कर पी रहा था और गाव वालो से बाते कर रहा था। गाँव वाले तरह तरह की बात करते थे। कुछ कहते कि जमीदार अच्छे है कुछ कहते कि महाजन, सूदखोर ही अच्छे है। एक किसान ने जिक्र किया कि उसकी उम्र छियालिस की है। दूसरे ने फौरन टोका, क्या झूठ बोलते हो? पिछले क्रिसमस मे तुमने तिरपन बताया था।' कितने सरल भी थे सब! लेकिन रोमस शायद किसानो को अच्छी तरह पहचानता था। उसने बताया—'ये किसान बडे शक्की होते है। अपने पडोसी पर भी शक करते है। हर नये आगन्तुक को शक की निगाह से देखते है। और इनका जीवन भी अजीब है। जार ने जमीदारो से जमीन ले ली है। इसके माने आजादी कहाँ है? लेकिन ये अनपढ गाव वाले इसे ही आजादी कहते हैं। खैर, इस आजादी का मजा कभी जार ही समझायेगा। ये गाव वाले जार को खुदा मानते हैं, उस पर इन्हे अटूट विश्वास है। इनसे इनके ही भले की बात कहो तो भी ये नही समझते। इन्हे इनके अधिकार समझाओ तो भी समझना नहीं चाहते।'

आकाश के तारो को देख कर बोला 'पढे लिखो से बडी मुसीबत है। गमस कहता है कि आकाश के तारो म जीवन है। लेकिन मुझे विश्वास नही होता। कही पढ लिया होगा बस वही किताबी बातें गाता रहता है।'

अलेक्सई की डगोट से खूब पट गयी। उसका स्वभाव कुछ ऐसा था कि औरतें हमेशा उसके पीछे पडी रहती थी। एक दिन साझ म आ कर उसने कहा, मेरी किस्मत देखा। कितने पति मुझसे नाराज रहते हैं। पर मैं क्या करूँ ? अगर कोई स्त्री तुम्हारा पीछा कर ता तुम कब तक भागोगे ? पति लोग अपनी बीवियो से घोडी की तरह काम लते ह कभी प्यार नही करते आराम नही करने दते। लेकिन मैं औरतो को खुश रखने की कला खूब जानता हूँ। '

अलेक्सेई अपनी खिडकी से साते हुए गाव और सूखे खेतो का देखता। तारो की किरणें जैसे अँधेरे म छेद करती रहती। अलेक्सई अब गाँव की जिन्दगी मे खूब परिचित हो गया था। उसने पढा था, और सुन रखा था कि गाव के लोग शहर वालो मे अधिक ईमानदार होने ह। लेकिन उसने देखा कि गाँव के लोगा का दिमाग बहुत सकुचित होता है। वे बहुत थोडी सी बातें जान कर ही सारा जीवन काट देते हैं। वे आपस म बैठते तो एक दूसरे की बुराई ही अधिक करत। उनकी बातों का मुख्य विषय होता—औरतो की बुराई करना। फिर बीमारियो और खुदा तथा भाग्य का रोना रोते। औरतें तो जैसे सिर्फ लडने के लिए ही जन्मी थी। हमेशा आपस म गाली गलौज करती रहती। एक बार एक पुराने मिट्टी के घडे के लिए, जिसकी नय की कीमत सिर्फ बारह कोपक थी, तीन परिवार लाठी ले कर लडे और एक बुढिया की बाँह तथा एक लडके का कधा टूटा। ऐसी घटनायें तो रोज ही हुआ करती।

और गाँव के युवक ! वे तो सिर्फ लडकिया को छेडते घूमते रहते। लडकिया के फेर म ही गिरजाघर जाते। किसी लडकी को वन म अकेली पा जाते तो दुर्व्यवहार करते। यहाँ तक कि लडकी का स्कर्ट उलट कर उसके सिर पर बाँध देते। नगी हो कर लडकियाँ गालो दतीं

'इन्हें समझाने को पूरी शताब्दी चाहिए।' अलेक्सेई बोला।

और नहीं तो क्या ? क्या तुम समझते हो कि इसी क्रिसमस में ये समझ जायेंगे। अरे मैक्सिम ! तुमने किताबों में जिन किसानों का चित्रण पढ़ा है उनसे ये बहुत भिन्न हैं।''

उसी रात को अलेक्सेई घर में अकेला था। रोमस कहीं गया था। एकाएक ग्यारह बजे के करीब कहीं पास से ही गोली छूटने की आवाज आयी। हल्की बारिश भी हो रही थी गहरा अंधेरा था। गोली की आवाज सुन कर अलेक्सेई बाहर निकला। अँधेरे में छाया की तरह हिलता रोमस आता दिखा। पूछने पर रोमस ने बताया कि उसी ने गोली चलायी थी।

क्या ? किस पर ? अलेक्सेई ने पूछा।

कुछ लोग लाठियाँ ले कर आये थे। लूटपाट करने और क्या ? रोमस ने बताया, 'मैंने कहा चुपचाप चले जाओ, नहीं तो गोली मार दूँगा। सो उन्हें ही डराने को हवाई फायर किया था। किसी को लगी वगी नहीं।'

फिर कमरे में आकर रोमस ने गीले कपड़े उतारे, दाढ़ी का पानी निचोड़ा और घोड़े की तरह हाँफते हुए कहा, 'मेरे ता जूते बरबाद हो गये। जाने दो बदल लूगा। हाँ मेरी रिवाल्वर साफ कर दो। तेल भी डाल देना नहीं तो जंग लग जायगी।' फिर बातों के दौरान में कंघी करते हुए कहा इन गाँव वालों से सतर्क रहना। मौका पाते ही दूकान लूट लेंगे। पर कभी लाठी ले कर मत जाना। लाठी देख कर वे भड़क उठते हैं। समझते हैं, उन्हें लाठी दिखा कर चुनौती दी जा रही है। यो बहुत डरने की बात नहीं है क्योंकि वे महान बुज़दिल भी हैं।'

अलेक्सेई का यहाँ का जीवन अजीब और दिलचस्प लगा। हर समय कुछ न कुछ नया ही दिखता।

इगोट अच्छा आदमी था। वह वोल्गा का भक्त था। मछुआ का जीवन ऐसा ही था। उसका दुनिया में अपना कोई न था। वह किसानों से चिढ़ता था, उन्हें वह चालाक और स्वार्थी समझता था। एक दिन

आकाश के तारो को देख कर बोला पढे लिखो से बडी मुसीबत है। गमस कहता है कि आकाश के तारो म जीवन है। लेकिन मुझे विश्वास नही होता। कही पढ लिया होगा बस वही किताबी बात गाता रहता है।'

अलेक्सेई की इगोट स खूब पट गयी। उसका स्वभाव कुछ एसा था कि औरते हमेशा उसके पीछे पडी रहती थी। एक दिन साझ म आ कर उसने कहा, मेरी किस्मत देखा। कितने पति मुझस नाराज रहत हैं। पर मैं क्या करूँ? अगर कोई स्त्री तुम्हारा पीछा कर ता तुम कब तक भागोगे? पति लोग अपनी बीविया से घोडी की तरह काम लत ह कभी प्यार नही करते, आराम नही करने देत। लेकिन मैं औरतो को खुश रखने की कला खूब जानता हूँ।

अलेक्सेई अपनी खिडकी से सोते हुए गाँव और सूखे खेता को देखता। तारा की किरणे जैसे अँधेरे मे छेद करती रहती। अलेक्सई अब गाँव की जिन्दगी से खूब परिचित हो गया था। उसने पढा था, और सुन रखा था कि गाव के लोग शहर वालो मे अधिक इमानदार होते ह। लेकिन उसने देखा कि गाव के लोगो का दिमाग बहुत सकुचित हाता है। व बहुत थोडी सी बात जान कर ही सारा जावन काट दते हैं। वे आपस मे बठत तो एक दूसरे की बुराई ही अधिक करत। उनकी बाता का मुख्य विषय होता—औरतो की बुराइ करना। फिर बीमारिया और खुदा तथा भाग्य का रोना रोत। औरतें तो जस सिफ लडन के लिए ही जन्मी थी। हमेशा आपस म गाली गलौज करती रहतीं। एक बार एक पुराने मिट्टी के घडे के लिए जिसकी नय की कीमत सिफ बारह कोपक थी तीन परिवार लाठी ले कर लडे और एक बुढिया की बाह तथा एक लडके का कधा टूटा। ऐसी घट नायें तो रोज ही हुआ करती।

और गाँव के युवक! वे तो सिफ लडकिया को छेडते घूमते रहत। लडकिया के फेर मे ही गिरजाघर जाते। किसी लडकी को खत म अकेली पा जाते तो दुर्व्यवहार करते। यहा तक कि लडकी का स्कट उलट कर उसके सिर पर बाँध देन। नगी हो कर लडकिया गाली देती

और चीखती, तब उन्हें बड़ा मजा आता।

यद्यपि अलेक्सई से रोमस ने मना कर रखा था फिर भी कभी कभी वह वोल्गा के किनारे घूमने चला जाता। कभी कभी ईगोट भी साथ रहता।

इसी तरह गाव में अलेक्सई के दिन कट रहे थे।

एक दिन अचानक रसोईघर में आग लग गयी। बड़ी मुश्किल से आग बुझाई गयी। बाद में पता लगा कि किसी ने लकड़ी में बारूद लपेट कर चूल्हे के पास रख दिया था। उस दिन घर की रसोइया बोला, 'जब तक अफसरों में शिकायत नहीं की जायेगी तब तक गाँव वाले ये बदमाशियाँ बन्द नहीं करेंगे।'

रोमस ने कहा 'इन बातों से बहुत परेशान नहीं होना चाहिए। सहना चाहिए।'

अलेक्सई को लगा जैसे रोमस आग लगने की घटना को उसी तरह भूल गया है जैसे कोई मक्खी का काटना भूल जाय।

ईगोट बहुत बोलता था, तरह-तरह की बातें। एक दिन बोला, 'यह जार भी क्या है! कसाई है, कसाई! वह सभी राजकुमारों की हत्या करा चुका है। वह नहीं जानता कि एक मक्खी को राइफल से नहीं मारा जा सकता। लेकिन एक मक्खी भेड़िया से ज्यादा तंग कर सकती है। यहाँ के देहातियों को ही देखो, हर समय वही रूबल और कोपक की बात।'

अक्सर रोमस के कुछ अजीब अजीब दोस्त आते। उन्हें खाना व शराब मिलती। वे कभी-कभी रात को वहीं सो रहते, लेकिन उनके वहाँ रात बिताने की बात रसोइया के अलावा कोई न जानता।

एक दिन अलेक्सेई के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि रोमस के पास देरेन्कोव की बहन मरिया आयी। लेकिन अब उसकी आँखों में वह चितवन नहीं थी जिससे पहले अलेक्सई परेशान होता था। आज अलेक्सेई ने देखा कि उसकी आँखों में एक युवती की चितवन है। वह नीले रंग के कपड़े पहन कर आयी थी, सिर पर नीला रिबन बाँधे थी सचमुच बड़ी सुन्दर लग रही थी।

लेकिन गोडी घमण्डी हो गयी थी, तभी तो उसने एक बार भी अलेक्सई की ओर नजर उठा कर देखा भी नही, जैसे उसे पहचानती ही न हो। लेकिन उसकी आवाज अब पहले से ज्यादा संगीतमय हो गयी थी।

लेकिन उसका रुख देख कर अलेक्सेई खुद उसका सामना होने से कतराता।

और दूसरे ही दिन रोमस मेग्यिा के साथ कजान चला गया।

जुलाई का महीना था। एकाएक ईगोट गायब हो गया। लोगों ने कहा कि वह डूब मरा होगा। एक ने कहा—वह सनकी आदमी, नाव पर सो गया होगा, वहीं उलट गया होगा। शाम को एक ने आ कर पूछा, 'रोमस कब तक आयेगा ?'

अलेक्सेई ने कहा, मैं नही जानता, पर क्या बात है ?'

उसने धीरे धीरे बताया, 'मै ईगोट की नाव के पास गया था। नाव पर कुल्हाडी के निशान थे। इसके माने कि ईगोट की किसी ने कुल्हाडी से हत्या कर दी है।'

सुन कर अलेक्सेई सुन्न रह गया।

तीन दिनो बाद नदी के किनारे उसकी लाश पायी गयी। फिर तो सब हुआ। बहुत से किसान, सिपाही और पदाधिकारी जुटे। जाच पडताल हुई। तरह-तरह की चर्चा हुई। किसी ने कहा, 'बहुत गडबड आदमी था। ठीक हुआ जो मर गया।'

दो दिनो बाद रोमस वापस आया। उसके आते ही अलेक्सेई ने बताया 'ईगोट मार डाला गया।

'क्या कहा ?' चौक पडा रोमस। फिर जैसे वह काठ हो गया। थोडी देर बाद उस धक्के से सम्हल कर बोला, 'मैंने उसे पहले ही आगाह किया था। बेचारा! सब अच्छे लोगो को ही मार डालते है। ईगोट बडा भला आदमी था। खुशमिजाज चतुर और ईमानदार।'

रात को जब अपनी खाट पर लेटा अलेक्सेई ईगोट की हत्या के बारे मे सोच रहा था तभी भारी कदमों रोमस आया और अलेक्सेई की ही खाट पर बैठ गया। फिर अपनी दाढी मे उँगलियाँ उलझा कर

एक लँगड़े किसान न कहा, 'ढेले मार मार कर इह गाँव स निकाल देना चाहिए।'

रोमस न अलेक्सेई से कहा, 'मैक्सिम ! आओ यहाँ स चल दो, नही ता ये सब झगडा करेंगे। ये लोग बुरे तो है ही। इनसे उलझना बेकार है।

दोनो नदी किनारे चले गये। बाद म पता लगा कि गाव क धनी दूकानदारा ने षडयत्र करके आग लगवायी थी।

दो दिनो नदी किनारे शरणार्थियो की तरह रहने के बाद रोमस कजान चला गया।

अलेक्सेई वहाँ अकेला रह गया। रोमस के जाने के बाद अलेक्सेई का लगा कि उसकी वसी ही स्थिति है जैसी बिना मालिक के किसी पिल्ले की होती है।

और तीन चार दिन नदी किनारे भटकने के बाद अलेक्सेई भी एक स्टीमर पर सवार हो गया। उसे तब मालूम न था कि स्टीमर कहाँ जायेगा।

अलेक्सेई की जेब म सतिस कापेक थ। उन्हे वह खच नही करना चाहता था इसलिए वह जहाज के कप्तान से मिला। उसने अलेक्सेई को जहाज पर फश धोने का काम दे दिया और किराया भी माफ कर दिया।

सात दिन उस स्टीमर पर कटे। सात दिन बाद जहाज कास्पियन के किनारे रुका। समारा म अलेक्सेई स्टीमर स उतर गया।

जहाँ जो देखा और समझा

कास्पियन से लौट कर अलेक्सेई कजान आया। सोचा था शायद यहीं कुछ काम मिल जाय। पुराने मित्रों के बीच कुछ समय कट जाय। लेकिन जाड़ा शुरू हो गया था और कजान तो जैसे सर्दी से ठिठुर गया था। कजान उसे वीरान सा लगा। देरेन्कोव की दूकान बंद हो गयी थी। अलेक्सेई के बहुत से मित्रों और परिचितों का भी वहाँ पता न था उसे। वे सब कहीं गायब हो गये थे।

कजान शहर में कहीं कोई ठिकाना न लगा। तब थोड़ी बहुत कोशिश के बाद उसे डोबरिंका रेल यार्ड में चौकीदार की जगह मिल गयी। यह एक छोटा सा सूना सूना स्टेशन था।

शाम को छ बजे से सबेरे छ बजे तक उसे घूम घूम कर पहरा देना पड़ता। वहाँ गाड़ियों में आटा चुराने लोग आते थे। लेकिन अलेक्सेई की सतर्कता के कारण चोरों की चलने न पाती थी। एक दिन चोरों के गिरोह के मुखिया ने जा कर अलेक्सेई को घूस दे कर मित्र बनाना चाहा। अलेक्सेई जानता था कि उससे मित्रता के अर्थ हैं— उसकी चोरी में साझेदारी। सो उसने इन्कार कर दिया। फिर उस

व्यक्ति ने अलेक्सेई को गाली दी और मार डालने की धमकी दी।

वे सब अलेक्सेई को खूब तंग करते। तरह तरह से परेशान भी करते। अलेक्सेई को गरीबों से ममता थी, यदि वे गरीब होते तो अलेक्सेई उनकी ओर से आँख मूँद लेता। लेकिन वे गरीब न थे। वे तो औरत और शराब के लिए चोरी करते थे। जब उनकी एक न चली तो अंत में उन्होंने अलेक्सेई को बहकाने के लिए एक कोजाक सुन्दरी विधवा को उसके पास भेजा। उस औरत ने कहा, 'वे सब बहुत धूर्त हैं। दो नंबर के आटे का एक बोरा दे दो, नहीं तो तीन नंबर वाला ही सही।'

अलेक्सेई के इन्कार करने पर वह स्त्री अपनी नंगी छातियाँ दिखाती हुई सामने खड़ी हो कर बोली, 'इतना अच्छा मौका हाथ से मत जाने दो। मुझ जैसी मधु को छोड़ कर पछताओगे।'

अलेक्सेई फिर भी नहीं फिसला। उस स्त्री का नाम लुइसी था। दूसरी पाली के अन्य पहरेदार—बकोव इब्राहिम और उस्मान उसके जाल में फंस गये थे। इब्राहिम की पाली में वह आती और इब्राहिम उसे ले कर अपने छोटे से कमरे में घुस जाता और चोर अपनी गाड़ी पर आटे के बोरे लादने लगते।

यह सब देख कर अलेक्सेई का मन विद्रोह करने को भड़कता। लेकिन चाह कर भी वह कुछ नहीं कर सका। परन्तु लुइसी ने जब जब उसकी ओर हाथ बढ़ाया, उसने उसे भगा दिया।

एक बार चाँदनी रात में अलेक्सेई को थोड़ी झपकी लग गयी थी। उसी समय वह आयी और अलेक्सेई को जगाया। अलेक्सेई ने देखा कि उस चाँदनी में वह और अच्छी लग रही थी। अपनी बिल्लियों जैसी चमकदार आँखों को नचा कर वह बोली, 'घबराओ नहीं? आज मैं घूमने निकली हूँ।

अलेक्सेई ने आकाश के तारों की ओर देखा। जरूर आधी रात से ज्यादा का समय था। उसने पूछा, 'भला यह घूमने का कौन सा समय है?'

लुइसी उसकी बगल में बैठते हुए बोली, 'औरतें तो रात के लिए

ही जनी ह। और तुम सो क्यो रहे थे ? क्या इसी के लिए नौकरी की ह ?' फिर अपनी जेब से कुछ निकाल कर मुह मे डालती हुई शायद चाकलेट उसने कहा, 'तुम पढे लिखे हो सुना है। बताओ, वर्जिन मरी कहा पैदा हुई थी ?'

'क्यो ?'

'वहा जाऊँगी। प्रायश्चित करने। मै पाप मे डूबी हूँ। तुम पुरुषो न मुझे पाप के गढे मे गिराया है। एक सिगरेट पिलाओ।'

अलेक्सई ने उस सिगरेट दी, उसने जलाई और लबा कश खीचा। उस क्षण लुइसी अलेक्सई को बडी भली लगी।

उसी क्षण आकाश मे कोई तारा टूटा। क्षण भर को अँधेरे मे एक सुनहरी रेखा सी खिंच गई। लुइसी न झट से अपने माथे व सीने का छू कर क्रास बनाया और फुसफुसायी, 'एक दिन मरा भी सितारा इसी तरह टूटेगा।

अलेक्सई उसके आकर्षक चेहरे को घूरता रहा। तभी हाथ की अधजली सिगरेट दूर फेंक कर वह बोली, 'आज की रात कैसी ह ? मुझे तो अच्छी लग रही ह।' फिर अलेक्सई का कधा पकड कर बोली, क्यो, कुछ मौज करने का इरादा है ?'

अलेक्सई बोला कुछ नही बस इन्कार मे सिर हिलाया। तब वह जरा खट्टे दिल से बोली, 'सभी तो कहते ह कि मेरे साथ उन्ह आनन्द मिलता है।'

फिर वह अनमनी सी बैठी रही। फिर जसे चौंक कर कहने लगी बडी मजबूरी ने मुझस यह सब कराया। य पुरुष । मैं बहुत *सतायी गयी हूँ।*' फिर आकाश की ओर देखते हुए एक आह छोड कर बोली 'हे खुदा ! मरा कोई दोष नही है। मैं निर्दोष हूँ।' फिर एका एक वह उठ खडी हुइ और कहा, 'मैं स्टेशन मास्टर के पास जा रही हूँ।'

और वह हिलती डुलती चाँदनी मे धीरे धीरे बढ गयी। अलेक्सई बडी करुणा से उसे दूर तक देखता रहा।

अलेक्सई को कभी किसी न बताया था कि याड मे जो चारिया

होती हैं उनमे स्टेशन मास्टर पेत्रोवस्की का भी साझा रहता है। चौडे कधो वाला, लबी बाँहो वाला, काली चमकदार आँखो वाला, घनी दाढी वाला वह स्टेशन मास्टर पेत्रोवस्की आदमी से अधिक एक भालू जैसा लगता। सभी उसे पीठ पीछे 'अफीकी' कहते। सुना गया कि अपनी स्त्री को उसने पीट-पीट कर मार डाला। उसके दोस्तो म पुलिस दरोगा और व्यापारी भी थे। उसके साथी उसके घर जुटते, शराब पीते और लडकियो के साथ मौज करते।

एक दिन पेत्रोवस्की के यहा नाच गाने का जशन हुआ। अलेक्सेई को भी बुलाया गया। पेत्रोवस्की के विवश करने पर अलेक्सेई ने एक दो गाने गाये। उस दिन सबो ने खूब शराब पी। खूब उछले कूदे। मर्द भी, औरतें भी। अलेक्सेई के गाने पर खुश हो कर कई औरतो न चूम चूम कर उसका पूरा चेहरा गीला कर दिया। अलेक्सेई घबरा गया। कहा फँस गया! नशे मे झूमती लुइसी ने घोषित किया—'मैं तो इसकी मुहब्बत म पागल हो रही हूँ। मैं इसे जान से ज्यादा प्यार करती हूँ। यह मैं सबके सामने कह रही हूँ। यह सबके सामने कह रही हू। लेकिन यह बुद्धू है ।'

नशे मे जरा ज्यादा मौज मे आ कर पेत्रोवस्की ने आदेश के स्वर म कहा, औरतो को नगी कर दो।

कई एक ने उठ कर बडे धैर्य से औरतो के एक एक कपडे खोल कर अलग अलग रख दिए। नगी औरतो को पुरुषो ने घेर लिया और नगी औरतो के एक एक अग को छू छू कर उ ही शब्दो मे तारीफ करने लगे जिन शब्दो म थोडी देर पहले वे सब अलेक्सेई के गाने की तारीफ कर रहे थे। फिर एक एक स्त्री को खीच कर पुरुष इधर उधर कमरो मे व कोनो म खिसक गये।

अलेक्सेई के लिए यह सब असह्य हो उठा। वह वहाँ स चलने को मुडा तभी अधनग्न लुइसी आ कर, बडी आजिजी स उसकी बाँह से लिपट कर बोली, 'अकेले मत जाओ। मुझे लिए चलो। ये मुझे मार डालेंगे। तुम रुको, मैं कपडे ले कर आती हूँ।'

अलेक्सेई का मन क्रोध और करुणा की मिश्रित उत्तेजना से भरा

था। लुइसी पर दया आयी तो बोला, ठीक है मैं बाहर इन्तजार करता हू।'

लुइसी भीतर गयी और अलेक्सेई दरवाजे से निकल कर खडा हो प्रतीक्षा करने लगा।

भीतर जाने पर लुइसी को पत्रोवस्की ने खीच कर अपने माफे पर गिरा लिया। लुइसी चीखी, 'आज मुझे छोड दो।'

आवाज सुन कर अलेक्सेई ने घूम कर देखा। भालू जैसे पेत्रोवस्की की जबरदस्त बाहो मे लुइसी तडप रही थी। अलेक्सेई के मन म आया कि दौड कर वह पेत्रोवस्की को मारे लेकिन जाने क्या सोच कर उसने अपना गुस्सा रोक लिया। उसके मुह से अनायास ही घृणा से निकला राक्षस!

पेत्रोवस्की ने शायद सुन लिया था। दहाड कर बोला, 'ठीक कहते हो, हम इन्सान कहा है? हमारे भीतर एक बहुत बडा राक्षस है।

अलेक्सेई ने घृणा से मुह घुमा लिया।

वह साफ सुन रहा था—हर कमरे हर कोने स औरतें दद म चीख कराह रही थी लेकिन कोई विरोध नही कर रही थी। उन्ही के बीच कलेजे को चीरती हुई लुइसी की चीख भी आयी—'पेत्रोवस्की मुझे छोड दो। मुझे बहुत तकलीफ है अब कोई दूसरी ।'

सुन कर एक बुजदिल की तरह अलेक्सेई ने भाग जाना चाहा। कदम भी बढाया, लेकिन ठमक गया—लुइसी को छोड कर नही जायेगा।

वह इन्तजार करता रहा। सोचता रहा, कही पत्रोवस्की लुइसी को मार न डाले।

थोडी देर बाद लँगडाती सी लुइसी आयी और अलेक्सेई की बाहो से लिपट कर रोने लगी। एक क्षण भी देर न करके अलेक्सेई उसे सहारा दे कर घसीट ले चला।

रास्ते म अलेक्सेई ने पूछा, 'तुम अपने साथ इतना सब क्यो होने देती हो?'

लुइसी थोडा सँभल गयी थी। बोली, 'इसमे उन्हे भी तो बहुत तकलीफ होती है। स्टेशन मास्टर भी तो बाद मे रोने लगता है।

क्या ?'

'वह बूढा है न ! उसमे अब ताकत नही है । दूसरे भी लेकिन तुम यह सब नहीं समझ सकते । मैं समझा भी नही सकती '

अलेक्सेई का मन रोने रोने जैसा हो रहा था । वह चुपचाप लुइसा की बाह थामे चलता रहा ।

पत्रोवस्की की रसोइया चालीस साल की औरत भी पत्रोवस्की का बिस्तर की सगिनी थी । वह और मरदो से भी मामला चलाती रहती। एक दो बार अलेक्सेई ने देखा था—तभी से वह अलेक्सेई स नाराज रहने लगी थी । कई चोरियो म उसने अलेक्सेई को फँसाने का असफल प्रयत्न किया । एक दिन उसने साफ कहा, मेरे साथ व सब सोते भी हैं और बाद म मुझे भैंस कहते हैं । मैं सब जानती हूँ, लेकिन मेरा दिल कोई नही देखता जो सोने का है । लेकिन मुझे तुझसे नफरत है । तू यहाँ से भाग जा, नही तो मैं तुझे जहर दे दूगी । रह जा, मैं तुझे यहाँ स भगा कर ही दम लूगी । लुइसी तुझ पर मरती है । मैं देखूगी । कैसे तुझे वह पाती है ?'

अलेक्सेई को उसका व्यवहार बहुत बुरा लगा ।

उसने तीन चार महीने वहाँ किसी तरह काटे । फिर एक दिन ऊब कर उसने पत्रोवस्की और उसकी रसोइया औरत की बातें एक अर्जी म लिख कर ऊपर के अफसर को भेजी । फलस्वरूप उसकी बदली बोरी सोगलेब्स्क स्टेशन पर कर दी गयी, जहाँ उसे चौकीदारी और बोरो की मरम्मत का काम मिला ।

बोरीसोगलेब्स्क स्टेशन पर अलेक्सेई की कुछ अजीब अजीब लोगो स भेंट हुई । वहाँ मजदूर बन कर काम करने वाला एक शिक्षित समुदाय था । विद्वान विदेशी भाषाओ के पडित कालेज म निकाले हुए विद्यार्थी सेना और जहाज के अफसर, जल व निर्वासन काट कर लौटे प्रोफेसर । व सभी लोग 'अविश्वासी'[1] थे । एस वहाँ साठ लोग थे ।

---

१ सरकार की नजरो में अविश्वासी । जिन पर क्रान्तिकारी और राजद्रोही होने का शक था ।

वही अलेक्सेई का परिचय स्टारोस्टीव मानेनकोव नामक लेखक स हुआ जा रेलवे के किराया विभाग मे एक किरानी था। वह बीमार रहता और जब खासना शुरू करता तो उसका सारा शरीर हिलने लगता।

अलेक्सई ने उससे दोस्ती गाठी। वह एक छोटे से कमरे मे रहता था जिसमे रगीन परदे लगे थे। वह वोदका पीता और प्याज के टुकडे चूसता। नशे म अक्सर वह चीखता, "असप सकी[1] तो खेल करता है। लेकिन मैं तो अपने खून से लिखता हूँ। बताओ, असप सकी म क्या है? यह जरूर है कि उसकी चीजें बडी पत्रिकाओ मे छप जाती हैं।'

अक्सर वह अपनी खाट के नीचे स भूरी चादर मे बँधा अपनी पाण्डुलिपियो का बस्ता निकालता और गद झाड कर खाँसत हुए कहता, 'इन्हे मैंने हृदय के खून से लिखा है, खून से।'

यह सुन कर अलेक्सेई को चिन्ता होती। क्या सभी लेखको की यही दशा रहती है? लेखक की भावनाओ को देख कर अलेक्सेई के आँसू आ जाते। लेखक-वग के प्रति एक अजीब भावना से वह भर उठता। कभी-कभी मानेनकोव कहता, मैक्सिम, तुम भी कुछ सीखने की कोशिश करो। कविताएँ लिखना मूखता है, तुम नेडसन[2] नही हो सकते। तुमम उतनी भावुकता नही है। तुम्हारा मन रूखा ह। तुम्हारी क्या बात है, पुश्किन तक ने कविता के चक्कर म अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया है।'

यही अलेक्सेई को एक स्कूल मास्टर भी मिला, जो हर शनिवार को नियम स अपनी बीवी को स्नान घर म बद करके पीटा करता था। यह दृश्य देखने को अक्सर पडासी अपने मित्रा को बुला लेते। व सभी तमाशा देखते। वह स्त्री काफी मोटी थी और मार खा कर नगी ही स्नान घर से निकल कर भागती। अलेक्सेई को यह सब बडा

---

१ उसी जमाने का एक प्रसिद्ध लेखक।
२ उस समय का एक मशहूर कवि।

अमानुषिक और नीचतापूर्ण लगता। वह तमाशा देखने वालों को नाराज हो कर देखता। एक बार वह उन तमाशबीनों से उलझ भी गया। फिर उसे थाने तक जाना पड़ा। पुलिस अफसर ने डाँटा, 'तुम्हें चिढ़ क्यों लगती है? हर आदमी को यह सब देखने में मजा आता है। मास्को में भी ऐसी बातों पर रोक नहीं है।'

ऐसी घटनाओं से अलेक्सेई उबल कर रह जाता।

फिर भी जिन्दगी में एक प्रकार की उत्सुकता का वह अनुभव करता। उसे लगता कि यह सब जिन्दगी की विचित्रताएँ हैं, जिनसे सम्पर्क और संबंध होना आवश्यक है।

अलेक्सेई यहाँ बोरों को ताकता, लड़की के कुत्तों की रक्षा करता और कजाकों की चोरी रोकता। यही था उसकी चौकीदारी का काम।

यहीं अलेक्सेई ने शेक्सपियर को पढ़ा।

यहाँ अलेक्सेई को जो शिक्षित समुदाय मिला वह कजान से भिन्न था। कजान वाले अलेक्सेई की बातों को महत्वहीन समझते थे। वहाँ अलेक्सेई अपने को बुद्धिजीवियों से अलग पाता था, लेकिन यहाँ वे बुद्धिजीवी बड़े संकीर्ण दृष्टिकोण वाले और फूहड़ लगे। अब अलेक्सेई को विश्वास हो गया कि वह शायद जीवन भर इन बुद्धिवादियों का अपना आदमी नहीं बन सकेगा।

यहाँ एक व्यक्ति मिला, जिसे अलेक्सेई बड़ी श्रद्धा से देखता। वह था—बैझनोव। उस व्यक्ति में अलेक्सेई को बौद्धिक ईमानदारी दिखी। उसी से वह प्रभावित हुआ। वह स्पष्टभाषी था। बोलता 'ओफ! सब कुछ कितना घृणित है। मैं तो यहाँ ऐसा हूँ जैसे बैल कीचड़ में फँस जाय। मुझे तो तेरे भविष्य की चिन्ता है। अभी तू बच्चा है और वे सब बड़े धुर्राट।' कह कर वह रुका, फिर हँस पड़ा और बोला 'हम रूसी भी महान हैं इसीलिए शायद हमारी परेशानियाँ भी अनगिनत हैं।'

यहाँ के बाद मई के अंत में अलेक्सेई की बदली क्रुताया रेल स्टेशन पर हो गयी। अब वह चौकीदार से पल्लेदार हो गया था

उसकी तरक्की हुई थी।[1]

जून की पहली तारीख का लिखा बारीसागलैव्स्क से अलक्सई को एक पत्र मिला, जिससे मालूम हुआ कि कब्रगाह के बगल वाले खेत मे बैयनाव ने गोली मार कर आत्महत्या कर ली। उसकी लाश के पास एक पत्र मिला जिसमे लिखा था—मेरी चीजे बेच कर मकान मालिक को सात रूबल और तीस कोपेक दे दी जाय। किताबो की जिल्द बँधवा कर उन्हे क्रुताया मे मैक्सिम के पास भेज दी जायें। कोमेर की किताबें भी उसी के लिए हैं। मित्रो से विदा।'

यह पत्र पढ कर अलेक्सेई अत्यन्त दुखी हुआ। बैयनाव की मौत पर उसे बड़ा कष्ट हुआ। अलेक्सेई कई दिनो तक सोचता रहा—'उसने आत्महत्या क्यो की।'

यह क्रुताया छोटा स्टेशन था। बस्ती भी छोटी। यहा किताबो की सुविधा नही थी। उसके पास बस शेक्सपियर की एक किताब थी, बस वही उसकी सगिनी थी।

अब अलेक्सई बाइस वर्ष का पूरा जवान था। अब समय आ गया था कि अलेक्सेइ सेना मे भरती होता।

उसने एक दिन क्रुताया स्टेशन को सलाम किया और पहले ही निष्नी नावोगोरोद के लिए चल पडा।

तब बसत था और पतझड आने तक वह अपने शहर पहुँचने की सोच रहा था।

---

१ चौकीदारी के जीवन से सबधित घटनाओ के बारे में गोर्की ने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'दि वाचमैन' लिखी है।'

बूढे ओक का गीत

निझनी की यह यात्रा अलेक्सेई कभी नहीं भूला ।

थोडी दूर वह मोटर पर चला, नहीं तो अधिकाश पैदल ही । दान के किनारे किनारे चलता हुआ वह तामबाम और रायाजान तक आया। रास्ते के गाँवों, गिरजाघरो छोटे छोटे बाजारो और सडको से जान पहचान करता । रास्ते म कहीं-कही थोडा ठहर कर वह छोटे मोटे काम कर के कुछ आमदनी भी कर लेता ।

यह अलेक्सेई की रूस की धरती पर पहली लम्बी यात्रा थी ।

रायाजान से वह ओक की ओर बढा, फिर मास्को की ओर। रास्ते म वह तालसतोय के घर भी गया, लेकिन तोल्सतोय घर पर नही थ इसलिए भेंट नही हुई । श्रीमती तोल्सतोय से पता लगा कि वह घर पर नही हैं । वही बाहर गये हैं । वह किताबो से भरी एक झोपडी के दरवाजे पर खडी थी । रसोईघर म अलेक्सेई को लिवा जा कर उसने केक व कॉफी का नाश्ता कराया ।

यहाँ से अलेक्सेई ने पैदल ही चलना चाहा लेकिन बरसात के कारण जमीन गीली थी और पैदल चलने म चमडे के जूते भी गीले हो जाते थे । अत उसको रेल स जाना चाहा ।

मास्को म अलेक्सेई ने रेल के गाड से आग्रह किया कि वह उसम कोई काम ले ले और उसे गाड़ी पर लेता चले। गाड ने उसे जानवरों वाले डिब्बे में बैठने को कहा। उस डिब्बे मे आठ बैल थे जो सभी निझनी जा रहे थे। उनमे पाँच बैल तो सीधे थे लेकिन तीन बैल बड़े दुष्ट थ और रास्ते भर व अलेक्सेई को तग करते रहे। जैसे चाहते रहे हो कि अलेक्सेई उस डिब्बे से चला जाय। लेकिन अलेक्सेई को यात्रा तो करनी ही थी। वह रास्ते भर उन बैलों को चारा खिलाता रहा। वे आठों सह यात्री बाद म उसके मित्र बन गये। इन बैल साथियों के साथ उसके पूरे चालिस घटे बीते।

इस रास्ते म ही अलेक्सेई ने अपनी नोट बुक मे एक कविता लिखी—बूढ़े ओक का गीत। अलेक्सेई की दृष्टि से वह उसकी महानतम प्रिय रचना थी। इसमें उसने वे सभी विचार गूथ दिये थे, जो गत दस वर्षों म उसके मन मे भरे थे।

अनतत अलेक्सेई निझनी नोवोगोरोद पहुँचा। जब उसे फौज म भरती होने की कोशिश करनी थी।

लेकिन प्रयत्न करके भी वह फौजी नौकरी म नही घुस सका।

फौजी डाक्टर ने उसे अयोग्य कहा था। कहा था, बेकार आदमी है। फेफड़े खराब ह।

निराश अलेक्सेई फिर अपनी कविता की नोट बुक से उलझ गया। वह बार बार अपनी स्वरचित कविता 'बूढ़े ओक का गीत' पढता और प्रसन्न होता। उसे विश्वास था कि अगर एक बार वह कविता कहीं छप जाय तो जो पढेगा वह उसे कभी भूल न सकेगा।

निझनी म इस समय बहुत से क्रान्तिकारी रह रहे थे। उनम अनेक ऐसे थे जिनसे कजान म अलेक्सेई से भेंट हो चुकी थी। अधिकांश वे ही थे जिन्ह कजान विश्वविद्यालय से विद्यार्थी दगों के बाद कजान से निकाल बाहर किया गया था।

एक दिन इन्हीं मित्रों स अलेक्सेई बैठा बातें कर रहा था कि एक ने दूर पर इशारा करके दिखाया वह कोरोलेंको।

अलेक्सेई ने देखा, एक विशालकाय आदमी भारी कदमों से चला

जा रहा था। पानी बरस रहा था इसलिए चूते हुए छान के नीचे उस मिफ घुंघराले बालों वाली दाढ़ी दिखायी पड़ी। अलेक्सई कारोलेंको को पहचान तो न सका, लेकिन आकृति जरूर देख ली।

निझनी में अलेक्सई कजान से आ कर यहाँ रहने वाले दो क्रांतिकारियों के साथ ही एक कमरे में रहता था। उनमें से एक पहले अध्यापन करने वाला चेकीन था और दूसरा एक विद्यालय से निकाला हुआ एक विद्यार्थी—सोमोव।

अलेक्सई की हालत खस्ता तो थी ही। कपड़े-लत्ते भी ढंग के न थे। नाटक के अभिनेताओं वाला बड़ा सा हैट धारीदार वाली सफेद कमीज और पुलिस वालों जैसी नीली पतलून। सब मिला कर अजीब बदरंगी शक्ल दिखती थी। देख कर लोग तो उसे ताज्जुब से देखते ही, *पुलिस भी उस शक्ल को निगाह से देखती। पुलिस के सिपाही अब* उसके निवास स्थान पर भी नजर रखने लगे। दूसरे-दूसरे शहरों में जहाँ जहाँ अलेक्सई रहा या गया था निझनी नोवगोरोद के मैक्सिम अलेक्सई पश्कोव के संबंध में जाँच करायी गयी।

इन्हीं दिनों सोमोव की गिरफ्तारी के लिए सेंट पीटर्सबर्ग से वारंट *आया लेकिन उसके पहले ही सोमोव गायब हो गया।*

सोमोव जब हाथ नहीं आया तो पुलिस वाले अलेक्सई को ही पकड़ ले गये। उसे निझनी की चार मीनारों वाली जेल में रखा गया। उससे *सोमोव के बारे में जाँच पूछ करने को ही पुलिस ले गयी थी।* खुफिया विभाग के प्रधान ने पुलिस द्वारा अलेक्सई के पास से छीन गये कागजों को उलट पुलट कर देखते हुए कहा क्या समझते हो, तुम किस तरह के क्रांतिकारी हो? तुम तो कविताएँ लिखते हो? तुमसे क्रान्ति क्या होगी! कमजोर कवि! लिखा करो। अच्छी कविताएँ पढ़ने में मजा आता है। तुम कवि हो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। तुम अपनी कविताएँ ले कर कोरोलेंको के पास जाना। वह इन्हें ठीक कर देगा। उसे जानते हो? नहीं? अच्छा वह बहुत शांत प्रकृति का लेखक है तुम्हारे टक्कर का। समझे!

पुलिस ने अलेक्सई को छोड़ दिया। लेकिन अलेक्सई से जाते जाते

बोला, सुनो, पहले खूब पढ़ना, फिर लिखना, लेकिन एसी चीजें नही '

'एसी चीज' से उसका मतलब था, क्रान्तिकारी चीजें।

अलेक्सेई को एक महीने जेल मे बिताने पड़े थे। वह छूट तो गया लेकिन उसकी निगरानी बराबर होती रही।

।

अलेक्सेई ने क्रान्तिकारियों से सम्पर्क तो नही छोड़ा पर पुलिस प्रधान की एक सलाह उसने जरूर मानी कि वह कोरोलेन्को से मिलने गया। वह अपनी कविताएँ ले कर गया।

कोरोलेन्को उन दिनो निझनी मे ही था और बहुत प्रसिद्ध था। उसके सबध मे तरह तरह की कहानियाँ प्रसिद्ध थी। कुछ लोग तो यह मानते थे कि वह किसी विदेश से आया है और जार की सरकार के विरुद्ध आन्दोलन की अगुआयी कर रहा है।

उन दिनो ऐसा हुआ कि तीन दिनो से लगातार बर्फ गिर रही थी। हर घर की छतों पर सफेद चादर बिछा दी गयी थी।

अलेक्सेई सीधे कोरोलेन्को के घर गया। एक लकड़ी की झोपडी थी, उसी के ऊपरी भाग मे वह रहता था। उसी झोपड़ी के सामने एक राक्षस जैसे डीलडौल का आदमी, जो देखने मे बडा डरावना था बर्फ हटा रहा था। ज्यो ही दरवाजे के पास पहुँच कर अलेक्सेई एक ऊँचे बर्फीले टीले पर चढ़ा कि वह विशालकाय आदमी गरज उठा, 'कौन हो तुम? किसे चाहते हो?'

'कोरोलेन्को।'

'वही, मैं हूँ।'

तब अलेक्सेई ने देखा—कठोर चेहरा, घनी दाढ़ी और बीच मे स्याल आँखें। अलेक्सेई की हिम्मत बढ़ी, उसने कहा कि वह कविताएँ दिखाने आया है। अपना नाम भी बताया।

कुछ याद करने की मुद्रा मे कोरोलेन्को बोला, 'तुम्हारा नाम परिचित है। शायद तुम वही हो जिसके बारे मे एक बार रोमस ने

जिक्र किया था। क्या तुम्हें जाड़ा नहीं लगता? इतने कम कपड़े पहन हो?' फिर अलेक्सेई का साथ ले कर कमरे में घुसते हुए बोला, गोमम भी क्या आदमी है! आजकल कहाँ है? शायद वीयस्का में क्या?

वह लगातार बोले जा रहा था। अलेक्सेई को लगा कि कठोर शरीर के भीतर बड़ा कोमल दिल है। कमरे में एक खाट एक मेज, दो कुर्सियाँ और किताबों से भरी आलमारियाँ थीं। एक कुर्सी पर बैठ कर कोरोलेन्को ने पहले तो रूमाल से अपनी दाढ़ी सुखायी फिर अलेक्सेई की कविताओं को उलटना शुरू किया। अलेक्सेई धड़कते दिल से उस ऊँचे लेखक को बड़ी श्रद्धा और आतंक से देख रहा था।

कोरोलेन्को बोला 'लिखावट तो काफी साफ है। यों हाथ का लिखा पढ़ने में दिक्कत होती है फिर भी पढ़ लूंगा।' फिर बोला विदेशी मुहावरों का प्रयोग केवल अत्यधिक आवश्यकताओं पर ही करना चाहिए। कायदे से तो उन्हें छोड़ ही देना चाहिये। फिर रूसी भाषा तो इतनी धनी है कि उसमें कोई भी विचार अच्छी तरह व्यक्त किया जा सकता है। लगता है तुमने जिन्दगी की कठोरता सहा देखी है इसीलिए शायद तुम रूखे शब्दों का अधिक प्रयोग करते हो, गाकि वे बहुत प्रभावपूर्ण होते हैं लेकिन

फिर एक कविता पढ़ते हुए वह मुस्कराया। फिर बोला, तुम इन्हें छोड़ जाओ मैं फ़ुरसत से पढ़ कर तुम्हें बताऊँगा।'

उस दिन अलेक्सेई दो घंटे के करीब कोरोलेन्को के पास रहा। एक ऊँचे लेखक की समीपता पा कर वह बड़ा प्रसन्न था। उस पर नस एक नशा सा छा गया था। वह बड़ी उत्साहित भावना से वापस लौटा।

एक हफ्ते बाद एक आदमी से कोरोलेन्को ने अलेक्सेई की पाण्डुलिपि वापस भेजी। अलेक्सेई को अपनी कविता 'बूढ़े ओक का गीत' पर बड़ा भरोसा था। वह कोरोलेन्को की राय उसके बारे में जानने को बेचैन था।

पाण्डुलिपि के आवरण पर बायीं ओर पेंसिल से लिखा था—

''तुम्हारी कविताएँ पढ कर म चिंतित हुआ हूँ। अभी तुम्हारे लिखने क बारे म काई राय कायम करना कठिन है। लेकिन मैं मानता हूँ कि तुमम प्रतिभा है। अभी तुम सिर्फ उन्हीं घटनाओ पर लिखो जिनका तुमन खुद अनुभव किया है, मुझे दिखाना। मैं काव्य पर राय दने म असमथ हूँ। लगता है, अभी प्रकृति स तुम्हे और कुछ सीखना है। काव्य म भी एखापन है, फिर भी कुछ लाइनें बहुत अच्छी और शक्तिशाली हैं। और वह ओक वाली कविता तो पागलपन है।'

अलेक्सइ को लगा कि इस अद्भुत व्यक्ति ने कहीं भाव के बारे म कोई राय नहा दी, न ही अपन प्रभाव का ही कहीं जिक्र किया। फिर उसन कोरोलेंको क बताय सुझावो पर ही लिखने का निश्चय किया।

अलक्सइ न सभी कविताएँ फाड कर चूल्हे मे झोंक दीं। निश्चय किया कि अब वही लिखगा जिसका उसे अनुभव है। या नही लिखेगा।

फिर दो वर्षो तक निझनी म रहते हुए भी अलेक्सइ एक दिन भी कलम नहीं उठा सका। वह फिर एक बार अपन को निरथक और बेकार समझन लगा।

अब तक निझनी के साहित्य लिखन वालो के बीच अलेक्सइ एक पागल कवि के रूप म जाना जान लगा। सन् १८९८ से १९०० तक, पूरे दो वष, न ता अलेक्सेइ न कुछ लिखा न ही कोरोलेंको से ही मिला। इधर उसने मार्क्स की रचनाओ का अध्ययन जरूर किया।

गर्मी के दिन थ। एक रात अलेक्सेइ वोल्गा के किनारे चुपचाप बच पर बठा अपन ही ध्यान म खोया था। तभी कोई आ कर उसकी बगल म बठ गया। लेकिन अलेक्सई न ध्यान न दिया। फिर आगन्तुक न अलेक्सइ क कधे पर हाथ रखा। अलेक्सेइ ने चौक कर देखा, वह ता कोरोलेंको था। उसन पूछा, ' किस विचार म खोय हो ?''

अलेक्सइ देखता रहा, बोल न पाया। उसने फिर पूछा, 'क्या हाल चाल है ? क्या कर रह हो आजकल ? सुना है मार्क्सवादी हो रहे हो।''

अलेक्सइ न बताया कि मार्क्स म वह प्रभावित है। फिर बहुत

दर तक बातें होती रही। बहुत रात तक दोनो बातो म खोय रह। कारोलेंको कुछ थका थका सा था। फिर भी वह अलेक्सई को दर तक समझाता रहा, बहुत सी बातें। फिर वह चुपचाप देर तक आकाश की ओर दखता रहा और अलेक्सेई उसे देखता रहा। कारोलेंको बोला, 'बहुत दर हा गयी न! अब चलना चाहिए। कहीं पानी न बरस।'

दोनो उठे। कोरानेंको ने पूछा 'क्या तुम अभी भी लिख रह हो?'

'नही।

क्या?'

समय नहीं मिलता।'

'सचमुच यह बहुत बुरा है। दुर्भाग्य! लेकिन मैं कहूँ, लिखने का निश्चय हो तो समय भी मिल ही जाता ह। मैं निश्चयपूर्वक मानता हूँ कि तुमम प्रतिभा है। पर लगता है आजकल तुम्हारा मन विच लित है।

बात तो सच थी, अलेक्सई क्या कहता?

तभी बूदें आ गयी और दोनो अपने अपने रास्ते बढ गय।

अलेक्सेई रास्ते भर सोचता रहा—उसे अब प्रतिभा और बौद्धिक बातो तथा बुद्धिवादियो के प्रति कोई विश्वास नही रह गया था। बुद्धिवादियो के साथ अब उसे ऊब होती उसे सब निरथक लगता। वास्तव म अलेक्सई अब कुछ और खोज रहा था—सही जिंदगी और भावना। वह जिन भी विद्वानो स मिलता, उस यही लगता कि सभी जनता और जीवन से दूर हैं।

-

इधर अलेक्सई को एक नई सनक सवार हुई कि वह जिस धरती पर रहता है, उसका इतिहास जान ले। लेकिन उस कोई रास्ता नही दिखता था।

उन दिनो अलेक्सई ए० आई० लेनिन नामक एक वकील का क्लक था। वह वकील बडा भला आदमी था। एक दिन अलेक्सेई स उसने पूछा, क्या बात है? तुम इधर दुबले हो रहे हो?'

अलेक्सेई ने बताया, 'मुझे रात को नींद नहीं आती।'

वकील अलेक्सेई को डाक्टर के यहाँ ले गया। डाक्टर ने जाँच करके कहा 'तुम इतना जो पढ़ते हो, इसी से नींद नहीं आती। तुम्हारे जैसे मजबूत शरीर वाले जवान के लिए नींद न आना बुरी बात है। तुम कसरत करो और इससे भी अच्छा है कि तुम किसी लड़की से दोस्ती करो। तुम्हारी पढ़ाई से तुम्हारे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। जो पढ़ा है वह किताबी बातें हैं, दिमाग खराब करती हैं। वास्तविक जिंदगी देखो किसी लड़की से गहरी दोस्ती करो।'

अलेक्सेई मन ही मन हँसा—अच्छी दवा बतायी डाक्टर ने।

पहले प्रेम का चक्कर

डाक्टर के कहेनुसार अलेक्सेई दोस्ती करने के लिए कोई लड़की खोजने तो नहीं गया, लेकिन अचानक भाग्य ने उसे जीवन के प्रथम प्रेम के चक्कर मे डाल दिया।

हुआ यो कि कुछ मित्रो ने ओक नदी म नाव पर एक दावत का आयोजन किया और फ्रास से आये एक नव दम्पत्ति उसम शामिल होन वाले थे। उसी शाम उन्हें दावत देने अलेक्सेइ का उनके घर जाना पड़ा।

एक पुराने मकान का छोटा सा कमरा। अलेक्सेइ सीधा कमरे म घुसने लगा, तभी एक लम्बा सा आदमी छोटी आँखो वाला, दाढीदार, आ कर दरवाजे पर खड़ा हो गया और बडी रुखाइ से पूछा, 'क्या चाहते हो ? जानते नहीं, किसी के घर म घुसने के पहले खटखटाना चाहिए।

वह व्यक्ति तो जसे धुआँ का बना हुआ-सा दिखा। तभी, जसे कोइ बहुत बडी सफेद चिडिया हो और वह बडे सगीतमय स्वर मे बोली, 'खास कर जब किसी विवाहित परिवार मे जाना पडे।'

अलेक्सेई झझट मे पड गया। सोचा कहाँ भेज दिया उसे उन सबो

न ? उनने कहा, 'मुझ दावत वालो ने एक सन्देश देन भेजा है।' और उमन सदश सुना दिया। सुनत ही उस व्यक्ति के भाव बदल गये और वह चिल्ला पडा, 'अरे सुनती हो ? सुनो सुनो ।'

उसी समय एक दुबली पतली, सुन्दरी, तरुणी प्रकट हुई। उसकी आखा स ज्योति फूट रही थी। खिलखिला कर हँस पडी। अलेक्सेइ को अजीब लगा। लेकिन वह समझ गया कि वह उस पर नही हँसी, उसके कपडा पर हँसी होगी। पीले पैण्ट पर बद गले का सफद काट।

बहुत पुरानी मित्रता हा जस, वह तरुणी अलेक्सेई का हाथ पकड कर एकदम खीचती हुई भीतर घसीट ले गयी और एक कुर्सी पर बठा कर बोली, 'कितना मजाक बना रखा है ?'

'कसे ?' अलेक्सेई ने पूछा।

डरो नही।' तरुणी बोली।

अलेक्सेई मुस्कराया। मन मे बाला—एसी औरत स भी भला कोई डरगा ?

अब तक वह दाढी वाला खाट पर बैठ कर कागज म तमाखू लपट कर सिगरेट बनाने मे व्यस्त हो गया था। उसकी ओर इशारा करके अलेक्सई ने तरुणी से पूछा 'तुम्हारा पिता या भाई ?

पति।' अजीब कटाक्ष स वह बोली।

अलेक्सेई न तरुणी को घूरा, कहा, माफ करना।'

तरुणी का चेहरा अति आकपक। गोलाई लिए थोडा लम्बा चेहरा। निचला आठ ऊपर के मुकाबले थाडा फना। मुलायम हाथ अत्यधिक मासूम और सुन्दर। सादे और आकपक कपडे—सफेद कसी ब्लाउज और सफेद ही स्कट भी। और सब स बढ कर उसकी दिलचस्प आँखे।

सिगरेट बना कर दाढी वाला बोला, किसी भी क्षण बरसात शुरु हो सकती है।'

अलेक्सेई ने बाहर झाँका। आकाश बिल्कुल साफ था। मतलब उसकी उपस्थिति उसे अच्छी नही लग रही थी शायद। उसे बुरा लगा।

अत अलेक्सेई उठ कर चला आया। सोचता रहा, उसी तरुणी

के बारे में। कैसी विडम्बना है! बेचारी! दाढ़ी वाले भालू के साथ एक कबूतरी को रहना पड़ रहा है।

अगले दिन नाव की सैर का आयोजन था। वह दाढ़ी वाला अपनी बीवी के साथ आया लेकिन सैर के पहले ही शराब पी कर किनारे पर ही एक झाड़ी में धुत्त हो कर लुढ़क गया। वह अकेली ही नाव पर गयी। अलेक्सेई कल का अपमान भूल कर रात भर उस परी सी तरुणी को नाव पर घुमाता रहा। अलेक्सेई ही पूरे समय नाव चलाता रहा। वापस आते समय वह बोली, 'सचमुच तुम बहुत ताकतवर हो।'

अलेक्सेई निहाल हो गया। ललक कर बोला, 'मैं तुम्हें बाँहों में उठा कर मीलों चल सकता हूँ।'

वह अपनी आँखों को नचा कर खूब हँसी।

जल्दी ही अलेक्सेई की उससे गहरी पट गयी। अलेक्सेई को पता लगा—वह उम्र में उससे दस वर्ष बड़ी है। पेरिस में ऊँची शिक्षा पायी है। अपने हैट की डिजाइनें वह खुद बनाती है। अभिनेत्रियों वाली अदा से सिगरेट पीती है। बातें करती तो आँखें चमकतीं और बच्चों की तरह हँसती। उसे संसारी ज्ञान खूब था। उसका नाम था ओल्गा।

उसका पति सरकारी नौकर था। उसकी एक चार वर्ष की बच्ची भी थी। या तो वह दिन भर कामों में फँसी रहती। फिर भी सफेद बिल्ली की तरह साफ दिखती। उसका पति घर में रहता तो बिस्तरे में घुसा ड्यूमा के उपन्यास पढ़ता रहता। वह अलेक्सेई से जलता भी था। उसका नाम था—बोलोस्लाव।

एक दिन पेरिस से आये एक व्यक्ति को उसने अलेक्सेई से मिलाया और कहा, 'इसे कोरोलेन्को से मिलना है। भेंट का इन्तजाम कर दो।'

अलेक्सेई ने जब कोरोलेन्को से जा कर कहा तो उसने उससे मिलने से इन्कार कर दिया। इससे दोनों नाराज हुए—बोलोस्लाव और उसका अतिथि भी।

धीरे धीरे ओल्गा के प्रति अलेक्सेई का प्रेम गहराता गया। लेकिन इस प्रेम आकर्षण से अलेक्सेई को ऊब होती। वह घंटों उसके पास बैठा रहता, लेकिन वह सिर झुकाये काम में व्यस्त रहती। अलेक्सेई

उसे काम मे व्यस्त देखता और मन मे कल्पना करता कि कैसे उसे अपनी बाहों मे उठा कर ले जाये और उसे उस भालू से छुटकारा दिला द।

एक दिन वह बोली 'अपने बारे मे कुछ और बताओ।'

अलेक्सेई ने थोडा बताया और सोचने लगा कि उसमे ऐसा क्या है कि वह उसे मन की इतनी गहराई से प्यार करने लगा है। उसे देख कर अलेक्सेई स्त्री-पुरुष के शारीरिक सबध के बारे मे गहराई स सोचता और अत म अकेले मे सोचता—शायद यही सब सोचते हुए मर जाने को ही वह पैदा हुआ है।

उसकी निकटता पा कर अलेक्सेई समझ गया था कि आदमी को सब से अधिक ज्ञान किसी स्त्री के प्यार से ही प्राप्त होता है। स्त्री के सौन्दर्य से ही विश्व के सौंदर्य का बोध होता है। ससार मे किसी भी पुरुष के लिए जो भी सौंदर्य है, वह सब किसी न किसी स्त्री के प्यार के माध्यम से ही दिखायी पडता है।

अलेक्सेई अब हर समय एक मानसिक उत्तेजना से ग्रस्त रहता। ऐसी ही मनोदशा मे एक दिन तैरते समय अलेक्सेई पानी मे डूब गया। पाव सेवार म फँस गये थे और सिर पानी मे डूबा था। मल्लाहो ने बडी मुश्किल से उसे बचाया। वह कई दिनो तक खाट पर पडा रहा।

वह अलेक्सेई को देखने आयी। डूबने का वृतान्त विस्तार स पूछा। उसकी आखो स उसके भीतर की चिन्ता व परेशानी का आभास मिलता था। बडे प्यार से, अपने रुई जैसे मुलायम हाथो से वह अलेक्सेई का सिर सहलाने लगी। अलेक्सेई प्रेम सागर म गोते लगाने लगा। उससे रहा न गया तो पूछ बैठा, 'क्या तुम जानती हो कि मैं तुम्हे प्यार करता हूँ।'

उसने झट से मुस्करा कर कहा, 'हाँ।

सुनते ही अलेक्सेई को लगा कि गिरजा की बहुत सी घटियाँ एक साथ बजने लगी हैं। धरती हिलने लगी है, बाहर तूफान आ गया है। आत्मविभोर हो कर उसने उसकी गोद म अपना सिर डाल दिया। उसकी पतली कमर को दोनो हाथो के घेरे मे कस लिया। उसने भी अलेक्सेई को कस कर दबाया। अलेक्सेई को लगा कि वह साबुन

मे बुलबुले की तरह फूट जायगा ।

फिर उसने बड़ी उम्र वालो की तरह अलेक्सई का सिर दाना हथेलियो म ले कर तकिए पर वापस रखने का प्रयत्न करत हुए कहा देखो तुम हिलो मत । हिलना बुरा है । चुपचाप पड़े रहो नहीं तो मैं चली जाऊँगी । तुम पागल हो गय हो क्या ?'

अलेक्सेई ने सतोष स आखें मूँद ली । और सोचन लगा—कितना प्यारी बात ! कितने प्यारे शब्द ! उम्र का अतर । असमय ही उस पर पड़ा पत्नित्व और मातृत्व का भार ।

और तभी वह धीरे से उठ कर चली गयी ।

फिर एक दिन बाग म जब उसके पास बैठा अलेक्सेई बहुत बचन हो उठा तो वह बोली, किसी निणय पर पहुँचने के पहल हम हर बात का खूब अच्छी तरह सोच लेना चाहिए । इसके लिए वोलोग्लाव स भी बात करनी होगी । उस हमारे सबधो की भनक मिल गयी है । ऐसे अवसरो पर वह बहुत भावुक हो जाता है क्योकि मुझे एसा भावुकता स नफरत है ।

दोनो समझते थे—अब कुछ निणय करना ही होगा ।

अलेक्सई का पट बड़ा चौड़ा था, अत नीचे स तीन इच मोड कर उसन पिन लगा रखी थी । पिन खुल कर एक पाँव म गड गयी । खून बह कर पट को गीला करने लगा । अलेक्सई चाहता था कि उसकी यह दुदशा वह न देखे । तभी वह बोली, 'अब चलो ।'

'अभी मैं रुकूगा ।'

'क्यो ? अकेले ?'

'हाँ ।'

'क्या नाराज हो गये ?'

'नहीं, पर अभी मैं रुकूगा ।'

फिर अलेक्सेई की गहरी दृष्टि से देख कर वह चली गयी । सुन्दर देह हिलती डुलती चली गयी । विछोह की दूरी बढती गयी ।

अलेक्सई बठा देखता रहा ।

दो दिन बाद उसन बताया, 'मैंने बातें की थी । वह भावुक हो

कर रोने लगा। उसके आसू देख कर मेरा धैय छूट गया' वह रो पडी, गीले स्वर मे कहती रही, 'तुम इतने मजबूत हो, पर वह बडा असहाय है। यदि उसे मैं छोड दूगी तो पौधे से अलग किए गये फूल की तरह वह सूख जायेगा। तुम्हे यह बात हास्यास्पद लगेगी, लेकिन सचमुच वह बडा असहाय है।

अलेक्सेई काठ सा बना उसकी बातें सुनता रहा। जब सहा न गया तो बोला, मै भी तो असहाय हूँ।'

लेकिन तुम जवान और ताकतवर हो।'

अलेक्सेई चुपचाप लौट आया। अपने प्रथम प्रेम के इस दुखात पर वह उद्विग्न हो उठा। दुखात लेकिन फिर भी सुदर!

अलेक्सेई का मन विचलित हो गया। उससे बिना मिले ही उसने वह शहर छोड दिया। दो वर्षो तक वह दोन क्रीमिया, युक्रेन और काकेशस म घूमता रहा। लेकिन अपन हृदय की साम्राज्ञी को वह न भूल सका।

अलेक्सेई काफी दिनो तिफलिस मे रहा। अब तेईस साल के युवा अलेक्सेई को अपनी ही आकृति धुधली लगने लगी।

एक दिन अचानक पता लगा, वह वही है और उसन अलेक्सेई से मिलने की इच्छा का सदेश भेजा।

अलेक्सेई भाग कर गया। उस दिन खूब बर्फ पड रही थी। आज वह पहले से ही अधिक आकर्षक और सुदर लगी। उम्र बढने से उसका यौवन और विकसित हो गया था। उसकी बेटी भी बडी हो गयी थी। उसका पति फ्रास मे था।

उसने अलेक्सेई को भर नजर देखा, बोली, 'ऐसा तूफान पहले नहीं देखा।'

'हाँ।'

'क्या तुमने इतने दिनो मे मेरे प्रति अपने मन मे उपजी कोमलता पर विजय पा लिया?'

नही।'

'तुम कितने अजीब हो! कितने भिन्न!' उसन लम्बी सास

खीची ।

थोडी ेर चुप रह कर आँखें मोड कर पूछा, 'इतने वर्षों तुम कहाँ रहे ? क्या करते रहे ?'

उस दिन आधी रात तक अलेक्सई उसके पास रहा । विछोह के दिनों की सारी घटनायें सुनायी । सुन कर वह बोली, 'ओफ ! कितना अजीब है सब कुछ ।'

उस दिन उसने बड़े प्यार से अलेक्सई का विन्ा किया ।

दूसरे दिन एक कविता बना कर अलेक्सेई उसके पास ले गया जिसे उसने प्रेम से गाया । कविता के भाव थे—मेरी प्रेमिका, तुम्हारे हाथ के एक स्पश के लिए तुम्हारी कोमल आँखो की चमक के लिए मैं अपना सवस्व दे सकता हूँ ।

उस दिन उसके सम्मुख बठ कर अलेक्सई सोच रहा था—मैं फिर चक्कर म पड गया । आज फिर वह उसके लिए दुनिया की सब से बडी आवश्यकता बन गयी है । यदि मैं यही बठा, इसी प्रकार, मर भी जाऊँ तो सुखी होऊँगा । यदि किसी तरह सभव हो तो इस स्त्री का मैं अपनी सासा के साथ पी जाऊँ, ताकि वह सदा के लिए मेरे भीतर समा जाये ।

उसने कहा, 'मैं अक्सर तुम्हारे बारे म सोचती हूँ । तुमने क्या यह सारी मुसीबतें मेरे ही कारण उठायी हैं ?'

अलेक्सेई बोला, तुम्हारे साथ जीवन मे मैं कुछ भी कठिन नही मानता ।'

'तुम बहुत प्यारे हो ।' उसने कहा और सुन कर अलेक्सेई जस लुट गया ।

अलेक्सई के मन मे यह लालसा पलती रही थी कि उसे वह अपनी बाँहों म ले ले, लेकिन कभी ऐसा कर न सका । उस दिन बडा साहस बटोर कर कहा, तुम आ कर मेरे साथ रहो । कृपा करके आ जाओ ।

वह अजीब तरह से हसी । तेज हँसी, तेज निगाह !

कमरे का एक चक्कर लगा कर वह सामने आ खडी हुई और बोली, ठीक है । तुम निझनी जाओ । मैं जरा अकेले म सोच लू

फिर तुम्हे लिखूगी।'

पुस्तको मे चित्रित नायको की तरह अलेक्सेई ने सुना और सिर पर हैट रख कर चला गया। उसका मन विश्वासा से भरा था।

और जाडा आते न आते वह अपनी बेटी के साथ अलेक्सेई के पास निघनी आ गयी। अलेक्सेई की खुशी की सीमा न रही। लेकिन गरीब आदमी की सुहागरात भी कितनी छोटी होती है। यह कहावत कितनी सच है! सच और दुखदायो भी। इसका पूरा अनुभव अलेक्सेई को हुआ।

अब अलेक्सेई को गृहस्थ बनना पडा, नये ढग से गृहस्थी जमानी पडी। दो रूबल महीने पर उसने एक छोटा सा मकान किराये पर लिया। एक बडा कमरा और एक छोटा। बडे कमरे को उसकी बीबी ने सजा कर रहने लायक बनाया और छोटा कमरा अलेक्सेई के लिए था। लेकिन सजाने पर भी यह मकान रहने लायक नही हो सका। सारे घर म दीमको की भरमार थी और जमीन पर दरी बिछा कर सोने मे अलेक्सेई को बुखार आने लगा। कमरे को स्टोव जला कर गम रखा जाता, फिर भी बेटी के सिर म दद रहने लगा। खिडकी के सामने बेर की बडी घनी झाडी उगी थी, उसे पादरी मकान मालिक काटने न देता और उसके कारण कमरे म रोशनी भी न आती। अँधेरा और जाला भरा रहता।

अलेक्सेई ने गृहस्थी तो जोडी लेकिन हर समय उसे लगता कि जिस तरह वह अपनी बीबी को रख रहा है, यह उसके प्रति अन्याय है। इतने कष्ट और अभावो म क्या खुशी से जिन्दगी निबाही जा सकती है! न वह एक वक्त के लिए गोश्त ही खरीद पाता, न लडकी के लिए खिलौने। ऐसा जीवन भी क्या? गरीबी का भी कोई इलाज न था। इसी चिन्ता म बेचारा अलेक्सेई रात रात भर जगा रहता उसे नींद न आती। एक सुकुमार औरत और फूल सी मुलायम बेटी को नरक म रखना कितना कष्टदायक था! रात को एक कोने मे दुबक कर अलेक्सेई कहानियाँ लिखता और सोचता, कहाँ क्या है? मनुष्यता, किस्मत प्यार, अस्तित्व।

यद्यपि बीबी बन कर आयी वह शानदार औरत दिल की भी

महान थी । वह कभी अलेक्सई से कोइ शिकायत न करती । तकलीफें बढती तो उसकी हँसी भी निखरती । वह खुद भी आर्थिक कठिनाइयां हल करने का प्रयत्न करती । पादरियो के चित्र बनाती और तारा म पेरिस के फैशन वाले औरतो के हैट बनाती और ग्राहक उन्हे शौक स खरीद ले जाते ।

तब अलेक्सेई एक वकील का मुंशी था । और समय मिलन पर वह एक स्थानीय अखबार म लिखता भी था । प्रति पक्ति दो कापक मिलते । इसी तरह दिन कट रहे थे ।

नीली चाँदनी वाली एक रात म अलक्सई की बाँहो मे पडी वह खूब रसमय बात कर रही थी । मन्त्रमुग्ध सा अलेक्सई उसके चहरे को देख रहा था । उसकी बाता म जस शराब का नशा था और अलेक्सई उसी म डबा था । वह अपन जीवन की तरह तरह की घटनाएँ बता रही था । अपनी पहली शादी की बाते, अपनी और प्रेम-कथाएँ । अचानक वह बोली, 'रूसी औरतें फल की तरह होती ह और फ्रास की औरते फल क रस की तरह । रूस के लोग प्यार को व्यापार मानत हैं लकिन फ्रास के लोग प्यार को कला मानत ह ।'

उसकी पतली उँगलियाँ अलेक्सेई के बालो म उलझी थी । वह अपनी आश्चय से फैली आखो से अलेक्सई का देख रही थी, रह रह कर मुस्कराती भी । तभी अचानक ही बिस्तर पर स एकाएक कूद कर वह अलग हो गयी । नगे पाँव ही वह कमरे म उस ओर जा कर खडा हो गयी जहाँ चाद की रोशनी आ रही थी । फिर लौट कर वापस आ कर अलेक्सेई के गालो को थपथपा कर बोली तुम्हे किसी रूसी नयी छोकरी स प्रेम करना चाहिए था मुझस नही ।

उसी समय बाहर जोरो का तूफान आया । हवा की आवाज एसी कि जैसे बहुत से भेडिये लड रहे हो

अलेक्सेई ने उसे अपनी गोद मे ले ... फफक कर रो पडी । बोली 'मैं तुम्हे बहुत प्यार ... साथ से बढ कर सुख मैंन कभी नही पाया । मेरे ... । जोरदार, मासूम और आरामदेह नही था, जि... ...रे साथ

अपूर्व आनन्द मिलता है। लेकिन प्रेम मे अंधे हो कर हमने एक गलती की है। तुम्हें जिस चीज की जरूरत है, वह मेरे पास नहीं है और इसकी एकमात्र दोषी मैं ही हूँ।'

उसकी बातो से अलेक्सेई डर गया। वह बात का रुख बदलने की कोशिश करने लगा लेकिन तभी आखो मे आँसू भर कर वह बोली, 'काश, मैं युवती होती।'

अलेक्सेई के लिए अब असह्य हो उठा। उसने अपने मुँह में उसके ओठ भर लिए, ताकि वह बोल न सके।

उसे खुश रखने को अलेक्सेई हर समय उसे हँसाने की कोशिश करता। एक दिन वह हँस कर बोली, 'अगर तुम नाटक में चले जाओ तो बहुत सफल हास्य अभिनेता हो सकते हो।'

वह खुद भी रंगमंच को चाहती थी। बोली, 'मुझे रंगमंच पसन्द तो है लेकिन परदे के पीछे जो कुछ होता है, उससे मुझे घृणा है।'

वह बड़े साफ दिल की थी। जो अनुभव करती साफ साफ कह देती। एक दिन बोली, 'तुम कभी कभी बड़े दार्शनिक बन जाते हो। जहा वास्तविकता है, वहीं कठोरता है। तुम वास्तविकता से भागते क्यों हो? सीखो कि जीवन की कठोरता को कैसे कम किया जाय तुम इतना ही सीख लो तो मानवता का बड़ा कल्याण हो।'

अलेक्सेई अपनी प्रेमिका की मानसिक स्थिति को ठीक से समझ न पाता। उसे आश्चर्य था कि उसकी यह खुशी बनावटी है या असली। अक्सर रात को जब वह सोती रहती और अलेक्सेई काम से थक कर उठता तो देखता—वह नींद मे और भी प्यारी और भी मासूम लगती। उसे देख कर अलेक्सेई आने वाली मुसीबतों की सोचता और उसके प्यार पर करुणा का परदा पड़ जाता।

अलेक्सेई अब खूब लिखने लगा था। वह स्थानीय पत्रों में पैसा के लिए लिखता था। यद्यपि उसकी रचनाओं के साथ उसका नाम न छपता था। वह अपनी रचनाओं में अपना नाम एम॰ जी॰ या 'जी॰ वाई॰' ही लिखा करता था। अलेक्सेई अभी भी अपने को लेखक न मानता था, लेकिन उसके भीतर साहित्यिक प्रेरणायें उमग लेती थीं।

एक रात उसने एक कहानी लिखी और सवेर उसे अपनी प्रेमिका को सुनाने लगा। सुनते सुनते वह सो गयी। तब पढ़ना बन्द करके वह उसे निहारने लगा—सोफा में उसका छोटा सा, प्यारा-प्यारा सिर लुढ़का था, मुँह थोड़ा सा खुला था, बच्चों की तरह साँस चल रही थी। सूरज की किरनों की रोशनी में वह चमक रही थी।

अलक्सेई उठ कर बाहर आ गया। जीवन भर वह औरतों के जिन रूपों को देखता आया है वह सब उसके लिए आश्चर्य के ही रूप थे। लेकिन अपनी प्रेमिका की ओर वह सदा इसी उम्मीद से देखता था कि शायद जीवन की कठोरता कुछ कम हो सके। उसकी प्रेमिका में वह शक्ति थी जिससे वह परिचित था कि वह किसी भी सोई हुई आत्मा को जगा सकती थी।

अलक्सेई और उसकी प्रेमिका के परिश्रम से जो भी आमदनी होती सब दावतों में उड़ जाती। गोश्त, वोदका, बियर मँगा कर दोस्तों को बुला कर दावत दी जाती, ताकि समाज में उन्हें भी सम्पन्न समझा जाय। अब अलेक्सेई की मित्र मंडली भी बहुत फैल गयी थी।

अक्सर कुछ मित्र मिलने आते। अलेक्सेई और ओलगा हँस कर उनका स्वागत करते लेकिन धीरे धीरे अलेक्सेई के मन में उनके प्रति एक प्रकार की रुखाई आने लगी थी। उसके कुछ मित्र कभी कभी उसके रूखे व्यवहार से चिढ़ भी जाते। एक दिन ओलगा ने कहा, इस रुखाई से तुम्हें कुछ मिल नहीं सकता। इसका नतीजा बुरा होगा और लोग भी इधर उधर गलत अफवाह फैलावेंगे। आजकल तुम हर समय ईर्ष्या की आग में जलते रहते हो। क्या बात है?

अलेक्सेई ने कहा, मैं सोचता हूँ कि मैं अपनी जिन्दगी का रास्ता बदल दूँ।'

क्षण भर सोच कर वह बोली, 'ठीक कहते हो। तुम्हारा जीवन आजकल कुण्ठित हो रहा है। अपने को सँभालो।

अलेक्सेई बोला, मुझे लगता है कि संसार का हर व्यक्ति पापों से भरा है।'

वह तनिक व्यंग्य से बोली, 'औरों के पापों को बाद में देखना

चाहिए, पहले अपने जावन का रास्ता ढूढना चाहिए।'

अलेक्सेई मन ही मन अनुभव करता कि वह औरत महान है। वह बडे से-बडे अभावो के बीच भी रह सकती थी। जीवन के कष्टो को वह हँस कर उडा देती थी। वह कभी कहती—'ससार म बस दो ही चीज है—प्यार और भूख।'

कभी कभी भावना म डूब कर अलेक्सेई जब उसके गालो को थपथपाता और प्यार करता तो वह बडी खुश होती और अत्यन्त तरल होकर बहने सी लगती। ऐसे अवसरा पर वह आखे बद कर लेती जैसे सपनो मे खोयी हो। कभी कभी वह शीशे के सामन अर्द्धनग्न सी खडी होकर अपने को ही देख कर चहकती, 'एक औरत भी क्या चीज है। उसका शरीर भी क्या है!' फिर अलेक्सेई से पूछती, अच्छे कपडों मे मैं अधिक स्वस्थ और अच्छी लगती हूँ न ?'

दूसरी औरतें उसके कपडा की डिजाइनो की नकल करती। एक वार एक औरत ने उससे कहा, 'मरे कपडे तुम्हारे से चौगुनी कीमत के हैं पर तुम्हार ही ज्यादा अच्छे दिखते हैं। तुम्हे देख कर मुझे ईर्ष्या होती है।'

इसी समय रूबल कमाने के इरादे से उसन एक नाटक कम्पनी म काम कर लिया और अब वह काफी व्यस्त रहने लगी।

एक वार एक लेडी डाक्टर न बडी राजदारी से अलेक्सेई से कहा 'तुम अपन को बचाना। तुम इस औरत के मन को नही जानते नही पहचानते। यह तुम्हारे शरीर का अतिम रक्त बूद भी चूस लेगी।

अलेक्सेई का मन कभी कभी विचलित होता लेकिन इस औरत म उसने बहुत कुछ सीखा था। उसने यद्यपि जिन्दगी को खूब ही देखा था फिर भी यह औरत उसकी महान गुरु' थी।

ज्या-ज्या दिन बीतते गय, अलेक्सई किताबो मे फँसता गया। जब वह काफी समय लिखने मे लगाता। अलेक्सई अभी तक अपने जीवन का ही बहुत अद्भुत मानता था, उसी को कठोरता की सीमा मानता था। तभी उस गौतम बुद्ध पर लिखी आल्डेनवग की पुस्तक पढने को मिली। उस पढ कर लगा कि बुद्ध के सामने उसके जीवन की कठोरता नही के

बराबर ह। बुद्ध के जीवन का बडा प्रभाव उस पर पडा। वह कइ दिना तक विचलित मन स इधर-उधर भटकता रहा।

एक रात का अलेक्सेई की प्रेमिका अपनी बेटी को बाहा मे भरे गहरी नीद म सा रही थी। दर तक अलेक्सई उसे निहारता खडा रहा। फिर आल्गा के माथे पर चुपचाप चुम्बन अकित कर क वह घर म निकल पडा। उसी तरह, जैसे बुद्ध ने घर छोडा था।

उसन निझनी छाड दिया।

यही उसके प्रथम प्रेम का अ त था।

यद्यपि अन्त दुखदाई था फिर भी ।

अलक्सेई अनन्त पथ के यात्री की तरह निकल पडा।

यायावरी के दिन

निचनी छोड कर अलवसई एक लम्बी, साहसिक यात्रा पर निकल पड़ा।

वह वोल्गा के किनारे किनारे चला। अभी सड़कें सूखी नहीं थी और पिघलती हुई बर्फ से खेत ढँके थे। कहीं-कहीं बसन्त की हरी-हरी गीली घास दिख जाती थी। पीठ पर थैला लटकाये वह वोल्गा के किनारे किनारे चलता रहा। फिर त्सारित्सिन जाने वाले एक स्टीमर पर सवार हो गया। वोल्गा नदी के आस-पास के दृश्यों से उसकी मानसिक स्थिति में सुधार आया और उसके मन की उदासी भी दूर होने लगी।

त्सारित्सिन पहुँच कर उसने स्टीमर छोड दी। कंधे पर लटके झोले में किताबें और उसकी कुछ कविताएँ भरी थी, जिन्हें वह हमेशा साथ रहता था। यहाँ से अलेक्सई—कठोर चेहरे और साहस तथा उत्साह भरी नीली आँखों वाले स्वप्नद्रष्टा और कवि—ने दक्षिण की ओर पाँव बढ़ाये। वह दोन प्रदेश, उक्राइन, बेसारबिया और क्रीमिया होते हुए काकेशस पहुँच गया। उसके मन में अपने देश रूस और

बराबर है। बुद्ध के जीवन का बडा प्रभाव उस पर पडा। वह कई दिना तक विचलित मन स इधर उधर भटकता रहा।

एक रात का अलेक्सेई की प्रेमिका अपनी बेटी का बाँहो म भरे गहरी नींद म सो रही थी। देर तक अलेक्सई उसे निहारता खडा रहा। फिर ओल्गा के माथ पर चुपचाप चुम्बन अंकित कर क वह घर स निकल पडा। उसी तरह, जैस बुद्ध न घर छोडा था।

उसने निप्नी छोड दिया।

यही उसके प्रथम प्रेम का अ त था।

यद्यपि अन्त दुखदाई था फिर भी ।

अलेक्सेई अनन्त पथ क यात्री की तरह निकल पडा।

यायावरी के दिन

निझनी छोड कर अलेक्सई एक लम्बी, साहसिक यात्रा पर निकल पड़ा।

वह वोल्गा के किनारे किनारे चला। अभी सडकें सूखी नही थी और पिघलती हुई बर्फ से खेत ढँके थे। कही कही बसन्त की हरी हरी गीली घास दिख जाती थी। पीठ पर थैला लटकाये वह वोल्गा के किनारे किनारे चलता रहा। फिर रसारित्सिन जाने वाले एक स्टीमर पर सवार हो गया। वोल्गा नदी के आस-पास के दृश्यो से उसकी मानसिक स्थिति मे सुधार आया और उसके मन की उदासी भी दूर होने लगी।

त्सारित्सिन पहुँच कर उसने स्टीमर छोड दी। कधे पर लटके थैले मे किताबे और उसकी कुछ कविताएँ भरी थी जिन्हे वह हमेशा साथ रहता था। यहाँ से अलेक्सई—कठोर चेहरे और साहस तथा उत्साह भरी नीली आँखो वाले स्वप्नद्रष्टा और कवि—ने दक्षिण की ओर पाँव बढाये। वह दोन प्रदेश, उक्राइन, बेसारबिया और क्रीमिया होते हुए काकेशस पहुँच गया। उसके मन मे अपने देश रूस और

बेसारबिया पहुँचा। यहा से वह रोमानिया हो कर फ्रास जाना चाहता था, लेकिन जब उसे सीमा नही लाघने दिया गया तो वह पलट पडा और क्रीमिया होता हुआ काकेशस पहुँच गया।

बेसारबिया से काकेशस तक हजारो मील की यात्रा मे उसे लगभग दो वष तक लगातार चलते रहना पडा। वह गाँव-गाँव गया, धरती के अनजाने भागो का परिचय पाता रहा। उसने इसी यात्रा मे मोल-डेविया क्रीमिया, क्यूबन और ज्याजिया देखा। और अनगिनत चीजा व लोगा से सम्पक बढा जि होने उसके अनुभव को धनी बनाया जैसे समुद्र, ब दरगाह जहाज, घोडा के झुड, गाव, पहाड, जिप्सी, तातार गडेडिये, माधू, तस्कर मल्लाह, यात्री और आवारे ।

वह जितना ही आगे बढता जाता, और आगे बढने की उसकी प्यास और बढती जाती। कभी कभी कई दिनो बिना दाना-पानी ही रहना पडता। लेकिन हर स्थिति मे उसे तो चलते ही जाना था। अबखाजिया म तो कई दिनो उसने सिफ जगली शहद पर काटे। लेकिन जब इस तरह दिन कटने कठिन हो गये तो काकेशस के चरकेशियन गाव मे उसने खेतो म मजदूरी की। एक गाव मे तो उसे एक शव के सिरहाने खडे हो कर प्राथना करके एक वक्त का खाना जुटाना पडा। इसी तरह कभी भरे पट और कभी भूखा ही वह पागला की तरह आगे बढता गया। अक्सर उसे खुद भी ताज्जुब होता कि वह कौन सी प्रेरणा है जो उसे यो हर समय चलते रहने का विवश करती है। वह जितना ही चलता जाता, लोगा से मिलता, उ ह समझता, उसके लिए दुनिया अधिक विचित्र और विस्तृत होती जाती। उसने एक महान लेखक की किसी रचना मे पढा था—जीवन के हर क्षेत्र मे मानव प्रकृति की जानकारी करना आवश्यक है। सभी से मिलना, सभी—दूकानदार, आवारा, जेबकतरे, मजदूर, वेश्याएँ सभी जीवन के शिक्षक है।

सो अलेक्सेई इ ही शिक्षका को खोजता आगे बढता जाता।

जीवन क हर क्षेत्र के विभिन्न पेशे व प्रदेश के लोग उसे मिलते—मद भी, औरते भी। ऐसे विचित्र लोगो की चर्चा वह किताबो म पढ चुका था।

इस यात्रा मे उसे कुछ अनोखी और विचित्र घटनाएँ भी देखने को मिली। उक्राइन के एक गाँव म उसे एक स्थानीय प्रथा देखने को मिली, जिससे उसका दिमाग उबल कर रह गया। यहाँ एक प्रथा थी—अपने पति के प्रति गैरवफ़ादार बीबी को दी जाने वाली एक विचित्र सजा। एक छोटे कद की कमजोर सी औरत जो देखने मे लडकी ही थी, उसे एक गाडी म एक घोडे के साथ जोत दिया गया। और उस औरत का शराबी पति, लाल आँखें किए, उस गाडी को हाँकने लगा। पहली चाबुक वह घोडे को मारता और दूसरी चाबुक से वह अपनी बीवी की नगी पीठ पर चोट करता। और उस गाडी के पीछे हल्ला करती, चिल्लाती गाँव वालो की भीड चल रही थी। गाँव वालो के लिए वह एक दिलचस्प प्रथा थी। वहाँ काई ऐसा न था जो उस जल्लाद शौहर के इस कारनाम के खिलाफ एक शब्द भी कहता या उस अभागी औरत का पक्ष ले कर उसे घोडे की जोडीदारी स मुक्त कराता।[1]

अन्तत जब यह अमानुषिकता उससे नही देखी, सही गयी तो उसने उस दानवी भीड से उलझन का निश्चय किया। उसन भीड का इस तरह एक औरत की दुदशा पर मजा लेने के विरुद्ध मुकाबला किया। वह चीख पडा, 'ब द करो यह जगलीपन।'

अलेक्सेई की चीख पर भीड म जसे हलचल मच गयी। एक पर देसी और अनजान आदमी का गाव की इस पुरानी रीति के विरुद्ध आवाज लगाना गाव वालो से सहा न गया। भीड बना कर वे सब अलेक्सेई पर टूट पडे। उ होने उसे पीटना शुरू किया और बडी निम मता से पीटा, उस औरत के प्रति उनकी निष्ठुरता स अधिक निमम हो कर। अलेक्सई अकेला इतनी भीड का कैसे मुकाबला करता? आखिर उसे विवश हो कर मार खानी पडी व अपमान सहना पडा। यही नही, उसे मारते मारते गाँव वाले उस गाँव के बाहर तक खदेड ले

---

१ अपने संस्मरणों में गोर्की ने इस घटना के सबध मे लिखा है—मैंने यह घटना १ जुलाई १८९१ को अपनी आँखों देखी। बाद मे इसी घटना पर आधारित वि ड्राटिंग आरडियल' नामक कहानी लिखी।

गये और जब वह बेहोश हो गया तो, अब मर जायेगा, यही सोच कर अत म गाँव के बाहर एक सडक के किनारे कीचड भरे गड्ढे मे उसे फेंक कर ही वे सतुष्ट हुए।

अलेक्सेई वही बेहोश, बेजान सा पडा रहा।

एक खिलौने वाला उधर से अपनी गाडी पर गाव के मेले से लौट रहा था। उसने उसे लूटा गया घायल मुसाफिर समझ कर उठाया और उसके शरीर को लहूलुहान देख कर अपनी गाडी पर लाद कर निकोलायेव के अस्पताल तक पहुँचा आया। बेहोशी की दशा मे ही अस्पताल म उसका उपचार शुरू हुआ। अलेक्सेई को काफी दिना उस अस्पताल मे रहना पडा। वह किस्मत से ही जिन्दा बच गया नही तो कैन्डीबोवका गाव के लोगा न तो उसे मार डालने मे कोई कसर उठा नही रखी थी।

यह भी एक सयोग ही था कि अलेक्सेई को कैन्डीबोवका गाँव मे एक औरत की दुदशा का यह दृश्य देखने को मिल गया। यद्यपि उसन गाँव वालो के प्रति ममता और करुणा से भर कर ही रूस के इस प्रदेश मे गाँव का असली रूप और जीवन देखने की नीयत से ही यह भ्रमण शुरू किया था।

कुबान क्षेत्र से जाते समय अलेक्सेई न सुना कि माईकोप गाव म दगा हो गया है। वहा के ग्रामीणो और जार के अधिकारियो मे मार-पीट हुई है। जानवरा की बीमारी के इलाज करने वाले अफसरो ने गाँव वालो को तग किया था। गाव वालो ने सरकारी कमचारियो की खूब पिटाई की थी। फलस्वरूप सरकार ने सेना भेज कर गाँव वालो को मरवाया। कज्जाक सैनिका ने गोलियाँ चलाई और बहुत से गाव वाले मारे गये।

अलेक्सेई यह सुनत ही माईकोप की ओर मुड गया।

वहाँ पहुँच कर अलेक्सेई ने सामूहिक हत्याकाण्ड का भीषण दृश्य देखा। सचमुच गाव म कई लोग मारे गय थे। मृतको की विधवाएँ विलाप कर रही थी भारी आतक का वातावरण था, और कज्जाक सनिक बबरता की मूर्ति बने गाँव भर मे डटे थे। वे गाँव की गलिया

म घूम घूम कर जिसे पाते, मार डालते थे।

अलेक्सेई स यह सब देखा न गया। उसने सीधे जा कर अधिकारियो को यह दानव लीला बद करने का सरोष आग्रह किया। अधिकारियो को एक आगतुक का इस तरह बीच म कूदना अच्छा न लगा और उ होने तत्काल ही अलेक्सेई को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन गाँव के इतने लोग गिरफ्तार किए जा चुके थ कि स्थानीय सरकारी जेल म अब एक भी आदमी को रखने की जगह नहीं थी, अत अलेक्सेई को गिरफ्तार करके एक फौजी बरेक म ही ब द किया गया।

अलेक्सेई से जाँच पडताल या पूछ-ताछ के समय एक स्थानीय उच्च अधिकारी, जो उस क्षेत्र म बहुत असरदार समझा जाता था, इस बात स बहुत परेशान हुआ कि ऐस हलचल व आतक के समय माइ कोप गाँव मे आ कर इस झगडे झझट के बीच यह व्यक्ति क्यो इतने जोश से कूद पडा है। उसने जब अलेक्सेई स पूछा तो उसने बडे सयम स व शाति से कहा, 'मैं रूस की असली तस्वीर देखना चाहता हूँ।'

वह अधिकारी इस उत्तर से खीझ कर बोला, तो देखो, असली रूस यही है।'

गिरफ्तार अलेक्सई क हर हाव भाव व बातचीत से अधिकारियो की चिता व शक म वृद्धि होती गयी। अलेक्सई ने अपना नाम बताया पश्कोव। पुलिस ने जब तलाशी ली तो पाया कि उसके झोले म सिफ किताबें भरी हैं और एक नोट बुक है जिसम कई कविताएँ लिखी हैं। वह पूछने पर हर प्रश्न का बडी गभीरता से उत्तर देता, लेकिन उसकी आँखा से घृणा टपक रही थी। उसने बताया कि वह देश म बिना किसी खास व्यापार व उद्देश्य के ही घूम रहा है, तो सुन कर पुलिस का सदेह और बढ़ा।

लेकिन पुलिस वाला को ऐसा कुछ न मिला कि वे अलक्सेई पर कोई अपराध लगा सकते, न कोई ऐसा सुबूत ही मिला कि उस व किसी प्रकार दोषी घोषित कर पाते। फिर भी कई दिनो तक उसे फौजी बैरक म ब द रखने के बाद ही छोडा गया।

माईकोप की फौजी बरक म अलेक्सेई की यह गिरफ्तारी उसके

जीवन की दूसरी गिरफ्तारी थी।

इसी प्रकार लम्बे अरसे तक वह यायावरी म ही दिन काटता रहा।

पतझड के मौसम म अलेक्सई काकेशस प्रदेश के तिफलिस शहर म पहुचा। उसके यायावरी जीवन का एक प्रकार से यह अतिम पडाव सिद्ध हुआ।

तिफलिस म भी अलेक्सेई को कोई आराम की नीद नहीं बदा थी। वही जीवन का पुराना ढर्रा। किसी गद मकान के गदे कमरे का एक कोना भर रहने को मिला। खाने पीने की भी ठीक व्यवस्था नही। जगह जगह पुलिस से टक्कर होती, मारपीट भी होती फिर भी अलेक्सेई को लगता कि ये दिन अच्छे ही है, शायद आज तक के बीते जीवन म सबसे अच्छे दिन।

तिफलिस म अलेक्सेई नये नये लोगा के सम्पक मे आया, नये-नये मित्रो को जुटाया।

यहाँ उसने जीविका के लिए रेल के कारखाने मे एक मजदूरी ढूँढ ली। और खाने-खर्चे भर को कमान लगा। यहाँ उसका सपक क्रातिकारी विचारो वाले मजदूरा व विद्यार्थियो से बढा। वे लोग उसे बहुत अच्छे साथी जैसे लगे। यहा उसन कई निर्वासित राजनीतिज्ञो से सम्पक बना लिया। उनके साथ मिल कर उसन क्रान्तिकारी प्रचार काय के लिए सगठन भी बनाया। मजदूरा, विशेषकर रल के मजदूरा के बीच उसने क्रान्तिकारी प्रचार काय खूब चलाया। फिर कई नये दोस्तो के साथ उसने एक खण्डहर हो रहे मकान म एक तरह के कम्यून का सगठन किया। जहाँ लगभग हर शाम को नौजवान इकटठे हो कर बहसें करते, वार्ताएँ चलाते और किताबे पढते। इसने धीरे धीरे एक राजनीतिक क्लब का रूप ले लिया, जहाँ दफ्तरा म काम करने वाले, मजदूर और विद्यार्थी आत और राजनीति म भाग लेने की योजनाएँ बनाते। यहाँ महनतकश लोगा के साथ मैत्री-

पूर्ण सामूहिक जीवन से अलेक्सेई को बहुत सी नई-नई उपयोगी बातें सीखने को मिलीं।

यहाँ कई महीने गुजारने के बाद एक बार अलेक्सेई के सिर पर फिर यायावारी का भूत सवार हुआ। उसे लगा कि एक जगह जमने से उसके जीवन में ठहराव आने लगा है। उसके मन में आया कि आगे बढ़ना चाहिए। संयोग से एक छोटी सी नाटक मंडली से उसका सम्पर्क हो गया जो गाँव गाँव घूम घूम कर नाटक दिखाती थी। अलेक्सेई ने इसी मंडली में शामिल हो कर घूमने का मन बनाया। और इस ओर बढ़ने का उसने करीब करीब निश्चय कर ही लिया था कि उसकी भेंट एक ऐसे व्यक्ति से हुई जिसने उसके जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव डाला और जिसके कारण वह नाटक मंडली में नहीं जा सका।

यह व्यक्ति था अलेक्सान्देर काल्यूझनी। वह क्रान्तिकारी था, लेकिन दयालु स्वभाव का व्यक्ति था। साइबेरिया में छः साल निर्वासन भोगने के बाद काल्यूझनी अब ट्रांस काकेशियायी रेलवे के प्रशासनिक विभाग में काम करता था। वह एक गुप्त क्रांतिकारी संस्था का सदस्य था जिसका नाम था नेरोदनाया वोल्या। अपने पूर्व क्रान्तिकारी कामों के कारण वह काफी सजाएँ भोग चुका था। उसमें एक विशेष प्रकार की प्रतिभा थी एक श्रेष्ठ प्रतिभा मानवता की प्रतिभा। वह लोगों को प्रेरित करने में अद्वितीय था। बड़े धैर्य से दूसरों की बातें सुनता और दूसरों के चरित्र को परखने की भी उसमें विशेष क्षमता थी। वह दूसरों से उपयोगी काम करा लेने में माहिर था और दूसरों को उनकी क्षमता का बोध कराने में भी पारंगत था।

काल्यूझनी से पहली मुलाकात में ही अलेक्सेई ने उससे बेसारा बिया और वाल्गा प्रदेश की अपनी यात्रा तथा सड़कों व गाँवों में हुए अनुभवों की चर्चा की। काल्यूझनी ने बड़े ध्यान से शांत हो कर अलेक्सेई की बातें सुनीं और बहुत गौर से उसके चेहरे को देखा। उसने तत्काल ही समझ लिया कि यह नौजवान कोई साधारण, मनमौजी

या आवारा घुमक्कड नही है बल्कि इसमे विशेप प्रतिभा है और इसकी दृप्टि पैनी है तथा यह दुनिया को साधारण जन की तरह नही देखता।

अलेक्सेई भी काल्यूझनी से बहुत प्रभावित हुआ। इन्ही दिना अलेक्सेई ने अपने पुराने मित्र प्लेतनेव को, जो हाल ही जेल से छूटा था, एक पत्र मे लिखा—'मैं एक सस्थान के विद्यार्थिया के साथ मिल कर किताबे पढता हूँ। मैं उन्हें कुछ सिखाता नही। बल्कि उन्ह एक दूसरे को समझने म मदद देता हूँ। मै किताबें पढता हूँ और रेल के विभिन्न विभागा मे काम करने वाले मजदूरो से बातें करता हूँ। उनमे एक बोगातिरोविच नाम का मजदूर है जो बहुत शानदार आदमी है। हमम गहरी दोस्ती है। वह कहता है कि जीवन म कुछ भी अच्छा नही है। लेकिन मैं उस समझाता हूँ और जार देता हूँ कि अच्छाई बहुत अध कार और गहराई मे छिपी है ताकि वहाँ तक दुप्टा के हाथ न पहुँच सकें।'

'जीवन मे बहुत कुछ अच्छा है', इस सबध म अलेक्सेई का अनुराग अत्यन्त गहरा था। अपने इस विश्वास को वह मूल्यवान समझता था। काल्यूझनी इसीलिए उस 'गहरा दास्त और प्रिय शिक्षक' लगता था।

अलेक्सेई ने एक बार काल्यूझनी को लिखा, आप पहले आदमी हैं जिसने मेरी ओर अपनी सवेदनशील आत्मा की दयापूण दृष्टि से देखा, एक ऐसे युवक के रूप म नही जिसका जीवन अजीबोगरीब रहा हो या जो निरुद्देश्य ही भटकने वाला एक आवारागर्द हो, एक ऐसा प्राणी जो मनोरजक तो हो लेकिन साथ ही सदेहास्पद भी।'

तब काल्यूझनी ने सबसे पहले अलेक्सेई का इस बात के लिए प्रेरित किया कि वह एक बार अपना आत्ममूल्याकन करे। उसने ही पहले पहल अलेक्सेई म विश्वास प्रदर्शित किया और उसे उसके जीवन ध्येय से अवगत कराया। उसने अलेक्सेई को सरल शैली मे, अपनी रोजमर्रा की बोलचाल की भापा म अपने अनुभवो को आधार बना कर लिखने की सलाह दी।

अलेक्सेई कई दिना तक सोचता रहा—क्या काल्यूझनी सच कहता है? वह क्या सचमुच लिख सकता है?

पहली कहानी

काल्यूजनी ने अलेक्सई के मन में कई नये-नये सपने जगा दिये थे। वे सपने हर समय अलेक्सई को परेशान करते रहते, उसे चैन न लेने देते।

एक दिन अलेक्सई ने काल्यूजनी को जुबानी ही सुन्दर रादा और साहसी खानाबदोश लोइका की कहानी सुनायी तो काल्यूजनी का चेहरा चमक से भर गया। उसने अलेक्सई को गौर से देखा और गंभीरता से कहा, 'इसे ज्यों का त्यों पूरा लिख डालो।'

सुन कर अलेक्सेई फिर सपने देखने लगा। क्या वह लिख सकेगा ?

अलेक्सई की बातें और कहानियाँ सुन कर काल्यूजनी ने अंदाज लगा लिया कि इस नौजवान का हृदय बहुत विशाल है और इसमें गहरी प्रतिभा छिपी है। उधर अलेक्सेई भी काल्यूजनी से प्रोत्साहन पा कर, उसमें वह एक गहरे और नेक तथा ईमानदार दोस्त की झलक पाने लगा।

काल्यूजनी को विश्वास हो गया था कि यदि अलेक्सई लिखे तो अवश्य ही कुछ अद्वितीय लिख सकेगा और साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान बना लेगा। इसलिए पूरे उत्साह से वह अलेक्सई से कहता, 'जो अनुभव करते हो जो सोचता हो, उसे ज्यों का त्यों लिख डालो।'

काल्यूझनी का कहना अब जिद की स्थिति पर पहुँच गया। वह अलेक्सेई की बातें सुन सुन कर बार-बार उसे लिखने को प्रेरित करता।

अन्तत अलेक्सेई ने कलम उठायी, लिखा। लेकिन जो लिखा वह वह नही था जिसकी काल्यूझनी आशा करता था।

अब तक अलेक्सेई ने अनुभवो का विशाल भडार जुटा लिया था। कठिन जीवन न उस बहुत कुछ दिखा दिया था। वह किसानो, मजदूरा, जमीदारो, पुलिस, वेश्याओ को पहचान चुका था। गदी बस्तिया, सीलन भरे घरो, कारखानो, जहाज के केबिनो, झापडियो म वह रह कर जिन्दगी को निकट स देख चुका था। वह जानता था कि आवारा, भिखमगो रसोइयो, मजदूरो का जीवन क्या था। वह अपन देश की हजारो मील धरती को अपन पावो से नाप चुका था। उसन जो भी देखा था, आँखो को खोल कर देखा था धरती का चप्पा चप्पा देखा था।

काल्यूझनी के बार बार कहने से अब उस भी लगता था कि इतना सब भोग चुकने पर, इतना सब जी चुकने पर, अब उसे जो करना है, वह बस यही कि इन सब बाता को ले कर ही उस लिखना है, जो कुछ उसने अपनी आखा स दखा है, उसके अपने जो अनुभव ह, उनके बारे मे।

लेकिन जब अलेक्सई ने कलम उठायी तो उस अजीब अनुभव हुआ। उमे लगा कि उसके पास अनुभवा का जो बडा भडार है, उसके दिमाग म जो है उसने जो सोचा ह वह सब जैस दिमाग म मिटता जा रहा है, लोप होता जा रहा है। वह जो लिख रहा है वह सब पुरानी किताबो म पढे शब्द ह। वह जो कुछ लिख रहा है वह अपना नही है, किसी और का है।

उसने अपनी उलझन काल्यूझनी से बतायी।

काल्यूझनी भी अलक्सई की बात समझ सका। उसने फिर कहा, वही लिखो, सिफ वही लिखो, जो कुछ तुमने आँखो स देखा है।'

तब अलेक्सई ने फिर हिम्मत बटोरी और अपने भ्रमण-काल म

एक जिप्सी के घर म एक बूढे जिप्सी के मुह स सुनी कहानी को अपनी भाषा म, अपन शब्दा मे कलमबन्द किया। उस कहानी को नाम दिया—मकरछुद्रा।

'मकरछुद्रा' की कहानी को कागज पर उतार कर अलेक्सई ने धडकते दिल से डरते डरते जा कर काल्यूझनी को दिखायी।

पढ कर काल्यूझनी उछल पडा।

यही तो वह चाहता था।

काल्यूझनी वह कहानी ले कर खुद तिफलिस के प्रसिद्ध अखबार 'कावकाज' के दफ्तर मे गया और सम्पादक को दिखाया। अलेक्सई भी साथ था।

सम्पादक न पढ कर तत्काल ही कहानी छापन की स्वीकृति दे दी। लेकिन एक समस्या थी—लेखक का नाम !

अलेक्सेइ न वही सम्पादक के पास बैठे-बठे एक नया नाम सोच लिया। बिल्कुल नया नाम—मैक्सिम गोर्की।

कावकाज' के १२ सितम्बर १८६२ के अक म मैक्सिम गोर्की की लिखी 'मकरछुद्रा' कहानी छपी।

इसी दिन 'अलेक्सेई पेश्कोव 'मैक्सिम गोर्की' बन गया।

१२ सितम्बर १८६२ का यह दिन अलेक्सई कभी नही भूला। यह दिन उसक साहित्यिक जीवन का प्रथम दिवस था।

इसी दिन अलेक्सेई ने अनुभव किया कि वह एक लेखक है, लिख भी सकता है।

काल्यूझनी की खुशी की भी सीमा न थी।

फिर 'मकरछुद्रा' पसन्द भी खूब की गयी।

तब पतझड के अत म मैक्सिम गोर्की बन कर अलेक्सई अपने पुरान शहर निझनी नोवोगारोद के लिए चला।

तिफलिस स निकलनी आत समय अलेक्सई अपने साथ काल्यूझनी को स्मृति भी लाया, जिस वह जिंदगी भर सजो कर रखे रहा। काल्यूझनी—जिसने अलेक्सेई म एक लेखक को खोज निकाला था, जिसने 'गोर्की' को जन्म दिया था।

एक लेखक का निर्माण

लिखने के प्रति अलेक्सेई में नया उत्साह जागा था। वह हर क्षण अपने को प्रेरणा से भरपूर पाता। मन में हर समय उमंगें उठती रहती। अब वह 'मैक्सिम गोर्की' बन चुका था। अपने को लेखक बना कर यह नाम उसने बहुत समझ बूझ कर रखा था। इस नाम में उसके पिता की स्मृति और अत्यन्त कठिन जीवन की कटुता का समावेश था। मैक्सिम उसके पिता का नाम था और 'गार्की' शब्द के अर्थ हैं—तीखापन, कटुता, उत्कट घृणा। बत्तीस वर्ष के जीवन में, तत्कालीन समाज से प्राप्त जो तीखापन कटुता उसके अन्तर में व्याप्त हो गयी थी उसी का प्रतीक शब्द था—गोर्की।

सो अब वह 'मैक्सिम गार्की' हो गया था।

मकरछुद्रा' छपने के बाद ही उसे खूब प्रशंसा मिली। लोग उसे मैक्सिम गोर्की के नाम से ही जानने लगे। उसका भी उत्साह खूब बढ़ा। अब वह दिन रात लिखने में लगाता। जैसे लिखने के लिए वह पागल हो गया था, या मन में जो कुछ था, उसे जल्दी ही लिख डालने को वह बेचैन हो उठा था। उसने कविताएं छोड़ कर

कहानिया लिखने म ही पूरा समय लगाना शुरू किया।

इन्ही दिना उसने बाल्जाक की रचनाएँ पढी। दूसरे अन्य दाश निको की भी रचनाएँ पढी। इन दिना उसके मन म सुदूर देशों की यात्रा की इच्छा जागी। उसने भारत और लका की यात्रा की योजना बनायी, लेकिन लिखने की धुन म वह बाहर निकल न पाया।

एक एक कर के मैक्सिम गोर्की ने कइ कहानिया लिख डाली। लकिन उन्ह प्रकाशको के पास भेजने म वह झेंप का अनुभव करता। उसमे आत्मविश्वास था कि उसकी कहानियाँ बहुत अच्छी हैं, लेकिन यह विश्वास वह अपन म अभी नही जुटा पाया था कि उन्ह प्रकाशक या पत्र सम्पादन भी पसद करगे।

एक दिन गोर्की ने भूख स तडपते एक आदमी पर एक कहानी लिखी—इमेलियन पिलई। गोर्की का एक मित्र वह कहानी अपने साथ मास्को लेता गया। गोर्की उसके बारे म लगभग भूल सा गया था। तभी एक दिन उसन 'रूस्कीया वेदोयोस्ती' नामक पत्रिका मे अपनी वह कहानी छपी देखी। लेखक क स्थान पर नाम भी छपा था—मैक्सिम गोर्की। इस छपी देख कर गोर्की का उत्साह जागा। उसकी झेंप कम हुई और उसन साहस बटोर कर अपनी कई कहानियाँ एक साथ कजान स प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'वोल्मस्की वेस्तनिक' के सम्पादक को भेज दी।

एक हफ्त बाद ही गोर्की क नाम तीस रूबल का चेक कजान स आ गया। गोर्की की खुशी और उत्साह की सीमा न रही। लिख कर भी क्या इतना कमाया जा सकता है ?

अब गोर्की के उत्साह का क्या कहना ! उसकी कहानियाँ धूम स छपने लगी। मैक्सिम गोर्की नामक नय लेखक की रचनाएँ पढ़ कर कोरोलेन्को भी चकित हुआ। वह जानता न था कि मैक्सिम गोर्की नाम का यह लेखक कौन है। 'मक्सिम गोर्की' नाम भी उस बडा आकर्षक और अजीब लगा। वह इस नय लेखक स मिलन को उत्सुक हुआ। अपन मित्रा स उसन इस लेखक का पता लगान को कहा भी।

इस बीच जब गोर्की निझनी आया तो उसने भी कोरोलेन्को से

मिलना चाहा, लेकिन पता लगा कि वह सेंट पीटसवग चला गया है।

गार्की के पास लिखने के सिवा और कोई काम तो था नही, सो उसने कुछ कहानियाँ लिख कर 'वोल्गा हेराल्ड' मे भेज दी। कोरोलेन्को इसमे बराबर लिखता था, जिसमे उस क्षेत्र म यह पत्र काफी प्रसिद्ध व लोकप्रिय था।

गोर्की को बराबर पत्रो स पैस आने लगे। कहानियाँ भी बराबर छपने लगी। लेकिन अभा तक उसकी झेप पूरी तरह मिटी न थी और उसके मित्र जो उसके गोर्की नाम स परिचित न थे, उनसे भी उसने अपने लेखक होने की बात छिपा रखी थी। लेकिन एक सम्पादक ने कोरोलेन्को स उसका परिचय बता दिया था। अत निम्नी वापस आने पर कोरोलेन्को ने गोर्की को बुलवाया।

निझनी मे भी कोरोलेन्को ने शहर के बाहर लकडी का एक छोटा सा मकान खोज लिया था और वही वह रहता था। गोर्की धडकते दिल से कोरोलेन्को के घर गया। उस समय एक बहुत छोटे से कमरे मे बठा वह चाय पी रहा था। शायद उसकी पत्नी और बच्चे कही गये थे, सो वह उस समय अकला ही था। गोर्की पर पहली नजर पडते ही कोरोलेन्को उस पहचान गया—यह वही अनजान नौजवान था जो कुछ वर्षो पहले उसके पास बूढे ओक वाली कविता ले कर आया था।

कोरालेन्को जिस कमरे म बठा था वह फूला, किताबा और अख-बार व पत्रिकाआ की फाइला से भरा था। गोर्की को देखत ही पह-चान कर कोरोलेन्को ने कहा, मैं तुम्हें खोज ही रहा था। मने अभी-अभी तुम्हारी कहानी पढी है—चिडिया। तो तुमने अपनी रचनाएँ छपानी भी शुरू कर दी ! वधाई ?'

गोर्की ने देखा—कोरोलेन्को गहर नीले रग की कमीज पहने था और अधिक वजनी दिख रहा था। वह आधी खुली आँखा से देख कर बोल रहा था। गोर्की ने कहा, मैंन काकेशस' नामक एक और कहानी लिखी है जो छप चुकी है।'

'तुम कुछ और नही लाये ? तुम्हारे लिखने का ढग अपना है। रूसी भाषा की यही खूबी है कि पढने वाले को हिला देती है।'

उन्ही दिना गोर्की ने कोरोलेन्का की एक कहानी 'नदी का खेल' पढी थी, जो उसे एक महान रचना लगी थी। गोर्की उस कहानी की तारीफ करने लगा। तब आँखें बन्द कर के वह सुनने लगा। फिर एकाएक उठ खडा हुआ और पूछा, 'बताओ, अभी तक तुम कहाँ क्या करते रहे ?'

गोर्की ने अपनी यात्राओ के बारे म बताया।

फिर दोनो साहित्य, रूसी जीवन, गाँव-देहात और गरीबी की मार से तडपते लोगा की चर्चा करते रहे।

फिर विदाई के समय कोरोलेन्को न एक बार फिर गोर्की से उसकी कहानियो की तरीफ की। कहा तुम्हारा लिखने का अपना ढग है। लेकिन अभी भी तुम्हारी कहानियो म पालिश की दरकार है। फिर भी दिलचस्प तो हैं ही।'

दरवाजे तक कोरोलेन्को गोर्की को छोडने आया। तब गोर्की ने चलते चलते बडी नम्रता से पूछा, 'क्या सचमुच मैं लिख सकता हूँ ?'

'अवश्य! कोरोलेन्को ने विस्मय के साथ कहा, तुम लिख भी रहे हो—चीजें छप भी रही हैं। भला और क्या चाहिये? अगर कभी तुम्ह सलाह की जरूरत पडे तो कहानियाँ ले कर आना '

गोर्की बहुत खुश-खुश वापस आया। उसन कोरोलेन्को मे एक महान और ईमानदार कलाकार के दर्शन किए थे। गोर्की को लगा कि उसे एक गुरु मिल गया। कोरोलेन्को की बातें बहुत सरल और अर्थपूर्ण थी। उसन गोर्की को सलाह दी कि कानो को अच्छे लगने वाले मुहावरो स भ्रमित नही होना चाहिए और हर शब्द का आवश्यकता के अनुसार ही प्रयोग होना चाहिए।'

करीब एक पखवारे के बाद गोर्की अपनी कई कहानियाँ ले कर कोरोलेन्को के घर गया। उस समय कोरोलेन्को घर पर नही था, अत वह कहानियाँ वही छोड आया। लेकिन दूसरे ही दिन कोरोलेन्को का गोर्की को एक पत्र मिला–' आज शाम को आ जाओ। हमलोग खूब बातें

करेंगे।'

गोर्की उसी शाम को गया। लेकिन आज गोर्की को लगा कि कोरालेन्का जस पहले से बदला हुआ व्यक्ति है। उसन टेबिल पर मे गोर्की की कहानियो को उठाया और बोला, 'मैं सब पढ गया। लेकिन जो कुछ तुमने लिखा है वह तुम्हारी आवाज नही लगती। तुम बहुत अधिक भावुक नही हो, यथार्थवादी हो। समझे ? और इनमे सभी तो व्यक्तिगत घटनाएँ ह।'

'हाँ, लगभग व्यक्तिगत।' गोर्की ने कहा।

'तो इ ह बदलना होगा। व्यक्तिगत घटनाएँ व्यापक बना कर ही लिखी जाएँगी।' कहते हुए उसने कहानिया को मेज पर रख दिया। फिर अपनी कुर्सी गोर्की के निकट खीच कर उसके कधे पर हाथ रख कर कहा, मैं एक बात साफ साफ कहूँ ! मैं ज्यादा तो नही जानता, लेकिन इतना जरूर कहूँगा कि तुम्हारे पास काफी मसाला है। मुझे सब मालूम है तुम ठीक से नही रहते। तुम्हे ठीक जगह भी नही मिली। तुम फौरन किसी बढिया और सुन्दर लडकी स ब्याह कर लो।'

गोर्की सकुचा गया। वह यह आशा नही करता था कि आज इतनी व्यक्तिगत बातें होगी। उसने बात रोकने को कहा, 'लेकिन मेरी शादी हो चुकी है।'

कोरोलेन्को हँस पडा, बोला, 'मैंने कहा न, मुझे सब मालूम है। तुम्हारी प्रेमिका जिसे तुम बीबी मानते थे, से तुम्हारा छुटकारा हो चुका है। यही तो परेशानी है कि '

'इस बारे म अब चर्चा बेकार है।' गोर्की ने दढता से कहा।

कोरोले को ने भी बात बदल दी, बोला, तो माफ करना। हा, क्या तुमन सुना है कि रोमस जेल म है ?'

'हाँ, मुझे कल ही पता लगा है।'

'जानते हो ! पुलिस ने उसके यहाँ सब पता लगा लिया था। पूरा प्रेस और उसकी पत्रिका का सारा सामान पुलिस ने जब्त कर लिया।'

तभी कोरोलेन्को की पत्नी और बच्चे वहा आ गये और शोर बढ

गया। गोर्की कोरोलेन्को से विदा ले कर चला आया।

रास्ते भर गोर्की सोचता रहा कि आखिर उसके जीवन की व्यक्तिगत बातो को कोरोलेन्को कैसे जान गया ? लेकिन कुछ भी हो कोरोलेन्को ने उसके बारे म इतना कुछ पता लगाया, उसम दिलचस्पी ली, यही क्या कम है !

अब तक उस क्षेत्र के लोग गोर्की को एक लेखक के रूप मे पहचानने लगे थे। लोग उसे आदर देते और प्रशसा की निगाह से देखते। लेकिन कोरोलेन्को उस सदा आगाह करता रहा, देखो, ज्यादा तारीफ की लालच म मत पडना। य चीजे गुमराह जल्दी कर देती ह।'

एक दिन सबेरे सबेरे गोर्की कोरोलेन्को के घर जा पहुँचा। वह रात भर टहलता रहा था। उसी समय कोरोलेन्को वही जाने को घर मे निकल रहा था। उसकी शक्ल देख कर गोर्की समझ गया कि वह भी शायद रात भर नही सोया है। उसकी आँखें उँनीदी थी और उसकी दाढी के बाल उलझे थे। उसने देखते ही पूछा, कहाँ से आ रहे हो ?'

'घूमने निकला हूँ।'

कल की रात बहुत अच्छी थी। आओ न, साथ चलो। हाँ तुम आते क्यो नही ?'

सकुचा कर गोर्की ने कहा, 'जब से आप से तीन रूबल उधार माँग कर ले गया हूँ, तब से आने म झेंप लगती है।'

लेकिन मुझे तो याद नही कि तुमने कब उधार लिया था ! लेकिन इसम क्या बात है ? हम सभी एक जसे हैं। हम तो एक दूसरे की सदा ही मदद करनी चाहिए।' फिर थोडी देर चुप्पी के बाद उसने कहा क्या तुम्ह मालूम है कि रोमस के मामले म किसी लडकी का भी हाथ था ?'

गोर्की को तत्काल मेरियर की याद आ गयी। वह बोला, 'मैं उसे जानता हूँ।'

एस मामला म बच्चा को डालना एक तरह से गुनाह है । चार वष पहले उस लडकी को मन देखा था । तभी मेरी धारणा हुई थी कि वह मास्टरनी बन सकती है, क्रातिकारिणी नही ।'

फिर दोनो चुप रहे और घूम कर लौटने पर अलग हुए ।

घर आ कर गार्की लिखन बैठ गया । अस्पताल की एक नस पर उसन एक कहानी लिखी—'चेलकश' । उसकी पाण्डुलिपि उसने कोरालेको के पास भेजी । कारोलेको न उसे खूब पसद किया और बधाइया भिजवाइ । फिर उसे भेज कर 'वोल्गा हेराल्ड' मे छपवा भी दी ।

'चेलकश' किसी गभीर साहित्यिक पत्रिका मे छपने वाली गोर्की को पहली कहानी थी ।

एक दिन गोर्की के कधे पर हाथ रख कर कोरोलेको न कहा, 'तुम इस शहर से चले क्या नही जाते ? चाहे समारा ही । मेरा एक मित्र समारा के अखबार—समारास्काया गजेटा—म है । मैं लिखूंगा तो वह तुम्हे वहा काम भी दे दगा । कहो, क्या राय है ?'

थोडे अचम्भे से गोर्की ने पूछा, 'क्या मै यहा किसी के रास्ते का राडा हूँ ?'

'नही कुछ दूसरे लोग तुम्हारे रास्ते के रोडे ह ।' गभीरता से कोरोलको ने कहा ।

गोर्की समझ गया कि कोरालेको उसके शराब पीने तथा उसकी दरिद्रता और कलक—कहानियो से पूरी तरह परिचित है । शायद यह सब सुन कर वह दुखी हुआ है, इसीलिए उससे समारा जाने को कहा है ।

गोर्की न समारा जान का कारोलेको का प्रस्ताव मान लिया ।

समारा आ कर एक प्रकार स गोर्की का शुद्ध लेखकीय जीवन शुरू हुआ ।

समारास्काया गजेटा' म गोर्की न 'येगूदिल ख्लामीदा' क नाम स कुछ कालम' लिखना शुरू किया, जा पाठका मे लोकप्रिय हुए ।

यही गोर्की की रात म लिखन की आदत पड गयी। क्योकि अख वार के काम म 'कालम' लिखने, अपन साथियो क साथ अखबार की सामग्री पर विचार विमश करने, लोगो से बातें करन और पाण्डुलिपियाँ पढने म दिन का सारा समय निकल जाता और लिखन को समय न मिल पाता। शाम का समय भी मित्र मडली क बीच जाता। अत रात को ही लिखना पडता। बाद म यही आदत भी पड गयी।

गोर्की जब लिखने बठता तो तयारी स बठता। लिखते समय अपन बालू सुव्यवस्थित रखन के लिए वह जूते बनाने वालो की तरह सिर पर पटटा बाँध लेता। और उसी मनोयोग से लिखता जसे कोई कारी गर मन लगा कर काम करे। उसकी लिखने की मेज हमेशा साफ सुथरी और सुव्यवस्थित रहती। हर चीज- कलम, पैंसिलें, कागज और किताबें यथास्थान सजी रहती।

गोर्की ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'विहग का गीत' मिटटी की तेल वाली लैम्प की रोशनी म लिखी। उसम एक क्रान्तिकारी का आह्वान था, वह रचना मजदूरा के बीच बहुत लोकप्रिय हुई। उसकी हस्त लिखित प्रतियाँ तयार की गयी और उसे लोगो ने जबानी भी याद कर लिया और अध्ययन-गोष्ठिया तथा सायकालीन पार्टियो म उस पढा जाने लगा।

समारा म गोर्की का असली लेखक का रूप भी उभरा। 'समारा स्काया गजेटा' म कोरोलेन्को के अलावा मेमीन सिबिरयाक और गरीन मिखाईलावस्की जैसे नामी लेखका की रचनाएँ भी छपती थी। अब यहाँ गोर्की की रचनाएँ और नाम इन ख्यातिनामा लखका की रचनाओ और नामो के साथ छपने लगा। हर रविवार को पाठक गोर्की की एक नई कहानी पढने को पाने लगे। गोर्की की कहानियाँ सचमुच बडी लोकप्रिय होने लगी।

गोर्की के पास लिखन को मसाला खूब था। अपनी रचनाओ म गोर्की अपने विगत जीवन से प्राप्त अनुभवा का आधार बना कर लिखता। भ्रमण, यात्रा, सघष से प्राप्त अनुभवा का बडा खजाना उसक पास था। उन्ही से वह कहानियाँ गढ़ता।

गोर्की ने 'समारास्काया गजेटा' मे स्थानीय जीवन पर खूब लिखा ।—स्थानीय पार्कों, स्थानीय गुण्डो, ग्रीष्मकालीन थियेटर, अस्पताल और स्थानीय नगरपालिका से सबधित बातो पर लिखता ।

समारा म गोर्की एक प्रकार से निर्वासित जीवन ही बिता रहा था। वह वोल्गा के किनारे एक छोटे से घर म रहता । वह दिन रात परिश्रम करता और अपने काम मे ही डूबा रहता । वह हर समय अपने काम के महत्व के प्रति जागरूक रहता और अपनी जिम्मदारी कभी न भूलता ।

समारा म रहत हुए उसने शेक्सपियर और गटे का गहरे डूब कर अध्ययन किया। डिकेस, मोपासा, थैकरे और ह्यूगो को पढा । लरमनतोव और बारातिन्स्की की कविताएँ रटी और फ्लाउबट और स्टैंढाल जसे फ्रेंच लेखका को खोज कर पढा, जिन्ह तब तक रूस म कोई जानता भी न था ।

धीरे-धीरे गोर्की की रचनाएँ अपनी पहचान बनाने लगी थी ।

यही समारास्काया गजेटा' म काम करते हुए एक घटना घटी । स्मुकिन नामक एक नये कवि स गोर्की बडा परेशान रहता । वह ढेरो कविताएँ बराबर भेजता रहता । गोर्की उन कविताओ के साथ उचित न्याय न कर पाता । फलस्वरूप उसन गोर्की के विरुद्ध चर्चाएँ करके बडा असतोष फैलाया ।

जब गोर्की शुरू मे, पहली बार समारा आया, तब तक समारा के स्थानीय पत्रकारा न सिफ एक पेश्कोव का नाम सुन रखा था, एक कज्जाक अफसर, जिसने साइबेरिया स सेंट पीटसबग तक घोडे की पीठ पर यात्रा करने के लिए नाम कमाया था । तब 'समारास्काया गजेटा' के सम्पादक को यह सफाई कई बार देनी पडी कि उसके विभाग म आने वाला पेश्कोव उस कज्जाक अफसर पेश्कोव स अलग है ।

लेकिन साल भर मे ही गोर्की ने अपना अलग यश का क्षेत्र बना लिया । जब उसका नाम काफी फैल गया तो वाल्गा प्रदेश के विभिन्न अखबारो से उसे अपने साथ आने का न्योता मिला । उसे निग्नी के

अखबार —'निझनोवोगोरदस्की लिस्ताक' स भी न्योता मिला।

निझनी के प्रति गोर्की के मन का आकर्षण अभी भी कम नहीं हुआ था। उसने तत्काल निझनी जाने का निर्णय ले लिया।

इस प्रकार एक बार फिर गोर्की निझनी वापस आ गया।

निझनी आ कर गोर्की ने 'निझनोवोगोरदस्की लिस्तोक' नामक अखबार म काम करना शुरू किया।

लेकिन यहाँ आ कर गोर्की ने पाया कि उसका पूर्व परिचित शहर निझनी-नोवोगारोद अब बदल गया है। सडकों पर बनी रहने वाली चिरपरिचित कूडे की दुर्गंध और सूखी मछलियों की सडाँध की जगह अब सडकों पर फैले कोलतार की गंध और मकानों म हो रही रंगसाजी की गंध ने ले ली है। जिधर नजर जाती, उधर ही दिखता कि मकानों की दीवालों की पुताई हो रही है और चारों ओर सजावट हो रही है।

पता लगा कि नगर मे एक अखिल रूसी औद्योगिक प्रदर्शिनी होने वाली है। उसी के लिए सारे शहर म तयारी हो रही है। रूस देश औद्योगिक प्रगति के एक दौर से गुजर रहा था। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य था कि समस्त योरप को रूस की औद्योगिक उपलब्धियों और रूसी दौलत की शक्ति स परिचित कराया जाय।

एक सूनसान मैदान म प्रदर्शिनी का आयोजन था। प्रदर्शिनी म लगी दूकानें कपडो, जरीदार कीमती कपडो और अन्य चीजों स लदी थीं। चारों ओर जार के जयकारों के झंडे लगे थे।

उस प्रदर्शिनी का उद्घाटन करने निकोलस द्वितीय आया। सभी व्यापारियों ने बादशाह का मोमबत्तियाँ जला कर रंगीन बोतलों की सजावट से स्वागत किया। गिरजा मे उत्सव जसा दृश्य उपस्थित हुआ था। एक प्रकार स यह देश की दौलत और राजा की शक्ति का भोंडा प्रदर्शन था।

उस प्रदेश के सभी अखबारों के कई कई कालम प्रदर्शिनी की

तारीफ मे ही भरे रहते। उनमे भी रूसी साम्राज्य की शक्ति का ही वणन था।

गोर्की ने भी अपने अखबार मे प्रदर्शिनी से सबधित कई लेख छापे। उन लेखो द्वारा गोर्की ने नये दृष्टिकोण से लोगो को सोचने को विवश किया।

गोर्की के लेखो को तत्काल ही देशद्रोही भावना वाली रचना मान लिया गया।

प्रदर्शिनी की चर्चा मे, जहाँ तेल, सोना, चमडा, साबुन आदि का प्रदशन था, गोर्की न जन जीवन की बात शुरू की।

गोर्की जन जीवन से सबधित लगभग सभी बाते अपने व्यक्तिगत अनुभव से जानता था। उसने पाठको की जानकारी के लिए विस्तार से जन जीवन के बारे मे लिखना शुरू किया।

इस समय जब सारा शहर एक उत्सव का नजारा देख रहा था, तब गोर्की ने अपने लेखो के माध्यम से इस चमक-दमक व शान शौकत के पीछे छिपे अधकार की ओर इशारा करना शुरू किया, जहाँ वास्तविक नागरिक कष्टमय जीवन जी रहे थे।

गोर्की के ये लेख खुलेआम जार विरोधी भावना फैलाने वाले समझे गये।

सन् १८६७ के वसन्त म जारशाही सरकार ने गोर्की को गिरफ्तार किया और निझनी स निर्वासित करके तिफलिस भेज दिया। जब गोर्की का मुकदमा हो रहा था तो सेंट पीटसबग की पुलिस के प्रधान कनल केनिस्की ने कहा, 'तुम्हारे पास कोरोलेन्को क पत्र आते हैं। वह हम लोगो का सबसे अच्छा लेखक है।'

सुन कर गोर्की चौक गया। वह अजाब आदमी था। उसने बताया, 'मैं भी कोरोलेन्को के ही गाव का हूँ। हम दोना ही वोल्हीनिया के हैं।'

फिर सन् १६०१ तक कोरोलेन्को से गोर्की की भेंट नही हुई। १६०१ मे गोर्की सेंट पीटर्सबर्ग गया। कोरोलेन्को वही था।

पीटसबग के लगभग सभी मकान पत्थर के थे, लेकिन जाने

कोरोलेन्को ने वहाँ भी लकड़ी का एक मकान खोज ही लिया था। गोर्की पता लगा कर वहीं गया। अब कोरोलेंको बूढ़ा हो गया था। बाल पक गये थे। चेहरे पर झुर्रियाँ उभर आई थीं। चाय की मेज पर बैठे-बैठे ही उसने गोर्की की रचनाओं पर बातें शुरू कीं। बात के बीच ही वह चौंक कर पूछ बैठा, 'क्या तुम मार्क्सवादी हो गये हो?'

गोर्की ने बताया, 'उधर आकर्षित अवश्य हूँ।'

'अच्छा जाने दो, पीटर्सबर्ग कैसा लगा?'

'यहाँ के आदमियों से यहाँ का शहर ही अच्छा लगा।'

'ठीक कहते हो। यहाँ के आदमी रूसी नहीं यौरोपियन अधिक हैं।'

उसकी बातों से गोर्की को लगा जैसे मार्क्सवाद को वह एक मजाक समझता था।

इन्हीं दिनों गोर्की बीमार पड़ा।

उसकी भूख की मारी जवानी, उसका भटकन भरा जीवन, उसके पिछले कठोर जीवन की जानलेवा मशक्कत और अब लेखक के रूप में दिन रात के परिश्रम ने उसके युवा शरीर को बीमारी का अड्डा बना लिया था।

कहा गया कि गोर्की को क्षय-रोग है। उस घातक रोग से लड़ते हुए भी गोर्की कलम चलाता रहा बिना रुके लिखता रहा। उत्साह से वह काम तो करता गया लेकिन उसका शरीर जर्जर होता गया। उसकी बीमारी और दशा देख कर उसके अनेक मित्रों ने यही समझा कि अब वह बचेगा नहीं। डाक्टरों ने आदेश दिया, दक्षिण जाओ।

गोर्की थोड़े दिनों आ कर क्रीमिया में रहा फिर उक्रेईन आ गया—वहीं मैन्यूइलोवका ग्राम में।

मैन्यूइलोवका में गोर्की ने थोड़ी राहत अनुभव की। वहाँ उसे बड़ा सुकून मिला। वहाँ उसे सब कुछ अच्छा लगा—बड़े-बड़े पार्क, बड़े-बड़े पेड़ों के घेरों में रहते उल्लू, नदी, पहाड़ी स्थल, गिरजा में

वजती घटी।

धीरे धीरे वह स्वस्थ हो गया। फिर उठ खडा हुआ।

वह फिर निश्नी नोवोगारोद लौट आया। अपने जीवन और कम म फिर से व्यस्त होने के लिए।

यहाँ आ कर गोर्की ने अपनी समस्त रचनाओ को दो खण्डो मे सगृहीत किया। वडी कठिनाई से वह एक प्रकाशन गृह स नाता जोड पाया, जिसने उसकी कितावें छापने का खतरा उठाना स्वीकार किया, क्योकि अभी तक गोर्की की कोई रचना पुस्तक रूप म नही छपी थी और वह केवल पत्र पत्रिकाओ का ही लेखक था।

गोर्की को अनुभव हुआ कि लिखना जितना आसान है, रचनाओ को प्रकाशित कराना उतना ही कठिन।

अन्तत दो साधारण जिल्दो म उसकी रचनाये छपी। पहले तो लगा कि सब वेकार है, लेकिन जल्दी ही उसकी दोना कितावें समस्त रूस मे, पाठका मे चर्चा का विषय बन गयी। लोगो ने कहना शुरू किया कि रूस के साहित्य क्षितिज पर एक नया सितारा उगा है।

गोर्की की कितावें तेजी से विकने लगी। हजारो की सख्या म छपने भी लगी।

गोर्की की कहानिया म तत्कालीन रूसी जीवन अपनी तमाम कटुता और सत्यता के साथ अवतरित हुआ था। उसने जीवन मे जो देखा, वह लिखा। न कुछ वढाया न कुछ छिपाया। उसका सत्य भी सशक्त था, शक्तिशाली था और यथाथ था। उसकी रचनाओ म मानवता के प्रति विश्वास था। साहित्य के क्षेत्र मे आए इस नये लेखक की शक्ति, ईमानदारी और प्रखरता से पाठक प्रभावित थे।

इस प्रकार पहले प्रकाशन से ही गोर्की के यश का नगाडा बजने लगा। गोर्की का नाम तोलसतोय और चेखव जसे पुराने नामो के साथ साथ लिया जाने लगा।

एक नये लेखक का इस प्रकार निर्माण हुआ।

अपनी प्रारभिक कृतियो से ही गोर्की देश भर म मशहूर और

लोकप्रिय हो गये। गोर्की का नाम लोग आदर से लेते।

रूस के जनजीवन का गोर्की बडी आत्मीयता से अपनी रचनाओ मे चित्रण करते थे। इसका परिणाम हुआ कि उनकी रचनाएँ देश के सुदूर क्षेत्रो मे भी पहुँचने लगी और क्रीमिया, काकेशस, साइबेरिया तक मे उनके प्रेमी पाठको की सख्या बढने लगी। साइबेरिया के राजनीतिक निर्वासितो ने जब गोर्की की कहानियाँ पढी तब उन्हे लगा जसे दक्षिणी सूय की आभा, लहरो की कलकल और 'उस गर्वित गीत की ध्वनि' सुनने का अनुभव किया जो 'भावी विजय का सूचक था'। गोर्की की रचनाएँ सुदूर बसे निर्वासितो के लिए साइबेरिया की भयानक ठडक के बीच कस्बा म जहाँ ठडी कठोर रातो म सिफ कुत्तो क भौंकने की आवाज ही सुनायी पडती थी, वहाँ छाये मौत के सन्नाटे का सामना करने की प्रेरणा बनी। निर्वासन का जीवन बिताते लोगा ने गोर्की की रचनाओ से एक हौसला पाया और वे उनकी कहानियाँ पढ कर आशा से भर उठते।

थोडे ही समय मे बहुत से लोगो के लिए गोर्की की पुस्तकें सान्त्वना का स्रोत बन गयी। लगता था कि गोर्की की रचनाएँ किसी सही रास्ते की ओर इशारा कर के नये माग का रास्ता खोल रही है और लोगो को अनुभव होता कि भावना और विश्वास से भरे स्वर मे उनसे एक ऐसा आदमी उन्ही की भाषा म बातें कर रहा है जो सही रास्ते को जानता है'। क्योकि गोर्की की प्रत्येक पक्ति मे उनके विशाल हृदय का स्नेह छलकता रहता था। यह स्नेह ही बहुत से निराश लोगो के लिए सजीवनी शक्ति बन गया।

रूस के श्रमिको के बीच गोर्की का नाम यो परिचित हो गया जसे वह उन्ही के बीच का नाम हो।

अपनी साहित्य रचना के साथ-साथ गोर्की का राजनीतिक सम्पर्क भी क्रमश बढता गया। अनेक गुप्त क्रातिकारी कार्यों से भी वे अधिकाधिक सम्बद्ध होते गये जुडते गये।

राजनीतिक तथा क्रातिकारी सगठनो के प्रति उनकी विशेष दृष्टि और रुचि थी। राजनीतिक व क्रान्तिकारियो के बीच घुल मिल कर

गोर्की प्रेरणा लेत थे। वे सोरमोवो इन्जीनियरिंग कारखाने म जाते, कारखाने के क्रान्तिकारी अध्ययन मडल और राजधानी से निवासित विद्यार्थिया से सबध रखते और देश की राजनीतिक गतिविधिया का अत्यत गभीरता से व ध्यानपूर्वक अध्ययन करत। वे क्रातिकारियो की तरह-तरह से मदद करते रहते थे। स्थानीय सामाजिक-जनवादी सगठना के लिए वे परचे लिखते, उन्ह छपने मे मदद करते। उन्होंने जब्त किताबा को जुटाने तथा उन्ह वितरित करने की व्यवस्था भी की। इन जब्त किताबा और गैर-कानूनी साहित्य को भी व अपने घर मे ही छिपा कर रखते। इस तरह के खतरे उठान म भी उन्ह एक आन्तरिक सुख का अनुभव होता था। उनने एक परिचित बढई, जो खुद एक पुराना क्रातिकारी था, ने उनके लिए एक विशेष प्रकार की मेज बना दी जिसम जब्त किताबे रखने के लिए गुप्त दराजें थी। वह मेज इतनी चतुराई और कुशलता से बनायी गयी थी कि तलाशी ली जाने पर भी उन दराजो का पता नही चल सकता था।

गोर्की इन दिना मतवाले से हर समय परिश्रम करते रहते। इन्ही दिनो उनकी कहानियो का तीसरा सग्रह छपा जो अत्यधिक लोकप्रिय हुआ।

इन्ही दिनो गोर्की ने बडी मेहनत करके 'फोमा गोर्देयेव' नामक उपन्यास लिखा। इस उपन्यास के सबध मे गोर्की ने स्वय ही एक पत्र म लिखा, 'यह उपन्यास लिखते समय बहुत से ऐसे क्षण आते ह जब मुझे अत्यधिक आनन्द का अनुभव होता है। साथ ही उनसे मेरे भीतर बहुत सदेह और आशका के भाव भी उत्पन्न होते ह। मैं इसे अपने समय के एक सामान्य और व्यापक चित्र के रूप मे देखता हूँ, जिसकी पृष्ठभूमि मे एक सुदढ और शक्तिशाली व्यक्ति अपने चारो ओर की परिस्थितियो से सघर्ष करता हुआ एक ऐसी चीज की खोज मे है जो उसकी शक्ति की बराबरी करे और उसे चुनौती दे। वह अपने चारो ओर के वातावरण मे एक छटपटाहट महसूस करता है क्योकि वह समझ लेता है कि इस तरह जीवन म उसकी तुच्छताओ से पराभूत हो कर साहसी मनुष्य कुचल दिया जाता है।'

लोकप्रिय हो गये । गोर्की का नाम लोग आदर से ले
रूस के जनजीवन का गोर्की बडी आत्मीयता
म चित्रण करते थे । इसका परिणाम हुआ कि उन
सुदूर क्षेत्रो मे भी पहुँचने लगीं और क्रीमिया, का
तक मे उनके प्रेमी पाठको की सख्या बढने र
राजनीतिक निर्वासितो ने जब गोर्की की कहानियाँ
जैसे दक्षिणी सूय की आभा, लहरो की कलकर
गीत की ध्वनि' सुनने का अनुभव किया जो
सूचक था' । गोर्की की रचनाएँ सुदूर बसे निर्वा
बरिया की भयानक ठडक के बीच कस्बा म जहाँ
सिफ कुत्ता के भौकने की आवाज ही सुनायी ।
मौत के सन्नाटे का सामना करने की प्रेरणा बनी ।
बिताते लोगो ने गोर्की की रचनाओ से एक ह
उनकी कहानियाँ पढ कर आशा से भर उठते ।

थोडे ही समय मे बहुत से लोगो के f
सान्त्वना का स्रोत बन गयी । लगता था कि गोर्क
सही रास्ते की ओर इशारा कर के नये मार्ग का
और लोगो का अनुभव होता कि भावना और f
मे उनसे एक ऐसा आदमी उन्ही की भाषा मे द
'सही रास्ते को जानता है' । क्योकि गोर्की का प्र
विशाल हृदय का स्नेह छलकता रहता था । ह
निराश लोगो के लिए सजीवनी शक्ति बन गया

रूस के श्रमिको के बीच गोर्की का नाम
जसे वह उन्ही के बीच का नाम हो ।

अपनी साहित्य रचना के साथ-साथ गोर्की
भी क्रमश बढता गया । अनेक गुप्त क्रान्ति
अधिकाधिक सम्बद्ध होते गये, जुडते गये ।

राजनीतिक तथा क्रान्तिकारी सगठनो के प्र
और रुचि थी । राजनीतिक व क्रान्तिकारियो व

सम्पूर्ण हृदय से धन्यवाद देता हूँ। 'जकल वान्या' बहुत पहले लिखा गया था लेकिन उसे मैंने कभी रगमच पर नही देखा। इधर के वर्षो म वह प्रातीय थियेटरो मे कई बार मचित किया गया। शायद इस-लिए कि मैंने अपने नाटको का सग्रह छपवा दिया है। लेकिन साधारण रूप म मुझे अपने नाटको मे विशेष दिलचस्पी नही है। और बहुत पहले ही मैं थियेटर से भी दिलचस्पी छोड चुका हूँ और अब रगमच के लिए लिखने का मन नही होता।

तुमने पूछा है कि तुम्हारी कहानियो के बारे मे मेरी क्या राय है। मरी क्या राय है? तुमम असदिग्ध प्रतिभा है, वास्तविक, महान प्रतिभा। उदाहरण के लिए, तुम्हारी कहानी 'ऊसर मे' अस धारण शक्तिशाली है। मुझे ईर्ष्या हुई कि इस मैंने क्यो नहीं लिखा। तुम एक कलाकार हो और चतुर आदमी। तुम अद्वितीय ढग स चीजा का अनु-भव करते हो। तुम मुलायम हो, यानी जब वणन करते हो तो लगता है तुम सब कुछ हाथो से छू रहे हो और आँखो से देख रहे हो। यही वास्तविक कला है।

मेरी यही राय है और मुझे खुशी है कि मैं यह व्यक्त कर पा रहा हूँ। मैं बार-बार कहूँगा कि मै बहुत खुश हूँ। अगर हम मिले होते, और एक-दूसरे से घण्टे दो घण्टे बाते कर पात तो तुम दखते कि मै तुम्हारी कितनी अधिक कीमत आकता हूँ और तुम्हारी प्रतिभा के प्रति कितना आशावान हूँ।

क्या अब मैं कमियो की बात करूँ? यह बात बतानी इतनी आसान नही है। किसी की प्रतिभा की कमियो की बात करना उसी तरह है जैसे किसी बाग म बढत एक वृक्ष की कमियो की बात की जाय। क्योकि महत्वपूण बात पेड की नही है, पर उसे जो देखें उनकी रुचि की है। यही बात है है न?

मैं कहना यही से शुरू करूँगा कि मेरी राय मे तुमम आत्मसयम की कमी है। तुम थियेटर के उस दशक की तरह हो जो अपनी प्रति-क्रिया इस असयम से व्यक्त करता है कि अपने को भी और दूसरो को भी सुनने से रोक देता है। आत्मसयम की यह कमी तुम्हारे प्रकृति

गोर्की ने फोमा गोर्देयेव को इसी रूप मे देखा जो सिर्फ इसलिए नष्ट हो जाता है कि वह उन व्यापारियो और जीवन के अन्य मालिको' को स्वीकार नही कर पाता जो सिर्फ एक ईश्वर यानी धन की ही पूजा करते ह ।

गोर्की का यह उपन्यास जब छपा तो उसने अपने ही नगर—नोवोगोरोद—के व्यापारी उससे बुरी तरह क्रुद्ध हो उठे । उन्होने गोर्की का भरपूर विरोध किया और कहा, यह एक खतरनाक लेखक है और इसकी यह किताब हमारे राज्य के विरुद्ध एक षडयंत्र की प्रतीक है। एसे आदमी को निर्वासित कर के साइबेरिया के सब से दूर के स्थान मे भज दिया जाना चाहिये ।'

फोमा गोर्देयेव' लिख कर गोर्की ने यह उपन्यास प्रसिद्ध रूसी लेखक चेखव को समर्पित किया । यद्यपि इस समय तक गोर्की की भेंट चेखव से नही हुई थी, लेकिन गोर्की चेखव से अत्यधिक प्रभावित थे और उनके प्रशसक भी थे ।

चेखव को पुस्तक भेजते हुए गोर्की ने लिखा, मैं आपकी आश्चय जनक प्रतिभा का प्रशसक हूँ । आपकी पुस्तको के साथ मैंने कितने ही आश्चयजनक क्षण विताये ह । कभी-कभी मैं उन्हें ले कर रोया हूँ और कभी-कभी क्द हुए भेडिए की भाँति क्रुद्ध भी हो उठा हूँ । '

चेखव से पत्र का उत्तर पा कर गोर्की की प्रसन्नता की सीमा न रही । एक समय गोर्की अपनी कहानियो के बारे म चेखव की राय जानने को उत्सुक हो उठे । उन्होंने अपनी कहानियाँ चेखव को भेजी और पत्र लिखा । गोर्की के पत्रो के उत्तर म चेखव ने जो पत्र लिखे वे भी उल्लेखनीय हैं ।

गोर्की के एक पत्र के उत्तर म चेखव ने ३ दिसबर १८६८ का जो पत्र लिखा वह यह था

याल्टा
दिसबर ३, १८६८

प्रिय अलेक्सई मैक्सिमोविच,

तुम्हारे पिछले पत्र ने मुझे बडी प्रसन्नता दी । मैं इसके लिए तुम्हे

म्पूर्ण हृदय से धन्यवाद देता हूँ। 'अकल वा या' बहुत पहले लिखा या था लेकिन उसे मैंने कभी रगमच पर नही देखा। इधर के वर्षो वह प्रातीय थियेटरो मे कई बार मचित किया गया। शायद इस-लए कि मैंने अपने नाटका का सग्रह छपवा दिया है। लेकिन साधारण रूप म मुझे अपन नाटको मे विशेष दिलचस्पी नही है। और बहुत पहले से मैं थियटर से भी दिलचस्पी छोड चुका हूँ और अब रगमच के लिए लिखन का मन नही होता।

तुमने पूछा है कि तुम्हारी कहानियो के बारे मे मेरी क्या राय है। मेरी क्या राय है? तुमम असदिग्ध प्रतिभा है, वास्तविक, महान प्रतिभा। उदाहरण के लिए, तुम्हारी कहानी 'ऊसर मे' असाधारण शक्तिशाली है। मुझे ईर्ष्या हुई कि इसे मैंने क्यो नहीं लिखा। तुम एक कलाकार हो और चतुर आदमी। तुम अद्वितीय ढग से चीजो का अनुभव करते हो। तुम मुलायम हो, यानी जब वणन करते हो तो लगता है तुम सब कुछ हाथा से छू रहे हो और आँखो से देख रहे हो। यही वास्तविक कला है।

मेरी यही राय है और मुझे खुशी है कि मै यह व्यक्त कर पा रहा हूँ। मैं बार-बार कहूँगा कि म बहुत खुश हूँ। अगर हम मिले होते, और एक-दूसर से घण्टे दो घण्टे बातें कर पाते तो तुम देखते कि मैं तुम्हारी कितनी अधिक कीमत आकता हूँ और तुम्हारी प्रतिभा के प्रति कितना आशावान हूँ।

क्या अब मैं कमियो की बात करूँ? यह बात बतानी इतनी आसान नहीं है। किसी की प्रतिभा की कमियो की बात करना उसी तरह है जस किसी बाग म बढत एक वृक्ष की कमियो की बात की जाय। क्योकि महत्वपूण बात पेड की नही है पर उसे जो देखे उनकी रुचि की है। यही बात है, है न?

मैं कहना यही स शुरू करूँगा कि मेरी राय म तुमम आत्मसयम की कमी है। तुम थियेटर के उस दशक की तरह हो जो अपनी प्रतिक्रिया इस असयम से व्यक्त करता है कि अपने का भी और दूसरो को भी सुनन स रोक देता है। आत्मसयम की यह कमी तुम्हारे प्रकृति

गोर्की ने फोमा गोर्देयेव को इसी रूप म देखा जो सिफ इसलिए नष्ट हो जाता है कि वह उन व्यापारियो और जीवन के अ"य मालिको' को स्वीकार नही कर पाता जो सिफ एक ईश्वर यानी घन की ही पूजा करते ह।

गोर्की का यह उपन्यास जब छपा तो उसने अपन ही नगर—नोवोगोरोद—के व्यापारी उससे बुरी तरह क्रुद्ध हो उठे। उ"होने गोर्की का भरपूर विरोध किया और कहा, यह एक खतरनाक लेखक है और इसकी यह किताब हमारे राज्य के विरुद्ध एक पडयत्र की प्रतीक है। ऐसे आदमी का निर्वासित कर क साइबेरिया के सब से दूर के स्थान मे भेज दिया जाना चाहिये।'

फोमा गार्देयेव' लिख कर गोर्की ने यह उप"यास प्रसिद्ध रूसी लेखक चेखब को समर्पित किया। यद्यपि इस समय तक गोर्की की भेंट चेखव से नही हुई थी, लेकिन गोर्की चेखब से अत्यधिक प्रभावित थे और उनके प्रशसक भी थे।

चेखब को पुस्तक भेजते हुए गोर्की ने लिखा, मैं आपकी आश्चय जनक प्रतिभा का प्रशसक हूँ। आपकी पुस्तको के साथ मैंने कितने ही आश्चर्यजनक क्षण बिताय है। कभी-कभी मैं उ"हे ले कर रोया हूँ और कभी-कभी कद हुए भेडिए की भाँति क्रुद्ध भी हो उठा हूँ। '

चेखब से पत्र का उत्तर पा कर गोर्की की प्रसन्नता की सीमा न रही। एक समय गोर्की अपनी कहानियो के बारे म चेखब की राय जानने को उत्सुक हो उठे। उ"होंने अपनी कहानियाँ चेखब को भेजी और पत्र लिखा। गोर्की के पत्रो के उत्तर मे चेखब ने जो पत्र लिखे वे भी उल्लेखनीय है।

गोर्की के एक पत्र के उत्तर म चेखब ने ३ दिसबर १८९८ को जो पत्र लिखा वह यह था

याल्टा
दिसबर ३, १८९८

प्रिय अलेक्सेई मैक्सिमोविच,

तुम्हारे पिछले पत्र ने मुझे बडी प्रसन्नता दी। मै इसके लिए तुम्हे

सम्पूर्ण हृदय से धन्यवाद देता हूँ। 'अकल बाप्या' बहुत पहले लिखा गया था लेकिन उसे मैंने कभी रगमच पर नही देखा। इधर के वर्षों म वह प्रान्तीय थियेटरो म कई बार मचित किया गया। शायद इस-लिए कि मैने अपने नाटका का सग्रह छपवा दिया है। लेकिन साधारण रूप मे मुझे अपने नाटको मे विशेष दिलचस्पी नही है। और बहुत पहले ही मैं थियेटर से भी दिलचस्पी छोड चुका हूँ और अब रगमच के लिए लिखने का मन नही होता।

तुमने पूछा है कि तुम्हारी कहानियो के बारे मे मरी क्या राय है। मेरी क्या राय है? तुमम असदिग्ध प्रतिभा है, वास्तविक, महान प्रतिभा। उदाहरण के लिए, तुम्हारी कहानी 'ऊसर मे' अस धारण शक्तिशाली है। मुझे ईर्ष्या हुई कि इसे मैने क्यो नही लिखा। तुम एक कलाकार हो और चतुर आदमी। तुम अद्वितीय ढग स चीजो का अनु-भव करते हो। तुम मुलायम हो, यानी जब वणन करते हो तो लगता है तुम सब कुछ हाथा से छू रहे हो और आंखो से देख रहे हो। यही वास्तविक कला है।

मेरी यही राय है और मुझे खुशी है कि मैं यह व्यक्त कर पा रहा हूँ। मैं बार-बार कहूँगा कि मैं बहुत खुश हूँ। अगर हम मिल होते, और एक-दूसरे से घण्टे दो घण्टे बात कर पात तो तुम देखते कि मैं तुम्हारी कितनी अधिक कीमत आँकता हूँ और तुम्हारी प्रतिभा के प्रति कितना आशावान हूँ।

क्या अब मैं कमियो की बात करूँ? यह बात बतानी इतनी आसान नही है। किसी की प्रतिभा की कमियो की बात करना उसी तरह है जस किसी बाग म बढते एक वृक्ष की कमियो की बात की जाय। क्योकि महत्वपूण बात पड की नही है, पर उम जो देखें उनकी रुचि की है। यही बात है, है न?

मैं कहना यही से शुरू करूँगा कि मेरी राय म तुमम आत्मसयम की कमी है। तुम थियेटर के उस दशक की तरह हो जो अपनी प्रति-क्रिया इस असयम से व्यक्त करता है कि अपन का भी और दूसरा को भी सुनने से रोक देता है। आत्मसयम की यह कमी तुम्हारे प्रकृति

चित्रण मे स्पष्ट है। जब हम तुम्हारे इस चित्रण को पढ़ते हैं, तो हम उन्हें और चुस्त, छोटा, दो तीन लाइनों में चाहते हैं। तुम्हारे अनेक चित्रण ठण्डी हवा के, गुनगुनाहट के, मखमलीपन आदि चित्रण को जैसे ऊबाऊ और थकाऊ बना देते हैं।

आत्मसंयम की यह कमी औरतों और प्यार के चित्रण में भी स्पष्ट है। जैसा तुम सोच सकते हो, ऐसा नहीं है कि मात्र आत्मसंयम की ही कमी है बल्कि बार-बार प्रयोग किए गये शब्द भी तुम्हारी कहानियों में, जैसी वे हैं, ठीक नहीं बैठते। तुम अक्सर असंयमित लहरों की तरह लगते हो। जब तुम बुद्धिजीवियों का चित्रण करते हो तो लगता है जैसे कहीं उत्तेजना है या तुम बहुत सतर्क हो। यह इसलिए नहीं है कि तुमने बुद्धिजीवियों को कम देखा है। तुम उन्हें खूब जानते हो। लेकिन उन्हें कैसे पकड़ा जाय, शायद यह नहीं जानते।

तुम्हारी उम्र क्या है? मैं तुम्हें नहीं जानता, नहीं जानता कि तुम कहाँ के हो, तुम कौन हो? लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें बहुत कम उम्र में ही जिंदगी छोड़ देना पड़ा है। साहित्य और साहित्य की दुनिया के लोगों के साथ दो या तीन वर्ष रहो, उनके साथ कंधे रगड़ो। इस उद्देश्य से नहीं कि हमारे कामों से कुछ सीखो, और बड़े कलाकार बनो, बल्कि इसलिए कि साहित्य में डूबो और साहित्य से प्यार करो। क्षेत्रीय सीमा आदमी को जल्दी ही उम्रदराज बनाती है। कोरलेंको, पोतापेंको, मेनीन, अर्तेल—सभी आश्चर्यजनक लोग हैं। प्रारम्भ में शायद तुम ऊबोगे जब उनका साथ करोगे, लेकिन साल-दो साल में तुम्हें अभ्यास हो जायगा और तुम योग्यतानुसार उनकी कीमत जान सकोगे। और तमाम असुविधाओं के बदले में तुम्हें बहुत कुछ मिल जायेगा।

मैं डाकघर जाने की जल्दी में हूँ। अभी मैं तुम्हारे स्वास्थ्य व प्रसन्नता की कामना करता हूँ। फिर एक बार तुम्हें पत्र के लिए धन्यवाद देता हूँ।

तुम्हारा
ए० चेखव

इसके ठीक एक महीने बाद चेखब ने एक और पत्र गोर्की को लिखा जो इस प्रकार है

याल्टा
जनवरी ३, १८८८

प्रिय अलेक्सेई मैक्सिमोविच,

मैं तुम्हारे दोनो पत्रो का एक साथ उत्तर दूँगा। सवप्रथम मुझे नये वप की शुभकामनाए देने दो। मैं तुम्हारी खुशी की कामना करता हूँ, नई व पुरानी जो भी तुम चाहो।

तुम स्वाध्ययी हो। तुम्हारी कहानियो से लगता है कि तुम सच्चे कलाकार हो और सचमुच होशियार हो। तुम चतुर हो और चीजो को कोमलतापूवक अनुभव करते हो। तुम्हारी बढिया चीजे हैं—'ऊसर म' और 'बेडे पर'—क्या मैंने इनके बारे मे तुम्ह लिखा है ? वे अद्वितीय ह, महान कृतिया, बताती हैं कि कलाकार ने अच्छी साधना की है। शायद मैं गलती नही कर रहा, एकमात्र कमी है आत्मसयम की।

तुम्हारा प्रकृति चित्रण कलामय है। तुम वास्तव म प्रकृति के कलाकार हो। लेकिन बहुत कुछ आत्मपरक है, समुद्र गजन, आकाश, ऊसर, प्रकृति की वात आदि, चित्रण का ढीला करता है। रगीन और प्रभावपूण चित्रण तभी होता है जब बहुत साधारण शब्दो का प्रयोग हो, जैसे 'डूबता सूरज', 'अँधेरा हो रहा है', 'वर्षा शुरू हुई' आदि। तुमम यह सब है, जो दूसरे लेखको म नही है, लेकिन उन्ह और विकसित करो।

अब रही यायावरी की बात। भ्रमण बहुत लुभाने वाली चीज है लेकिन आदमी की जसे-जैस उम्र बढती है तो वह बजनी होने लगता है और एक ही जगह जमना चाहता है। और साहित्यिक पेशा तो आदमी को दबोच लेता है। जब असफलताएँ और निराशाएँ आती ह तो समय जल्दी बीतता है। तुम असली जिन्दगी नही देख पाते और तब अतीत अपना नही लगता दूसरे का लगता है।

मेरी डाक आ गयी। अब अपनी चिट्ठियाँ और अखबार पढूँगा। तुम्हारी खुशी और स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। तुम्ह धन्यवाद, पत्रो के

लिए और इसलिए कि तुम्हारे कारण ही हमारा पत्र व्यवहार बढ़ रहा है।

तुम्हारा
ए० चेखव

सचमुच गोर्की चेखव से बहुत प्रभावित थे। गोर्की मानते थे कि तोल्सतोय और चेखव का समकालीन होना उनके लिए परम सौभाग्य की बात थी।

सन् १८०० म अपनी मास्को यात्रा के समय गोर्की ने तोल्सतोय से भेंट की। उस समय तोल्सतोय बहत्तर साल के थे, लेकिन गोर्की को वे अलौकिक पुरुष लगे। तोल्सतोय से भेंट कर के गोर्की ने अपने प्रभाव को चेखव को लिखे एक पत्र मे यो लिखा 'तोल्सतोय से मिलना बहुत महत्वपूर्ण और उपयोगी है। उनकी ओर देखते हुए हर व्यक्ति अपने को यह सोच कर सौभाग्यशाली समझता है कि उसे मनुष्य का जन्म मिला है, कि मनुष्य तोल्सतोय जितना ऊंचा उठ सकता है।'

गोर्की से मिल कर तोल्सतोय भी बड़े प्रभावित हुए। उन्होने अपनी डायरी मे लिखा, गोर्की मिलने आये। उन्होंने बहुत अच्छी तरह बातें की। मुझे वे बड़े पसन्द आये। जनता के बीच के एक वास्तविक आदमी।'

इस प्रकार इस बीसवी शताब्दी के प्रारंभ म गोर्की एक प्रतिभावान लेखक और साधारण जन व फटेहाल और उत्पीडित लोगो के प्रवक्ता के रूप म जाने जाने लगे।

बीसवी शताब्दी अपने साथ बहुत से आंधी-तूफान, बहुत सी क्रान्तियाँ ले कर आयी। सन् १६०१ म ही क्रान्तिकारी जनो से गहरे सपर्क के कारण गोर्की को स्पष्ट रूप से भासित होने लगा कि क्रान्तिकारी आन्दोलन म एक नया उभार अब बहुत निकट है और पीडित जनसमूह म नयी चेतना आ रही है। अब गोर्की को लगा कि एक लेखक के नाते आने वाली क्रान्ति के प्रति उन्हे एक विशेष भूमिका निभानी है। अत गोर्की ने कुछ नया और साहसपूर्ण लिखने की योजना बनायी।

इसी भावना से प्रेरित हो कर गोर्की न एक क्रातिकारी रचना की—तूफानी पक्षी का गीत। यह रचना सचमुच बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई। एक तूफानी पक्षी तूफान की प्रतीक्षा मे आनन्द लेता है, चीखता है। उसकी चीख इस बात की सूचक है कि तूफान निकट है। इस क्रातिकारी कथा की कुछ पक्तिया ह

'लहरा के निस्सीम विस्तार के ऊपर हवा तूफानी बादलो को जमा कर रही है। बादला और समुद्र के बीच गव से तना हुआ तूफानी पक्षी इस तरह उडान भर रहा है, मानो काली बिजली कौध रही हो। इस चीख मे बादल रोष की शक्ति, तीव्र भावना की ज्योति और विजय म विश्वास का अनुभव करते हं।'

'उमडते हुए तूफान के बादल समुद्र की सतह पर गहराते हुए नीचे उतर रहे है और गाती हुई लहरें ऊपर उठ कर तूफानी बादलो को पकडने की कोशिश कर रही हैं।'

'तूफान बहुत निकट है और वह जल्दी ही आने वाला है।

गोर्की सचमुच अनुभव कर रहे थे कि तूफान निकट आ गया ह।

इस समय गोर्की की उम्र ततीस वप की थी। जब तक उनकी जो कृतियां प्रकाशित हुई थी, उन्होंन उन्ह भावी महान लेखक के रूप मे स्थापित कर दिया था। अपनी रचनाओ म अब गार्की बहुत स्पष्ट शब्दो मे जन साधारण के कष्टमय जीवन के कटु सत्य को बडे साहसपूण ढग से प्रस्तुत करते थे। व उन सभी लोगो की खुल कर निमम आलोचना भी करत थे जो धन, सम्पत्ति, वैभव, प्रतिष्ठा की अपनी प्यास बुझाने के लिए गरीबो और दलित लोगो का उपहास करते और उन्ह सताते थे। 'उनकी लेखनी से कुछ निकृष्ट और तुच्छ कूपमडूका का भी चित्रण हुआ जो दूसरा की आत्माओ म जहर घोलते थे, उन्ह दबाये रखने का प्रयत्न करते थे ताकि वे साहसी, मुक्त और उदात्त न होने पावे।'

इस कहानी का सवत्र खूब स्वागत हुआ और दखन देखते गोर्की एक शक्तिशाली लेखक, युग के प्रतिनिधि लेखक के रूप म प्रसिद्ध हो गये।

जेल और निर्वासन

एक लेखक क रूप मे गोर्की का नाम दिन दूने रात चौगुने, अतीव तीव्रता स फलन लगा। और उनकी यह प्रसिद्धि, यह लोकप्रियता जार-सरकार के लिए एक सिरदद, एक बन्ती परेशानी और तीव्र चिन्ता व उलझन का विषय बनती गयी।

जारशाही अधिकारियो को अनुभव हाता, जस गोर्की के रूप म उनका कोई महान शत्रु अपना प्रभाव प्रतिपल बढ़ाता जा रहा है। उनके सिरदद और परेशानी की सीमा न रही। अन्तत भीतर हा भीतर पनपने वाना यह दुश्मनी का भाव एक समय एसा रूप धारण करके प्रकट हुआ कि जारशाही और नौजवान लखक गोर्की क बीच एक खुली लडाई, एक युद्ध सा होना प्रारभ हुआ। फिर एक बार शुरू हुआ यह युद्ध लगभग पूरे बीस वर्षों तक चलता रहा।

अफानास्येव नामक एक क्रान्तिकारी मजदूर तिफलिस म गिरफ्तार किया गया। जब पुलिस न उस मजदूर के कमरे की तलाशी ली तो पुलिस क हाथ एक तस्वीर पडी जिस पर मैक्सिमोविच के हस्ताक्षर थे, आर हस्ताक्षर करके वह चित्र अफानास्येव को भेंट किया गया था।

वह तस्वीर पाकर पुलिस और खुफिया विभाग के अफसरो ने जान तोड परिश्रम करके यह पता लगाना शुरू किया कि मैक्सिमोविच नामक यह व्यक्ति कौन है जिसका यह चित्र है और जिसने भेट दे कर चित्र पर हस्ताक्षर भी बनाये ह।

काफी समय लगा कर और खूब परिश्रम करके पुलिस न अतत पता लगा ही लिया कि 'मैक्सिमोविच' हस्ताक्षर करने वाला व्यक्ति और कोई नही, आजकल लेखक के रूप मे प्रसिद्धि पाने वाला मैक्सिम गोर्की ही है।

जब गिरफ्तार मजदूर से गोर्की का सबध जोड कर पुलिस ने गोर्की के घर की तलाशी ली।

गोर्की के घर की बूढी नौकरानी ने इस तलाशी का यो वणन किया है। काफी रात गय, रात म तेजी से दरवाजा खटखटाये जाने पर हमारी नीद खुल गयी। मैक्सिमोविच ने स्वय ही उठ कर सामने का दरवाजा खोला। जब पुलिस क सिपाहियो को घर मे घुसा देखा तो मैं उठ कर उनके लिखन पढने के कमरे म गयी, जहाँ मैन देखा कि मैक्सिमोविच अपनी लिखने की मज पर कुहनियाँ टेके बैठे थे और सिपाहिया की पूछताछ का जवाब देते हुए उन्होने मुस्करा कर कहा आप सारी दराजें भी खोल कर देख लें।

उस रात को, तलाशी रात एक बजे से सवेरे आठ बजे तक बरा-बर होती रही। सिपाहिया ने पूरे घर का कोना-कोना छान डाला और अत म अलेक्सेई मैक्सिमोविच के पत्रो और साहित्य सबधी नोटो के कई बडल पुलिस उठा ले गयी। और फिर पुलिस न गोर्की को गिरफ्तार भी कर लिया।

गोर्की को निश्नी नोवोगोरोद म गिरफ्तार करके तिफलिस ले जाया गया। वहाँ उन्ह मतख किले म बन्द रखा गया। यह किला एक जेल था जो खतरनाक राजनीतिक बदियो के लिए सुरक्षित रखा गया था।

गोर्की एस खतरनाक राजनीतिज्ञ तो न थ, मात्र एक लेखक थ, फिर भी सरकार न उन्ह यह गौरव क्यो दिया, यह गोर्की भी

नही समझ सके। अपने सेल म टहलते हुए गार्की अक्सर यही सोचत। कभी-कभी गोर्की अपनी सेल क झरोखे से झांकते तो उन्ह उस भयानक जेल की मनहूस दीवाल, कुरा नदी का गदला पानी और नदी किनारे के लकडी के घरा की छतें भर दिखाई पडती।

और जब गोर्की अपनी सेल म टहलते होते तो जेल वाडर, पहरेदार अपनी चाभियो के गुच्छे को बजाता हुआ सेल क बाहर चहलकदमी करते हुए इधर से उधर और उधर से इधर टहलता रहता। और बिना कारण ही कभी-कभी वह गोर्की पर नाराज हो कर चिड चिडाते हुए कहता, 'अभी इस तरह तुम्ह दस साल तक यही सडना पडेगा।'

यदि खुफिया पुलिस तिफलिस के गिरफ्तार मजदूर आफानास्येव के साथ गोर्की का सबध जोडन म सफल हो सकती तो अवश्य ही जेल वाडर की बद-दुआ गार्की को लगती और सचमुच ही कइ वर्ष उन्ह उस किले-जेल मे सडना पडता, लेकिन सौभाग्य की ही बात था कि बहुत प्रयत्न करने पर भी पुलिस गोर्की के विरुद्ध मनचाहे प्रमाण नही जुटा सकी और उस निराश हाना पडा। और अत म उन्ह गोर्की को मुक्त करना पडा।

मतेख किले से मुक्ति पा कर गोर्की फिर निझनी नोवोगोरोद लौट आये। लेकिन इतने पर भी पुलिस की कृपा उन पर कम नही हुई और खुफिया विभाग ने उनकी निगरानी करनी शुरू की। पुलिस को पूरा शक या विश्वास था कि गार्की अवश्य ही सरकार विरोधी कार्य करते ह।

यद्यपि पुलिस गोर्की क खिलाफ कोई प्रमाण न पा सकी, लेकिन उसकी चौकसी किसी प्रकार भी ढीली नही हुई। पुलिस के सिपाही अजीब अजीब कपडे पहन कर, अजीब अजीब शकले बना कर हर समय उस लकडी के दामजिले मकान की परिक्रमा करते रहत थे जिसम गोर्की रहते थे। उनम स कोई घर के सामने की बेंच पर बैठा बमतलब घटा आकाश की ओर निहारने का बहाना करता, कोई एक लैम्प के खभे के सहारे खडा हो कर एक ही अखबार को घटो यो

पढता रहता जैसे वह अखबार का एक भी छपा अक्षर बिना पढे न छोडेगा। कभी कभी एक बग्घी का गाडीवान आता और वह अजीब हा व्यवहार करता। वह प्रसन्नतापूर्वक गोर्की या उनक यहा आने-जाने वाला को बिना किराया लिए ही कही पहुँचा देने का आग्रह करता। वे सभी, वह आकाश देखने वाला, वह अखबार प्रेमी पाठक वह गाडीवान सभी खुफिया विभाग के सिपाही थे, गुप्तचर थे जो गोर्की और उनके यहा आने जाने वालो की एक एक गतिविधि पर सतक निगाह रखते थे।

यह कोई आसान काम भी न था। क्योकि गोर्की के पास आने वालो की भी सख्या कम न थी। समाज के हर वर्ग के लोग उनसे मिलने आते। ऐसे लोगो से गोर्की का अपना कमरा भरा रहता। इन आने वालो म मजदूर थे, किसान थे, अभिनेता थे, कलाकार थे, विदेशी पयटक थे, स्कूलो के विद्यार्थी थे, लडकियाँ थी, व्यापारी थे। इस समय की स्थिति का चित्रण गोर्की न अपने एक पत्र म किया है जो उ होन निज्नी नोवागोरोद से लिखा है

' तरह-तरह के लोगा की भीड हर रोज मेरे पास मुझसे मिलन आती। कोई किताब लेने आता, कोई कविताएँ सुनाने आता। कभी कभी निर्वासन से लौटा एक प्रेस कम्पोजीटर आदर भाव से मिलने आता। एक उच्च सरकारी अफसर की बीबी गर-कानूनी परचो का बडल ले कर आती, उसके पीछे पीछे एक दर्जिन आती जिस पर जल्दी ही मुकदमा चलने वाला है। और दर्जिन के बाद आता स्थानीय फौजी छावनी का कमाण्डर जो अपन जवानो क मनोरजनाथ एक नाटक के आयोजन की व्यवस्था करने का आग्रह करता। कभी-कभी बगरोव नामक व्यापारी महाजन आता और मुझे खुदा के सबध मे *आत्मियता से बाते करने को निमत्रित करता* फिर आता नाटक क्लब का अध्यक्ष स्मेलिंग, जिसने ठीक कपडे न पहने होने के कारण पिछले साल मुझे नाटक घर मे नही घुसने दिया था, वह अब आग्रह करता है कि मैं उसके क्लब की औरता का समझाऊँ जो उसका कहना नही मानती। और मैं किसी क

भी आग्रह को नही ठुकराता, किसी स किसी बात के लिए इ कार नही करता। और अब तो नौबत यहाँ तक आ गयी है कि उस उच्च सरकारी अफसर की बीवी ने व्यवस्था कर दी है कि निर्वासन से लौट उस कम्पोजीटर को जार के सरकारी प्रेस म काम मिल जायेगा जहा वह प्रेस मजदूरा के बीच क्रातिकारी प्रचार काय करेगा। महा-जन बगराव उ ह किताबो के लिए रुपय देगा। मैंने नाटक-क्लब के अध्यक्ष स्मलिग स वायदा किया है कि उसके लिए मैं नाटक की औरता स हुज्जत करूँगा और इसके बदले वह दर्जिन को एक सिलाई की दूकान खुलवान का इ तजाम करेगा। मैं उसके नाटको मे और तरह स भी मदद दूँगा और वह क्रिसमस म मुझे नाटक घर म साव-जनिक उत्सव करने म मदद देगा।'

गोर्की न एक योजना बनाई कि क्रिसमस म निझनी नोवागोरोद के गरीब बच्चा के लिए समारोह करेंगे। गोर्की उन गरीब बच्चा को भी दूसरो की तरह त्योहार म खुश रखना चाहते थे। गोर्की के कमरे म कई बक्सा म गरीब बच्चा के लिए खिलौने और उपहार भरे रख थे। गोर्की इसी उत्सव की तयारी म व्यस्त थ।

क्रिसमस आया। क्रिसमस वृक्ष बना कर उसे हरे रगीन बिजली के बल्बो से सजा दिया गया। उस उत्सव म करीब पाँच सौ बच्च शामिल हुए। झोपडिया म उदास और अभाव की जिदगी जीने वाले गरीब बच्चे खुशी से नाच रहे थ। एक मजदूर बस्ती के बच्चे गोर्की के नाम का बैनर ले कर जुलूस बना कर आये थे।

बच्चे प्रसन्न थे और गोर्की उन्हे उदास आँखो से निहार रहे थे। इस उत्सव के सबध म गोर्की ने अपने सस्मरण म लिखा

' क्रिसमस वृक्ष क पास बिछी बडी-बडी मजा पर लदे ढेर सारे उपहारो को गरीब बच्चे देख कर हैरान थे। क्रिसमस वृक्ष खूब सजाया गया था। वे खासत हुए और हसते हुए मजो के चारो ओर घूम रहे थे, चुपचाप शातिपूवक लेकिन उनकी आँखो म उत्सुकता थी, खुशी की झलक थी।

' जब उन गरीब बच्चा को उपहार की चीजें दी गईं—

हरेक को एक एक केक, एक एक पैकेट मिठाइयाँ (करीब डेढ पौड), एक जोडी जूते, कमीज, ब्लाउज, टोपी, शाल तो अनेक तो खुशी के मारे रो पडे थे। कुछ उन चीजो को छाती से चिपका कर नाच उठे थे, कुछ जमीन पर ही बैठ कर मिठाई खाने लगे थे।'

गोर्की ने बच्चो के मनोरजनाथ एक एलबम बनाया था। पत्रिकाओ से रगीन चित्र काट-काट कर एलबम म चिपकाया था जिसे देख कर बच्चे खुश होते थे। गोर्की ने लिखा, 'उन्होने दुनिया का कुछ नही देखा। लेकिन एलबम मे वे सब शहर, नदी और पहाड देखते वे तरह तरह के लोगो के बारे म जानना चाहते।'

बच्चो ही नही बूढो के लिए भी जो बेरोजगार और बेघर थे, गोर्की ने एक सावजनिक स्थान पर एक पुस्तकालय बनाया एक पियानो रखा वहाँ गरीब लोग भी अपने को आदमी समझते।

लेकिन क्रिसमस का उत्सव, एलबम और पुस्तकालय भी पुलिस के लिए समस्या ही बन गये। गोर्की यह सब क्यो करते है? यह भी तो जार के विरुद्ध कोई षडयत्र नही है? अब पुलिस और सतक रहती कि आखिर गोर्की क्या करते रहते ह।

गोर्की ने फिर नियमित रूप से निझनी नोवोगोरोद की मजदूर बस्ती सोरमोवो म जाना-आना शुरू किया। यहाँ गोर्की ने मजदूरो के बीच एक अध्ययन गोष्ठी चालू की। वहा लोग सामूहिक रूप से 'इस्करा' नामक समाचार-पत्र पढते जिसम क्रातिकारी नेता लेनिन के लेख छपते थे। यह समाचार पत्र खूब पतले झीने कागज पर छपता था ताकि पुलिस का छापा पडने पर उसे आसानी से मोड कर मुँह म रख कर निगला जा सके।

सोरमोवो के मजदूर भी अक्सर गोर्की के घर आते। वे आते और गोर्की से बहुत सी बाता पर राय लेते, किताबें लते, चदा लेते। गोर्की प्रसन्न मन उनकी सहायता करते।

सन् १८०१ म गोर्की सेंट पीटर्सबग गये। इस राजधानी म रहते

समय एक दिन गार्की न क्रान्तिकारी विद्यार्थियो के एक जुलूस पर पुलिस द्वारा निममता स शस्त्र प्रहार कर के विद्यार्थियो को घायल करते देखा। तब गोर्की ने एक लेख लिख कर सरकार की भत्सना की और सरकार को ही इस काण्ड मे लिए जिम्मेदार ठहराया। फिर इसी घटना को आधार बना कर गोर्की ने 'तूफानी पक्षी का गीत' नाम से एक क्रान्तिकारी कहानी लिखी। उसी म लिखा

'तूफान ! तूफान जल्दी ही आयेगा।'

यह कहानी अप्रैल १६०१ म 'झिज्न' पत्रिका मे छपी। और उसके छपते ही पुलिस गोर्की के पीछे हाथ धो कर पड गयी। अब गोर्की का सेट पीटसबग म रहना मुश्किल हो गया तो वे फिर निश्नी नोवोगोरोद के लिए चल पडे। अपने साथ वे इस बार पुलिस की आँखो म धूल झोक कर, चुरा कर छपाई की एक डुप्लीकेटिंग मशीन भी साथ ले आये, जो प्रेस की सुविधा न रहने पर क्रान्तिकारियो के पर्चे छापने के काम मे आयी।

बाद मे इस मशीन की खबर खुफिया पुलिस को लग गयी।

तत्काल ही राजद्रोह के अभियोग म गोर्की को पुलिस ने गिरफ्तार किया और निझनी नोवोगोरोद जेल म डाल दिया। इन दिना गोर्की यद्यपि बीमार थे, लेकिन उन्हे 'खतरनाक कैदी' का दर्जा दे कर बडे कष्ट म रखा गया। अब उनके हर पत्र की खुफिया पुलिस जाँच करने लगी।

गोर्की की इस गिरफ्तारी से सारे रूस देश के प्रगतिशील लोगा और जनता म भी रोष और क्षोभ का तूफान आ गया। कहा गया कि गोर्की को क्षय रोग है। उनके दोस्तो को पता था कि गोर्की बीमार थे और जेल के कष्टमय जीवन स उनका रोग और बढ़ जायगा। अत सार दश म गोर्की की गिरफ्तारी को ले कर विरोध की एक लहर सी आ गयी। वृद्ध लेखक तोलसतोय ने भी युवक लेखक गोर्की के पक्ष मे जोरदार आवाज उठायी।

तोलसतोय के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप और जनता क क्षोभ से डर कर जारशाही सरकार को झुकना पडा। सरकार ने गोर्की की रिहाई की

घोषणा की। गिरफ्तारी के कई महीने बाद नवबर १९०१ मे गोर्की को सूचना दी गई कि वे जेल स तो मुक्त किए जाते हैं पर उन्हे अपने घर मे नजरबद रखा जायगा।

अब जेल से निकल कर गोर्की घर मे कदी बना दिए गये। उनके घर पर पुलिस का पहरा बैठा। पहरा ही नही, सोने के कमरे व रसोई-घर म भी पुलिस के सिपाही तैनात किए गये। एक सिपाही उनके लिखने-पढने के कमरे म भी बैठा रहता और उन्हे लिखते-पढते समय टोक कर बहसो म उलझाने की कोशिश करता।

लेकिन घर की कैद म भी गोर्की ने लिखने का सिलसिला फिर से चालू किया। व रात को बहुत देर तक लिखते रहते। अब पुलिस को और भी हैरानी और परेशानी होने लगी। उनके घर पर तैनात पुलिस अफसर ने अपने अधिकारी को रपट भेजी— वह हर समय लिखता रहता है। रात को भी, सारी रात भी।'

एक दिन छिप कर महाजन बेगरोव गोर्की के पास आया और तनिक रोष मे बोला, तुम समय बरबाद कर रहे हो। तुम्हारा काम सिर्फ घटनाओ को चित्रित करने वाला है। ये घटनाएँ ही क्रांति लायेगी।'

पुलिस से घिरे रहने के बावजूद भी गोर्की का सम्पर्क क्रांति-कारियो से बढता रहा। और गोर्की उन्हे बराबर सलाह देते रहे। पुलिस और खुफिया पुलिस अपनी तमाम कोशिशो के बाद भी गोर्की के कामो को रोकने म असमर्थ थी। तब निझनी नोवोगोरोद के उच्च पुलिस अधिकारी ने सेंट पीटर्सबर्ग के अन्य उच्च अधिकारी को लिखा, 'मजदूरो म उसका प्रभाव दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। किसी भी दिन कोई भयानक काण्ड हो सकता है।'

तब सरकार ने निश्चय किया कि जैसे भी सभव हो गोर्की को निझनी नोवोगोरोद से दूर हटा दिया जाय और कहीं ऐसी जगह भेज दिया जाय ताकि क्रांतिकारी मजदूर उन तक पहुँच न सकें। तब गोर्की को आदेश दिया गया कि वे अर्जामास जाएँ। अर्जामास एक शात कस्बा था जहाँ अधिकाश पादरी, नासमझ देहाती और अवकाश

प्राप्त सरकारी अफसर ही रहते थे।

गोर्की पर लगाय गये इस सरकारी आदेश पर क्रान्तिकारी नेता लेनिन ने बहुत क्षुब्ध हो कर वक्तव्य दिया

' योरप का एक शीर्षस्थ लेखक जिसका एकमात्र हथियार है—वाणी की स्वतंत्रता, उस पर भी बिना मुकदमा किए अत्याचारी सरकार प्रतिबंध लगा रही है।'

जेल मे और नजरबंदी म जितने दिन भी रहना पडा, उससे गोर्की की बीमारी और बढ गयी। डाक्टरो न राय दी कि उनकी हालत गभीर होती जा रही है और आवश्यक हो गया है कि उन्ह इलाज के लिए दक्षिण भेज दिया जाय। तब जनता, गोर्की के दोस्तो और तोलसतोय ने सामूहिक रूप से सरकार पर जोर दिया और विवश हो कर सरकार न इजाजत दी कि गार्की कुछ महीन क्रीमिया म जा कर रह।

गोर्की क्रीमिया जाने को तयार हुए।

लेकिन क्रीमिया जाते समय गोर्की को विदा करते समय जनता की भीड प्रदशनकारियो की भीड बन गयी। रल टीसन पर विद्यार्थियो, मजदूरा की गाडी छूटने के घटा पहले ही भारी भीड जुट गयी। बीमार व कमजोर गोर्की को भीड से बचा कर कठिनाई स रेल के डिब्बे तक लाया जा सका। जनता ने खूब ही क्रान्तिकारी नार लगाय। पुलिस इतना घबरा गयी कि उसने समय से पहले ही गाडी चलवा दी। जिस डिब्बे म गोर्की थ उसम पुलिस का पहरा लगा दिया गया। जब गाडी छूटी तो टीसन जनता के नारो मे गूँज रहा था

—मैक्सिम गोर्की, जिन्दाबाद!

—क्रूर शासन का नाश हो!

गोर्की क्रीमिया म रह रहे थे, तभी एक अजीब व शमनाक घटना घटी। इस घटना से पता लगा कि रूस का तत्कालीन क्रूर शासन तूफानी पक्षी का गीत' के लेखक के प्रति कसा विद्वेषपूर्ण व्यवहार

रखता था।

हुआ यो कि १६०२ मे रूस को 'विज्ञान अकादमी' ने गोर्की को अपना सम्मानित सदस्य मनोनीत किया। एक व्यक्ति जो कई बार राजद्रोह के लिए जेल-यात्रा कर चुका हो, उसे ऐसा सम्मान दिया जाय, इस बात पर सरकार क उच्च अधिकारियो के बीच जैसे एक भयानक तूफान बरपा हो गया। बात यहाँ तक बढी कि मामला जार के सामने तक गया। गोर्की की 'विज्ञान अकादमी' की सदस्यता की खबर अखबारो म छपी तो जार को दिखाई गयी, जिसे पढ कर जार निकोलस द्वितीय ने अपने शिक्षा मत्री को लिखा

' यह घटना तो हद से बाहर जाने वाली बात है। आज की उपद्रव की परिस्थिति म ऐसे व्यक्ति को अकादमी मे यह सम्माननीय स्थान दिया जाना कोई तुक की बात नही है। मैं सारे मामले से बहुत कुपित हुआ हूँ।'

अकादमी की सदस्यता से गोर्की का नाम हटा देने को इतना ही काफी था। अकादमी के पदाधिकारियो न भी कायरतापूण चुप्पी साध ली। सिफ दो लेखको ने इस धमकी को अस्वीकार करने की वीरता दिखायी। ऐंटन चेखव और व्लेदिमीर कोरोलेन्को—जिन्होने अकादमी की सदस्यता से गोर्की का नाम हटाये जाने पर विरोध व्यक्त करते हुए स्वय भी अकादमी की अपनी सम्मानित सदस्यता को ठुकरा दिया। जार के अन्यायपूण निणय के विरुद्ध इन दोनो लेखको का यह साहस-पूण व्यवहार जनता ने बडे उत्साह से लिया।

-

सन् १८०२ की अप्रैल के अत म गोर्की को निझ्नी नोवोगोरोद आने की इजाजत मिली। जब गोर्की निझनी वापस आये, उस समय वहा मई दिवस पर होने वाले एक राजनीतिक प्रदशन की तैयारियाँ जनता कर रही थी। वहाँ के मजदूरो व जनता म गोर्की की लोक-प्रियता को देखते हुए सरकार ने उन्ह बराबर पुलिस की निगरानी मे रखा। जिस होटल मे वे ठहरे थे, उसके सामने भी पुलिस का पहरा

बैठा दिया गया। वहाँ हर समय पुलिस के सिपाही, घुडसवा
पुलिस के सिपाही तनात रहते थे। उन्ह होटल के बाहर नि
रोक लगा दी गयी।

कई दिनो बाद उन्हे निझनी नोवोगोरोद से हटा कर ए
कस्बे अर्जामास म भेज दिया गया, जहाँ उन्ह अपने पहुँचने
भी पुलिस को देनी पडी।

अर्जामास कस्बे मे मुख्य आबादी थी व्यापारी और पाद
जो सभी शान्त प्रकृति के, राजभक्त, विश्वासपात्र थे। ख
खाल का व्यापार मुख्य था। यहाँ छत्तीस गिरजा थे जिनक
जब बजती तो सारा वातावरण गूज उठता था। मेढक
टर्राया करत। लोग गिरजा की ओर से प्रकाशित पत्रिका—
यालनिया वेदोमोस्ती—का पाठ करते और चोरो के डर से
अपने घरो की खिडकियाँ बद रखते। ऐसा था वह कस्बा
अपने कस्बे के बाहर की दुनिया से पूरी तरह बेखबर

फिर भी जार की पुलिस को बडी शका थी, बडा डर था
शातिप्रिय कस्बे मे मैक्सिम गोर्की के आने से शायद अप्रत्याशि
नाएँ घटेंगी जरूर। अर्जामास के पुलिस कप्तान को यह गुप्त
दी गयी

'बहुत जल्दी ही किसी दिन, अलेक्सेई मैक्सिमोविच
(मैक्सिम गोर्की) जिस पर पुलिस की निगरानी है, अपने नि
आवास के लिए अर्जामास आ कर रहेगा। उसके आ
आते ही, तुम्ह आदेश दिया जाता है कि उस पर पूरी निगरानी
और सतर्क रहना और सारी तैयारी से मुस्तैद रहना कि पेशक
ले कर कोई हगामा न होने पावे।'

गोर्की जब अर्जामास पहुचे तो वसत का अत था। गोर्की को
के एक घर म रखा गया। उस घर से जुडा एक बाग था जिस
जगल के पेड बन रहे थे। आस पास भी जगल

गोर्की उन जगलो मे खूब घूमते और सोचते कि यह जगह चाहे जगली हो, पर क्रीमिया स ज्यादा अच्छी है। गोर्की खेता मे घूमते, हरियाली का मजा लेने और कस्बे के बाहर बहती तेशा नदी के किनारे टहलते।

यद्यपि यहाँ गोर्की का किसी से काई परिचय न था और वे किसी से मिलते जुलते भी न थे, फिर भी पुलिम बडी सतकतापूवक उनका पीछा करती और घर को भी हर समय घेरे रहती। तभी गोर्की न चेखव को लिखे एक पत्र म लिखा

'यहाँ खूब शाति है, खूब मन्नाटा। जिंदगी आरामदेह है और हवा म भी जैसे बडी मिठास है। यहा हर तरफ बगीचे ह, बगीचो म बुल बुल बोलती रहती है। और झाडिया मे सिपाही व गोइन्दे घुमे छिपे रहते ह। यहा के हर बाग म बुलबुलें भरी ह और मेरे बाग म सिफ सिपाही भरे है। कितना अजीब है, रात के अँधेरे मे ये गोइन्दे व सिपाही मेरी खिडकी के नीचे छिपे रहते ह और ताक झाक कर देखते हैं कि मैं रूस म किस तरह जहर फैला रहा हू। और कुछ न देख पा कर वे नाराज होते है और घर के दूसरे लोगा पर कुढते हुए उलझने की कोशिश करते ह।'

यहाँ गोर्की जो कुछ भी करते, उसे पुलिस वाले नितात शका की दृष्टि से देखते। यदि वे किसी भिखारी को एक सिक्का भी देते तो पुलिस का कोई आदमी दौड कर भिखारी स उसे छीन लेता और तरह-तरह से जाँच करके देखता कि गोर्की कही जाली सिक्के तो लोगो मे नही बाट रह। वे सिक्के को दाँतो से दबा दबा कर उसकी धातु का पहचानन की कोशिश करते।

कभी-कभी गोर्की अपनी खिडकी के नीचे छिपे किसी सिपाही को पकड कर पूछताछ करते तो इस प्रकार की वातालाप होता

'तुम गोइन्दा हो, हो न ?'

'नही।'

'तुम झूठ बोलते हो, बोलो, तुम पुलिस के सिपाही या गुप्तचर हो ?'

—'मैं कुछ नहीं हूँ। खुदा की कसम।'
—'तुम कितने दिनों से इस नौकरी में हो?'
—'अभी हाल ही से, बस अभी।'

एक दिन अर्जामास का प्रमुख अधिकारी, वहाँ का पुलिस कप्तान गोर्की के घर के सामने से गुजरा। खूब लबा चौडा, ऊचा, रोबीला अफसर, अपने दातो म एक बडा सा तमाखू का पाइप दावे ऊँचे घोडे पर सवार, कई बार गोर्की की खिडकी के सामने आता जाता रहा और उचक-उचक कर कमरे म झाक कर देखन की कोशिश करता रहा कि गोर्की क्या षडयत्र कर रहा है। फिर वह वहाँ से तभी हटा जब उसे विश्वास हो गया कि इस समय गोर्की रूस म क्रान्ति पैदा करने सबधी कोई षडयत्र नही कर रहा। फिर भी पुलिस कप्तान डनीलोव ने जाते ही निश्चय किया कि वह हर समय पूरी सतकता बरतेगा और जब भी गोर्की को क्रातिकारी काम करते पायेगा तो बिना देर किए वह क्राति को पनपने या बढ़ने के पहले ही समाप्त कर देगा।

लेकिन बेचारे पुलिस कप्तान डेनीलोव की सारी सतकता बेकार हुई और उसकी सोची न हुई, क्योकि कप्तान डेनीलोव की तमाम सत कता, खिडकी के नीचे छिपे सिपाहियो और झाडियो मे छिपे गोइन्दो की तत्परता के बावजूद भी गोर्की अर्जामास प्रवास म भी क्रातिकारी सघर्ष से पूरी तरह जुडे रहे और अपना काम करते रहे।

अर्जामास मे मुख्य रूप से रहने वाले व्यापारियो, पादरियो या छोटे बडे अवकाश प्राप्त राजभक्त अफसरो के अलावा दूसरे लोग भी वहाँ रहते थे, जसे छोटे छोटे चमडे के कारखानो मे काम करने वाले मजदूर, चमार और छोटे मोटे काम करने वाले दूसरे लोग भी। इन्ही छोटे मोटे काम करने वालो, चमारो और मजदूरो के सबध म क्राति कारी नेता लेनिन ने लिखा था कि वे अपने मालिको के लिए रोज चौदह घटे काम करते हैं और बदले म पाते हैं सिफ नाममात्र को पारिश्रमिक। इसीलिए ये गरीब पीले दुबल, बीमार हो कर मौत के निकट खिचते जा रहे हैं।'

यही दुबल, रुग्ण मजदूर धीरे धीरे पुलिस की सतकता को चकमा

दे कर आने लगे और गोर्की से मिलने लगे।

अर्जामास में रहते समय गोर्की ने एक साहसिक क्रान्तिकारी अभियान में खुल कर हिस्सा लिया।

अर्जामास के निकट ही पोनेतायव में पादरियों का एक मठ था। माठ में लगी एक शराब की दूकान थी। निझनी नोवागोरोद के क्रान्तिकारियों ने निश्चय किया कि गोर्की की मदद से उस दूकान पर कब्जा किया जाय। और वही अड्डा बनाया जाय। क्योंकि क्रान्तिकारियों के लिए इससे बढ कर और कोई भी सुरक्षित जगह नहीं हो सकती थी। भला कोई सरकारी अफसर यह कल्पना भी कैसे कर सकता था कि कस्बे से दूर, इतनी सन्नाटी और निजन जगह पर पादरियों के मठ के बगल में, सो भी शराब की दूकान में क्रान्तिकारी अड्डा बना सकते हैं।

यह योजना पूरी तरह सफल हुई। क्रान्तिकारियों ने दूकान पर कब्जा करके उसे अपनी बना लिया। निझनी नोवागोरोद के एक क्रान्तिकारी, एक बढई को जिसका नाम था लवेदेव उसे उस दूकान का कर्ता धर्ता बनाया गया। वह बढई बडी मासूम शक्ल बनाये, शान्त भाव से छुट्टियों और त्योहारों पर पादरी मठ में आने जाने वाले धार्मिक यात्रियों और पादरियों के हाथ वोदका बेचता और दूकान के पीछे वाले कमरे में क्रान्तिकारियों का एक गुप्त छापाखाना चलता। इसी छापखाने में छपने वाली पुस्तिकाएँ, परचे, नोटिसें आसपास के क्षेत्र में बँटती। पुलिस परेशान होती, लेकिन छापखाने का उसे सुराग न मिलता।

बहुत समय के बाद बहुत परेशानी, दौड-धूप, जाँच पडताल के बाद अधिकारियों का ध्यान उस शराब की दूकान की ओर गया, सो भी महज एक संयोगवश। हुआ यह कि एक रात चोरों ने दूकान में ताला तोड कर चोरी की। चोरी की खबर पुलिस तक पहुँची। क्रान्तिकारी लोग समझ गये कि अब जरूर ही किसी दिन, किसी भी समय पुलिस वाले चोरी की जाँच पडताल के लिए दूकान पर आवेंगे। अत समय भी मिल गया और जब पुलिस वहाँ पूछताछ क

लिए गयी तो दूकान का दूकानदार और सारा छापाखाना वहां से गायब हो चुका था। पुलिस फिर किसी की छाँह भी न पा सकी।

इस प्रकार क्रान्तिकारियों का छापाखाना तो बच गया। और पोनेतायेव की शराब की दूकान का रहस्य अधिकारी कभी न जान सके।

पुलिस कप्तान डनीलोव को उसके गुप्तचर और सिपाही बराबर खबर देते रहे कि रोज बहुत रात बीते तक गोर्की की खिड़की से रोशनी दिखाई पड़ती रहती है, शायद वह रात में ही गैर कानूनी व क्रांतिकारी काम करता है। यह सुन कर कप्तान डेनीलोव बहुत परेशान रहता। अंत में उसने अपने उच्च अधिकारियों को लिखा

'क्रांतिकारी पेश्कोव रात को सोता नहीं और देर तक कुछ संदिग्ध काम करता रहता है।'

लेकिन यह सच था कि गोर्की के कमरे की रोशनी सारी रात जलती रहती थी, क्योंकि गोर्की सारी रात लिखने में व्यस्त रहते।

अर्जामास में रहते समय गोर्की ने खूब लिखा।

थियेटर के मच पर

अर्जामास मे रहते हुए गोर्की न जम कर नाटक लिखने का काम किया। एक नाटक लिखते समय उन्होने एक पत्र म चखव को लिखा कि 'यह असभव है कि यह नाटक पस द न किया जाय और इसे पूरा न करना मेरे लिए एक अपराध होगा।'

उस काल म रूसी रगमच का भी एक प्रकार से पुनजागरण हो रहा था। चेखव रूस के सवमान्य नाटककार थे। उन्ही से प्रभावित हो कर गोर्की ने भी थियेटर व रगमच की ओर ध्यान दिया था।

उन दिनो मास्को के पुराने थियेटर जैसे माली या कोश के थियेटर पुरान पड गये थे। मच पर लटके लाल रग व सुनहरे जरीदार परदे सगीत की ध्वनि क साथ तथा अपनी भव्यता के साथ ऊपर को उठते। रग मच के कलाकार पुराने ढग के, व्यर्थ के, भाषण के ढग के वातालाप करत और भारी कदमो से मच पर उछलत और सदा इसी प्रयत्न म रहते कि उन्हे ऐसी कोई भूमिका मिल जिसस वे पिस्तौल से गोली चला कर ताकत का प्रदशन करें। दशक भी नाटक म समय बिताने आत, नाटक देखन से अधिक आपस म जोरा स बातचीत करते, ऊबते

ता सीटी बजात या बेमौके तालिया पीटत ।

ऐसी स्थिति को बदलन के लिए रूस के नौजवान और प्रगतिशील रगकर्मियो ने नये नाटक घर का निर्माण और पुरानी परम्पराओ को तोडने का प्रयास शुरू किया। नये नाटक घर ने दशको को सिखाया कि नाटक के समय चुप रहना चाहिए। और परदा अब उठता न था बल्कि बीच स दो हिस्सा म दायें बायें या खुलता जस किसी किताब को खोला जाय। दशक भी शाति से बठत, अपनी प्रतिक्रियाओ का शोर क साथ प्रदशन न करत। वे चुप रहते और मच पर पानी बरसने के दृश्य के साथ होने वाली हलकी सी ध्वनि, सवेरे के समय चिडिया के गान की मधुर ध्वनि, पृष्ठभूमि स आती गाडी चलन की ध्वनि या घडी की आवाज तक सुन सकत और प्रसन्न होते।

नये थियेटर के निर्माता युवा कलाकार या शौकिया कलाकार ही थे। वे गोर्की का जानते थे, उन्हे महान लेखक, महान क्रान्तिकारी और अपना अगुआ मानत थ।

मास्को आन पर गोर्की एक दिन नय नाटक घर म गय। उस समय चेखव के नाटक 'अकल वान्या' का मचन हो रहा था।

गोर्की न बडे मनोयोग से 'अकल वान्या' नाटक का प्रदशन देखा और प्रसन्न व प्रेरित हुए। नाटक के पात्रो की तन्मयता से प्रभावित हुए। गिटार की ध्वनि सुनी, नाटक के नायक डाक्टर एस्ट्रोव को अफ्रीका का नक्शा देखत देखा, देखा कि प्रोफेसर सरेब्राइस्कोव अपना पियानो किसी को न छूने देने की जिद म किस तरह बूढ़ी औरत की तरह रोता है।

उस नाटक को देख कर जब गोर्की घर लौटे तो वे उसके प्रभाव म इतने डूबे कि घटा बोल ही न पाये। उन्होने तत्काल चेखव को पत्र लिखा

'एकदम स यह तो नही कहा जा सकता कि नाटक देख कर आत्मा पर क्या प्रभाव पडा, लेकिन नाटक के पात्रो, नायको को देखत हुए लगता था कि जस किसी भोथरे आरे से चीर कर मेरे दो टुकडे किए

जा रहे हो। आरे के गोठिल दाँत मेर हृदय पर इधर से जाते, उधर से आते, और मरी धडकने उनके कटाव से बद होने लगी, मरी आत्मा कराही और टुकडो म बिखरी। मेरे लिए यह एक भयानक अनुभव था। वस, इतना ही कह सकता हूँ कि 'अकल वा या' रगमच की कला के लिए एक नयी दिशा देन वाला नाटक है। अतिम अक म, जब लम्बी खमोशी के बाद डाक्टर कहता है कि—ओफ ! अफ्रीका म कितनी गर्मी है ! तब मैं आपकी कला के प्रति आदर व प्रसशा स तथा काले इसाना की गरीबी जिदगी और उनके भीतर समाये भय की कल्पना से काँप उठा था। मुझे अत्यत खेद है कि निझनी नावोगोरोद म इतना समय बिता कर भी मैं इस रगमच से परिचित नही हो पाया।'

इसके बाद दोनों की—चेखव और गोर्की की भेंट क्रीमिया मे हुई। वहाँ से दोनो साथ-साथ याल्टा आय। 'अकल वा या' के लेखक के यहा आ कर गोर्की बहुत प्रसन्न हुए।

बसत का मौसम था। चेखव क लगाय बगीचे म फूल खिल रहे थे।

चेखब के साथ गोर्की याल्टा की सडको पर घूमने जाते। शाम को दोनो साथ साथ वहाँ के छोट से और अधकार-भरे थियेटर मे जाते, जहाँ आट थियेटर' के सदस्य अपन मनपसद नाटककारो के नाटक करत थे।

चेखव ने गोर्की को एक जोरदार नाटक लिखने को प्रेरित किया। 'आट थियेटर' के सदस्यो ने भी आग्रह किया।

चेखव के उसी आग्रह से प्रेरित हो कर अर्जामास मे गोर्की न नाटक लिखना शुरू किया यद्यपि नाटक का क्षेत्र उनके लिए अभी तक अनजाना और नया ही था। नाटक लिखने म गोर्की ने बडा श्रम किया। यहाँ जो नाटक उन्होने लिखना शुरू किया उसे उन्हाने कई बार लिखा। एक बार लिखा, फिर दुबारा लिखा, बार-बार लिखा। किसी महान नाटककार के इस फामूले का पूरी तरह पालन किया कि पाच अको का दुखान्त नाटक लिखो, और साल भर बाद उसे

तीन अको के नाटक म बदलो । फिर साल भर वद करके रखो और साल भर बाद उस एक अक के नाटक क रूप मे उतारो । । फिर साल भर बाद उसे आग म फाक दो ।

गोर्की ने बार बार, कई बार नाटक को लिखा । हा, अत मे आग मे नही फाका ।

यह नाटक था 'फिलिस्ती स' (कूपमडूक), जिसम बेससेमेनोव परि वार के कठोर जीवन का चित्रण था ।

बार-बार लिखने पर भी गोर्की इसकी रचना से सतुष्ट नहीं हो सके । व जसा चाहत थ, वैसा वह नही उतर रहा था । गोर्की को नाटक बहुत छिछला और सपाट लग रहा था ।

गोर्की ने इस नाटक लेखन के दौरान चेखव को लिखा, 'मुझे नाटक पसन्द नही आया । म जाडा मे फिर से लिखूगा और अगर फिर भी यह सही नही उतरता तो मैं चाहे एक दजन बार लिखूँ मैं जैसा चाहता हूँ वैसा बना कर ही दम लूँगा । इसे तो अच्छा बनना ही है, खूब गठा हुआ, चुस्त और सुन्दर, जैसे सगीत का एक टुकडा ।'

रगमच पर चेखव के नाटको को देख कर गोर्की ने एक सगीत का अनुभव किया था—एक सगीत—सरल मानव भाषा का सगीत—उसी सगीत को अपने नाटक म पदा करन का गोर्की लालायित थे ।

फिलिस्ती स' म गोर्की ने उन्ही लोगो का चित्रण किया था जिन्ह व अपने बचपन से देखते आये थे ऐस लोग जो छोटे छोट मकानो मे रहते थे, घुटनभरी जि दगी बिताते थ ।

'फिलिस्ती स' नाटक पूरा करने के एक वष बाद गोर्की ने उसे प्रदशन क लिए 'मास्को आट थियेटर' को दिया । सरकार न बडी बेरहमी से नाटक के अशा को काटा । अधिकारियो ने व्यापारी रोमानोफ की बीवी' को शाही परिवार की एक पात्री का प्रतिरूप माना और मजबूर किया कि रामानोफ का नाम इवानोव कर दिया जाय ।

अन्तत सारी बाधाओ से निपटने के बाद 'फिलिस्ती स का प्रथम प्रदशन २६ माच १६०२ को सेंट पीटसबग मे सभव हो सका

जहाँ मास्को आर्ट थियेटर अपने कायक्रम प्रस्तुत कर रहा था। इस नाटक के प्रदर्शन से रूसी रगमच पर एक नये नायक का उदय हुआ। वह नायक था, इस नाटक का नायक रेल इजन ड्राइवर क्रान्तिकारी निल, जो अपनी इच्छा-शक्ति से भली भाँति परिचित था और जिसे अपनी विजय का पूरा विश्वास था। यद्यपि सेंसर ने अपनी समझ से नाटक के सभी खतरनाक' अंशों को काट दिया था—जैसे निल के ये शब्द कि 'जो काम करता है, वह असली मालिक है, नागरिक अधिकार दिये नहीं जाते, उन्हें ताकत से हासिल किया जाता है, आदि।' फिर भी नाटक कट छँट कर भी स्वतत्रता और सघर्ष का आह्वान बना रह गया।

अधिकारियो को भय था कि नाटक का प्रदर्शन कही क्रान्तिकारी प्रदर्शन म न बदल जाय, इसलिए नाटक के 'ड्रेस रिहसल' के दिन थियेटर घर को पुलिस ने घेर लिया। सादे कपडो म पुलिस के गुप्तचर थियेटर के भीतर गश्त लगाते रहे और चौक म घुडसवार पुलिस तनात कर दी गयी। यह दृश्य देख कर प्रसिद्ध रगकर्मी और आर्ट थियेटर के सस्थापक कान्स्तान्तिन स्तानिस्लाव्स्की ने कहा था, 'कोई भी यह सोच सकता है कि यह नाटक के ड्रेस रिहसल की नही, किसी गहरे सघर्ष की तयारी हो रही है।'

पहली रात के प्रदर्शन पर 'फिलिस्तीन्स' की सफलता के बाद 'अन्य रातो के प्रदर्शनो म सिपाहियो की जगह पुलिस अधिकारियो को पहरा देना पडा। सरकार को भय था कि शायद विद्यार्थी थियेटर पर धावा बोल देंगे और गोर्की के सम्मान मे प्रदर्शन का आयोजन करेंगे।

नाटक मे एक स्थल पर मच पर से नाटक का नायक रेल-इजन ड्राइवर निल जब कहता

'जब आदमी एक करवट लेटे हुए ऊब जाता है तो दूसरी ओर करवट लेता है, लेकिन जब वह उस परिस्थिति से ऊब जाता है जिसमे उसका विवश हो कर रहना पडता है तब वह असतोष से कुडमुडाता है। फिर प्रयत्न करता है और सब कुछ उलट देता है।'

तो ये शब्द सुन कर दर्शकों में उत्साह का तूफान आ जाता, वे चीखने लगते।

'फिलिस्तीन्स' लिखने के साथ ही गोर्की एक दूसरे नाटक पर भी काम कर रहे थे। यह नाटक था 'लोअर डेप्थ्स' (तलछट या निचली गहराइयाँ) जिसमें उन्होंने पूँजीवादी समाज का अधिक तीव्रता और साहस से विरोध किया। इसमें गोर्की ने एक नयी दुनिया का, समाज के बहिष्कृत लोगों, उठाईगीरों और आवारागर्दों की दुनिया का चित्र प्रस्तुत किया जो समाज का तलछट बनने के लिए विवश किए गये हैं। उनमें बहुत से लोग शराबी और निकम्मे हैं, लेकिन उनके दिलों में दूसरों के लिए गहरा प्रेम है, अन्याय के प्रति क्षोभ और स्वतंत्रता की सच्ची भावनाएं जाग्रत हैं।

इस नाटक में भी गोर्की ने उन्हीं पात्रों को लिया जिन्हें वे जिन्दगी भर देखते रहे हैं। निझनी नोवोगोरोद की गलियों में जो निम्नतर स्तर का जीवन बिताने वाले लोग थे उन्हीं का चित्रण था।

जब गोर्की क्रीमिया में थे, तभी एक शाम को गहराते धुँधलके में, बरामदे में बैठ कर उन्होंने इस नाटक की कल्पना की थी योजना बनायी थी। पहली बार गोर्की ने उसका नाम रखा था—'जीवन की निचली गहराइयाँ।' इस नाटक के जो नायक हैं जो पात्र हैं जो चरित्र हैं, उनके साथ गोर्की ने जीवन के क्षण जिए थे। बाजारों, सड़कों और सरायों में तथा विभिन्न स्थलों में उनके साथ रह कर उनके दुख-सुख में हिस्सा लिया था। उदाहरणार्थ सैनिक के रूप में उन्होंने उस पोस्टमास्टर को चित्रित किया जिससे कभी उनका सम्पर्क हुआ था और जिसे जेल भी काटनी पड़ी थी। वह आदमी निझनी नोवोगोरोद की सड़कों पर छाती खोल कर घूम घूम कर भीख मांगता था। उसकी शक्ल कुछ भिन्न, कुछ रोमानी थी कि औरतें उसे देख कर द्रवित हो उठतीं और उसे पैसे देतीं।

गोर्की ने जब 'लोअर डेप्थ्स' पूरा कर लिया तो नाटक पढ़ने के

लिए आर्ट थियटर म एक गाष्ठी का आयोजन हुआ था ।

गोर्की ने स्वय ही नाटक का पाठ किया था ।

नाटक पढत पढते गोर्की जब नाटक के उस स्थल पर आये जहा मरती हुई अन्ना के सामने लूका सात्वना तथा भरोसा देने वाले शब्द फुसफुसाता है, वहा पर सुनने वालो ने अपनी सास रोक ली, ताकि साँस चलने से सुनने म दिक्कत न हो । वह स्थल पढते पढते गोर्की इतनी भावना मे डूब गय कि उनकी आवाज कापने लगी और अ तत व रो पडे । उन्होने आगे पढने की बडी कोशिश की लकिन एक या दो शब्द के बाद ही उनकी आवाज जकड गयी और वे फफक कर रो पडे । आसुओ से उनका चेहरा भीग गया

गोर्की का यह दूसरा नाटक लोअर डप्थ्स' पहले नाटक 'फिलिस्तीन्स' से भी अधिक स्वागत का अधिकारी बना । यह नाटक समाज के उस व्यवस्था के प्रति एक जेहाद था जो लोगो से जीने का हक छीनती है । वह व्यवस्था जो लोगो को जीवन क निम्नतम स्तर पर ला कर छोड दती है, जहा आदमी सोचता है कि वह भी कभी आदमी था ।

इस नाटक का लोगो पर बहुत गहरा प्रभाव पडा ।

'लोअर डेप्थ्स' का पहला प्रदशन १८ दिसबर १८०२ को हुआ । इस नाटक की सफलता गोर्की की एक महान व्यक्तिगत सफलता थी । पहली रात जब नाटक खत्म हुआ तो लोग जैसे मतवाले हो उठे । बार-बार पर्दा उठाने और मच पर कलाकारो और लेखक का बुलान की दशका ने माग की । गोर्की न कभी नाटक की ऐसी सफलता की आशा न की थी । जब उन्ह मच पर जान का कहा गया तो वे उत्तेजित हो उठे और जब मच पर आय तो किंकतव्यविमूढ़ से थे । लबे कद और झुके झुके कधो वाले गोर्की मच पर आ कर भी खोये-खोये अपनी भौंह चढाय खडे रहे । वे यहा तक भूल गये कि उन्ह झुक कर दशको का अभिवादन करना चाहिए या कम स कम अपनी उँगलियो के बीच फँसी जलती हुई सिगरेट फेंक दनी चाहिए । पता नही दशको के ताली पीटने की आवाज भी वे सुन पाय या नही ।

लेनिन और क्रान्ति

गार्की ने वर्षों पूव अपनी रचना 'तूफानी पक्षी का गीत' म जिस तूफान के आने की भविष्यवाणी की थी, वह तूफान आ गया।

सन् १९०५ का वह साल।

उस साल रूस की धरती खून से लाल हुई थी। जार क महल व सामन, मचूरिया की सुदूर पहाडियो पर, पुलिस थानो की चौक म, रेल टीसनो के प्लेटफार्मों पर, मास्को की सडको पर और युद्धपोतो वे डेका पर खून की धाराएँ बही थी।

सन् १९०५ के साल के पहले दिन से ही क्रान्तिकारी घटनाएँ भीषण रूप मे घटने लगी थी। ९ जनवरी को पादरी गापोन ने जो सरकार का गुप्तचर था और स्वय बहुत महत्वाकाक्षी व्यक्ति था, वह अपने गुप्त सपनो को पूरा करन के लिए सेंट पीटसवग के मजदूरा का एक बहुत बडा जुलूस बना कर जार के शीत महल म गया। मजदूर उसके नेतृत्व म एक जुलूस बना कर जार के नाम एक प्राथना-पत्र लिख कर ले गये थे। प्रार्थना पत्र म लिखा था

'हम, सेंट पीटसबग के मजदूर, हमारी बीवियाँ, हमारे बच्चे और

थियटर म न जा पात वाला की बडी भीड थियटर के फाटक पर जमा थी, जि्ह तितर बितर करने के लिए पुलिस के सारे प्रयत्न बेकार हो गये। वे सभा लोग अपने गोर्की को देखने को बेचन और अधीर हो रहे थे।

गोर्की न जनता के इस प्रेम को नाटक की सफलता क अभिवादन से बढ कर अपना सम्मान माना।

लेनिन और क्रान्ति

गार्की न वर्षों पूव अपनी रचना 'तूफानी पक्षी का गीत' म जिस तूफान के आन की भविष्यवाणी की थी, वह तूफान आ गया।

सन् १६०५ का वह साल।

उस साल रूस की धरती खून स लाल हुई थी। जार के महल के सामन, मचूरिया की सुदूर पहाडियो पर, पुलिस थानो की चौक म, रेल टीसनो के प्लेटफार्मों पर, मास्को की सडका पर और युद्धपोतो के डेका पर खून की धाराएँ बही थी।

सन् १६०५ के साल के पहले दिन से ही क्रान्तिकारी घटनाएँ भीषण रूप म घटन लगी थी। ६ जनवरी को पादरी गापोन ने जो सरकार का गुप्तचर था और स्वय बहुत महत्वाकाक्षी व्यक्ति था, वह अपने गुप्त सपना को पूरा करन के लिए सेंट पीटसवग के मजदूरो का एक बहुत बडा जुलूस बना कर जार के शीत महल म गया। मजदूर उसके नेतृत्व म एक जुलूस बना कर जार के नाम एक प्रार्थना-पत्र लिख कर ले गये थे। प्रार्थना पत्र मे लिखा था

'हम, सेंट पीटसबर्ग के मजदूर, हमारी बीवियाँ, हमारे बच्चे और

हमारे बेसहारा बूढ़े परिवार के जन, अपने सम्राट क सामने सत्य और सुरक्षा की माँग करते हैं

अब हमसे सहा नही जा रहा है। मरे बादशाह हमारा धय चुक गया ह। अब वह निर्णायक क्षण आ गया है कि हम वर्तमान असह्य पीडाओ, तकलीफो को और अधिक सह पाने मे असमथ ह और अब हम मर जाना ही पस द करेग

इस प्राथना पत्र के साथ दो लाख लोग मद और औरत, जुलूस में जार के महल के सामने गये। यह जुलूस नही, पीडित मानवता का विवश समुद्र था। हर व्यक्ति के मन म आशा की एक हल्की सी किरण बाकी बची थी कि जार के शीत महल मे कोई न कोई ऐसा यक्ति जरूर होगा जो उ ह मुसीबतो से छुडा देगा।

जार और उसके अधिकारियो को मालूम था कि जनता का वडा जुलूस आयेगा प्रदशन होगा। पूरी पलटन को आदेश मिल चुका था कि युद्ध जैसी तैयारी के साथ वे मुस्तैद रह। जार के एक दरबारी, एक ड्यूक ने दरबार म आक्रोश के साथ कहा कि इन भुखमरा के खून से ही जारशाही को बचाया जा सकता है। खुश हो कर, जार ने उस ही पलटन का सर्वोच्च अधिकारी बना दिया।

उस दिन गोर्की ने सडक पर खडे हो कर नर हत्याकाड का यह दृश्य अपनी आँखा से देखा था और अपने कानो से निहत्थी जनता पर गोली चलाने का आदश देने वाले बिगुल की आवाज सुनी थी। यही नही जारशाही के अत्याचार की शिकार जनता के मुह स भी गोर्की ने सुना था

तुम क्या समझते हो, इस तरह जनता की आवाज खत्म कर दोगे ?'

जनता कुचली नहीं जा सकती। हम दिखा देगे कि '

समझ लो तुम हम नही, जार को मार रहे हो !'

उस दिन ९ जनवरी की सुबह तक जनता को भरोसा था कि उस जार के यहाँ याय और सुरक्षा मिलेगी। इसीलिए इतनी बडी तादाद मे वे हाथ मे प्राथना-पत्र ल कर जार क शीत महल गय थे। लेकिन

दोपहर आते आते उनका भ्रम टूट गया था और वे हथियार खोजने लगे थे, जिस न पा कर उन्होंने ढेले पत्थरों का सहारा लिया था। उनका नेता गापोन जाने कहा भाग गया था। ज़ार के सामने याचना करने गये लोग ज़ार के विरुद्ध लन्ड़ाकू बन गये थे।

यही ८ जनवरी, प्रथम रूसी-क्रान्ति का प्रथम दिवस बनी।

गार्की न शान्तिपूर्ण निहत्थे मजदूरों के जुलूस पर जारशाही पुलिस द्वारा निदयतापूर्वक गोलियां बरसाने का दृश्य देखा और बहुत क्षुब्ध मन स घर वापस आये। इस घटना मे पीडित हो उन्होंने 'समस्त रूसी नागरिको और यारोपीय देशो के जनमत' के नाम एक कारुणिक अपील लिखी और इस भीषण हत्याकाण्ड के लिए मुख्यरूप स ज़ार को दोषी ठहराया और एकतन्त्रवाद के खिलाफ तत्काल एक सशक्त और सगठित सघप छेड़ने का आह्वान किया।

गोर्की न इस अपील म सेंट पीटसबग का सडको पर हुई घटना की भत्सना की और साहसपूर्वक स्पष्ट शब्दो मे ज़ार को ही दोषी बताया।

गोर्की के हाथ का लिखा अपील वाला वह कागज पुलिस के हाथ पड गया। पुलिस का खुफिया विभाग क्रान्तिकारी लेखक की हस्तलिपि को खूब अच्छी तरह पहचानता था।

८ जनवरी के 'खूनी दिन' के दो दिनो बाद जारशाही पुलिस न गोर्की को गिरफ्तार किया। गोर्की को सेंट पीटर और सेंट पाल के किले म कद कर दिया गया, जहा बहुत महत्वपूर्ण राजनीतिक बदियो को रखा जाता था।

जेल म गोर्की पर सभी प्रकार क बधन लगाये गये थ, सिफ अपने साहित्यिक काम करने की उन्हे छूट दी गयी थी। तब जेल की सल म बठ कर गार्की ने ६ जनवरी की घटना को केन्द्रबिन्दु बना कर 'सूरज के बच्चे' नामक एक नाटक लिखना शुरू किया। इस नाटक का एक पात्र कहता है

'जब भी मैं कोई कडवी व कठोर बात सुनता हूँ, जब भी मैं कोई चीज लाल देखता हूँ तो मरी आत्मा फिर से भयानक कंपकंपी स

भर जाती है, और मेरी आखो के सामने वही दृश्य नाचने लगता है वही घायल भीड खून से सने चेहरे, बालू पर लाल गम खून के धब्बे

यह नाटक लिखते समय भावावेश मे गोर्की चीखते और अट्टहास करते। और 'एक खतरनाक कैदी' को इस तरह हँसते सुन कर जेल के सिपाही इतना घबराये कि भाग कर वे जेलर को बुला लाये।

कई साल पहले जब गोर्की निझनी नोवोगोरोद म गिरफ्तार किये गये थे तब सारे रूस म विरोध की लहर उठी थी। लेकिन इस बार न सिर्फ रूसी जनता न बल्कि सारे ससार के लोगो ने लेखक गोर्की की रिहाई के लिए जोरदार मांग पेश की। पेरिस मे गोर्की की गिरफ्तारी के विरुद्ध हुई एक सभा मे अनातोले फ्रास ने कहा, 'गोर्की का लक्ष्य हमारा सामान्य लक्ष्य है। गोर्की जैसी प्रतिभा सम्पूर्ण विश्व की निधि है। सारा ससार आज यह मांग कर रहा है कि गोर्की को रिहा किया जाय।

सट पीटसबग के उच्च अधिकारी के यहाँ गोर्की की गिरफ्तारी के विरुद्ध अपीलें आयी। जमनी, पुर्तगाल, इटली और बेलजियम से प्रस्ताव आये। गोर्की की रिहाई की मांग का समथन किया प्रसिद्ध वैज्ञानिक पीरे क्यूरी, मूर्तिकार अगस्त रुदीन, समाजवादी नेता जीन जाउरेस और चित्रकार क्लाडव मोनेट ने और योरप के सभी महत्व पूर्ण व्यक्तियो ने।

और इस विश्वव्यापी दबाव से विवश हो कर कुछ दिनो बाद जारशाही को गोर्की को रिहा करने को मजबूर होना पडा। तीसरी बार जारशाही को गोर्की को मुक्त करना पडा।

गोर्की ने ९ जनवरी को नाम दिया—खूनी रविवार।

९ जनवरी की घटना को ले कर गोर्की ने जनता से जो अपील की थी उसे रूस की जनता कभी नही भूली और मजदूरो ने सशस्त्र-सघर्ष की तयारी शुरू कर दी। यह सघर्ष भी वष के अत म हो कर ही रहा।

१९०५ के अत म मास्को के मजदूरो ने सामूहिक हडताल की।

तत्काल ही घटनाओ ने गभीर शक्ल धारण कर ली। वह भीड जो अभी तक यह सुन कर सहम जाती थी कि कज्जाक आ रहे है', अब कज्जाको पर ही हमला करने लगी।

इस समय गोर्की मास्को म रह रहे थे। वे सारा समय हथियार खरीदन के लिए धन सग्रह करने म लगाते। उनका निवास तो जसे एक फौजी गोदाम बन गया था। राइफले, रिवाल्वरें और हथगोले वही इकट्ठे किए जाते और वही से उनका वितरण लडाकू दल के सदस्यो मे किया जाता। पडोस के लोग गोर्की के घर स आने वाली राइफलो की आवाज अक्सर सुनते थे।

गोर्की के नतृत्व म मास्को मे रोज ही छिटपुट सघष होता। ज़ार-शाही सरकार परेशान हो उठी। मास्को की यह क्राति-लहर तो सरकार की दमन नीति के कारण दब गयी, लेकिन पूरे रूस म पनपनी क्रान्ति नही दबायी जा सकी

गोर्की ने समस्त रूस के मजदूरो के नाम एक चिटठी लिखी, जिसकी प्रतिया टाइप करके सारे रूस म बाटी गयी। इस चिट्ठी मे गोर्की न लिखा

सवहारा वग की क्राति मरी नही, यद्यपि उसे निराशाजनक धक्के अवश्य लगे ह? नई आशाओ से क्राति को गति मिली है और क्राति की शक्तियो ने प्रगति की है।

रूस के सवहारा वग की शक्ति विजय की ओर बढ रही है, क्योकि यही एकमात्र वग ह जो नैतिक रूप स दृढ है और सचेत है। इसे रूस के उज्ज्वल भविष्य म विश्वास है। मै जो कह रहा हूँ वह सत्य है और यह सत्य दुनिया के प्रत्येक सच्चे व ईमानदार इतिहास-कारो द्वारा समथन पायेगा।'

इसी वष, १६०५ मे, मास्को विद्रोह क समय गोर्की की लेनिन से पहली बार भेट हुई थी।

गोर्की ने जिस सत्यता स रूसी जनता का आह्वान किया था, यह वही सत्य था जो लेनिन क्रान्ति के सबध म कहते थे।

गोर्की पूरी तरह संघर्ष में जुट गये थे।

तभी दोस्तों ने खबर दी कि गोर्की की गिरफ्तारी के लिए वारट निकलने वाला है। खबर सच थी और क्रान्तिकारी जनो की राय थी कि जसे भी हो, इस बार गोर्की को गिरफ्तारी से बचना चाहिए। सघपरत क्रांतिकारी जन जानते थ कि गोर्की की उपयोगिता इस समय इसी म है कि व जनता के बीच म रहे। जेल म जा बैठना, समय का दुरुपयोग होगा।

अत बोलशेविक पार्टी क आदश पर गोर्की १९०६ क प्रारभ म विदेश के लिए निकल पड़े। झटपट तैयारी की और पुलिस का पजा उन तक पहुँचे, इसके पहले ही व रूस की सीमा पार कर गये। गोर्की ब्रिटेन, फ्रास, इटली, जमनी होते हुए अमरीका गये। गोर्की की यह विदेश यात्रा मात्र गिरफ्तारी स बचने क लिए नही थी, बल्कि सोद्देश्य थी। गोर्की ने विदेशा म घूम घूम कर मजदूरा के बीच रूस म हो रही घटनाओ की जानकारी दी। उस समय तत्कालीन रूसी सरकार को पश्चिमी सरकारें ऋण दे रही थी। जार को धन चाहिए था कि वह सघष और क्राति को रोक सके। अत गोर्की ने विदेशो मे जा कर रूस मे घटने वाली घटनाओ का सही चित्र उपस्थित करके वहा की सरकारो को जार की आर्थिक मदद करन से रोकन का प्रयत्न भी किया। इसके अतिरिक्त गोर्की को बोलशविको की भूमिगत कायवाहियाँ चलती रहे, इसके लिए चदा इकट्ठा करने का काम भी करना था।

अमरीका पहुँच कर गोर्की न्यूयाक म जम और जार सरकार के कारनामो का खूब प्रचार किया ताकि लोग असलियत से परिचित हो सकें। उन्होने जन-सभाओ म भाषण किया और पत्रो म लेख छपवाया। लोगो मे सघपरत रूसी जनता के कामो का प्रचार करके जार को दी जाने वाली विदेशी सहायता को रुकवाने को प्रेरित किया।

अमरीका मे रहते हुए गोर्की ने अपने उपन्यास 'माँ' पर काम भी शुरू किया। इन दिनो गोर्की अपना अधिकाश समय अपने लेखन म ही लगा रहे थे। व अपने उपन्यास म व्यस्त हो गये। यह उपन्यास वे महान उद्देश्य से प्रेरित हो कर लिख रहे थे। इस उपन्यास का कथानक

कई वर्षों से उनके मन मे पक रहा था। उस उपन्यास मे वे निकट आ रही क्रांति, सघष और मजदूर तथा सवहारा वग के लिए समर्पित भावना से सघपरत व काम करने वाले क्रांतिकारियो के बारे मे पाठको को बताना चाहते थे। इस उपन्यास के माध्यम से वे एक बड़े शहर के एक गरीब मजदूर परिवार के युवक पावेल व्लासोव की कहानी कहना चाहते थे, जो तत्कालीन समाज की सच्ची कहानी थी। परिवार की जानलेवा निधनता बाप का शराब पीना और निरक्षर माँ का अभावो के बीच त्रस्त जीवन बिताना ऐसी परिस्थिति म युवक पावेल का बाप मर जाता है। तब पावेल को अनुभव होता है कि बाप के जीवन के ढर्रे पर चल कर जी पाना कठिन है और वह क्रांतिकारियो के सम्पक म आ कर, अपने जैसे असख्य युवको, गरीबो के उद्धार के लिए वह अपना जीवन क्रांति के लिए समर्पित कर देता है। और युवक से प्रेरणा लेकर बूढी माँ भी क्रांति के पथ पर चलने लगी क्योकि वह समझ गयी कि जिस उद्देश्य से उसका बेटा सघष के रास्ते गया है वही न्यायसगत है। वही मा सम्पूण सघष का एक प्रेरक हिस्सा बन गयी।

यही था उपन्यास का कथानक।

गोर्की ने अपने उपन्यास के नायक के रूप म सोरमोवो के मजदूरो के बीच स प्रतीक रूप मे पावेल को चुना। गोर्की अपन पात्रो को जानते थे, उनके साथ वे सकट के दिन काट चुके थे, कठिन जीवन का स्वय भी अनुभव कर चुके थे। उन्होने अपनी आँखा स देखा था कि सोरमोवो के मजदूरो म एक था प्योत्र झालोमोव, एक क्रान्तिकारी मजदूर, जिसे मई दिवस प्रदशन के लिए जेल की सजा हुई थी, और उसकी माँ खान की टोकरी मे रोटियो के नीचे छिपा कर निझनी नोवोगोरोद के इलाके के मजदूरो मे क्रांतिकारी साहित्य बाँटती थी। इस बूढी माँ को देख कर गोर्की बहुत प्रभावित हुए थे। उन्हे मालूम था कि माँ ने क्रांतिकारी कामो मे सहायता करने मे कितने खतरे उठाये थे। किस तरह चुरा कर जेल म अपने बेटे के पास बम पहुँचाए थे, ताकि जेल की दीवार को बम स तोड कर उसका बटा जेल से भाग सके। ऐसी बहुत सी साहसिक औरतो को गोर्की जानते थे जिन्होने

पुरुषों से अधिक खतरे उठा कर क्रान्ति में सहायता दी थी। इन्हीं पात्रों का यथार्थ चित्रण गोर्की ने अपने उपन्यास 'माँ' में किया था।

जारशाही सरकार ने इस उपन्यास के क्रान्तिकारी महत्व को शायद सबसे अधिक पहचाना। जिस पत्रिका में इस उपन्यास का पहला खण्ड छपा उसे तत्काल सरकार ने जब्त कर लिया। और दूसरे भाग पर सेंसर ने इस तरह कैंची चलायी कि कहानी का रूप ही बदल गया और उसके कई कई अध्याय काट डाले गये। इस घटना की चर्चा का होना भी स्वाभाविक ही था। फलस्वरूप लोगों में उपन्यास पढ़ने की इच्छा तीव्रता से जागी। तब, जब पुस्तक का अपने सही रूप में रूस में छपना असंभव हो गया तो पुस्तक विदेश में रूसी भाषा में छपायी गयी और गैर कानूनी रूप से रूस लायी गयी और रूस के सुदूरतम भागों में भी पहुँचायी गयी।

पुस्तक को तत्काल अभूतपूर्व सफलता मिली।

जारशाही सरकार बौखला गयी।

सरकार ने गोर्की के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही चालू की। सेंट पीटर्सबर्ग की सरकारी बुलेटिन वेदोमोस्ती में घोषणा प्रकाशित हुई कि सेंट पीटर्सबर्ग की जिला अदालत द्वारा जारी किए गये वारंट के अनुसार पुलिस को अलेक्सेई मैक्सिमोविच पेश्कोव निवासी निझनी नोवोगोरोद की जरूरत है।

लेकिन गोर्की इस समय रूस से दूर थे, जारशाही की पहुँच के बाहर।

गोर्की ने विदेशों में जारशाही के विरुद्ध जितना प्रचार किया था और 'माँ' उपन्यास को ले कर सरकार जितनी बौखलायी थी, उसके बाद गोर्की रूस आने की सोच भी नहीं सकते थे। अतः वे १९०६ में रूस नहीं लौट सके। उन्हें पता था कि जारशाही सरकार ने 'माँ' उपन्यास लिखने के लिए, जो रूसी सरकारी अधिकारियों की दृष्टि में 'अपराधपूर्ण और विद्रोह भड़काने वाला' काम था, उन्हें दण्डित करने का निश्चय किया है। रूस की जारशाही व्यवस्था के विरुद्ध गोर्की के अवहेलनापूर्ण कार्यों की लम्बी सूची में एक भयानक अपराध और जुड़

गया था। इसे देखते हुए गोर्की रूस वापस नही आये और उन्होने इटली के समुद्र तट के निकट कैप्री द्वीप को अपना अस्थायी निवास बनाया और वही रहने लगे।

कैप्री मे गोर्की सात साल रहे। उस स्थान से उन्हे गहरा लगाव हो गया था। वे वहाँ खूब घूमे और काफी लम्बी-लम्बी पैदल यात्राएँ भी की और उस द्वीप तथा वहा के निवासियो के जीवन का खूब गहराई से अध्ययन भी किया।

लेकिन कप्री म गोर्की बहुत शातिपूवक रह नही पा रहे थे क्योकि मातृभूमि रूस से निरतर आन वाली खबरें उन्ह बराबर चितित किए रहती थी। वे क्रातिकारी सघष और जारशाही सरकार द्वारा उसके निमम दमन के वष थे। सरकार सवपरत क्रान्तिकारियो पर राक्षसी अत्याचार कर रही थी। बहुत से कमजोर दिल के लोग पार्टी छाड कर भाग गये थे, केवल फौलादी निश्चय वाले लोग ही बचे थे। ऐसी विषम परिस्थिति म पार्टी के कायकर्ता भूमिगत जाने के लिए विवश हो गये थे लेकिन इतने पर भी वे एक नये सशक्त हमले के लिए फिर स शक्ति सगठन करने लगे थे।

तमाम सघर्षो के बावजूद ये दिन गोर्की के लिए चिरस्मरणीय बने। क्योकि इन्ही दिनो गोर्की को लेनिन के निकट आन का अवसर मिला और लेनिन व गोर्की मे गहरी स्नहपूण मित्रता हो गयी।

यह सन् १९०७ का वष था।

लदन मे इसी वष रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी की पाँचवी काग्रेस हुई और लेनिन के विशेष निमत्रण पर गोर्की इस काँग्रेस म शामिल हुए। इस काग्रेस म गोर्की ने एक मताधिकार प्राप्त प्रतिनिधि की हैसियत से हिस्सा लिया। गोर्की और लेनिन दोनो लगभग समवयस्क थे। यही लेनिन की निकटता पा कर गोर्की को लगा कि उनके प्रति लेनिन का स्नेह 'एक पुराने शिक्षक तथा उदार मित्र' जैसा था। दोनो की घनिष्टता व स्नेह के सबध म लेनिन की बहन मारिया

उल्यानोवा ने कहा कि 'ऐसे बहुत कम लोग थे जिन्हे लेनिन गोर्की जितना प्यार करते थे।'

लदन मे लेनिन के साथ बीते दिनो म ही गोर्की ने अपने उपन्यास 'माँ' की संशोधित पाण्डुलिपि लेनिन को पढ़ने को दी। लेनिन ने बडे मनोयोग स पढ़ा और अपने सुझाव भी दिये। लेनिन के सुझावा को मान कर गोर्की न उपन्यास की पाडुलिपि को फिर से सुधारा और इस प्रकार 'माँ' उपन्यास का पूण रूप विकसित हुआ। लेनिन ने माँ' के सम्बन्ध म कहा था—'यह एक अच्छी, आवश्यक और अत्यन्त सामाजिक किताब है।'

लेनिन के प्रोत्साहन भरे शब्दा ने गोर्की को अत्यधिक प्रेरित किया। गोर्की ने इस उपन्यास पर कठिन परिश्रम किया था। उन्ह पक्का विश्वास था कि यह पुस्तक क्राति म भाग लेने वाल लोगा की आँखें खोल देंगी और अपने सघष का लक्ष्य भली भाँति समझने म क्रातिकारियो की सहायक होगी और उन्हे फौलादी बनायेगी।

लदन म इस काग्रेस के समय गोर्की को क्रातिकारिया के साथ गहरा सम्पक करके विशेष अनुभूति मिली। वहाँ शहर स बाहर एक लकडी के बने गिरजा म काग्रेस का जलसा हो रहा था, क्योंकि इससे कीमती जगह पाने लायक पसा राजनीतिक कायकताओ के पास नही था। वहाँ गोर्की रोज एक चार पहिये वाली बग्घी पर बठ कर आते, तब उन्हे चार्ल्स डिकेंस के उपन्यासा के नायको की बग्घिया की याद आती।

काग्रेस की सभा म एक खम्भे स टिक कर गोर्की बठते और प्रतिनिधियो की घटो चलने वाली गरमागरम बहसो को ध्यान-पूवक सुनते। ऐसी काग्रेस म शामिल होने का उनका यह पहला अवसर था।

इस काग्रेस मे लेनिन को देख कर गोर्की ने अपने सस्मरण मे लिखा

अत मे ब्लादीमिर इल्यीच मच पर तीव्र गति से लम्बे लम्बे डग भरते हुए आये और अपने चिर परिचित ढग से प्रतिनिधिया को

'कामरड' शब्द से सम्बोधित किया। पहले तो मुझे लगा कि लेनिन अच्छे वक्ता नही ह, लेकिन केवल एक मिनट वाद ही औरा की तरह मै भी उनकी भाषण कला पर स्तब्ध रह गया। यह सचमुच पहला ही अवसर था जब मैंने सिद्धान्त जैसे उलझे विषय पर किसी व्यक्ति को इतन साधारण शब्दो मे वोलते सुना। मेरे लिए वे पहले ऐसे वक्ता थे जिन्होने प्रभावकारी मुहावरा के प्रयोग का प्रयास नही किया और इतनी स्पष्टता से बोले जितनी स्पष्टता सम्भव थी। वे साधारणतम शब्दा म अपने भावो को वडी खूबी से व्यक्त करने म समथ थ।'

इसी समय से दोना मे—गोर्की और लेनिन मे—गहरी, स्नेहपूण मैत्री स्थापित हुई जो जीवनपयन्त चली ही नही, बल्कि समय बीते और दृढ होती गयी।

सन् १८०८ म गोर्की स मिलने और थोडे दिनो उनके साथ रहने के लिए लेनिन कप्री गय। गोर्की के लिये ये दिन सचमुच वडे सुखकर थे। लेनिन अपनी व्यस्तता और परिश्रम से थक गय थे। यहा आराम करके वे भी वडे प्रसन्न हुए। यहा प्रसन्नचित लेनिन शतरज खलते, गोर्की से गप्प करते गोर्की लेनिन को अपनी यायावरी के किस्से सुनात और सुन सुन कर लेनिन प्रसन्न होते, चौकते, रोमाचित होते।

कप्री के मछुआ से लनिन की खूब पट गयी थी। लेनिन के कप्री स वापस जाने पर वे मछुए अक्सर गार्की से वडी चिन्ता स पूछते,

क्या सचमुच जार उन्ह पकड लेगा?'

वहाँ से जान के वाद लेनिन वरावर पत्र लिख कर गोर्की क प्रति अपने स्नेह को दुहराते, उनके लिखन क वारे म पूछत और उनकी तन्दुरुस्ती के लिए चिंता व्यक्त करते।

लेनिन गोर्की का सवहारा वग की कला का अग्रणी प्रतिनिधि कहते थ। एक स्थल पर लेनिन न लिखा, 'इसम तनिक भी सदेह नही कि गार्की एक शीपस्थ साहित्य महारथी हैं जिन्हान विश्व क सवहारा आन्दोलन के लिए बहुत कुछ किया है और आग भी करेंग।'

सन् १९१३ में जब जारशाही सरकार ने राजनीतिक बंदियों की सामूहिक मुक्ति की घोषणा की तब लेनिन ने गोर्की को रूस वापस लौट आने के लिए लिखा।

फिर १९१४ की गर्मियों में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ने के कुछ पहले गोर्की कैप्री से रूस वापस लौटे और सेंट पीटर्सबर्ग में रहने लगे।

उसी वर्ष प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ।

युद्ध के दौरान हो रहे मानवता के संहार से गोर्की बड़े व्यथित और उद्विग्न रहते थे। उस समय के बारे में गोर्की ने लिखा, 'दिन इस ख्याल से शुरू होता है कि कितने लोग और कहाँ बलिदान हुए। रात देर गये तक यह विचार मेरी आत्मा को कुरेदता रहता है।

गोर्की युद्ध के प्रबल विरोधी और शांति के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने एक पत्रिका—लितोपिस—का प्रकाशन शुरू किया जिसमें वे इस आशय के लेख लिखते कि इस युद्ध की आवश्यकता केवल पूंजीपतियों को है और सारे विश्व के मजदूरों को इस विनाशकारी युद्ध का विरोध करना चाहिए।

गोर्की जब युद्ध भूमि में लड़ते लोगों का जिक्र करते तो उनका चेहरा दुख और संताप से भर जाता। एक सभा में इस सम्बन्ध में बोलते हुए गोर्की ने कहा, 'हम राक्षसी शक्ति वाले सुअर के मतवालेपन के कृत्य देख रहे हैं जो सारी दुनिया को अपने थूथन से जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता है।'

गोर्की की पत्रिका 'लितोपिस' का शांतिप्रिय जनता में बड़ा सम्मान बढ़ा। इस पत्रिका में इसी समय मायाकोवस्की की प्रसिद्ध कविता 'युद्ध और शांति' प्रकाशित हुई।

युद्ध का तीसरा वर्ष बहुत भीषण था।

सन् १९१६ के जाड़ों में जब युद्ध अपनी सीमा पर पहुंच कर भीषण ताण्डव कर रहा था, तब एक सभा में भाषण करते हुए गोर्की ने, कहा, 'हमने एक नये इतिहास की नींव डाल दी है।'

इन्हीं दिनों 'लितोपिस' के कार्यालय में सम्पादकीय विभाग के

सदस्यो की एक बठक म गोर्की ने कहा, 'हम लोग अब 'षडयत्र के उद्घाटन' के बहुत निकट आ गये है।'

इसक ठीक एक हफ्ते बाद जार की नीली ट्रेन दना म रोक ली गयी, जब ज़ार पेत्रोग्राद से फौजी केन्द्र के लिए जा रहा था, और यही ज़ार निकोलस द्वितीय ने अपने सिंहासन-त्याग घोषणा पत्र पर अपना हस्ताक्षर बनाया।

यह फरवरी १९१७ का समय था।

सन् १९१७ की घटनाओ के बाद गोर्की और लेनिन की फिर भेंट हुई। सन् १९१८ मे लेनिन के जीवन का अत कर देने के लिए उन पर गोली चलाई गयी थी। लेनिन घायल हुए थे।

दुर्घटना की खबर पा कर गोर्की भागे हुए लेनिन के पास गय। लेनिन घायल हो कर खाट पर पडे थे। फिर भी उनमें उत्साह की कमी नही थी। गोर्की को देखते ही वे हस पडे। फिर अपने घावो व दर्द को भूल कर गोर्की से बताते रहे कि कैसे हमला किया गया। फिर थोडी देर बाद आग्रह भरे स्वर मे कहा,

'खाना खा कर जाना। आज चीज (पनीर) खाना। रोटी आज बडी मुलायम व ताजी है। और चेरी खाना, आज ही खरीदी है '

लेकिन गोर्की के चेहर पर चिन्ता की रेखाएँ गहरी हो रही थी। व बार बार लेनिन से उनके स्वास्थ्य के बारे मे पूछ रहे थे। तब लेनिन ने अपनी बाँह उठा कर, हिला कर दिखायी, बाह फलाई और कहा, देखो, ठीक हूँ।'

गोर्की बैठ कर स्नेह से लेनिन की गरदन और बाहो पर अपनी उँगलियाँ फेरत रहे। लगता था जैसे ओठो के बजाय गोर्की की उँगलिया ही बोल रही थी। उस दिन गोर्की बडे भावुक हो उठे थे।

यह रूसी क्रान्ति का जमाना था।

जनता के लक्ष्य को आगे बढाने म गोर्की प्राणप्रण स योग दे रह

थे । गोष्ठिया का निर्देशन करते हुए देश के विभिन्न क्षेत्रा म घूमत रहे । इन दिना गोर्की एक मिलीशिया क्लब म भी काम किया करत थे । मिलीशिया सनिका के एक दल न अपना एक सैनिक दस्ता बना कर जब मोर्चे के लिए प्रस्थान किया, तब गोर्की ने उनके बीच भी भाषण किया । उस सभा म उपस्थित एक महिला ने उनके बारे म उस समय के अपने सस्मरण म कहा

'वह बहुत सरल और मित्र भाव वाले व्यक्ति थे । एकदम किसी साधारण मजदूर की तरह । वह पेत्रोग्राद के एक बाहरी इलाके के एक बडे, भूरे रग के मकान म रहते थे । हमेशा वहाँ तक पदल जाया करत । मेरी माँ उधर ही रहती थी, इसलिए अक्सर जब मैं अपनी माँ से मिलने जाती तो उनके साथ ही चली जाती । रास्ते म हम बहुत सी चीजा के बारे म बातें करते लेकिन हमारी ज्यादातर बातचीत गृह-युद्ध, लाल सना की जीता, पत्रोग्राद म रोटी और इधन की पूर्ति आर राष्ट्रीय अथव्यवस्था के पुनस्थापन के लिए राज्य द्वारा उठाये जाने वाले महत्वपूण कदमा, आदि के बारे म ही होती ।' गोर्की ने कहा, 'महनतकश लागा को हम समझाना चाहिए कि व जब खुद अपने लिए काम करेंगे अमीरो के लिए नही । जब वे यह समझ लेंगे तो और भी अधिक उत्साह के साथ काम करेंगे । वे जो कर सकत ह उसका कोई सीमा नही है ।'

गोर्की की महत्वाकाक्षा थी रूस के नागरिका के लिए 'दुनिया भर की विशिष्ट साहित्यिक कृतियो' को सुलभ बनाना । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गोर्की ने कई प्रकाशन गृहो का सगठन किया और लेखको को उनक लिए काम करने को प्रेरित किया । उनके विचार स रूस म ऐस लाखो लोग थे जो नय जीवन के निमाण म लगे थे । उन्हे शिक्षित करना था, उनके लिए किताबें तथा पत्र-पत्रिकाएँ जुटानी थी । गोर्की हर प्रकार से रूस क नवनिर्माण, और जनता म नये जीवन के उत्थान के प्रति सतक थे और इसके लिए सब कुछ करने को बेचन थे, लकिन जब वे बहुत कुछ करने की प्रेरणा से प्रेरित थे तब उनका स्वास्थ्य साथ नही दे रहा था ।

जीवन की सध्या

क्रान्ति के बाद रूस नवनिमाण की प्रक्रिया म बहुत कठिन दौर से गुजर रहा था। देश अकाल स पीडित था और टाइफस से बहुत बडी सख्या म लोग मौत के ग्रास बन चुके थे। खुद गोर्की लम्बे अरसे से क्षय रोग से बीमार थे लेकिन कभी उन्होने काम के आगे स्वास्थ्य की चिन्ता नही की। परिस्थितियाँ भी कुछ ऐसी ही थी कि सारा जीवन उन्ह भाग दौड मे ही बिताना पडा। कही न जम कर रह सके, न कभी 'अपना' कहाने योग्य घर बसा सके।

गोर्की के मित्र उनके स्वास्थ्य के लिए चिंतित हो कर जब उन्ह आराम और इलाज के लिए विवश करते तो वे कहते, मेरे पास इसके लिए समय नही है।'

वास्तव मे उन्हे सिर्फ आराम की नही, बल्कि नियमित चिकित्सा की आवश्यकता थी।

लेनिन भी गोर्की के लिए बहुत चिंतित रहते। लेनिन सोचते थे कि रूस ही नही, विश्व की प्रगतिशील चेतना के लिए गोर्की का जीवन बचा कर रखना भी जरूरी है।

सन् १९२१ मे अचानक गोर्की का क्षय रोग असाध्य हो उठा और उनकी दशा खराब होने लगी। तब लेनिन ने जिद करके गोर्की को इलाज के लिए विदेश जाने को विवश किया।

लेनिन की जिद पर गोर्की को जाना ही पडा।

पहले वे जमनी गये, फिर इटली। और अ तत इटली म सोरेन्तो नामक स्थान म उ हे कई वष रहना पडा।

इटली म रहत हुए भी गोर्की का मन हर समय रूस म ही लगा रहता था। अपन देश मे उ होने कई वृहत योजनाएँ चालू की थी, वह सब अधूरी थी जो गोर्की की बेचैनी का कारण थी।

गार्की विदेश म बठे तडप रहे थे—वे अपने देश, सोवियत सघ के निमाण म मनचाहा योग नही दे पा रहे थे।

विदेश म रहत समय गोर्की को जीवन का सबसे बडा आघात सहना पडा। वह आघात था—लेनिन की मृत्यु का।

गोर्की इटली मे थे कि अचानक १९२४ म लनिन की मृत्यु हुई। जब गोर्की को सूचना मिली तो इस गहरे आघात से वे विचलित हो उठे। उन वेदना भरे क्षणो मे गोर्की सिफ इतना ही कह पाये

'मैं वेदना से दग्ध हो उठा हूँ । जहाज का चालक जहाज छाड कर चला गया।'

लेनिन की मृत्यु स गोर्की ने अपने आपको इतना अनाथ, इतना दुखी और इतना असहाय महसूस किया, जितना जीवन मे कभी नहीं किया था। उ हे लगता था कि गरीब जनता की खुशहाल जि दगी के लिए लेनिन ने जितना सघष किया, गरीबो को जितना हौसला धय और साहस दिया और दलितो के जीवन से वे इतना जुड गये थे कि उनके बिना जीवन की कल्पना ही नही की जा सकती थी। यही नही लेनिन की मौत के बाद काफी दिनो तक गोर्की अपने स्नेही मित्र व शिक्षक लेनिन के सिवा और किसी विषय पर कुछ लिख ही नही सके। गोर्की स्वय बीमार थे, और उनकी ऐसी मनोदशा म लेनिन के सग बीते दिन उनकी हसी उनके श दा और व्यक्तित्व की सरलता और सच्ची मानवीय महानता की स्मृतियाँ हर समय उनके मन पर

छायी रहती। इस मानसिक आघात के दौर से मुक्त होने के लिए गोर्की न लेनिन सबधी अनेक सस्मरण लिखे और लेनिन पर वह अद्वितीय शब्दचित्र भी लिखा जो अपनी सरल, सहृदय और प्रवाहयुक्त शैली के लिए विख्यात हुआ।

'लनिन अक्सर मजदूरा क लिए गोर्की के लेखन के महत्व क बारे म बातें किया करते थे। लेनिन की मृत्यु के बाद गोर्की ने प्राणप्रण स उस विश्वास का औचित्य सिद्ध करने की चेष्टा की जिस लेनिन ने उनके प्रति व्यक्त किया था। उसी दौर मे उन्होंने अपने सस्मरणा का तीसरा खण्ड 'मरे विश्वविद्यालय' पूरा किया, 'आतामोनोव' नामक अपनी लम्बी कहानी लिखी जिसमे एक रूसी व्यापारी परिवार की तीन पीढियो की कहानी है। उन्हाने कहानिया, स्केच और लेख लिखे पाण्डुलिपियो का सशोधन किया और अपना सबसे लम्बा उपन्यास 'क्लिम सामगिन का जीवन' शुरू किया जिसमे चालीस वर्षों के रूसी जीवन का चित्रण है।'

फिर अपना सन् १६२८। गोर्की की साठवी वर्षगाठ का साल।

इसी १६२८ मे गोर्की सोवियत रूस लौटे। सोवियत की जनता अपने महान लेखक और क्रांतिकारी की वापसी का बडी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रही थी।

गोर्की स्वदेश लौटे। पूरे देश म उनके स्वागत म उत्साह की लहर दौड गयी। रास्ते म हर जगह, हर बडे और छोटे शहर म जहाँ से भी वे गुजरे, उनका बडा भव्य व शानदार स्वागत किया गया।

१६२८ की २३ मई को, एक खूबसूरत धूप-भरे दिन को गोर्की मास्को पहुँचे। उस दिन बेलोरूसी रेल टीसन के बाहर की जगह, और आसपास की सडकें खचाखच भरी थी। झडे झडिया फूल और गुब्बारे लिए लोग स्वागत मे मतवाले हो रहे थे। लगता था जसे रूस के लिये यह कोई उत्सव का दिन हो गया था। जैसे लोग त्योहार की छुट्टी मनाने म मग्न हो। प्लेटफाम पर उन्हे फौजी सलामी दी गई। किसानो,

मजदूरो, वैज्ञानिको और लेखको के प्रतिनिधि मण्डलो ने उनका स्वागत किया।

रूस की जनता अपने लेखक को एक बार फिर अपने बीच पा कर खुशी से पागल सी हो उठी।

गोर्की रूस लौटे। उनका स्वास्थ्य यद्यपि बहुत अच्छा न था, लेकिन उनका मन भारी उत्साह से भरा था। वे अपनी वृद्धावस्था के कारण बडे सतर्क थे और अपनी बची उम्र के थोडे से वर्षों को पूरी तरह रूस के नवनिर्माण मे लगा देना चाहते थे। इसीलिए वे अधिक दिनो राजधानी मे नही रुके। एक बार फिर रूस म घूम कर वे अपने पुरान मित्रो स मिलना चाहते थे। उन्होने देश भर की, और सबसे पहले उन जगहो की जहाँ वे पहले यात्रा कर चुके थे—वोल्गा क्षेत्र, काकेशश क्रीमिया, उक्राइन और मुर्मान्स्क, विस्तृत स्तेपी, काकेशश के पर्वतीय दर्रों और रूस की नदियो की यात्रा करने की विस्तृत योजना बनायी।

सबसे पहले वे निझनी नोवोगोरोद गये, फिर कजान और अन्य जगहों म जा कर अपने बहुत से पुरान दोस्तो स मिले। अपने जीवन के कठिन व सघर्षमय काल खण्डो म उनके विभिन्न वर्गों के अनगिनत मित्र बने थे। उनके चरित्र मे यह एक विशेष बात थी कि वे जिससे एक बार भी मिल लेत थे, उस वे कभी नही भूलते थे। वोल्गा के स्टीमर घाट पर वे अपने बहुत दिनो पहल के परिचित एक बूढे खलासी से मिले। उस खलासी ने उनस पूछा कि क्या आप मुझे पहचानते हैं? गोर्की ने तत्काल ही कहा—'बिल्कुल।' और झट से उसका नाम ले कर उसे पुकारा।

'रूस के लिए ये प्रथम पचवर्षीय योजना के वर्ष थे। नये औद्योगिक निर्माण-स्थल और नये राज्य के नागरिक गोर्की के हृदय मे उल्लास और देश के प्रति प्रेम की भावना जगाते थे। 'निगान्त राजकीय फाम के विशाल खेत, बाकू के नय तैल-कूप और मजदूरो की बस्तियाँ नीपर नदी के किनारे विशाल बिजलीघर और सुदूर आर्कटिक के किनारे युवक-युवतियो द्वारा एक नये नगर का निर्माण, आदि

देख कर उनका हृदय अतीव प्रसन्नता से भर उठता ।'

'उनकी इच्छा अपने देश के बच्चो, देश और देश के नये नागरिको के बारे मे एक वृहत ग्र थ लिखने की थी । उन्होने इस ग्र थ के लिए सामग्री एकत्र करने, सोवियत जीवन के स्केच और 'नायको की कहानिया' 'हमारी दुनिया को सुन्दर बनाने' का प्रयत्न करने वाले सीधे सादे और साधारण लोगो की कहानिया लिखने म बडी मेहनत की ।'

—

सन् १९३२ म समस्त सोवियत सघ म गोर्की के साहित्यिक जीवन की चालीसवी जयन्ती बडे धूमधाम व उत्साह से मनायी गयी ।

इस अवसर पर सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति न अपने शुभकामना के सदेश म कहा

'मैक्सिम गोर्की का नाम सोवियत भूमि की जनता के लिए अत्यन्त प्रिय और निकटतम है और रूस की सीमा के बाहर उनका नाम एक महान लेखक और जारशाही के विरुद्ध लडने वाले एक योद्धा के रूप म जाना जाता है ।'

गोर्की के साहित्यिक जीवन की इस जयन्ती ने सारे रूस दश के लिए त्योहार और उत्सव का रूप धारण कर लिया ।

इस वार रूस लौटने पर गोर्की सोवियत सघ की साहित्यिक प्रगति के केन्द्र विन्दु वन गये । उन्होने अपने प्रयास स अनेक पत्रिकाओ का प्रकाशन प्रारम्भ कराया और अनेक पत्रिकाओ का सम्पादन भी किया । उन्होने 'कारखानो का इतिहास', 'गृह-युद्ध का इतिहास' के प्रकाशन का सचालन व निर्देशन भी किया और सोवियत लेखक सघ' की अगुआई की ।

१९३४ मे गोर्की की अध्यक्षता मे सोवियत लेखको की पहली काग्रेस हुई जिसमे, जन-साधारण के लिए साहित्य रचना पर गोर्की न ऐतिहासिक भाषण दिया ।

गोर्की रूस के चतुर्दिक नवनिर्माण मे इतन व्यस्त हो गये कि इसम

बाद में पता लगा कि गोर्की की मौत सामान्य या स्वाभाविक मौत नहीं थी। मौत के एक दिन पहले बेहोशी की दशा में भी गोर्की ने जिस युद्ध के खतरे और फासिज्म के खतरे से आगाह किया था, उसी फासिज्म के दलालो, जर्मन फासिस्ट गुप्तचर विभाग के वेतनभोगी ट्राटस्की बुखारिन के दल के गुण्डों ने, जो सोवियत जनता के शत्रु थे, उन्होंने एक हत्यारे डाक्टर लेविन के माध्यम से गोर्की को जहर दे कर मार डाला था।

गोर्की के मौत की मनहूस खबर सारे रूस देश में तूफानी हवा की तरह फैल गयी। सारा रूस देश अपने महान लेखक और एक महामानव को खो कर स्तब्ध रह गया।

लाल चौक, मास्को में हुई गोर्की की मौत पर एक शोक-सभा मे कहा गया

आज अलेक्सेई मैक्सिमोविच की मौत से हम उनके मित्र, हम उनके असंख्य पाठक और प्रशंसक ऐसा अनुभव करते हैं जैसे हमारे जीवन का एक अद्वितीय पृष्ठ सदा के लिए उलट दिया गया है

'लेनिन की मौत के बाद गोर्की की मौत रूस देश की अतुलनीय क्षति है, जिससे देश ही नहीं, सारी मानवता घायल हुई है।'

गोर्की एक प्रेरणा-स्रोत

विश्व के अधिकाश लेखका का जीवन सघप और महान सघप को एक ही कहानी होती है। उनके जीवन का अत घोर दुखात होता है। बहुत स प्रतिभावान लेखक सारी दुनिया की ठोकरे खाने के बाद अस्पताल और सेनीटोरियम की किसी खाट पर ही दम तोडते ह और उनके पीछे उनकी सम्पत्ति के रूप म कुछ प्रकाशित रचनाएँ और कुछ अप्रकाशित पाण्डुलिपिया ही रह जाती हैं जिनका उपयोग उनकी मौत के बाद सारी दुनिया करती है।

यह किस्सा किसी एक देश का नही रूस या भारत का ही नही, सारी दुनिया के देशो का है।

गोर्की एक सवहारा वग के लेखक थे, शायद इसलिए उनके जीवन म सघप की मात्रा अपेक्षाकृत कुछ अधिक ही रही। उन्ह अपक्षाकृत अधिक उपेक्षा, अपमान और कष्ट सहना पडा। जेल उन्ह जाना पडा लेकिन अपनी पूरी जवानी भर उन्ह जो जीवन जीना पडा वह तो किसी जेल-यातना से भी बढ कर कष्टकर था।

गोर्की की कथा!

कान उसकी ठुडडी पर भी दिया है । जरा गौर स तो देखा !'

बाद म गार्की की एक कहानी मालवा' क बार म चखव न कहा था, 'तुम खुद पढो—'समुद्र हँसा', फिर जरा रुको । क्या तुम्ह लगता है कि यह चित्र सजीव है ? सोचो कसा लगता ह—समुद्र—फिर अचानक उसकी हँसी ! समुद्र न तो हँसता ह, न रोता है । तोलस्तोय की तरह लिखो—सूरज उगता है, चिडिया गाती है । यहाँ हँसने रोने की बात नही, बात है सरलता की, स्वाभाविकता का, यथाथ की ।'

गार्की न इन दो पूव लेखका स जितना सीखा, उसस ज्यादा सीखा—साधारण लोगा स । साधारण लोग, जो साहित्य के महान निमाता ह । गोर्की ने तोलस्ताय, फ्लाउबट, चेखव, डिकेंस स बहुत कुछ सीखा । लकिन साथ ही उन अभागो से ज्यादा सीखा जिनक साथ वे रहत थे जीत थे । मजदूरो, व्यापारिया, आवारा, अभिनेताओ, मल्लाहो से उन्होने ज्यादा सीखा । तब गोर्की ने कठिन जीवन को साधारण शब्दा म बाँधा । उन्होन कलम स साधारणजनो क चेहर बनाये नदिया घरा और आकाश, जगला, समुद्र और खेता के चित्र बनाये, शब्दो म ।

इस प्रकार गोर्की का लेखकीय जीवन भी उनके जीवन की तरह बडे सघष स प्रारम्भ हुआ । लेकिन कठिन श्रम क बाद वे प्रसिद्ध लेखक बने, सिफ इसलिए कि उन्होन साहित्य म भी नयी धरती की सृष्टि की । ऊबड-खाबड जमान को जस फावडे स काट-काट कर सम तल करते हैं, उसी तरह अपनी कलम से भी उन्होन नयी धरती बनायी । और जिस धरती का उन्होन निर्माण किया, वह उनकी अपनी धरती थी । उन्होन लोगो को मात्र साहित्य का अमृत-पान ही नही कराया, बल्कि उन्हे क्रान्ति के लिए तैयार किया, नयी जिन्दगी व नया समाज पद्धति के निर्माण के लिए प्रेरित किया । जीवन सघष को प्रेरणा देने वाल वे एक प्रेरक योद्धा थ । उनके इसी गुण पर लेनिन मुग्ध थे । लेनिन और सघष के सत्य ने गोर्की को एक विशेष दृष्टि प्रदान की थी । बहुत से बुनियादी मसलो पर साहित्यकार गोर्की और क्रान्ति

कारी लेनिन दोना के ही मस्तिष्क म एक ही वात रहती थी । और वह वात थी कि जनता को अपनी मुक्ति के लिए सघप म किस तरह अधिक से अधिक सहायता प्रदान की जाय ।

'लेनिन के मन मे लेखक गोर्की की प्रतिभा के लिए स्नेह और अपार सम्मान था । सन् १६१३ मे उन्होने लिखा कि प्रतिभा ऐसी दुलभ वस्तु है जिसे विधिवत् एव सूझ बूझ के साथ प्रात्साहन देने की आवश्यकता है । लेनिन ने गोर्की की प्रतिभा को निरतर सूझ बूझ के साथ बढावा दिया । ऐसा करते हुए उन्होने कई वार इस वात पर जोर दिया कि यह वेजोड लेखक अपनी विशिष्ट क्षमताओं के द्वारा क्राति का हित साधन करता ह ।

'लेनिन ने गोर्की को राजनीतिक जीवन के मैदान म उतारने का पूरा यत्न किया, परन्तु यह काय उन्होने इस तरह किया कि यह चीज सृजनशील कलाकर के रूप म गोर्की के काय मे वाधा न बने, बल्कि उसमे मदद दे ।'

'गोर्की को वडी वडी राजनीतिक सभाओ म शामिल होने का न्योता मिलता रहता था । उनके नाम लेनिन जो चिट्ठियाँ भेजते थे, उनम वह सामयिक तथा महत्वपूण राजनीतिक और दाशनिक समस्याओ का खुल कर विश्लेषण करते थे पार्टी काय की चचा करते थे, तथा प्रमुख पत्रिकाओ की राजनीतिक प्रवृत्तियो स उन्हे परिचित कराते थे ।"[1]

वास्तव म लेनिन गोर्की को महान रूसी लेखक के अलावा विश्व व्यापी महत्व का साहित्यकार भी मानते थे ।

गोर्की मे एक महान व उल्लेखनीय खूबी थी, वह यह कि नयी प्रतिभा को ढूढ कर उसे सामने लाने म जो सहायता की जानी चाहिए उसम उन्हे आश्चयजनक योग्यता और शक्ति प्राप्त थी ।

गोर्की स्वय जिन रास्तो पर ठोकरे खा कर एक विश्वविख्यात

१ प्रो० ए० म्यास्निकोव

लेखक थे, उन ठोकरों को वे जीवन में एक दिन भी नहीं भूले। इसी लिए हर नये लेखक के संघर्ष को वे समझते थे और उसकी सहायता करने में बहुत अधिक तत्पर रहते थे। किसी भी उभरते हुए लेखक को प्रारंभिक रचना काल में सहायता व समर्थन देने के महत्व को वे खूब अच्छी तरह समझते थे। अपनी ख्याति महानता और उम्र का कभी भी ख्याल न करके वे सदा सहयोगी, साथी और मित्र की ममता से नये लेखकों को प्रोत्साहन देते थे

सन् १९११ में ही गोर्की ने लिखा था '१९०६ और १९१० के बीच मैंने जनता में से उभरे लेखकों की ४०० से अधिक पाण्डुलिपियाँ पढ़ी थीं। वह बस अधिकतर अर्ध साहित्य ही था और वह कभी प्रकाशित नहीं किया जायगा, पर उस पर जीवित मनुष्यता के दिल की छाप थी और उसमें जनता की आवाज गूंजती थी।'

संघर्ष से उभर कर आये एक लेखक होने के नाते, अपने कड़वे अनुभव के नाते गोर्की जानते थे कि नये उभरते लेखक के लिए अपने से बड़े लेखक से विश्वास और प्रेम भरे एक शब्द की कितनी महत्ता है। नये लेखकों को लिखे उनके पत्र बड़े विस्तृत और इतने व्यावहारिक तथा नसीहत भरे होते थे जिसे एक अनुभवी संघर्षशील लेखक ही लिख सकता था। उन्हें जो नये लेखकों की पाण्डुलिपियाँ सुझाव के लिए दी जाती थीं उन्हें वे मात्र पढ़ते भर नहीं थे, उन्हें शुद्ध भी करते थे। ऐसी पाण्डुलिपियों में जगह जगह लकीरें खिंची रहती थीं और हाशिये टिप्पणियों से भरे रहते थे। जब भी वे किसी ऐसी पाण्डुलिपि को देखते जो थोड़े बहुत सुधार के बाद छप सकती हो तो उसे किसी पत्रिका में या पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाने के लिए वे पूरा प्रयत्न करते थे।

वे युवक लेखकों के शुभचिन्तक और गहरे मित्र थे।

गोर्की का समस्त जीवन और कृतित्व यह सिखाता है कि एक आदमी दूसरे आदमी के लिए कैसे जिए।

गोर्की ने मनुष्य को एक नया हौसला दिया, वह हौसला कि मनुष्य कसे मनुष्य बनता है। उन्होने विश्व साहित्य म प्रथम बार ऐसे लोगो को स्थान दिलाया जो दुनिया के अधकारपूण कोने मे चुपचाप पडे थे और उपेक्षित, बहिष्कृत दलित अपमान जनक जीवन जीते थे। ऐसा करते हुए उन्होने दलित मानव की भयानक दशा का मात्र वणन ही नही किया, बल्कि यह भी बताया कि वह कैसे पूण मनुष्य बन सकता है।

गोर्की का विश्वास था कि लेखक का एक दायित्व होता है। वह जीवन की धारा क बीच रहता है। लेखक समाज से अलग नही होता।

गोर्की सच्चे मानो म जनता के बीच के आदमी थे, इसीलिए वे जनता के साहित्यकार थे और मानते थे कि साहित्य विश्व का हृदय है।

परिशिष्ट

गोर्की के जीवन की मुख्य घटनाएँ

१८६८—१६ माच को मास्को से कुछ दूर नियनी नोवोगोरोद म मैक्सिम पेश्कोव और वारवरा के पुत्र अलेक्सेई मैक्सिमोविच पेश्कोव (मैक्सिम गोर्की) का जन्म।

१८७१—हैजे से पिता की अस्त्राखान म मौत। माँ वेटे को लेकर मायके आयी।

१८७४—नाना ने कुछ प्रार्थनाएँ व पढना सिखाया।

१८७६ ८४—पेट पालने के लिए तरह-तरह के काम।

१८८४—पावरोटी के कारखाने मे नौकरी।

१८८८—ऊब कर आत्महत्या की कोशिश। फिर पावरोटी क कार-खाने म काम, फिर मछुआ क साथ काम। क्रान्तिकारियो की सभाओ म जाना शुरू किया। मार्क्सवादियो स परिचय। गाँव म क्रातिकारी प्रचार करन जाना। रेलवे म चौकीदारी और तरह-तरह के काम।

१८८६—गिरफ्तारी निझनी नोवोगोरोद जेल म। छूटने पर पुलिस की निगरानी म।

१८९१—रूस म दूर दूर तक चक्कर काटना। तरह-तरह क खट्टे-कडवे अनुभव।

१८९२—'मैक्सिम गोर्की' के नाम से पहली कहानी छपी। निझनी नोवोगोरोद लौटे। इसी साल और कहानियाँ छपी।

१८९३—रूसी लेखक कोरोलेंको से परिचय। इनसे तरह तरह की साहित्यिक मदद पाना। लिखना जारी रखना।

१८९५—समारा म पेशेवर पत्रकार और कहानियो का प्रकाशन।

१८९६—निझनी नोवोगोरोद क अखबार म काम। तपदिक की बीमारी।

१८९७—बहुत सी कहानियाँ छपी। पहला उपन्यास लिखना शुरू किया।

१८९८—दो खडो म लेख और कहानियाँ छपी। पुलिस ने निझनी नोवोगोरोद स निकाल दिया। तिफलिस जेल स छूटने पर पुलिस की निगरानी म।

१८९९—रूसी लेखक चेखोव स परिचय। पहली बार रूस की राजधानी सेंट पीटर्सबर्ग म, फिर निझनी नोवोगोरोद म गिरफ्तार। जनप्रियता बढती गयी।

१९००—मास्को म तालस्तोय से परिचय। पहला उपन्यास छपा। नाटक लिखना शुरू किया।

१९०१—क्रान्तिकारी कामो के लिए गिरफ्तारी। क्रान्तिकारी सोशल-डिमोक्रेटो (कम्युनिस्टो) से सम्बन्ध। जेल से छूट, घर में नजरबन्द।

१९०२—विज्ञान एकेडेमी के सम्मानित सदस्य चुने गये। रूस के बाद शाह जार ने चुनाव रद्द कर दिया। इसके विरोध मे प्रसिद्ध लेखक चेखव और कोरोलेंको ने एकेडमी की मेम्बरी इन्कार कर दी। गोर्की के दो नाटक मास्को म खेले गय।

१९०५—रूस की क्रान्ति मे डट कर काम। कम्युनिस्ट अखबारो को बहुत रुपया दिया। साम्राज्यवादी जार के राज्य का तख्ता

उलटने के बारे मे परचा लिखने के कारण गिरफ्तार। जेल मे बीमार। जमानत पर छूटे, फिर पुलिस की निगरानी मे। लेनिन के सम्पादकत्व मे पहला कम्युनिस्ट अखबार 'नोवाया झीन' को निकालने के लिए अथक काम। पीटसबग मे सोशल डिमोक्रेटिक पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की सभा मे लेनिन से पहली मुलाकात।

१९०६—क्रान्तिकारी आन्दोलन मे लगे रहना। स्वीटजरलैंड, फ्रास और अमरीका जाना। विदेशी लेखको से भेट। लौट कर कैप्री (इटली) मे १८१३ तक रहना। 'मा' उपन्यास लिखना खत्म किया।

१८०७—रूसी सोशल डिमोक्रेटिक लेबर पार्टी (बाद मे कम्युनिस्ट पार्टी) की लन्दन मे होने वाली पाँचवी काग्रेस के प्रतिनिधि। लन्दन मे लेनिन से भेट व मैत्री। यहा से इटली लौटना।

१८०८—'माँ' उपन्यास के लिए गोर्की पर गिरफ्तारी का वारट। कैप्री म अस्थायी निवास।

१८११—पार्टी के अखबार मे लिखते रहे। नये लेखको की रचनाओ का सशोधन करत रह।

१६१४—इटली से स्वदेश लौटे। पुलिस की स्थायी निगरानी म रखे गये। गोर्की के सम्पादकत्व मे रूस के सर्वहारा लेखको की रचनाओ का पहला सग्रह निकला।

१६१५ १६—जनवादी प्रकाशन सस्था सगठित करने के लिए अथक काम। यहाँ स कई भाषाओ म किताबे निकलने लगी।

१८१७—क्रान्ति के दिनो म मास्को म। लेनिनग्राद म रह कर सर्वहारा समाजवादी सस्कृति म काम मे जुटना। सर्वहारा लेखको की रचनाओ का दूसरा सग्रह निकालना।

१८१८—विश्व साहित्य प्रकाशन गृह सगठित करना। दुनिया की प्रगतिशील किताबो का प्रकाशन करना।

१६२१—तपदिक बढा। लनिन के कहने पर तन्दुरुस्ती सुधारने के लिए जर्मनी जाना।

१६२४—गोर्की की सारी रचनाओं का सग्रह मास्को से छपने लगा। वे चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया होते हुए इटली पहुँचे।

१६२५-२७—इटली मे ही तन्दुरुस्ती सुधारते हुए लिखते रहे। देश के लेखको से बडे पमाने पर चिट्ठी पत्री करते रहे।

१६२८—सोवियत सघ लौट। सारे देश म ६०वी वर्षगाँठ मनाई गयी। मजदूर वर्ग सर्वहारा क्रांति और सोवियत सघ की महान सेवाओ के लिए' सरकार की तरफ से बधाइयाँ।

१६२६—तन्दुरुस्ती बिगडने लगी तो इटली गये।

१६३० ३१—कई पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

१६३२—लिखते और मजदूरो की रचनाओ को छपाने का इन्तजाम करते रहे। मास्को पहुँचे, सोवियत लेखक सस्था के सभापति चुने गये।

१६३४—सोवियत लेखको के पहले सम्मेलन म जनता के साहित्य पर भाषण।

१६३६—निझनी नोवोगारोद (अब गोर्की) म बीमार। बीमारी बढ़ी। १८ जून को साढ़े ग्यारह बजे गोर्की की मौत। उनकी लाश मास्को लाई गयी। २० जून को मास्को क लाल मैदान म 'सोवियत लेखको और सरकार' की ओर स श्रद्धाजलियाँ अर्पित की गयी। शाम को ३ बज कर ४७ मिनट पर उन्हे दफनाया गया।

□□□
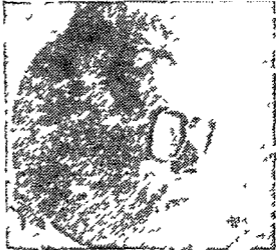
ओंकार शरद

गत चालीस वर्षों के संघर्षपूर्ण लेखकीय जीवन में डेढ़ सौ के लगभग सशक्त कृतियों के कृतिकार, सन् बयालिस के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रगतिशील समाजवादी विचारक और राष्ट्रकर्मी के रूप में भारतीय राजनीति की मुख्यधारा से जुड़े और वैचारिक स्तर पर साहित्य और राजनीति के मिलनबिन्दु के रूप में विख्यात।

राजनीतिक व सामाजिक परिवर्तन को आप आधुनिक युग की यथार्थता मान कर स्वागत करते हैं और देश में तथा साधारणजन के जीवन में घटती घटनाओं से ही आपको लिखने की प्रेरणा मिलती है।